॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह

खण्ड - ३ (तृतीय)

बसन्त तथा धमार के पद

(बसन्त, धमार, डोल, होरी, रसीया)

अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी

-:: प्रकाशक :: -

वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर

अनुक्रमणिका

❖ राग काफी

धमार के पद-राग सारंग

❖ राग सारंग

❖ राग सारंग

❖ राग सारंग

❖ राग गौड सारंग

धमार के पद-राग नट

❖ राग नट

धमार के पद-राग पूर्वी

❖ राग पूर्वी

धमार के पद-राग मारू

❖ राग मारू

धमार के पद–राग मालव

धमार के पद–राग सोरठ

धमार के पद–राग गौड मल्हार

धमार के पद – राग गौरी

धमार के पद–राग गोरी

धमार के पद–राग श्री हठी

धमार पंचजी लाल के पद

धमार के पद–राग हमीर

धमार के पद–राग कल्याण

बसंत बहार के पद (पौषवदि अमावस्या से महासुदि ४ तक)

१ राग बिलावल वसंत पंचमी के दिन मंगला में बिलावल ॥ चोताल ॥ आज की बानिक पर हो लाल हों बलि बलि गई बिगलित कच सुवन पाग ढरकि रहि वाम भाग अंग अंग अलसही ॥१॥ अरुन नैंन झपक जात कछु जँभात वार वार पीक कपोल छही ॥ धनि सुहाग भाग जाकों 'सूर' के प्रभु सँग सब निस बितई ॥२॥

२ राग मालकौंस लहेकन लागी बसंतबहार सखि त्यों त्यों बनवारी लाग्यो बहेकन ॥ फूले पलास नखनाहार केसे तेसें कानन लाग्यो महेकन ॥१॥ कोकिल मोर शुक सार सहंस खंजन मीन भ्रमर अखियाँ देख अति ललकन ॥ नंददास प्रभु प्यारी अगवानी गिरिधर पियकों देखत भयो श्रमकन ॥२॥

३ राग मालकौंस चल बन देख सयानी यमुना तट ठाडो छेल गुमानी ॥ फूले कदंब नाहर पलास द्रुम त्रिविध पवन सुखसानी ॥१॥ बहुरंग कुसुम पराग बहक रह्यो अलि लपटे गुंजत मृदुबानी ॥ कीर कपोत कोकिला ध्वनि सुन ऋतु वसंत लहेकानी ॥२॥ सुन सखी वचन मिल उठी पिय सों नवनिकुंज की रानी ॥ बीनन चले दोऊ कुसुम कलियन व्रज कुंजन ऋतुमानी ॥३॥

४ राग मालकौंस लहेकन लागीरी बसंत बहार मानो बनवारी लाग्यो बहकन ॥ ना जानो जब कहा करेंगे लागे हे पलास द्रुम डहकन ॥१॥ मदनभर केकीहूक काढत बरणवरण द्रुम पुष्पलागे महेकन ॥ आनंद घन तुम कित हो बिरम रहे इत कोकिला लागे कुहुकन ॥२॥

५ राग मालकौंस फूल्योरी सघन बनता में कोकिला करत गान ॥ चलरी बेग वृषभान नंदिनी छाड कठिन मनमान ॥१॥ नव ऋतुराज आयो नेरे मिल कीजे मधुपान ॥ सूरदास मदनमोहन प्रियको गाइये रिझाइये सुनाइये मीठी मधुरी तान ॥२॥
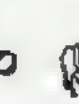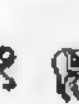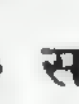
६ राग मालकौंस बोलत स्याम मनोहर बैठे कदंब खंड ओर कदंबकी छैयां ॥ कुसुमित द्रुम अलि गुंजत सखी कोकिला कल कूजत तहियां ॥१॥ सुनत दूतिका के बचन माधुरी भयो हे हुलास जाके मन महियां ॥ कुमनदास व्रज कुंवरि मिलन चली रसिक कुवर गिरिधरन पैंयां ॥२॥

७ राग मालकौंस आज कोमल अंगतें व्रज सुंदरी रसिक गोपाल लाले भाई ॥ सकल शृंगार सज मृगनयनी अब सर जान आप चलि आई ॥१॥ लहेंगा लाल झूमक की सारी कसुंभी पीत वरूणी पिय अतिहि रंगाई ॥ कुमनदास प्रभु गोवरधनधर अपुनी जान हँस कंठ लगाई ॥२॥

८ राग मालकौंस बालापन गयो अब आयो जोबन रोम रोम प्रफुल्लित तन ॥ मदन नृपति की फोज आवत सखि भयो हुलास युवतिन मन ॥१॥ ठोर ठोर फूले द्रुम कानन कोकिल लागे कुलाहल करन ॥ कामीजन उर दाह करन कों सेना सज आये लरन ॥२॥ भरो चलो प्यारी अपने प्रीतमको धरो आयुध आभरण ॥ समर संग्राम जीतेंगे सूर प्रभु चाहत तिहारी शरण ॥३॥

९ राग मालकौंस ललित बालापन गयोरी अब आयो जोबन कामिनीके मन फूलें ॥ पिय संग हास बिलास रंगन खेलेंगे यमुना कूलें ॥१॥ यह अवसर नीकों सुन सजनी ओर अवसर नाही समतूलें ॥ प्रीत करो सखि स्याम सुंदरसों सूर रसिक समूलें ॥२॥

१० राग मालकौंस सघन वन फूल्योरी कुसुमन फूली सब वनराई ॥ फूली व्रज युवतीजन फूले सुंदर वर रति आई ॥१॥ जानपंचमी मिलाप करन वृषभान सुता बन आई ॥ रसिक प्रीतम पिय अति रसमाते डोलत कुंजन माई ॥२॥

११ राग भैरव सघन वन छायो प्रफुल्लित द्रुमवेलि भयो हुलास व्रजजन मन ॥ ठोरठोर कोकिल कल कूजत करत गुंजार मधुपगन ॥१॥ भयो प्रकट आज ऋतुराज वासकियो सुनियत वृंदावन ॥ रसिक प्रीतम पियसों

रसबिलसों आन अर्पो सखि तन मन धन ॥२॥

१२ राग मालकौंस नईरी ऋतुको आगम भयो सजनी जबतें बिदा भयो हेमंत। विरहनिके भागिनतें सजनी आवत चल्यो हे बसन्त ॥१॥ तन सीहाय त्रीय चले भर भाव चल्यो ताहीको कंत ॥ चत्रभुज प्रभु पिय तारी बजावत या जाडेको आयो अन्त ॥२॥

१३ राग मालकौंस ससक ससक रही अपने भवन में चार मासको कीयो बिहार। नंद सुवन ब्रजराज सांवरो मोह्यो परम चतुर ब्रजनार ॥१॥ कब आवेंगे मेरे घरमें बिधनासों मांगु अचरा पसार। कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर जाडो चल्यो दोउ कर झार ॥२॥

१४ राग मालकौंस मदन मतवारो। नागर नवल प्रेम रस बस व्हे कीनो नंद दुलारो ॥१॥ गये हो तुम भवन पराये हमसों नित करत तुम टारो। सोय रही गृह भवन अकेली सीत दहत तनवारो ॥२॥ आज कियो कर जोर मीलन हित पायो हे प्रीतम प्यारो। परमानंद प्रभु या जाडेको दीजिये देस निकारो ॥३॥

१५ राग मालकौंस मदन मत कीनोरी मतवारो। आवत नींद निशंक करन सब भर जोबन अति भरो ॥१॥ तेसिय सीत परत सखी हम पर कांपत हे तन सारो। सोवा सेज देवकके साजसें अलसत अंग उघारो ॥२॥ कब आवें मेरे गृह वह प्रीतम प्रान हमारो। परमानंदप्रभु या जाडेको कीजे मुंह अब कारो ॥३॥

१६ राग मालकौंस बसंत आगम सुंदर नंद नंदन जो पाउं। कुंवर कपट बनाय जतनसों नीके गिरधरलाल लडाउं ॥१॥ अति प्रफुल्लित मन हरखत आनंद अपने पियसों उरन मिलाउं। परमानंदप्रभु या जाडे को देस निकास कराउं ॥२॥

१७ राग मालकौंस कानह तिहारे राज बसंत हो सब मुख चेन दिखाई देत नहीं कर वा छिन ॥ नंद समीप मंगल मित अंत न होत जु

जान वीतत वरज निसदिन ॥१॥ भूर भाग्य निज जन घर ब्रजवासी कहावत नारीन धन्य ॥ परमानंद या सुखके कारन सदा बसंत रहत वृंदावन ॥२॥

१८ राग मालकौंस मोह्यो कहूं प्रानप्रिया मेरो प्यारो ॥ हों तलपतहूं उन बिन सजनी आयो न नंदकुमारो ॥१॥ सिथिल कियों तन सारो सखीरी मग जावत भयो भवन उजारो ॥ रहे अनत जाय कहुं आजहू सोतन के रस सारो ॥२॥ हमको जोग बिधाता दीयो उनकों भोग दियो सारो ॥ सूरदासप्रभु या जाडे को दीजे देसनिकारो ॥३॥

१९ राग मालकौंस मदन मत मतवारो ही कीनो ॥ मधुव्रत होय गिरिधरन जबही जब वदन कमल रस भीनो ॥१॥ जाके कारन सुनरी सजनी जब आरज पथ छीनो ॥ मया करी सोई तुमने कीनी ज्यों कुंदनमें मीनो ॥२॥ वेसी प्रीत हती मेरे उनसों प्रान प्रकटकर दीनो ॥ बेर बेर हमने रस जान्यो उन सोतन रस बीन्यो ॥३॥ कहा बिरहिनी सीत लग्यो अति सो मन जात न दीनो ॥ द्वारकेश प्रभु या जाडेको देसनिकारो दीनो ॥४॥

२० राग मालकौंस सुघर बना संग जागी मनमोहनसों अनुरागी ॥ उरसों उर लपटाय प्रीतमसों अधर सुधा पीवन लागी ॥१॥ आलिंगन रसक्रीड़ा पियके प्रेमरस पागी ॥ हेमंत मनाय लाई कुंभनप्रभुसों अब आई ऋतु बसंत सुहागी ॥२॥

२१ राग मालकौंस बसंत ऋतु आई फूलन फूले सब मिल आवोरी बधाई ॥ काम नृपति रतिपति आवत हे चहुंदिस कामिनी भोंह सों चोंप चढ़ाई ॥१॥ भँवर गुंजारत कोकिल गावत लेत सप्त स्वर तान गाई ॥ हरिवल्लभप्रभु को बसंत ऋतु लायो भरि भरि आंकोरी मन भाई ॥२॥

२२ राग मालकौंस बिधाता अबलन कों सुख दीजैं ॥ बेरी भयो मनोज अङ्ग-अङ्ग सीत लगे तन छीजैं ॥१॥ केधों प्रीतम पर घर जे हे ए दुःख तुम सुनि लीजैं ॥ 'सूरदास' प्रभु या जाडे कों अब ही बिंदा करि दीजैं ॥२॥

२३ राग गौरी बेनु माई बाजे श्री बंसीबट ॥ सदा बसन्त रहित

वृन्दावन पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट ॥१॥ क्रीट मुकुट मक्राकृत कुंडल मुखारविन्द भँवर मानो लट ॥ दसनन कुंद कली छबि राजति भ्राजति कनक समाज पीत पट ॥२॥ सुर मुनि ध्यान धरति नहिं पावत, करति बिनोद सँग बालक भट ॥ दास अनन्य भजन रस कारन 'हित हरिबंस' प्रगट लीला नट ॥३॥

२४ राग मालकौंस लहेंगा हर्‌यौ छबि देति । चुरी हरी तेरे बांह बिराजति सोहत बंगरी सेत ॥१॥ हरी अंगीयां उर राज रही हें तातें भयो स्याम सँग हेत 'चतुरभुज' प्रभु तें मन हर्‌यौ प्यारी तातें बट संकेत ॥२॥

२५ राग मालकौंस सारी हरी री चून कें पहेरी चोली हरी सब सोंधे भरी ॥ चूरी हरी अरु पोहोंची हरी री हाथन में मेंहदी गेहरी ॥१॥ पोत हरी मुख जोत खरी खरी जोबन जोत जडाव जरी ॥ नव कुंज हरी ब्रज भोमि हरी देखि सखी मेरी सुथरी ॥२॥

२६ राग मालकौंस शिशिर ऋतुको आगम भयो प्यारी बिदा भयो हेमन्त ॥ विरहिनके भागिनतें आली आवत चल्यो वसन्त ॥१॥ जाहि दूतिके भवन बसे हो भाँवरि लीने कन्त ॥ कुंभनदास प्रभु या जाडेको आय गयो है अन्त ॥२॥

२७ राग मालकौंस आवन कही गये अजहु न आये पिय सब निस विति मोहे गीन गीन तारे ॥ दिपक ज्योती मलिन भई है किन दूतीयन वीरमाये प्यारे ॥१॥ नभचर बोले बगर सब खोले फूले कमल मधुप गुंजारे ॥ धोंधी के प्रभु तुम बहु नायक आये निपट वसंत सवारे ॥२॥

२८ राग मालकौंस भोरे भोरे कान तुमेरो कह्यो भान आथमे गो भान मैं आप चली आऊंगी ॥ तुमतो चतुर नर छांड दे हमारो कर तुमको तो नाही डर मैं लाजन मर जाऊंगी ॥१॥ तुमको तो चहिए भोग भोगको नांही संजोग देखेंगे नगर लोक अब न आऊंगी ॥ रसिक के स्वामी श्याम धरंगी तुम्हारो ध्यान अब आयो वसंत मैं तुमको रिझाऊंगी ॥२॥

२९ राग मालकौंस आयी आयी हो आगम ऋतु शिशिर की हेमंत बिदा भई जानी नवल पिय किनकर ॥ कर शृंगार पिय दरस करन व्हे मोद भरी मदभरी रस भरी गति गयंद स्थूल चरन ॥१॥ अंग अंग फूली वसंत मानो नख शिख सजी पटभूषण भरण ॥ माधो प्रभु दंपति सुख निरखत हसन दसन लागे फूल जरन ॥२॥

३० राग ललित ❒ किरिट धरे जब ❒ आज अति शोभित मदनगोपाल ॥ किरिट मुगट छबी अधिक बिराजत उर वैजंयती माल ॥१॥ ठाडे सिंघ के द्वार राधे संग बेनु बजाय रसाल ॥ कमल लिये कर परमानंद प्रभु बलि बलि गई ब्रजबाल ॥२॥

३१ राग मालकौंस सुंदर वदन देखो आज ॥ किरिट मुकुट सोहावनो मन भामतो श्री ब्रजराज ॥१॥ लियो मन उत्कर्ष मुरली रही अधर पर गाज पलक ओट न चाह चित लखी महा मनोहर साज ॥२॥ गोपीजन तन प्राण वारति रह्यो मनमथ लाज ॥ सुर सुत यह नंदकी श्री वल्लभकुल की सीर ताज ॥३॥

३२ राग मालकौंस सुंदर नंदनंदन जो पाऊं ॥ अंग संग लाज मदन मनोहर या जाडे को देश निकारो दिवाऊं ॥१॥ मृगमद अगर कपुर कुंमकुंम मिले अरगजा देर चढावु ॥ विविध सुगंध सुमन बसंत सखी सघन निकुंज में शयन बिछावु ॥२॥ राग रागिनी ऊरप सुस्वरूप सरस मधुरे गाऊं ॥ कृष्णदास प्रभु गोवर्धनधर रसिक शिरोमणि सुविधि रिझाऊँ ॥३॥

३३ राग मालकौंस प्रीतमको कछु दोष नहिरि यह तो शीत वेरी हमारो ॥ प्रीतमको मग जोवन कारण राखन नहि देत बदन उघारो ॥१॥ शीतल पवन अकेली जानके पठवत आलस करन संघारो ॥ व्रतको तजी आक्रत निंद्रासों मिलि ठगत रे ठगारो ॥२॥ कहुंगी जनाय जाय आज मिले मोहे प्रीतम प्यारो ॥ चत्रभुज प्रभु नेह द्रोली जाड़ेकी कीजे मुंह कारो ॥३॥

३४ राग ईमन आलीरी कर शृंगार सायंकाल चली व्रज बाल पिय दरशवे कों मत्त द्विरद गेन ॥ मानों शिशुमार चक्र उदय होत गगन मध्य ध्रुव नक्षत्र की परिक्रमा देन ॥१॥ मानों वसंत ऋतु आई अंग-अंग छबि छाई दंपति समाज मोवे कही न परत बेन ॥ 'मुरारीदास' प्रभु प्यारी चित्र विचित्र गति सेवक निरखि पिया छबि अद्भुत ऐसी को कर रची मेन ॥२॥

३५ राग बिहाग सुनि री तू क्यौं भई हे नचीती करि कैं मान मनमोहन सौं अबार ॥ यह समयो हसन कों नांही ब्रज पर धायो मनमथ संभार ॥१॥ सुक पिक चात्रक हंस मोर मृग मधुकर मधूरी करति रार ॥ आयो बसंत कंत भज भामिनि लायो रतिपति पंचसर लार ॥२॥ वे जब तिय आई लगेंगे तब ही भजेगी भवन बिसार ॥ 'दास' तबे जाड़ो उठि भाज्यो अब आवेंगी बसंत बहार ॥३॥

३६ राग बसंत सुघर बना संग जागी मोहन सौं अनुरागी ॥ उर सौं उर लपटाई नैन सौं नैन अधर-अधर सों बड़भागी ॥१॥ आलिंगन चुंबन रस क्रीड़त पीय के प्रेम रस पागी ॥ हेमंत मनाई लई 'कुंभनदास' प्रभु सो अब आँई ऋतु बसंत सुहागी ॥२॥

श्री दामोदरदासजी की बधाई (पोढवाने)

१ राग सारंग आज बधायो मंगल चार ॥ माघमास शुक्ल चोथ हे हस्त नक्षत्र रविवार ॥१॥ प्रेमसुधा सागर रस प्रगट्यो आनंद बाढ्यो अपार ॥ दास रसिकजन जाय बलिहारी सरवस दियो वार ॥२॥

२ राग सारंग प्रगटे भक्त शिरोमणी राय ॥ माघमास शुक्ल चोथ अधिक लोक निधि आई ॥१॥ दैवी जीवके भाग्य उदय भये जिन यह दर्शन पाई ॥ करि करुणा प्रभु भूतल आये पुष्टिपथ प्रगटाई ॥२॥ महा महोत्सव होत पुर घर घर फूले अंग न समाई ॥ रसिकदास चित एही चहत हे चरनकमल मन लाई ॥३॥

रागमाला - शयन दर्शन (पांच राग की रागमाला)

१ राग-ईमन ईमन मान मेरो कह्यो काहेकी प्यारे प्यारी तु ॥ प्रथमही भरी गुन गाईए यही ते सुघराई होतु ॥१॥ मालकौंस की तान ले ले राखत रूप बिहाग ॥ द्वारकेस प्रभु बसंत खिलावत याही ते बढत सुहाग ॥२॥

श्रीगुसांईजी तथा श्रीजयदेवजी की अष्टपदी

१ राग बसंत हरिरिह व्रजयुवती शतसंगे । विलसति करिणी गण वृत वारण वर इव रति पति मान भंगे ॥ध्रु०॥ विभ्रम संभ्रम लोल विलोचन सूचित संचित भावं ॥ कापि दृगंचल कुवलय निकरै रंचतितं कलरावं ॥१॥ स्मित रुचि रुचि रतरानन कमल मुदीक्ष्य हरे रतिकंदं ॥ चुंबति कापि नितंबवती करतल धृत चिबुकममंदं ॥२॥ उद्भट भावविभावित चापल मोहन निधुवन शाली रमयति कामपिपीन घनस्तन विलुलित नव वनमाली ॥३॥ निज परिरंभ कृतेनुद्रुतम भिवीक्ष्य हरिं सविलासं ॥ कामपिकापि बलाद करोदग्रेकुतु केन सहासं ॥४॥ कामपिनीवी बंध विमोकस संभ्रम लज्जित नयनां ॥ रमयति संप्रति सुमुखि बलादपि करतल धृत निज वसनां ॥५॥ पिय परिरंभ विपुल पुलकावलि द्विगुणित सुभग शरीरा ॥ उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रति रणधीरा ॥६॥ विभ्रम संभ्रम गलदं चलमलयांचित मंगमुदारं ॥ पश्यति सस्मित मति विस्मित मनसा सुदृशः सविकारं ॥७॥ चलति कयापि समंस कर ग्रह मल सत रंस विलासं ॥ राधे तव पूरय तु मनोरथ मुदित मिदं हरिरासं ॥८॥

२ राग बसंत ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे ॥ मधुकरनिकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥१॥ विहरति हरिरिह सरसवसंते ॥ नृत्यति युवति जने न समं सखि विरहि जनस्य दुरंते ॥ध्रु०॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूजनजनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥२॥ मृगमद सौरभरभस वशं वदनवदल मालत माले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिजनखरुचि किंशुक जाले ॥३॥

मदन महीपति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे ।। मिलित शिलीमुख पाटपिटल कृत स्मरतूण विलासे ।।४।। विगलित लज्जित जगदव लोकन तरुण करुण कृतहासे ।। विरहि निकृंतन कुंत मुखाकृति केतकिदंतुरिताशे ।।५।। माधविका परिमल ललिते वनमालिक याति सुगंधौ ।। मुनिमनसामपि मोहन कारिणि तरुणा कारण बंधौ ।।६।। स्फुरदति मुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकितचूते ।। वृंदावन विपिने परिसर परिगत यमुनाजल अति पूते ।।७।। श्रीजयदेव भणितमिदमुदयति हरिचरण स्मृतिसारं ।। सरस वसंत समय वनवर्णनमनुगत मदन विकारं ।।८।।

३ राग बसंत स्मर समरो चित विरचित वेशा ।। गलित कुसुमदल विलुलित केशा ।।१।। कापिचपला मधुरिपुणा ।। विलसति युवति रधिक गुणा ।।ध्रु०।। हरि परिरंभण वलित विकारा ।। कुच कलशो परितरलित हारा ।।२।। विचलदलक ललिताननचंद्रा ।। तदधर पानरभसकृत तंद्रा ।।३।। चंचल कुंडल ललित कपोला ।। मुखरित रशनजघन गति लोला ।।४।। दयित विलोकित लज्जित हसिता ।। बहुविध कूजित रति रसरसिता ।।५।। विपुलपुलक पृथु वेपथुभंगा ।। श्वसित निमीलित विकसेद नंगा ।।६।। श्रमजल कणभर सुभग शरीरा ।। परिपतितोर सिर तिरणधीरा ।।७।। श्रीजयदेव भणित हरि रमितं कलि कलुषं जनयतु परिशमितं ।।८।।

४ राग बसंत विरचित चाटु वचन रचनं चरण रचित प्रणिपातं ।। संप्रति मंजुल बंजुल सीमनि केलि शयन मनुयातं ।।१।। मुग्धेमधु मथनमनु गतमनुसर राधिके ।।ध्रु०।। घनजघन स्तन भार भरेदर मंथर चरण विहारं ।। मुखरित मणि मंजीर मुपैहिविधेहिमराल विकारं ।।२।। शृणुरमणीय तरंतरुणी जनमोहन मधुरिपुरावं ।। कुसुम शरासन शासन वंदिनिपिक निकरे भजभावं ।।३।। अनिल तरल किसलयनि करेणकरेण लतानि कुरंबं ।। प्रेरण मिवकर भोरु करोति गतिं प्रतिमुंच विलंबं ।।४।। स्फुरित मनंगत रंग वशादिव सूचित हरि परिरंभं ।। पृच्छ मनोहर हार विमल जल धारम मुंकुचकुंभं ।।५।। अधिगत मखिल सखी भिरिदंतवव पुरपिरतिरण सज्जं ।। चंडिरसित रशनार वडिंडिममभि सरससरसम लज्जं ।।६।। स्मर शर सुभग नखेनकरेण सखी

मवलंब्य सलिंल ॥ चलवलय क्वणितैरव बोधय हरि मपि निजगति शीलं ॥७॥ श्रीजयदेव भणित मधुरी कृत हारमुदासित वामं ॥ हरि विनिहित मनसा मधितिष्ठतु कंठ तटीमभिरामं ॥८॥

५ राग बसंत अवलोकय सखि मंजुल कुंजे ॥ रमयति गोकुल रमणी रिह गोकुल पति रलि कोकिल पुंजे ॥ध्रु०॥ माधविका लतिकारति कारिणि रागिणि रुचिर बसंते ॥ त्रिविध पवन कृत विरह विधूजन मदन नृपति सामंते ॥१॥ किंशुक कुसुम समीकृत दयिताधर रसपान विनोदे ॥ मधुप समाह्वत बकुल मुकुल मधुविकसित सरसामोदे ॥२॥ नवनव मंजु रसाल मंजरी बोधित युवजनमदने ॥ दयिता रदन समद्युति मुकुलित कुंद चिरस्मित वदने ॥३॥ युवतीजन मानस गतिमान महागज मदमृगराजे ॥ कोकिल कुल कूजित विरहानलता पित पथिक समाजे ॥४॥ वितत पराग कुसुम संबंधि सदागति वासित गहने ॥ कुसुमित किंशुक कै तव विस्तृत विरहिद हनवन दहने ॥५॥ पल्लव कुसुम समेत विपिन विस्मारित युवजन गेहे ॥ मदन दहन दीप न विद्रावित विरहि दीन जनदेहे ॥६॥ जगति समान शीततदितर विरचित निज रुचिराकारे ॥ वनिताजन संयोग सेविजन जनिता नंद सुभारे ॥७॥ इतिहितकारि वचन मतिमानिनिमान यगोकुलवासे ॥ कुरुरतिमतिशय करुणारस वतिबितरमतिं हरिंदासे ॥८॥

६ राग बसंत बिलसति हरिरिह सरस होलका समये रमणी संगे ॥ गूढ़ भाव समुदय संवर्धित हृदय समुदित नंगे ॥१॥ संजोजयति दशा दशमादौं हृदि भावयति विलासं ॥ निस्त्रप वचन शतेन विरचति युवतिजन परिहासं ॥२॥ स्पृशति कपोलौ पाणियुगेन करोति कुमकुमालेपं ॥ निज रमण लघुताकरणे विदधाति समय संक्षेपं ॥३॥ ताल मृदंग बिबिध वादित्र सुघोषानंदित घोषं ॥ सपदि वशीकुरुते निज गोकुलमखिलं रसपोषं ॥४॥ सरस वेणुनादेन हृदयमति तुनते निर्मलभावं ॥ मुरलिक्यानुकरोति कदापि मधुरतर कोकिलरावं ॥५॥ नृत्यति मनसिज रतिभर भावेन मधुर वदखिल समक्षं ॥ सदसि ददाति महारसमपि हरिपदयुगल भावलक्षं ॥६॥ उड्डापयति सरस कुंकुम रेणुयुत रागं ॥ सित सौरभयुत रेणु मिश्रणावेदि रूप विभागं

॥७॥ चंदननीरसेक सरसाकृत युवति युवजन देहं ॥ निज सुकुमार तनोरनुरूपं कुरुते विस्मृत गेहं ॥८॥ अति रभसेन कदाचिदुपर्यपि पतति युवति शत यूथे ॥ दस विध रति पथि मदन मनोरथ समुचित रुचिर वरूथे ॥९॥ श्री बल्लभ पद युग कृपयेव हृदा पश्यति 'हरिदासे' ॥ तव पूरयतु चिंतितं सकलं सखि सामयिक विलासे ॥१०॥

बसंत पंचमी के पद

१ राग बसंत ॥ साखी ॥ आई ऋतु-बसंत की गोपीन किये सिंगार ॥ कुमकुम बरनी राधिका सो निरखति नंदकुमार ॥१॥ आई ऋतु-बसंत की मौरे सब बनराई ॥ एकु न फूले केतकी औ फूली बनजाई ॥२॥ श्री गिरिराजधरनधीर लाड़िलौ ललन-बर गाइए ॥ श्री नवनीत प्रिय लाडिलौ ललन-बर गाइए श्री मदन मोहन पिय लाडिलौ ललन-बर गाइए ॥३॥ कुंज कुंज क्रीड़ा करैं, राजत रूप-नरेस ॥ रसिक, रसीलौ, रसभर्यौ, राजत श्रीमथुरेस ॥४॥ श्रीगिरीराजधरनधीर लाडिलौ ललन बर गाइए ॥

२ राग बसंत आई बसंतऋतु अनुपनूत कंतमोरे ॥ बोलत वन कोकिला मानों कुहुकुहु रस ढोरे ॥१॥ फूली वन राई जाई कुंद कुसम घोरे ॥ मदरस के माते मधुप फिरत दोरेदोरे ॥२॥ हम तुम मिलि खेलेंलाल कुंज भवन चौरे ॥ गोविंद प्रभु नंदसुवन खेलें इकठौरे ॥३॥

३ राग बसंत आज सुभगदिन वसंतपंचमी जसुमति करति बधाई ॥ विविध सुंगध उवटिकें लालकों ताते नीर न्हवाई ॥१॥ बांधीपाग बनाय सेतरंग आभूषन पहराई ॥ तनक सीसपर मोर चंद्रिका दिसदाहिनी ढरकाई ॥२॥ ग्रहग्रहतें व्रजसुंदरि सबमिलि नंदपोरिपे आई ॥ अंबमोरके पुष्पमंजुरी कनिककलश बनाई ॥३॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा केसरि रंग मिलाई ॥ प्रमुदित छिरकत प्रान पियाकों अबीर गुलाल उड़ाई ॥४॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सुहाई ॥ तन मन धन नोछावरि कीनों आनंद उर न समाई ॥५॥ श्रीगिरिवरधर तुम चिरजीवो भक्तन के सुखदाई ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रतापतें हरीदास बलिजाई ॥६॥

४ राग बसंत प्रथम समाज आज वृंदावन विहरतलाल विहारी ॥ पांचे नवल बसंत वृंदावन उमगि चलीं व्रजनारी ॥१॥ मंगलकलश लियें व्रजसुंदरि मधि वृषभान दुलारी ॥ फलदलजुर नवनूतमंजुरी कनिक कलश सोभारी ॥२॥ गावतगीत बजावत वाजे मेनसेन अनुहारी ॥ दरसपरस मनमोद बढावत राजतछबि भरभारी ॥३॥ उडत गुलाल अबीर कुंकुमा भरिकेसरि पिचकारी ॥ छिरकत फिरत छबीले गातन रूप अनूप अपारी ॥४॥ विविध विलास हास रस भीने इत प्रीतम उतप्यारी ॥ हित हरिवंस निरखि मुख सोभा अखियां टरत न टारी ॥५॥

५ राग बसंत आज मदन महोत्सव राधा ॥ मदन गोपाल बसंत खेलतहें नागर रूप अगाधा ॥१॥ निधिबुधवार पंचमी मंगल ऋतुकुसमाकर आई ॥ जगतबिमोहन मकरध्वजकी जहांतहां फिरीदुहाई ॥२॥ मनमथ राजसिंघासन बैठे तिलकपिता महदीनों ॥ छत्रचँवर तूणीर संखधुनि बिकट चाप करलीनों ॥३॥ चलोसखी तहां देखनजैये हरि उपजावत प्रीति ॥ परमानंददास को ठाकुर जानतहें सबरीति ॥४॥

६ राग बसंत श्रीपंचमी परम मंगलदिन मदन महोच्छव आज ॥ बसंत बनाय चली व्रजसुंदरि ले पूजाको साज ॥१॥ कनिक कलश जलपूर पढत रतिकाम मंत्र रसमूल ॥ तापरधरी रसाल मंजुरी आवृत पीतदुकूल ॥२॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा नव केसरि घनसार । धूपदीप नानानिरांजन विविध भांति उपहार ॥३॥ बाजतताल मृदंग मुरलिका वीनापटह उपंग ॥ गावत राग वसंत मधुरसुर उपजत तान तरंग ॥४॥ छिरकतअति अनुरागमुदित गोपीजन मदनगुपाल ॥ मानोंसुभग कनिक दलीमधि सोभित तरुन तमाल ॥५॥ यह विधि चली रति राज वधावन सकलघोष आनंद ॥ हरि जीवन प्रभु गोवर्धनधर जयजय गोकुलचंद ॥६॥

७ राग बसंत प्रथम वसंतपंचमी पूजन कनकलश कामिनी ऊरफूले ॥ आयो मदन महिप सैनले अंबडार पे कोयल झूले ॥ ठोरठोर द्रुमवेलीफूली कालिंदी के कूले ॥ चत्रभुज प्रभु गिरीधर संग बिहरत

स्यामास्याम समतूले ॥२॥

८ राग बसंत परम पुनीत वसंतपंचमी मुरत शुभ दिन साजेहो ॥ गोपीग्वाल मुदित मनमांहि खेलत बनवृजराजे हो ॥१॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सुरविमान चढआये हो ॥ अष्टसिद्धी नवनिधिह ठाडी लेकर कुसुम बधाये हो ॥२॥ फूल्यो वृंदावन फूल्यो गोवर्धन फूल्यो जमुना तीर ॥ रामदासप्रभु गिरीधर फूले नखशिख शोभा स्याम शरीर ॥३॥

९ राग बसंत बनठन आई सकल वृजललना खेलनकोजु वसंत ॥ श्रीपंचमी परम महोत्सव परम मनोहर गोकुलकंत ॥१॥ शुभदिन सुभग सरोज प्रफुल्लित गुंजत भंवर सुवास ॥ खेल मच्यो नंद आगंन अद्‌भुत व्रजजन नंदकुमर सुखरास ॥२॥ केसर की चमची मनि वोकमें केसकुसुम सुरंग ॥ अबीर गुलाल उडावति गावत प्रगट्यो अंगअनंग ॥३॥ नीजकरसोंकरदेत पियनकोशोभा कहा कहि आवे ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रिडत व्रजजन अंगलगावे ॥४॥

१० राग बसंत बसंत पंचमी मदन प्रगटभयो सब तन मन आनंद ॥ ठोर ठोर फूले पलास द्रुम औरमोर मकरंद ॥१॥ विविध भांत फूल्यो वृंदावन कुसुम समूह सुगंध ॥ कोकिल मधुप करत गुंजारव गावत गीत प्रबंध ॥२॥ सारस हंस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद ॥ नानापहुप परागन के भरी आवत पवन सुगंध ॥३॥ वैनु बजाय करीमन मोहित गोपीनको नंदनंद ॥ मिलधाई वृषभानु सुतापै परीप्रेमके फंद ॥४॥ गोवर्धनगिरि कुंज सदनमें करत विहार सुछंद ॥ दास निरखि बलिबलि शोभापै स्यामा गोकुलचंद ॥५॥

११ राग बसंत आयो ऋतुराज साजि पंचमी वसंत आज मोरे द्रुम अति अनूप अंबरहे फूली ॥ वेली लपटी तमाल सेतपीत कुसमलाल उडवत सब स्याम भाम भमरहे झूली ॥१॥ रजनी अति भई स्वछ सरिता सब विमलपच्छ उडगन पति अति अकास बरखत रस मूली ॥ जती सती सिद्धसाध जिततित उठि भगे समाधि विमन जडित पसीभये मुनिमनगति

भूली ॥२॥ जुवति जूथकरत केलि स्याम सुखद सिंधुझेलि लाज लीक दई पेलि परसिपगन मूली ॥ बाजत आवज उपंग बांसुरी मृदंग चंग यह सुख सब छीतनिरखि इच्छा अनुकूली ॥३॥

१२ राग बसंत आई हैं हम नंदके द्वारें ॥ खेलन फाग वसंत पंचमी सुख समाज विचारें ॥१॥ कोऊ ले अगर कुंकुमा केसरि काहूके मुखपर डारें ॥ कोऊ अबीर गुलाल उडावें आनंद तनन संभारें ॥२॥ मोहनकों गोपी निरखत सब नीकेवदन निहारें ॥ चितवनिमें सबही बसकीनी नागर नंददुलारें ॥३॥ ताल मृदंग मुरली डफबाजें झांझनकी झनकारें ॥ सूरदास प्रभु रीझि मगनभये गोपवधू तनवारें ॥४॥

१३ राग बसंत यह देखि पंचमी ऋतुवसंत ॥ जहां द्रुमअरु वेली सबफलंत ॥१॥ तहां पठई ललिता करिविचार ॥ नवकुंजनमें करिहोंविहार ॥२॥ लेआई सब सिंगारसाज ॥ हरिदोरिमिले मानों मदनराज ॥३॥ नवकेसरि चोवा अंगराग ॥ खेलत गुपाल बढ्यो अनुराग ॥४॥ कुलकोकिल कलरव सुखसमाज ॥ अलिगुंजन पुंजनकुंजगाज ॥५॥ रतिकुंभ लईठाडी निहारी ॥ मधिराजत सरस सबवेरवारि ॥६॥ सखी ताल मृदंग बजायगाय ॥ तहां द्वारिकेश बलिहारी जाय ॥७॥

१४ राग बसंत आई आज वसंत पंचमी खेलन चलोगोपाल ॥ संगसखा लेहो मनमोहन हमलेहें व्रजवाल ॥१॥ चोवाचंदन ओर अरगजा केसरि माटभराई ॥ अबीर गुलाल की झोरी भरिभरि लेहोहाथ पिचकाई ॥२॥ छिरकत हंसत चलत वृंदावन करत कुलाहल देतहें गारी ॥ ग्वालन संग लिये नंदनंदन सखियन संग श्रीराधा प्यारी ॥३॥ एकनाचत एकधाय मिलावत एक मृदंग एकताल बजावत ॥ यह सुखदेखि सुरलोक आनंदित स्यामदास बलिहारी जावत ॥४॥

१५ राग बसंत आज चलोरी वृंदावन बिहरत वसंत पंचमी पंचम गावत ॥ साजिले हुगडुवा भरि चंदन हरखि आनंद मृदंग बजावत ॥१॥ कुसमित द्रुमवेली आछी छबि कूजत कोकिल कीरमानों हम हि बुलावत ॥

कल्यान के प्रभु गिरिधरके परस्पर ये अखियां अतिही सुख पावत ॥२॥

१६ राग बसंत मनमोहन संग ललना विहरत वसंत सरस ऋतुआई ॥ लेलेछरी कुंवरि राधिका कमलनेन पैंधाई ॥१॥ द्वादसवन रतनारे देखियत चहुंदिस केसू फूले ॥ मोरेअंव ओर द्रुमवेली मधुकर परिमल भूले ॥२॥ सिसिर ऋतुमें अति गयो सीत सब रविउत्तर दिस आयो ॥ प्रेम उमगि कोकिला बोली विरहनि विरहज गायो ॥३॥ ताल मृदंग बांसुरी वीना डफ गावत मधुरी वानी ॥ देत परस्पर गारि मुदित व्हे तरुनीबालसयानी ॥४॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जलथलक्रीडा रस पावे ॥ प्रथमवसंत पंचमी लीला सूरदास गुनगावे ॥५॥

१७ राग बसंत आवो वसंत वधावो व्रजकी नारि ॥ सखी सिंघपोरि ठाडे मुरारि ॥ध्रु०॥ नौतन सारी कसूंभी पहरिकें नवसत अभरनसजियें ॥ नवनवसुख मोहन संग विलसत नवल कान्ह पियभजियें ॥१॥ राधा चंद्रभगा चंद्रावलि ललिता भाम सुसीले ॥ संजावली कनिकघट शिरपर अंबमोर जब लीले ॥२॥ चोवा चंदन अगरकुंकुमा उडत गुलाल अबीरे ॥ खेलत फाग भाग बड गोपी छिरकत स्याम शरीरे ॥३॥ वीनावेन झांझ डफ बाजे मृदंग उपंगन ताल ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरनागर रसिक कुंवर गोपाल ॥४॥

१८ राग बसंत कुचगडु बाजो वनमोर कंचुकीवसन ढांपिले राख्योवसंत ॥ गुनमंदिर अरुरूपबगीचा तामें बैठीहे मुखलसंत ॥१॥ कोटिकाम लावन्य विहारीजू जाहिदेखेंते दुखनसंत ॥ ऐसे रसिक हरीदास के स्वामी ताहि भरन आई प्रभु हसंत ॥२॥

१९ राग बसंत जोवनमोर रोमावली सुफल फली कंचुकीवसंत ढांपिलेचली वसंत पूजन ॥ वरनवरन कुसुम प्रफुल्लित अंबमोर ठौरठौर लागेरी कोकिला कूजन ॥१॥ विविध सुगंध संभारि अरगजा गावत ऋतुराज राग सहित व्रजवधूवन ॥ सूरदास मदनमोहन प्यारी ओर पियसहित चाहत कुसल सदां दोऊजन ॥२॥

२० राग बसंत आजवसंत सबे मिलि सजनी पूजो मोहनमति ॥

हरद दूब दधि अक्षत लेकें गावो सौभगगीत ॥१॥ चोवाचंदन अगरकुंकुमा पोह्नोपसेत अरुपति ॥ घरघरते वानिक वनिआए आप आपुनी रीति ॥२॥ मोहन कोमुख निरखिकें करिहों व्रजकीजीत ॥ खेलत हंसत परमसुख उपज्यो गयोहे द्योस निसबीति ॥३॥ खेल परस्पर बढ्यो अति रंगसों रीझे मोहन मीत ॥ कृष्ण जीवन प्रभु सुख सागरमें छांडो नहीं पसीत ॥४॥

२१ राग बसंत गावत वसंत चलीवनेवीर वागे ॥ बल्लभ रीझायवे कों मिली अनुरागे ॥१॥ एकतो पहरावे वागो एकसोंधोलावे ॥ एकतो वंदन छिरके एक अबीर उडावे ॥२॥ एकतो पान खवावे एक दरपन दिखावे ॥ एकतो पंखाकरे एक चमर ढुरावे ॥३॥ आरती करिकेंसव किये मनभाये ॥ वृंदावन चंद बहुभांति रिझाये ॥४॥

२२ राग बसंत गावत चली वसंत वधावन नंदराय दरबार ॥ वानिक वनिठनि चोखमोखसों व्रजजन सब इकसार ॥१॥ अंगिया लाल लसत तनसारी झूमक नवउरहार ॥ वेनीग्रथित रुरत नितंबपर कहाकहूं वडेडवार ॥२॥ म्रगमद आड वडेरी अखियां आंजीअंजनपूरि ॥ प्रफुलित वदन हंसत दुलरावत माहेन जीवनमूरि ॥३॥ पगजेहरि के हरि कटि किंकिनि रह्यो विथिकि सुनिमार ॥ घोषघोष प्रति गलिन गलिन प्रति विछुवनके झनकार ॥४॥ कंचन कुंभसीस परलीने मदन सिंधुतें भरिकें ॥ ढांपेपीत वसन जतनन रचिमोर मंजुरी धरिकें ॥५॥ अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधिनजात विस्तारी ॥ मेनसेन जोनारदेनकों कमलनकमल निथारी ॥६॥ पोहोंची जाय सिंघ पोरीजव विपुल जुवति समुदाई ॥ निजमंदिरतें निकसिजसोदा सनमुख आगेंआई ॥७॥ भईभीर भीतरे भवनन में जहां व्रजराज किसोर ॥ भरत भावते प्रान पियाकों घेरिफेरि चहुंओर ॥८॥ व्रजरानी जब मुरिमुसिक्यानी पकरन भई जवकरकी ॥ लेसंग सखी लखी कछुबतियां मिसही मिस उतसरकी ॥९॥ कुमकुम रंगसों भरि पिचकारी छिरकें जे सुकुमारी ॥ वरजत छीटें जात द्रगनमें धनि वे पोंछनहारी ॥१०॥ चंदन वंदन चोवा मथिकें नीलकंज लपटावे ॥ अलक सिथल ओर पाग सिथल अति पुनि वे बांधि बंधावे ॥११॥ भरत निसंक भरे अकवारी भुजनवीच भुजमेलें ॥ उनमद ग्वाल वदत नहीं

काहू झेलखेल रसरेलें ॥१२॥ कियो रगमगो ललित त्रिभंगी भयो ग्वालिनी मनभायो ॥ टकझकमें झुकि एकही विरियां लालन कंठ लगायो ॥१३॥ ताल मृदंग लीयें श्रीदामा पोहोंचे आय सहाई ॥ हलधर सुवल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥१४॥ खेल मच्यो मनिखचित चोक में कविपे कहा कहि जावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखेंही बनिआवे ॥१५॥

२३ राग बसंत केसरी छींट रुचिर बंदनरज स्याम सुभग तन सोहें ॥ बिचबिच चोवा लपटानों उपमाकों कहि कोहें ॥१॥ यह सुख नव वसंत के ओसर राधानागरि जोहें ॥ चत्रभुजप्रभु गिरिधरन लालछबि कोटिक मन्मथ मोहें ॥२॥

२४ राग बसंत स्याम सुभगतन सोभित छींटें नीकीलागी चंदन की ॥ मंडित सुरंग अबीर कुंकुमा ओर सुदेस रजवंदन की ॥१॥ कुम्हनदास मदन तनमन बलिहारकीयो नंदनंदन की ॥ गिरिधरलाल रची विधिमानो युवतिजन मनफंदनकी ॥२॥

२५ राग बसंत छिरकत छींटछबीली राधे चंदन भरिभरि बोरीरे ॥ अबीर गुलाल बिविधरंग सोंधो लोचन परिगईरोरी ॥१॥ सर्व सब सकियो रसिक कुमारी प्रेमफंद हिंडोरी ॥ सूर प्रभु गिरिधरनलाल कों देरही प्रेम अकोरी ॥२॥

२६ राग बसंत सब अंग छींटे लागी नीको बन्यों बान ॥ गोरा अगर अगरजा छिरकत खेलत गोपीकान्ह ॥१॥ हाथन भरें कनिक पिचकाई भरिभरि दंतसुजान ॥ सुरनर मुनिजन कौतिकभूले जयजय जदुकुल भान ॥२॥ ताल पखावज वेनुबांसुरी राग रागिनी तान ॥ विमलानंद दासवलिवंदित नहीं उपमाकों आन ॥३॥

२७ राग बसंत लाल रंग भीने वागे खेलत हेंरीलालन लाहको सिरपेच बांधे ॥ केसरि आड अगर चंदन की पिचकाई भरिभरि सांधें ॥१॥ एक गावत एक तालदेत एक रवाव बजाबत कांधे ॥ सुघरराय को प्रभु रसबस करिलीनों धाधिलंग धूंधे धांधें ॥२॥

२८ राग बसंत अरुन अबीर जिन डारोहो ललना दूखत आंखि हमारी ॥ काल्हि गुलाल पर्‍यो आंखिनमें अजहू नभई पियसारी ॥१॥ सब सखियन मिलि मतोमत्योहे अबकीबेर देहूं गारी ॥ हाहा खात तेरे पैयां परतिहूं अबहोंचेरी तिहारी ॥२॥ हिलिमिलि खेलो हो पिय हमसों मानों सीख हमारी ॥ धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक निसदिन रहत हंकारी ॥३॥

२९ राग बसंत अबजिन मोहिभरो नंदनंद हों व्याकुल भईभारी ॥ कहत ही कहत कह्यो नहीं मानत देखे नये खिलारी ॥१॥ काल्हि गुलाल पर्‍यो आंखिनमें अजहून भई पियसारी ॥ परमानंद नंद के आंगन खेलत व्रजकीनारी ॥२॥

३० राग बसंत छींट छबीली तन सुख सारी प्यारी पहरे सोहे नवल लाल रस रूप छबीलो निरखत मनमथ मोहे ॥१॥ केलिकला रस कुंज भवन में क्रीडत अतिसुख होहे ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी उपमा कों कहियेकोहे ॥२॥

३१ राग बसंत चटकीली चोली पहरें बीचबीच चोवा लपटानो ॥ परम प्रिय लागत प्यारी कों अपने प्रीतम को बानो ॥१॥ देखत सोभा अंगअंगकी मनसिज मनहिल जानो ॥ सुघरराय प्रभु प्यारी की छबि निरखत मोह्यो गोवर्धनरानो ॥२॥

३२ राग बसंत लालगुपाल गुलाल हमारी आंखिन में जिन डारोजू ॥ बदन चंद्रमा नैन चकोरी इन अंतरजिन पारोजू ॥१॥ गाओ राग वसंत परस्पर अटपटे खेल निवारोजू ॥ कुंकुम रंगसों भरि पिचकारी तकिनेनन जिनमारोजू ॥२॥ वंकविलोचन दुःख के मोचन भरिकें दृष्टि निहारोजू ॥ नागरी नायक सब सुखदायक कृष्णदास कोंतारोजू ॥३॥

३३ राग बसंत ऋतुवसंत के आगम आली प्रचुरमदन को जोर ॥ कैसें धरें कुलवधू धीरज खेलत नंदकिशोर ॥१॥ तेसीये गिरि गोवर्धन पर नूत मंजुरी मोरी ॥ सुनसुन चलीं लालगिरिधरपे बनबन नवल किशोरी

॥२॥ जायमिली अनुराग भरी रस फाग श्यामसों खेली ॥ व्रजपति श्यामत मालहिं लपटी मानों कंचनबेली ॥३॥

३४ राग बसंत नीकी आजु बसंत पंचमी खेलति कुंजविहारी ॥ संग सखी रंग भीनी लीनी श्रीव्रषभानु दुलारी ॥१॥ बूका बंदन केसर चंदन छिरकति पियकौं प्यारी ॥ अरस परस दोऊ भरति भरावति रंग बढ्यौं अति भारी ॥२॥ बाजत ताल मृदंग मुरज ढफ बिच बिच बेनु उचारी ॥ कुंज कुंज में केलि करौ मिलि ललितादिक बलिहारी ॥३॥

३५ राग बसंत राधा गिरिधर बिहरति कुंजन आँईं हो बसंत पंचमी ॥ बन बन द्रुम प्रति कोकिला कूजत मीठे वचन अमी ॥१॥ गावत तान तरँग अगनित गति मृदंग सौं राग जमी ॥ इहि समै हिलमिल 'गोबिंद' प्रभु सौं सब ही भाँति रमी ॥२॥

३६ राग बसंत आज पंचमी शुभदिन नीको काम जनम दिन आयो ॥ रुक्मनि कौंखि चंद्रमा प्रगट्यौं सब जादौं मन भायौं ॥१॥ बाजत ताल पखावज आवज उड़ति अबीर गुलाल ॥ फूले दान देति जादौं पति मागन भए निहाल ॥२॥ हरखि देवता कुसमन बरखति फूलि सब बन राई ॥ परमानंद, मोद अति बाढ्यौं जग सबके सुखदाई ॥३॥

३७ राग बसंत आवो री आवो सब मिली गावो री बसंत राग बधावो री कलश ले सब भाम ॥ मौर बांधि दुल्हे राज बैठ्यौ घर सिंघासन प्रफुलित भये तब रूप लाल सुन्दर स्याम ॥१॥ छिरक्यो री नवल लाल चोवा मृगमद गुलाल सोंधो ले परसो री मुदित भयो काम ॥ बजाओ री अनेक बाजे सुर मंडल बीना नाद मदन मोहन वृन्दावन वृज धाम ॥२॥

३८ राग बसंत फिर बसन्त ऋतु आई सजनी ब्रिंदाबन सुखदाई ॥ चली जँह तँह बंसीबट श्री नंदकुमार कन्हाई ॥१॥ कोकिल कीर मराल मंडली रंग-भोमि मन भाई ॥ ठोर-ठोर बेली द्रुम फूले अबीर गुलाल सोंधाई ॥२॥ कहा बरनौं कुंजन की सोभा कान्ह कुंवर मिलि खेलें ॥ करत बिहार चले जमुना तट अंस-अंस भुज मेलें ॥३॥ नीलांबर पीतांबर सोहे चंदन

बंदन अति घोरी ॥ कही न जात दुहुन की सोभा स्यामा स्याम की जोरी ॥४॥ मंद सुगंध चल्यों मलयानिल सीत पवन सुखरासी ॥ 'मान दास' बलि यह गिरिधर प्रभु ब्रिंदा बीपिन बिलासी ॥५॥

बसंत जगायवे के पद महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५

१ राग बसंत जागि हो लाल, गुपाल, गिरिवरधरन, सरस ऋतुराज बसंत आयौ ॥ फूले द्रुमवेली, फल, फूल, बौरे, अंब, मधुप, कोकिला कीर सैन लायौ ॥१॥ जावौ खेलन, सबै ग्वाल टेरत द्वार, खाऊ भोजन मधु, घृत, मिलायौ ॥ सखी-जूथन लीयें आई है राधिका मच्यौ गहगडराग रंग छायौ ॥२॥ सुनति मृदु-बचन, उठे चौंक नंदलाल, कर लीयें पिचकाई सुबल बुलायौ ॥ निरखि मुख, हरखि हियैं, वारि तन मन प्रान, सूर येहि मिसहि गिरिधर जगायौ ॥३॥

२ राग बसंत प्रात समैं गिरिधरनलाल कौ करति प्रबोध जसोदा मैया ॥ जागौ लाल, चिरैया बोलीं, सुंदर मेरे कुँवर कन्हैया ॥१॥ हलधर संग लैहौ मनमोहन, खेलन जाउ ब्रिन्दाबन धाम ॥ ऋतु बसंत प्रफुलित अति देखियत सुंदर हे कालिंदी ठाम ॥२॥ जननि-बचन सुनति मनमोहन, आनँद उर न समाई ॥ 'कृष्णदास' प्रभु बेगि उठे जब, जननि-जसोदा कंठ लगाई ॥३॥

३ राग बिभास खिलावन आवेंगी व्रजनारी ॥ जागो लाल चिरैयां बोलीं कहे जसुमति महतारी ॥१॥ ओट्यो दूधपान करि मोहन वेगि करो स्नान गुपाल ॥ करिशृंगार नवल बानिक बनि फेंटन भरो गुलाल ॥ बलदाऊले संग सखा सबखेलो अपनेद्वार ॥ कुंकुम चंदनचोवा छिरको घसि मृगमद घनसार ॥३॥ लेकनहेर सुनोमेरेमोहन गावत आवेंगारी ॥ व्रजपति तबही चौंकि उठिबैठे कितमेरी पिचकारी ॥३॥

४ राग बिभास जागि कह्यौ जनुनी सौं मोहन ॥ आजु कहा मोहे बेनि जगायों सों कारज सब कहिए सोहन ॥ तब जसुमति कह्यों आजु पूरन दिन पून्यों सुख की रासी ॥ डांडो रोपन नंद जाईंगे सँग लीए व्रज

वासी ॥२॥ ऊत वृषभानु इतेई तैं नंदराई होड परेगी भारी ॥ इत प्यारो उत प्यारी कों दल को जीते को हारी ॥३॥ ताते बिच मोहन बलदाऊ सौं कही लीजे ॥ और गोप लेऊ रखवारी गोपी सब बस कीजे ॥४॥ यह सुनि रबकि उठे गिरिवरधर तव मैया पय पान पिवावे ॥ देखो आज खेलि होरी कों माखन मोहि खवावे ॥५॥ तब जसुमती गुपाल लाल कों ऊवट नहवायो प्रीत ॥ करि सिंगार परम रूचिकारी व्रजवासीन के मीत ॥६॥ यह सब बात जानि ब्रज वनिता चली सींगारि सिंगारी ॥ मन हरखित सोभित सुंदरि कोटी काम बलिहारी ॥७॥ सब मिलि इक ठौर व्है आई जसुमति ग्रह कें द्वार ॥ भीतर जाई लाल मुख निरखति हरखें लोचन चार ॥८॥ सेन समै सब भेद कह्यौ तब मुसिकाई मोहन मन हर लियो ॥ 'रसिक' प्रीतम जानति अंतर गति मन भायों सब कियों ॥९॥

५ राग बिभास जागो कृष्ण खेलो रंग होरी ॥ अबीर गुलाल लियो भरि झोरी ॥ व्रज नव वधू खेलन कों निकसी घोषराई जु की पोरी ॥१॥ कछु खाओ और सुगंध फैंट भरि करो रगमगो राम तुम जोरी ॥ संग सखा खेलन कों जैहो 'दास' निरखि बोलत मुख होरी ॥२॥

६ राग बिभास भारे भये मेरे लाल होरी खेलो गोप बाल उठो गुपाल लाल दुहो धोरी गैया ॥ उस्नोदक अभ्यंग स्नान करि हो कलेउ कान्ह सजो बिबिधि बान कहति मैया ॥१॥ केसर के कलस भरौ पिचकारी कर धरो अबीर गलाल लेहू रे संग बल भैया ॥ इंडुरी पिंडुरी वारु आरति मंगल वारु राई लोंन उतारुं वार डारुं 'सूर' बल जैया ॥२॥

बसंत कलेऊ के पद (माघसुद ६ से फाल्गुन सुद १५)

१ राग बसंत करौ कलेऊ कहति जसौदा, सुंदर मेरे गिरिधरलाल ॥ दूध, दही, पकवान, मिठाई, माखन, मिसिरी, परम-रसाल ॥१॥ पाछैं खेलनि जाऊ लड़ैते, संग लेहु सब ब्रज के बाल ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा, फैंटन भरौ अबीर गुलाल ॥२॥ कीयौ कलेऊ मन कौ भायौ, हलधर संग सकल मिलि ग्वाल ॥ कीयौ बिचार फागुन खेलनिकौ,

'परमानँद' प्रभु नैन-बिसाल ॥३॥

२ राग बसंत करौ कलेऊ मदन गोपाल ॥ मधु, मेवा, पकवान, मिठाई, भरि-भरि राखे कंचनथाल ॥१॥ माँखन, मिसिरी, सद्य-जम्यौ-दधि, औंट्यो दूध, अरु सरस मलाई ॥ आप हु खाऔ ग्वालन सँग लेकैं, पाछैं खेलौ सघन-बन जाई ॥२॥ करत कलेऊ रामकृष्ण दोऊ, औरहु संग लये सब ग्वाल ॥ करहि बात फागु-खेलनि की, 'कृष्णदास' मनमोहन लाल ॥३॥

३ राग बसंत करौ कलेऊ बलराम कृष्ण तुम मिल ब्रजकी नारी सिमीट सब आई ॥ चोबा चंदन अगर कुंमकुमा साज कामकी सब सज लाई ॥१॥ कछु खायो कछु धरनी गीरायो उमंग आनंद उर आनंद उर न समाय ॥ सूर स्याम होरी रस पागे उठे अचवन करि बीरा खाय ॥२॥

४ राग बिभास करि हो कलेऊ बलराम कृष्ण तुम मिल ब्रज की नारि सिमिट सब आई ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा साज फाग कौं सब लाई ॥१॥ कछू खायो कछू धरनि गिरायो उमँगे आनंद उर न समाई ॥ 'सूर स्याम' होरी रस पागे उठे अचवन करि बीरा खाई ॥२॥

५ राग बिभास जागोलाल बसंत बधावन आवेगी ब्रजनार ॥ उठ हो लाल तुम करहो कलेऊ खेलनको होत अवार ॥१॥ माखन मिश्री दधि मलाई भर भर राखे कंचन थार ॥ इतनी सुनत तुरत उठे बैठे जसोमती बदन निहार ॥२॥ दोऊ भैया करत कलेऊ पाछे मैया करत सिंगार ॥ फगुवा में मेवा धर राखे ओर धरे मोतियन के हार ॥३॥ इतने में ब्रजबाल सबे मिल आई नंदजुके द्वार ॥ करत कुलाहल सुनत ही आतुर आए नंदकुमार ॥४॥ केसर अगर स्यामापर डारत हँसत दे दे करतार ॥ मिसही मिस अंक भरत स्यामको फगुवा दे दे नंदकुमार ॥५॥ फगुवा दिये आनंद मन मानत यह होरी को बड़ो त्योहार ॥ देत असीस सबें ब्रजवनिता हरिदास बलिहार ॥६॥

बसंत- मंगला के पद (महासुद ६ से महासुद १५ तक)

१ राग बसंत श्रीगिरिधरलाल की बानिक ऊपर आज सखी तृन टूटेरी ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा पिचकाइन रंगछूटेरी ॥१॥ लालके नैन रगमगे देखियत अंगअनंगन लूटेरी ॥ कृष्णदास धनि धन्य राधिका अधर सुधारस घूँटेरी ॥२॥

२ राग बसंत खेलत बसंत निस पिय संग जागी ॥ सखी वृंद गोकुल की सीमा गिरिधर पिय पदरज अनुरागी ॥१॥ नवल निकुंज में गुंजत मधुप पिक विविध सुगंध छींट तन लागी ॥ कृष्णदास स्वामिनी जुवति जूथ चुडामनि रिझवत प्रान पति राधा बडभागी ॥२॥

३ राग बसंत सांची कहो मनमोहन मोसो तो खेलों तुम संग होरी ॥ आजु कि रैन कहाँ रहे मोहन कहां करी बरजोरी ॥१॥ मुख पर पीक पीठिपर कंकन हियें हार विन डोरी ॥ जियमें ओर ऊपर कछु औरे चाल चलत कछु ओरी ॥२॥ मोहि बतावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी ॥ भोर भये आये हों मोहन बात कहत कछु जोरी ॥३॥ सूरदास प्रभु एसी न कीजे आय मिलो कहा चोरी ॥ मनमानें त्यों कत नंदसुत अब आई हे होरी ॥४॥

४ राग बसंत देखियत लाल लाल दृग डोरे ॥ काके संग खेले बसंत करि निहोरे ॥१॥ सजलताई प्रगट मानों कुंकम रस बोरे ॥ अरुनताई भई गुलाल बंदन सित छोरे ॥२॥ अंजन छबि लागत मानों चोवा छबि चोरे ॥ वरुनी मानों नूतन पल्लव अधर भये सिधोरे ॥३॥ कबहू रस मत्त नाचत दोऊ कटाक्षन कोरे ॥ गान सुरति भई मानों विविध तान तोरे ॥४॥ देखियत अति सिथिल ताई मांझु झकझोरे ॥ काहेकूं कहत कछु जाने मन मोरे ॥५॥ सनमुख व्हे कबहूं मुख फेरिजात लजोरे ॥ रसिक प्रीतम मेरे तुम आए काके भोरे ॥६॥

५ राग बसंत आज कछू देखियत ओरही बानिक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजीमंग ॥ रसिक कुंवर संग अखारे जागी सजनी अधर

सुखे निस बजावत उपंग ॥१॥ नवनिकुंज रंग मंडपमें नृत्यभूमि साजि सेज सुरंग ॥ तापर बिबिध कलकूजित सखीसुनत श्रवण वन थकित कुरंग ॥२॥ कृष्णदास प्रभु नटवरनागर रचत नयन रति पतिव्रतभंग ॥ मोहनलाल गोवर्धनधारी तोहि मिलन चलि नृत्यक अनंग ॥३॥

६ राग बसंत तेरे नैन उनीदे तीन प्रहर जागे काहे कों सोवत अब पाछली निसा ॥ कछू अलसात बीच श्रम लागत अमितन जाय अधिक रिसा ॥१॥ गिरिधर पियके वदन सुधारस पान करत नहीं जानत तृसा ॥ एतेकहत होयजिन प्रगटित रतिरसरिपु रवि इंद्रदिसा ॥२॥ तुवमुखजोति निरखत उडपति मगन होत निरखि जलद खिसा ॥ कृष्णदास बलिबलि वैभवकी नवनिकुंजग्रह मिलत निसा ॥३॥

७ राग बसंत सहज प्रीति गोपाले भावे । मुख देखें सुखहोय सखीरी प्रीतम नैनसों नैन मिलावे ॥१॥ सहज प्रीति कमल ओर भानें सहज प्रीति कुमोदनी ओर चंदे ॥ सहज प्रीति कोकिला वसंते सहज प्रीती राधा नंदनंदे ॥२॥ सहज प्रीति चात्रक ओर स्वांते सहज प्रीति धरनी जल धारे ॥ मन क्रम वचन दास परमानंद सहज प्रीति कृष्णअवतारे ॥३॥

८ राग बसंत ऋतुबसंत स्याम घर आयो तन मन धन सब वारों ॥ लेगुलाल ऊपरअंगन छिरकों पलकनिसो मगझारों ॥१॥ चोवाचंदन ओर अरगजा सब सखीयन पै डारों ॥ उडति गुलाल लालभयेबादर भरि पिचकारी मारों ॥२॥ खेलोंगी मेंचतुर पियासों आय बसंत संवारों ॥ सूरदास अनहि तनके मुख सबभूषण भरिडारों ॥३॥

९ राग बसंत एक बोल बोलो नंदनंदन तोखेलों तुम संग ॥ परसो जिन काहूकों प्यारे आन अंगनाअंग ॥१॥ बरजतिहों वीरी काहूकी जसुमति सुत जिनलेहु ॥ परिरंभन आलिंगन चुंबन नैन सेन जिनदेहु ॥२॥ मेरे खेल वीच कोऊ भामिनी आयलाल कों भरिहे ॥ प्राननाथहों कहे देतिहों मोपे सहीन परिहे ॥३॥ प्रभु मोहि भरो भरोंहों प्रभु कों खेलो कुंज विहारी ॥ अग्रस्वामीसों कहत स्वामिनी रंग उपजेगो भारी ॥४॥

१० राग बसंत केसरिसों भीज्योवागो भरचोहे गुलाल ।। कहूंकहूं कृष्णागर सोहेतन मोहे मन अतिही सुंदरवर बने नंदलाल ।।१।। सरस फुलेल अरगजा भीने कच ढरकि रही जो पाग अर्धभाल ।। जगतराय के प्रभु मुखहितं बोलछवि उरसि वनी सोहे सुमन माल ।।२।।

११ राग बसंत श्रीगोवर्धन की सिखर चारुपर फूली नवमाधुरी जाई ।। मुकलित फलदल सघन मंजुरी सुमन सुसोभा बहोतभाई ।।१।। कुसमित कुंज पुंज द्रुमवेली निर्झर झरत अनेक ठांई ।। छीतस्वामि व्रजजुवति जूथमें विहरत हें गोकुलके राई ।।२।।

१२ राग बसंत ऐसे रीझे भीझे आए री लाल गावत हे धमारि ।। होंजु गई री भोर ब्रिंदावन भरि लिए अकवारि ।।१।। सुथरी अलक बदनपर बिथुरी निज करसों अली आप सकोरी ।। हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी मिली हे विरह हिरदैरी ।।२।।

१३ राग बसंत खेलति सरस बसंत स्याम बृषभानु कें आँए देखैं री ।। चलौं सिरावन नैन सखी री जनम सुफल करि लेखैं री ।।१।। सौंधे भीने केस साँवरो मदन मनोहर भेखैं री ।। कृपावंत रस नैन चूहचूहे कछुक उठत मुख रेखैं री ।।२।। व्रज बनिता बनि बनि आँई सब स्यामसुँदर मुख पेखैं री ।। कहि भगवान हित राम राई प्यारी राधाकौ भाग बिसेखैं री ।।३।।

१४ राग बसंत सखी व्रज फूले विविध बसंत ।। फूले मोर, कमुद, सरसी अरू, फूले अलि, जल जंत ।।१।। फूले द्रूम बेली फूले द्विज गावत गुनवंत ।। 'व्रजाधीस' जन फुले लखि अति सुख फूले मिलि हरि कंत ।।२।।

बसंत पालने के पद (महासुद ६ से फाल्गुन सुद १५ तक)

१ राग बसंत जसोदा नहीं वरजे अपनोबाल ।। अपनो बाल रसिया गोपाल ।।ध्रु०।। स्नान करन गई जमुनातीर ।। करकंकन अभरन

धरेचीर ॥ मेरी जल प्रवाह तन गई दीठि ॥ पाछेतें कान्ह मेरी मलत पीठि ॥१॥ यह अन्न न खाय मुख पीवे नखीर ॥ यह केतीक वार गयो जमुनातीर ॥ होंवा रोंरी ग्वालिन तेरो ग्यान ॥ यह पलना झूले मेरो वारो कान्ह ॥२॥ वृंदावन देखेमे तरुन कान्ह ॥ घर आये केसें भये अयान ॥ उठि चलीरी ग्वालि जिय उपजी लाज ॥ सुरदास ये प्रभुके काज ॥३॥

२ राग बसंत अति सुंदर मणि जटित पालनो झूलत लाल विहारी ॥ खेलत फाग सखा संगलीनो नाचत दे करतारी ॥१॥ घर घरतें आईं बनबनके पहरें नौतनसारी ॥ तनक गुलाल अबीर नलेले छिरकत राधा प्यारी ॥२॥ गावत गारी आनंद में प्रमुदित फूलीं अंगसुकुमारी ॥ चोवाचंदन अगरकुमकुमा देत शीसतें ढारी ॥३॥ लपटरहे तन वसन रंगमें लागतहे सुखकारी ॥ देख विवशमये मोहन पीय भरलीनी अंकवारी ॥४॥ मिसहीमिस ढिंगआय पालनो झुलवत वृजकीनारी ॥ अबीर गुलाल लगाय कपोलन हंसत देदे करतारी ॥५॥ तनमन मिली प्रान पीयासों नौतन शोभा बाढी ॥ शिथिल वसन मुकुलित कच कबरी प्रेमसिंधुतें काढी ॥६॥ यह सुख रितु वसंत लीलामें बालकेलि सुखकारी ॥ सरबस देत वारप्यारे पै जनगोविंद बलिहारी ॥७॥

३ राग बसंत देख सखिरी पलना झूलत सुंदरश्याम सलौना ॥ चकई भौंरा फिरकनी लहेंदु खेलत विविध खिलौनां ॥१॥ हाथनलई कनक पिचकाई छिरकत नंदललौना ॥ अबीर गुलाल उडावत सबहिन नागर नंदनंदौना ॥२॥ मालतिलक गोरोचन अतिछबि चितवनमें कछुटौना ॥ रूप अनूप अलक घुंघरारी मृगमद आड डिठौना ॥३॥ देखत्तरूप ठगोरीसी लागत अंग अनंग लजौना ॥ घरमें देखे पलना झूलत बाहिर तरुन तरोना ॥४॥ षटरस व्यंजन स्वाद सलोनी इनबिन सबही अलौना ॥ रह्यो न परे गृहछिन मेरी आली कुंजन केलि करौना ॥५॥ गिरिधरलाल की लीला अद्भुत मुनिजन ध्यान धरत धरमौना ॥ अतुलप्रताप अभय पददायक सो जसुमति को ये छोना ॥६॥ लोकलाज कुलकानि तज्यो में अब होनी होय सो हौना ॥ दासनके प्रभु गोवर्धनधर सब सुख फलन फलौना ॥७॥

४ राग बसंत ललित त्रिभंगी लाडिलो ललना ॥ वृंदावन गहवर निकुंजमें युवतिन भुज झूलत हैं पलना ॥१॥ भामिन सुरत सुधा सुख सागर चितवनि चारु विरह दुःखदलना ॥ जमुनातट अशोक वीथिनमें कामिनी कंध बाहुधर चलना ॥२॥ नूपुरकुणित चरण अंबुजपर अशोक वीथिन में कामिनीकंध बाहुधर चलना ॥२॥ नूपुरकुणित चरण अंबुजपर मुखिरित किंकिनी सोभित बलना ॥ कृष्णदास प्रभु नखसिखमोहन गिरिधरलाल प्रेमरस खिलना ॥३॥

५ राग बसंत जसोदा नहीबरजे अपनो कान्ह ॥ अपनो कान्ह सुंदर सुजान ॥१॥ नीर भरन गई यमुना घाट ॥ नही जानदेत धर रोके बाट ॥२॥ कबेंझगर कहेलावोदान ॥ झपटचीर करे खेंचतान ॥३॥ पयपीवत घुटरुवन चलत लाल ॥ यह यमुनातट गयो कोनेचाल ॥४॥ तेरीबात सुनत मोहिहाँसीआत ॥ यह पलना झूलत कछु नही खात ॥५॥ गौचारत निरखे तरुन स्याम ॥ सबेछलतफिरत करे ऐसे काम ॥६॥ सकुचाय ग्वालरही मुख विहार ॥ सूरस्यामकी लीला अपार ॥७॥

६ राग बसंत रतन खचितको पालनो सुंदर झूलत नंदकेलाला ॥ नवसत साज सिंगार सुंदरी झुलवत हैं गोपाला ॥१॥ कोऊ गावत कोऊ झांझ बजावत ढफ लेकोऊ बजावे ॥ धिधिकट धिधिकट मृदंग करत है गतिमेंगति ऊपजावे ॥२॥ चोवाचंदन छिरकि छिरकि कें लाल रगमगो कीनो ॥ अबीर गुलाल उडाय खिलावत पिचकाई भरिलीनो ॥३॥ लाल लाल बदरा छाये नभमें देखतही बनिआवे ॥ चुचुकारत मुख मांडत सब मिलि मनहीमन मुसक्यावे ॥४॥ निरखि निरखि मुख कमल मनोहर प्रेमविवश भईं गोपी॥ मगन भईं तनकी सुधिभूलीं कुलमरजादालोपी ॥५॥ केशर कलश शीश पैढोरत हो हो कहि बोलें ॥ ग्वाल बाल उनमत्तव्हेनाचें गारी गावत डोलें ॥६॥ प्रफुल्लितमन यह फागु खेलमें चहुंदिश आनंद छायो ॥ कुंभनदास लाल गिरिधर कों यह विधि लाड लड्यायो ॥७॥

७ राग बसंत बरजो जसोदाजी काना ॥ मैं जमुनाजल भरन जातही मारग निकस्यो आना ॥ बरजतही मोरी गागरि फोरी लेअबीर मुख साना ॥ सखी सब देतहैं ताना ॥१॥ मेरो लाल पलनामें झूले बालक है नादाना ॥ ये क्या जाने रस की बतीयां क्या जाने खेल जहाना ॥ कहां तुम भूली भाना ॥२॥ तुम सांची तुमरो सुत सांचों हमही करते बहाना ॥ सूरदास व्रजवास न त्यागें व्रजतज अनत न जाना ॥ करों अपनामन माना ॥३॥

राजभोग खेल के पद (महासुद ६ से महासुद १४)

१ राग बसंत राजा अनंग मंत्रीगुपाल ॥ कियो मुजरा करि छवाय भाल ॥ध्रु०॥ प्रथम पठाई नीतिजाय ॥ पुनि सिंघासन बेठे आय ॥ कर जोरे रहे सीसनाई ॥ विनती करि मांगत राजा राई ॥१॥ फूले चहुंदिस तरवरअनेक ॥ बोलत कपोत सुकहंसभेक ॥ अति आमोद भरि छांडेनटेक॥ तहां लेतरास अलिकरि विवेक ॥२॥ तव कियो तिलक रति राजआनि ॥ तवलावत भेटजियडरहिमानि ॥ मनोहरित बिछोना रह्योठान ॥ तरवर दलांकित ताल जानि ॥३॥ नायकमन भायो कामराज ॥ छांडीसवनते दुहूँलाज॥ अपनेअपने मिलि समाज ॥ डोलत रससागर चढि जहाज ॥४॥ अति चतुरराज मंत्री ही देख ॥ तव दियो राज अपनो विसेख ॥ तव अपनो गोपालदास लेख ॥ छांडो कबहूजिन पलनिमेख ॥५॥

२ राग बसंत खेलत गुपाल नव सखिन संग ॥ नवनव अंबर रंगरंग ॥ध्रु०॥ मुरलीवेन डफनये चंग ॥ मधिनईकुहूक बाजे उपंग ॥ सुर समूह नई नई तरंग ॥ जहां नईनई गति उपजत मृदंग ॥१॥ मृगमद लपटे चंदन सुगंध ॥ केसरि कुंकुम मलय मकरंद ॥ हुलसि जुवतिवर वृंदवृंद ॥ लीने लपेटि आनंदकंद ॥२॥ उडी परस्पर अरुन रूंदि ॥ दुरत भरत मुखनेंनमूंदि ॥ घूंघट में मुखलसतमंद ॥ मानों अरुन जलधि में दुरेचंद ॥३॥ सखी एक तव कियोवंद ॥ चतुर बोलि सिखयोसुछंद ॥ पियनाम टेरि कह्यो नंदनंद ॥ रहो रहो भरोजू नागर नंद ॥४॥ हाथ झारि हरिकों दिखाय ॥

चोली में सोंधो दुराय ॥ त्रियन अंक हसिकें बताय ॥ गहेत वही सब परीहें धाय ॥५॥ कोऊ निखरत लोचन अघाय ॥ कोऊ आनद्रग आंजतसिराय ॥ कोऊ मुखपकरि रोरी फिराय ॥ कोऊ कहत भले हो स्यामराय ॥६॥ विवसप्रेम वश स्यामलाल ॥ मन भायो सब करत बाल ॥ भरत अंक भरिभरि गुपाल ॥ सूरदास तहां कामपाल ॥७॥

३ राग बसंत देखो वृंदावन श्रीकमल नेन ॥ आयो आयो मदनगुन गुदरदेन ॥ध्रु०॥ द्रुमनवदल सुवन अनेकरंग ॥ प्रति ललितलता संकुलित संग ॥ करधरे धनुष कटि कसिनिषंग ॥ मानों बने सुभट साजे कवच अंग ॥१॥ कोकिल कुंजरहय हंसमोर ॥ रथसैल शिला पदचर चकोर ॥ वरध्वज पताक तरुतारकेर ॥ निर्झर निसान वाजे भमर भेर ॥२॥ जहां नेम सुमति अतिमलयवात ॥ मानों जेतवसन वाने उडात ॥ रुचिराजत विपिन विलोलपात ॥ धपि धाय धरत अतितुरतगात ॥३॥ सूरदास इम वदत बाल ॥ आयो कामकृपन शिव क्रोध काल ॥ फिरि चितयो चपल लोचन विसाल ॥ यह अपनों करि थापिये गुपाल ॥४॥

४ राग बसंत खेलत वसंत गिरिधरन चंद ॥ आनंदकंद वर मनके फंद ॥ध्रु०॥ सोहत संग सुंदरवेनवीन ॥ वृषभान कुंवरि अतिसयप्रवीन ॥ दोऊ छबिके सिंधु तहां रहतलीन ॥ ललितादि सखीनके नेनमीन ॥१॥ बनी मंजुकुंज जमनाकेकूल ॥ भीने नव केसरि दूकुल ॥ रंगभरत हसत दोऊ सुखकेमूल ॥ जिने देखि मिटे सब तनकी सूल ॥२॥ धिधिकिट धिधिकिट बाजतमृदंग ॥ डिडि डमक डिमक डफ मिलेहे संग ॥ ठठ ठनन ठनन करेतालरंग ॥ गग गनन गनन बाजेउपंग ॥३॥ गावतअलाप तननननन ॥ निंदित कोकिल सम नननन ॥ रंगभरत वलहिकरि झिनि नननन ॥ तबभेरेरीनेन इननननननन ॥४॥ रंग भरत परस्पर करतहास ॥ नहीं बरनि जात रसना विलास ॥ सब बंधीहें जुगल हित प्रेमपास ॥ बलिहारि गयो जहां कृष्णदास ॥५॥

५ राग बसंत देखो वृंदावन को जसवितान ॥ छायो सब पर वरतनपुरान ॥ध्रु०॥ जाकों बरनि वेद रहे मोनधारि ॥ करें ध्यान मान अभिमान

टार ॥ ताकों गहत सकल मिलि व्रजकी नारि ॥ मुख मांडिदेत होरी की गारि ॥१॥ जाकों रिझवतहें सब नाचिगाय ॥ करें वेद युक्ति नाना उपाय ॥ ताके आंजतलोचन दृगनमाय ॥ छांडेनचाय हाहा खवाय ॥२॥ जाके भजत नामतजि कामकेत ॥ भव सागर को वर जानिसेत ॥ दुःख नास करत सुख कोनिकेत ॥ ताकों हँसिहँसिहँसि ग्वालिन गुलचादेत ॥३॥ जाकेवस करें सनिसव प्रमान ॥ डरें लोकपाल सब देतमान ॥ सो तो राधावस करे मुरलीगान ॥ सूरदास प्रभु कंतकान्ह ॥४॥

६ राग बसंत श्रीवृंदावन खेलत गुपाल ॥ बनि बनि आई व्रजकी बाल ॥१॥ नवल सुंदरी नवतमाल ॥ फूले नवल कमल मधि नव रसाल ॥२॥ अपनेकर सुंदर रचितमाल ॥ अवलंबित नागर नंदलाल ॥३॥ नवगोपवधू राजतहेंसंग ॥ गजमोतिन सुंदर लसत मंग ॥४॥ नवकेसरि मेद अरगजा घोरि ॥ छिरकत नागरिकों नवकिसोर ॥५॥ तहां गोपीग्वाल सुंदर सुदेस ॥ राजतमाला विविध केस ॥६॥ नंदनंदन को भुवविलास ॥ सदां रहो मन सूरदास ॥७॥

७ राग बसंत देखो वृंदावनको भूमि भागु ॥ जहां राधामाधव खेलत फागु ॥ध्रु०॥ जाको शेषसहस्त्र मुखलहे न अंत गुनगावे नारदसे अनंत ॥ जाको अगम निगम कहें तेज पुंज ॥ सोतो होहो करत फिरत कुंजकुंज ॥१॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटि इन्द्र ॥ जाके कोटिक रवि कोटिचंद्र ॥ जाको ध्यानधरत मुनिरहेहारि ॥ ताकोंसकल गोपी मिल देत गारि ॥ सोहे मोरमुकुट सिरतिलकभाल ॥ ऐसें ललित लोल लोचन बिशाल ॥ जाकि चितवनि मुसकिनि हंसचाल ॥ लखि मोहि रहीं सब ब्रज की बाल ॥३॥ जहां बाजेबाजत तूरिताल ॥ सुरमंडल महुबरिधुनि रसाल ॥ बीना उपंग मुरली मृदंग ॥ बाजेंरायगिडगिडी ओरचंग ॥४॥ जहां करत कुतुहल गोपीग्वाल ॥ तहां उडति अबीर कुंकुम गुलाल ॥ ऐसे छांडत छिरकत फिरें गुपाल ॥ तातें हरहर हरि हंसिभये खुशाल ॥५॥ जाकों बेद कहतिहैं नेतिनेति ॥ जासों हंसिहंसि ग्वालिनी फगुवा लेत ॥ अद्भुत लीला अपरंपार ॥ जाको सुरनर मुनिकरें जैजैकार ॥ राधाजीवन ऊरको हार ॥

ऐसे मुरलीदास प्रभु करें बिहार ॥६॥

८ राग बसंत देखो राधा माधो सरसजोर खेलत बसंत पिय सरसजोर ॥ खेलत बसंत पिय नवकिशोर ॥ध्रु०॥ इत हलधर संग समस्त बाल ॥ मधि नायक सोहे नंदलाल ॥ उत जुवती जूथ अद्भुत रूप ॥ मधि नायक सोहें स्यामा अनूप ॥१॥ बहोरि निकसि चले जमुनातीर ॥ मानों रति नायक जात धीर ॥ देखत रति नायक बने जाय ॥ संग ऋतु वसंत ले परतपाय ॥२॥ बाजत ताल मृदंग तूर ॥ पुनि भेरि निसान रबाब भूर ॥ डफ सहनाई झांझ ढोल ॥ हँसत परस्पर करत बोल ॥३॥ चोवा चंदन मथिक पूर ॥ साख अगर अगरजा बहोत चूर ॥ जाई जुही चंपक रायवेलि ॥ रसिक सखन में करत केलि ॥४॥ व्रज बाढ्यो कोतिक अनंत ॥ सुंदरि सब मिलि कियो मंत ॥ तुम नंदनंदन को पकरि लेहु ॥ सखी संकरषन को माखेहु ॥५॥ तब नवलवधु कीनों उपाई ॥ चहुँदिशतें सब चली धाई ॥ श्री राधा पकरि स्याम कों लाई ॥ सखी संकरषन जिन भाजिपाई ॥६॥ अहो संकरषन जू सुनोवात ॥ नंदलाल छांडि तुम कहां जात ॥ देगारी बोहो विधि अनेक ॥ तब हलधर पकरे सखी एक ॥७॥ अंजन हरधर नेनदीन ॥ कुंकुममुख मंजनजु कीन ॥ हरधवजू फगुवा आनिदेहु ॥ जुम कमलनेन कों छुडाईलेहु ॥८॥ जो मांग्योसों फगुवा दीन ॥ नवललाल संग केलि कोन हसत खेलत चले अपने धाम ॥ व्रज जुवती भई पूरन काम ॥९॥ नंदरानी ठाडी पोरिद्धार ॥ नोछावरि करि देतवार ॥ वृषभान सुता संग रसिकराय ॥ जन मानिकचंद बलिहारी जाय ॥१०॥

९ राग बसंत खेलतवसंत बलभद्रदेव ॥ लीलाअनंत कोऊलहेनभेव ॥ध्रु०॥ सनिकादिआदि सुखरचेग्वार ॥ प्रगटकरन व्रजरजविहार ॥ सुखनिधि गिरिधर धरन धीर ॥ लियोबांटि बांटि ओलिन अवीर ॥१॥ मधुमंगल ओरसुबल सीदाम ॥ सखासिरोमनि करत काम ॥ मधुमंगल आदि सकल ग्वाल ॥ बने सबके शिरोमनि नंदलाल ॥२॥ रचिपचि बहु अंबर बनाय ॥ वागेबहु केसरि रंगाय ॥ रहीपाग लसि सिरसुरंग ॥ कुंवर रसिक मनि श्रीत्रिभंग ॥३॥ सुनत चपल सब उठीहेंबाल ॥ भरि भाजन लीने गुलाल ॥

हुलसि उठी तजि लोकलाज ॥ लईबोलि सब सखीसमाज ॥४॥ काहूकी कोऊन वदत कान ॥ भरति हितूनकों जानजान ब्रजराज कुंवर वर निकटआय ॥ नैननि सिराय निरखे अघाय ॥५॥ चतुर सखी एक हासकीन ॥ दुरिमुरि बचायद्रग गांठदीन ॥ पाछेंते तारी बजाय ॥ व्याहगीत सब उठीं गाय ॥६॥ तब बोले स्यामघन अपने मेल ॥ खिंच्यो चीर तब लख्यो खेल ॥ लगीलाज चितवें न ओर ॥ सखा कहें आवों गांठ तोर ॥७॥ सुनत बाल तब चलींहैं धाय ॥ बलभद्रवीरकों गह्योजाय ॥ कटिपटुका पटपीत लीन ॥ भली भांत रंगसमरदीन ॥८॥ परम पुरुष कोऊ लहेनपार ॥ ब्रजवासिन हित सहतगार ॥ सूरस्याम हंसि कहत बैन ॥ भरति-नैनसुख-बहुत दैन ॥९॥

१० राग बसंत वृन्दावन बिहरति बसंत चलि देखों नंद दुलारो ॥ नटवर भेष सज्यों रंग भीनों सोभित सीस टीपारो ॥१॥ सँग सखा सोभित रँग भीनें रँगन रगमगे ग्वाल ॥ सुनति चली उठि धाई लाडिली सँग लीए ब्रज बाल ॥२॥ साजि सिंगार बनी अति सुंदर इक बेष इक सार ॥ कोकिल कैसें कंठ हि गावति मंगल गीत सुढार ॥३॥ बाजति ताल मृदंग झांझ ढफ लागति परम सोहाये ॥ जूथ परस्पर टोल दोऊन कै सबहिन के मन भाये ॥४॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा छिरकति अरु छिरकावें ॥ लाल गुलाल अबीर घुंघरि में तन अभिलाष बढावें ॥५॥ भली भई आयों बसंत नर नारीन अति सुख पायौं ॥ आनँद भयो गयो दुःख अब पसु पंछीन मन सरसायौ ॥६॥ गोपीजन फूले समात नहीं ब्रज सुख कहति न आवें ॥ 'नंददास' ब्रज बास बसै अरु जो देखे सौं गावें ॥७॥

११ राग बसंत नवल बसंत बीच वृन्दावन मोहन रास रचायौं ॥ सुर बिमान चढि देखन आए निरखि निरखि सुख पायौं ॥१॥ नाँचति लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायौं ॥ ताल मृदंग, झांझ, ढफ बाजति सब इक तार मिलायौं ॥२॥ साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी मिलि रससिंधु बढायौं ॥ गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अदभुत रंग जमायौं ॥३॥ कहा कहौं लीला राधा बरकी किनहुं अंत न पायौं ॥ या लीला पै वार वारनैं 'रामदास'

जस गायौ ॥४॥

१२ राग बसंत कालिंदी के तीर मनोहर, क्रीडत हें दोऊ भैया ॥ मल्लकाछ कटि सीस टिपारो देखत अति सचु पैया ॥१॥ वृन्दावन रमनीय भूमि अति कूजत मोर पपैया ॥ राग रागनी तान सरस सुर कोकिलनाद सुहैया ॥२॥ संग राधिक ललितादि अष्ट सखी कुंकुम कलस भरैया ॥ छिरकत स्यामस्याम कुंजनमें रुचिर गुलाल उडैया ॥३॥ बरखत कुसुम कुसुम देवमुनि नारद आनन्द अति हरखैया ॥ कृष्णदास प्रभु यह सुख बिलसत निरखत लेत बलैया ॥४॥

१३ राग बसंत गोवर्धनकी शिखरपें ठाडो नृत्यत कुंवर कन्हैया ॥ काछनि बनी हे ललित मनोहर टीपारो सुरंग धरैया ॥१॥ चलो सखी देखनकों जइये, राधा नवल दुलैया ॥ राग बसंत आलाप गावत मधुरे मृदंग बजैया ॥२॥ नाचत मोर कोकिला कूजत रुचिर गुलाल उडैया ॥ मच्यो खेल अद्‌भुत अपार सखी ब्रजाधीस बल जैया ॥३॥

१४ राग बसंत वृंदावन रहे सीधाय बिहरत रो स्यामास्याम मल्लकाछ फेंट बांधी खेलत बसंत । जटित टीपारो ससि नृतत अनेक रंग उपजावत सम्मान कोकिला हंसत । बाजत मृदंग ताल सहनाइ ढोल ढमक गावत हिंडोल राग भये मदनमोहन गिरिवरधर राधा भूले गुलाल बरखावत गगन सघन भयो सूर छिपंत ॥

बसंत राजभोग खेल के पद (शेहरा के पद)

१ राग बसंत ओर राग सब भये बाराती दूल्हे राग बसंत ॥ मदन महोच्छव आज सखिरी बिदा भयौ हेमंत ॥१॥ मधुरे सुर कोकिल कल कूजत बोलति मोर हँसत ॥ गावति नारि पंचम सुर ऊँचे जैसें पिक गुनवंत ॥२॥ हाथन लई कनक पिचकाई मोहन चाल चलंति ॥ 'कुंभनदास' स्यामा प्यारी कों मिल्यो हे भाँमतो कंत ॥३॥

२ राग बसंत गोपीजन वल्लभ जयमुकुंद ॥ मुख मुरलीनाद आनंदकंद ॥ध्रु०॥ जयरास रसिक रवनी सुवेस ॥ सिखिन शिखंड विराजे

केस ।। गुजान वनधातु विचित्र देह ।। दरसन मनहरन बढावेनेह ।।१।। जयसुंदर मंदिर धरन धीर ।। वृंदावन बिहरत गोपवीर ।। वनिता सतजूथहें पर्मधाम ।। लावन्यकलेवर कोटि काम ।।२।। जयजय वैजंतीवनी माल ।। जयकमल अरुन लोचन विसाल ।। कुंडल मंडित भुजदंड मूल ।। निर्तकरत कालिंदी कूल ।।३।। जयजय पुलकित खग मृगमराल ।। सुरनर मुनिध्यानी ध्यानटाल ।। सारसपिक मूर्छित सुतान ।। थकित भए सुरमुनि विमान ।।४।। जयजयश्रीकृष्ण कलानिधान ।। करुनामय जदुकुल जलजभान ।। भगवंत अनंत चरित्रतोर ।। कहें माधो दास मनमगन मोर ।।५।।

३ राग बसंत देखो रसिकलाल वागो रसाल ।। खेलत वसंत पिय रसिक बाल ।।ध्रु०।। घोषघोष की सुघर नारि ।। रूप रंग सव एक सारि ।। गावत जुरि मिलि मीठी गारि ।। हसत कुंकुमा सीसडारि ।।१।। नववसंत अभरन अमोल ।। सारीमें झलमल झकोल ।। द्रग अंजन भरि मुख तंबोल ।। हुलसत विलसत भई लोल ।।२।। एक कृष्णागर लेरही हाथ ।। लेपति उरसि भुज प्रिया साथ ।। सोंधे में वोरे गिरिधरन नाथ ।। चोवा वह चल्यो कच पाग माथ ।।३।। एक कंज पराग लगावे गाल ।। एक गूंथि कुसम पहरावे माल ।। गहि रही कटितट जटित लाल ।। मानों निकरिनील तरुकरमृनाल ।।४।। उडतहे वंदन ओर अबीर ।। अरुन पीत भयो स्यामचीर ।। सुवल वगर में बहोत भीर ।। वरषत पिचकारिन रंगधीर ।।५।। कौस्तभ मनि कोंधत भीजगात ।। वंदन भीतर सगबगात ।। पानखात मुसिकात जात ।। किलकि किलकि सखी करत बात ।।६।। वाजत ताल मृदंग चंग ।। सारंगी सुरवीन संग ।। भरत भरावत नेन रंग ।। निरखत बनि आवे मोंह भ्रंग ।।७।। सिंघ पोरि ओर व्रज अवास ।। चंदन बादर कियो निवास ।। फेलि रह्यो सौरमा सुवास ।। रसमें रसमय पिय विलास ।।८।। एक श्रवननि कहत चोख ।। स्यामलाल अंगअंगपोख ।। हसत श्रीदामा सखातोक ।। फागुन की हमें कछून धोख ।।९।। रति नायक छबि अति अनूप ।। नवपल्लव अभिनव व्रज स्वरूप ।। श्रीभट परमानंदजूप ।। आनंदित श्रीनंदराय भूप ।।१०।।

४ राग बसंत वंदो पदपंकज नंदलाल ।। जे भवतारन पूरन कृपाल

॥ध्रु०॥ चित चिंतत होत बुधि बिसाल ॥ कृपाकरन ओर दीनपाल ॥ सदां बसो मेरे हृदय माय ॥ कुंबर माधुरी चितहि धाय ॥१॥ तिमर हरन सुखकरानंद ॥ मुनिवंदन आनंदकंद ॥ स्याम मुकटमनि कमलनेन ॥ छबि समूहपर लजितमेन ॥२॥ गोकुलपति गुन नांहिनपार ॥ श्रीनंद सुवन सुमिरों उदार ॥ निगमागम सब ओघसार ॥ सोई वृंदावन प्रगट्यो विहार ॥३॥ ऋतुवसंत पहलो समाज ॥ तहांतमुदित जुवतिजन सजजुसाज ॥ मुदित चले जहां सूरस्याम ॥ वसंत वधावन नंदधाम ॥४॥

५ राग बसंत खेलत वसंत श्रीनंदलाल ॥ भरे रंग सब ग्वालबाल ॥ध्रु०॥ जूथजूथ सव नवलवाल ॥ सजिसमाज उडवत गुलाल ॥ गावत पंचम सरस राग ॥ रूपसील भरी सब सुहाग ॥१॥ नवकेशरि भाजन भराय ॥ चंदनसों मृगमद मिलाय ॥ बहुगुलाल छिरकें फुलेल ॥ कुंबर कुंबरि रंग वढीकेलि ॥२॥ लालहिं ललना भरें धाय ॥ मुखरोरी मांडें बनाय ॥ भलेंजुकहें तारी बजाय ॥ भले त्रियन वस परेहो आय ॥३॥ अंगअंग रंग सब सुहाय ॥ पियलोचन निरखें अघाय ॥ विलसत सुख बडभाग वाम ॥ सुखी भये तहां सूरस्याम ॥४॥

६ राग बसंत खेलत वसंत गिरिधरनलाल ॥ मनमोहन सोहन दृगविशाल ॥ध्रु०॥ संगसोहत सुंदर अनंग ग्वाल ॥ भीने रंगकेसरि करत ख्याल ॥ उडत अबीर पचरंगुलाल ॥ वाजत मृदंग डफ झांजताल ॥१॥ आई बनिबनि मिलि व्रजकीवाम ॥ श्रीराधा ललितादिक सुनाम ॥ गावत पंचम वंधीप्रेमदाम ॥ सोभा पावत भयो नंदधाम ॥२॥ रंग भरत भरावत करत रंग ॥ रंग भरे बसन राजतसुअंग ॥ लुब्धे सुगंध भये मत्तमृंग ॥ मृदुबोलत डोलत संगसंग ॥३॥ भरिलयो अबीर मुठीसुहेत ॥ दोऊ तज्यो चाहत पुनिराखिलेत ॥ दृगमूंदन चमकनि हैं सुचेत ॥ बाढत छबि सोगुनी सुखनिकेत ॥४॥ लेवरन वरन बररंग अमोल ॥ छिरकत हितुव पिय हितकलोल ॥ फविरहीवूंद सोहतदुकूल ॥ मानों फूलि रहे बहुबरन फूल ॥५॥ भरे नवल वाम गिरिधरहि धाय ॥ रहे विविध भेद अंगअंग छाय ॥ जहां निरखत सोभा कहीन आय ॥ तहां स्याम रंग जान्यों न जाय ॥६॥ भई

मोहित सुर वनिता विमान ॥ मोहे गंधर्व सुनि मधुर गान ॥ रंग भर्यो पिय अति सुजान ॥ यह राखि हियें कृष्णदास ध्यान ॥७॥

७ राग बसंत खेलें फागु जमुनातट नंदकुमार ॥ द्रुममोरे विपिन अठार भार ॥ध्रु०॥ हलधर गिरिधर ग्वाल संग ॥ मिलि भरत परस्पर करत रंग ॥ बाजे मृदंग उपंग चंग ॥ राजे सुंदर विचित्र अंग ॥१॥ तालमुरज उपंग ढोल ॥ बहुवंदन उडत गुलाल रोल ॥ वास लुब्ध आये मधुपटोल ॥ तेऊ अरुन भये अलिवर निचोल ॥२॥ बहुरि मधुष गये अपने ठांय ॥ भरतारन भमरी नहीं पत्यांय ॥ तुम राते भये पति कोन भाय ॥ कोऊ कपट रूप मति बैठो आय ॥३॥ खट पद कहें तुम भूलीवाल ॥ जहां धरागिरि अंबर भयो गुलाल ॥ तहां ऋतु वसंत विहरत गुपाल ॥ जाडा कृष्णा को प्रभु मोहनलाल ॥४॥

८ राग बसंत हरिजूके आवन की बलिहारी ॥ वासरगति देंखतिहें ठाडी प्रेम मुदित व्रजनारीं ॥१॥ ऋतु वसंत कुसमितवन देखियत मधुपवृंद जसगावें ॥ जेमुनिआय रहत वृंदावन स्याम मनोहर भावें ॥२॥ नीको भेष वन्यों मनमोहन राजमणि उरहार ॥ मोरपक्ष सिरमुकट विराजत नंदकुमार उदार ॥३॥ घोष प्रवेस कियोहे संग मिलि गौरज मंडित देह ॥ परमानंद स्वामी हित कारन जसुमति नंदसनेह ॥४॥

संध्या आरती

१ राग बसंत फूल के सिंगार फूलन की सारी पैहरै तन ॥ फूलन की कंचुकी फूलन की ओढनी, अंग अंग फूले ललना कैं मन ॥१॥ फूलन के नवकेसरि फूलन की माला फूलन के आभरन केस गूँथे फूलन घन ॥ फूलन के हाव भाव फूलन के चोज चाउ बिबिधि बरन फूल्यौं ब्रिंदाबन ॥२॥ श्रीगिरिधारि पिय के फूल नाहीं कोऊ समतूल गाबति बसंत राग मिलि जुवति जन ॥ 'कृष्णदास' बलिहारी छिनु छिनु रखवारी अखिल लोक जुवति राधिका प्रान पतिन ॥३॥

२ राग बसंत विविध बसंत बनाऐं चलौं सब देखन कुँवर कन्हाई ॥

गिरिघटीयां द्रुमलता सुगंध अलि ठाडे सजि सुखदाई ॥१॥ बागों केसरी चोवा सोहै सुरँग गुलाल उडाई ॥ ब्रजबालक गावति कोलाहल धुनि 'ब्रजाधीस' मन भाई ॥२॥

३ राग बसंत चलरी नवल निकुंज मंदिर मैं बन बसंत बैठे पिय प्यारी ॥ बागो पीत रँग बन्यौं भूषन लाल रँग छबि न्यारी ॥१॥ सारी सुरंग, सोहै छबि नीकी कँचुकी पीत प्रीति अति भारी ॥ करि दरसन सुख केलि 'सरस रंग' कुसल बिचित्र रँजीत सुखकारी ॥२॥

४ राग हिंडोल नंदनंदन नवल नागर किसोर बर खेलति बसंत बन्यों रंग अति भारी ॥ राग हिंडोल गावति नवल नागरी अति हिं रस भीज रही है दति तारी ॥१॥ लाल गुलाल रह्यो गगनलों घुमडि कैं केसरि कुँमकुमा भरि हो पिचकारी ॥ ताल किन्नर मुरज बीन ढफ बाज हीं बिच मोहन मुरली सप्त सुर धारी ॥२॥ सुभग जमुना तीर ठौर ब्रिंदा बिपुन बाल सुक कोकिला कीर किलकारी ॥ गहे द्रुम डार ठाढे नँद लाल जहाँ राधिका सब सखि मधि सुकुमारी ॥३॥ बढ्यों दुहूँ दिस खेलि अधिक सोहावनी हँसति मुसिकाय यौं ब्रज नारी ॥ मदन मोहन गिरिधर वर पीय जु देव मुनि करति कुसुम बरखा री ॥४॥

टिपारे के पद

१ राग हिंडोल नृत्यत गावति बजावति मधुर मृदंग सप्तस्वरन मिलि राग हिंडोल ॥ पंचम स्वर लेअलापत उघटतहै सप्ततान मान थेईताथेईता थेईथेई कहति बोल ॥१॥ कनकवरन टिपारोसिर कमलवदन काछिनी कटि छिरकत राधा करत कलोल ॥ कृष्णदास नटवत गिरिधरपिय सुरबनिता वारत अमोल ॥३॥

२ राग हिंडोल सब मिल गावत राग हिंडोल बाजे बजावत घन सुं बरसे मिलि बधावन चली बसन्त ॥ बरन-बरन आभरन पहेरे नौतन हाथ लिये गडुवा चलत चाल गजगंत ॥१॥ एकजु नाचत देती सुधंग लाग दाट उरप तिरप दूर जाई सो मिलि पोहोप मंजरी भर केसर कुमकुमा अबीर

छिरकती ॥ चिरजीयो 'तानसेन' के प्रभु राजा राम देत मुक्ताहल नग कचन बरखत खतपति ॥

श्रीगुसांईजी भद्रे खेल के पद

१ राग बसंत खेलत वसंत वरविठ्ठलेश ॥ आनंदकंद गोकुल सुदेस ॥धृ०॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग ॥ श्रीबालकृष्ण लज्जित अनंग ॥ श्री गोकुलनाथ अनाथ नाथ ॥ रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ ॥१॥ श्रीघनस्याम अभिराम धाम ॥ कल्यानराय परिपूरनकाम ॥ मुरलीधर आदि समस्त बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल ॥२॥ तहां बाजत ताल मृदंग चंग ॥ जहां उडत गुलाल अबीर रंग ॥ श्रीगिरिवरधारी जहां खेलत आई ॥ तहां लघुगुपाल बलिहारी जाई ॥३॥

२ राग बसंत वंदो पद पंकज विठ्ठलेश ॥ श्रीवल्लभ कुल दीपक सुवेस ॥१॥ जिनकी महिमा जे कहें उदार ॥ अतिजस प्रकट कियो संसार ॥२॥ अनुसरन नीचजेतजि विकार ॥ तिनें भव निधि तरत न लगतवार ॥३॥ करिसारअरथ श्री भागवत प्रमान ॥ किये खंडन पाखंड आन ॥४॥ बांधि मर्यादा समवेद मान ॥ जन दीन उद्धरन सुख निरवान ॥ तिहिवंस परम आनंद देन ॥ श्री पुरुषोत्तम सब सुखके एन ॥५॥

३ राग बसंत खेलत बसंत वर विठ्ठलेश ॥ मिलि रसिकराय गोवर्धनेश ॥ध्रु०॥ मृगमद कपूर केसरि सुरंग ॥ अति सोंधो सान्यों कुसुमरंग ॥ दोऊ भरि पिचकाई अति उमंग ॥ तकिभरत परस्पर सुभग अंग ॥१॥ भरिनव अबीर नौतन गुलाल ॥ अरगजा लगावत अललित गाल ॥ दोऊ हसतलसत आनंद ख्याल ॥ पहराबत सवन सुगंध माल ॥२॥ चमेली फुलेल सरायवेलि ॥ मच्यो खेल अजर रंग रेलि ॥ सब गोकुल ॥ सौरभ रह्यो फेलि ॥ मधुमत्त मधुप रस रह्यो झेलि ॥३॥ तहां बाजत चंग मृदंगताल ॥ सुर मिलत मुरली गावे गुपाल ॥ व्रजजन रीझे जिय अति रसाल ॥ सुखदेत सबन गिरिधरनलाल ॥४॥

४ राग बसंत खेलत वसंत वल्लभ कुमार ॥ सोभा समुद्र बाढ्यो

अपार ॥१॥ श्रीगिरिधर गिरिधरन साथ ॥ रंगभरत कनिक पिचकाई हाथ ॥२॥ श्रीगोविंद बालकृष्णजू संग ॥ छिरकत डारत बहुभांति रंग ॥३॥ रस खेलत खेलत गोकुलके नाथ ॥ केसरि रंग सोहत पागमाथ ॥४॥ श्रीरघुपति जदुपति अतिसुदेस ॥ घनस्याम सुभग सुंदर सुवेस ॥५॥ श्रीकल्यान राई लीला रसाल ॥ मुरलीधर दामोदर कृपाल ॥६॥ श्रीगोपीनाथ बालक विनोद ॥ सेवकजन निरखत मन प्रमोद ॥७॥ श्रीगोकुल परम सुदेश धाम ॥ मिलि गावत गीत विचित्र वाम ॥८॥ बाजत मृदंग मुख चंगरंग ॥ वीना कठताल पिनाक उपंग ॥९॥ केसरि चोवा मृगमद फुलेल ॥ व्रजभामिनि छिरकत रेलपेल ॥१०॥ झोरी भरिभरि उडवत गुलाल ॥ मुख बोलत होहोहोरी ग्वाल ॥११॥ यह सुख सोभा मोपे कही न जाय ॥ जनदास निरखि बलिहारी जाय ॥१२॥

५ राग बसंत आज वसंत बधायोहे श्रीवल्लभ राजदुवार ॥ श्री विठ्ठलनाथ कीयो हे रचिरुचि नव वसंत को सिंगार ॥१॥ वल्लभीसृष्टि समाज संग सब बोलत जय जयकार ॥ पुष्टि भावसों पूजत हें मिलि बाढ्यो हे रंग अपार ॥ प्रेम भक्ति को दान करन श्रीवल्लभ परम उदार ॥ कृपादृष्टि अवलोकि दासकों देत हें पान उगार ॥३॥ श्रीवल्लभराजकुमार लाल व्रजराज कुंवव अनुहार ॥ एसो अद्‌भुत रूप अनुपम रसिक जात बलिहार ॥४॥

६ राग बसंत केसरी उपरना ओढें केसर की धौती ॥ केसर को तिलक सोहे श्रीविठ्ठल छबि जौती ॥१॥ खट मुद्रा सोभित माला उर आभूषन भूषित सब अंग ॥ नख सिख निरखति श्रीवल्लभ सुत लजित भयों अनंग ॥२॥ आयों ऋतुराज परम रमनीक अति सुखकारी फागुन मास ॥ अति सुखदाइक कृष्ण सप्तमी व्रजपति पूरी आस ॥३॥ आजु बडो दिन महा महोच्छव करत श्रीविठ्ठलनाथ ॥ गिरधर आदि प्रभृति सप्त सुत निजजन कीए सनाथ ॥४॥ कीए सुगंध फूलेल उबटनो कीए जु केसरि स्नान ॥ कीए सिंगार मनोहर सब अँग पीत बसन परिधान ॥५॥ नख सिख विविधि भाँति आभूषन सोभित गिरिधर लाल ॥ कुलह केसरी सीस विराजीति मृगमद तिलक सुभाल ॥६॥ खट रस विंजन विविधि भाँति के कीए पकवान रसाल ॥

आदर सौं जिमावति भावति गोकुल के प्रतिपाल ॥७॥ दे बीरा छिरकति चोवा चंदन कुँमकुम अबीर गुलाल ॥ ज्यों गुलाब कुसुम अति सोभित, सोभित सुंदर भाल ॥८॥ गावति गुन गंधर्व गलित मन बाजति सरस मृदंग ॥ ताल रबाब झांझि ढफ महुवरि राजत सरस सुधंग ॥९॥ अति आदर सौं करि न्योछावर आनंद उर न समाई ॥ आरति वारत श्रीमुख उपर 'गोविंद' बलि बलि जाई ॥१०॥

७ राग बसंत खेलत वसंत विठ्ठलेशराय ॥ निजसेवक सुख देखत हे आय ॥ श्रीगिरधर राजा बुलाय ॥ श्रीगोविंदराय पिचकारी लाय ॥१॥ श्रीबालकृष्ण छबि कही न जाय ॥ श्री गोकुलनाथ लीला दिखाय ॥ रघुनाथलाल अरगजा लाय ॥ यदुनाथ लाल चोवा मगाय ॥२॥ घनश्याम लाल फेंटन भराय ॥ सब बालक खेलत एकदाय ॥ तहां सूरदास नाचत हें आय ॥ परमानंद घोरि गुलाल लाय ॥३॥ चत्रभुज केसर माट भराय ॥ छीतस्वामी बूका फेंकी जाय ॥ नंददास निरख छबि कहत आय ॥ गावे कुमनदास बीना बजाय ॥४॥ सब गोविंद बालक छिरके आय ॥ कोऊ नाचत देहदसा भुलाय ॥ सब बालक हो हो बोले आय ॥ उडे अबीर गुलाल घुघर कहाय ॥५॥ पिचकारी इत उत छोड़े जाय ॥ फेंकत फूल फूले न अघाय ॥ कोऊ गावत सुर अति सोहाय ॥ बाजे ताल मृदंग उपंग भाय ॥६॥ बिच मोहो चंग मुरली बजाय ॥ कोऊ डफ ले महुवर सों मिलाय ॥ एक नाचत पग नूपुर बजाय ॥ बाढ्यो सुख समुद्र कछु कही न जाय ॥ सब बालक रंगनि अंग चुचाय ॥ गोकुल घरघर सुखही छाय ॥ सोभा कहा कहे कबि बनाय ॥ यह सुख सब सेवक दिखाय ॥८॥ सुर कुसुमनि बरसें आय ॥ सब गावत मीठी गारी भाय ॥ तब अपने मनोरथ करत आय ॥ तहां कृष्णदास बलिहारी जाय ॥९॥

८ राग बसंत राग रंग रंगी रसको रास रंग रंगी ॥ श्री लक्ष्मणभट ये लाल रस की मुरलिका रंध्र रंध्र घर-घर मधुरामृत पूरित प्रिया प्रसंग सावेष्टित सुन्दर सुतडित घनतरंगी ॥१॥ स्वर वर रस समुद्र प्रगट संपुट कुंज संगी । पद्मनाभ प्रभु रसाल दान देत लेत गोपी नेह द्रव्य सौंदर्य जुरी

भरी रही प्रेम पेंठ तीन्यो लोक त्रिभंगी ॥२॥

९ राग बसंत श्री वल्लभ प्रभु करुना सागर जगत उजागर गाइए ॥ निरख-निरख मंगल मुख की छबि बल बल बल जाइए ॥१॥ जिनकी कृपा अनुग्रहतें श्री गिरिधरलाल लड़ाइए ॥ अनायास सब सुख को बहिये जीवन को फल पाइए ॥२॥ चरन परस तनरूप दरश सब ही दुःख दूर बहाइए ॥ श्री बल्लभ गुण गाइए यातें रसिक कहाइए ॥३॥

१० राग बसंत श्री वल्लभ कुलमंडल जन रंजन सुखकारी ॥ श्री विठ्ठलनाथ पधार्या पोते गिरि गोवर्धनधारी ॥१॥ एकरूप बहुरूप धरीने लीला बहु विस्तारी ॥ नित्य नित्य लीला नौतन भासे हरिदास बलिहारी ॥२॥

११ राग बसंत श्री वल्लभ बिन सब जुग फीकौ ॥ श्री विठ्ठल पुरुषोत्तम सुमिरौं काज सब सुधरे या जीय कौ ॥१॥ श्री गिरिधर गोविंद श्री बालकृष्ण गोकुलनाथ रसिक बरनी कौ ॥ श्री रघुपति जदुपति घन साँबल 'सरस रंग' भजन कर याही कौ ॥२॥

१२ राग बसंत श्री वल्लभ करुणा करके मोहे कीजे निज दासन को दास ॥ पूरण काम है नाम तिहारो इतनी मो मन पूर हो आस ॥१॥ तिहारी कृपा कटाक्ष तें दुर्लभ पाइये सुलभ करो व्रजवास ॥ तिहारे सेवक जन संगत बिनु निसदिन मो मन रहत उदास ॥२॥ श्री वृन्दावन गिरि गोवर्द्धन श्री यमुना तट करूँ निवास ॥ श्री हरि वदन चंद सु विमल यशगान करत सुर सदा अकास ॥३॥ कृपा निधान कृपा कर दीजे जो सब लोक मिटे उपहास ॥ दीजे दिव्य देह गोविंद को इन दृग निरखों अनुदिन रास ॥४॥

१३ राग बसंत कोऊ रसिक नहीं या रस को ॥ वागधीस वचनामृत गहवर पराकाष्टा प्रेम प्रसंगित, व्रज पुर वधू स्वरूप निष्ठा सुनि सुनि काहुन कसको ॥१॥ वृन्दावन आनन्द उदधिको पार नहीं कहुँ जसको ॥ श्री लक्ष्मण सुत चरणकमल पराग मधु पूरित पद्मनाभ अली ताको हे चसको ॥२॥

१४ राग सारंग खेलत वल्लभ फाग ललना होरी रंग रह्यो ॥ध्रु०॥ ललना श्रीगोकुल गाम सुहावनों श्रीयमुनाजीके तीर ॥ ललना सीतल मंद सुगंध बहे तहां हितचित समीर ॥१॥ बजावत ताल पखावज सारंगी मुखचंग ॥ गावें गीत सुहावने उपजत तान तरंग ॥२॥ उडत अबीर गुलाल तहां मानो ऋतु वरस्योमेह ॥ केसर घस नवकुंकुमा छिरकत नौतन नेह ॥३॥ ओर कहां लग वरनिये उपजत अतिआनंद ॥ खेलेहीं वल्लभ वल्लभी भाखे वृंदावनचंद ॥४॥

१५ राग सारंग लाल खेलत फाग प्रगट करत अनुराग केसर अबीर अरगजा श्रीअंग सुंदरि भरत सुहाग ॥१॥ हीरा खचित पिचकाई चलावे छिरकत महा बडभाग ॥ वल्लभदास प्रभु गोकुलेश मिल उपज्यो प्रेमपराग ॥२॥

१६ राग सारंग खेले प्रभु बैठे महाराज केसर अरगजा भीने ॥ ठाडे यूथ रसिक भक्तनके फाग खिलाये आज ॥१॥ देतअसीस सकल व्रजसुंदरि मिल चिरजीयो सिरताज ॥ वल्लभदास प्रभु गोकुलेश्वर राजेंसंग समाज ॥२॥

१७ राग गौरी श्री वल्लभकुल मंडन प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ ॥ जेजन चरणन सेवत तिनके जन्म अकाथ ॥१॥ भक्ति भागवतसेवा निशदिन करत आनंद ॥ मोहन लीला सागर नागर आनंदकंद ॥२॥ सदा समीप विराजें श्रीगिरिधरगोविंद ॥ मानिनी मोद बढावें निजजन के रविचंद ॥३॥ श्रीबालकृष्ण मनरंजन खंजन अंबुज नयन ॥ मानिनी मान छूडावे बंक कटाक्षनसेन श्री वल्लभ जग वल्लभ करुणानिधि रघुनाथ ॥ ओर कहां लगि बरनों जगवंदन यदुनाथ ॥५॥ श्रीघनस्याम लाल बल अविचलकेलिक लाल ॥ कुंचित केश कमल मुख जानों मधुपन केटोल ॥६॥ जो यह चरित्र वखाने श्रवण सुने मन लाय ॥ तिनकें भक्ति जु बाढे आनंद घोस विहाय ॥७॥ श्रवण सुनत सुख उपजत गावत परम हुलास ॥ चरण कमलरज पावन बलहारी कृष्णदास ॥८॥

१८ राग गौरी प्रथम सीस चरन धर वंदो श्री विठ्ठलनाथ ॥ दशधा भक्ति ओर चार पदारथ जाके हाथ ॥१॥ भूतल द्विज वपु धार्‍यो त्रिभुवन पति जगदीश ॥ उपमा कों कोऊ नहीं जय जय गोकुलके ईश ॥२॥ कलिके जीव उधारे निजजन किये सनाथ ॥ भवसागरतें बूडत राखे अपने हाथ ॥३॥ नामदेय सिरपरस कमलकर टारेपाप ॥ सेवारीति बताई सेवक व्है कें आप ॥४॥ शय्या भूषण वसन सिंगार रचे हें बनाय ॥ नंदनंदन अपने मुख भोजन करतहें आय ॥५॥ मायावाद निवारे थापे पूरण ब्रह्म ॥ मारग पुष्टि प्रकासे ओर राखे सब कर्म ॥६॥ श्रीगिरिधर गुण सागर महिमा कही न जाय ॥ श्रीगोविंद करुणानिधि क्रीडत अपने भाय ॥७॥ श्रीबालकृष्ण अतिसुंदर शोभाको नहिपार ॥ जगवंदन गोकुल पति निजजनके उरहार ॥८॥ श्रीपति श्रीरघुनाथजू देत अभय वरदान ॥ महाराज यदुनाथजू करत मधुर स्वरगान ॥९॥ श्रीघनस्याम सदा सुखदायक करों प्रणाम ॥ सबमिल खेलत हरखत व्रजजन मन अभिराम ॥१०॥ श्रीवृंदावन अतिशोभित यमुनापुलिन तरंग ॥ हँसत परस्पर कुंकुम केसर छिरकत अंग ॥११॥ श्रीगिरिधर संग खेलत उरआनंद न समाय ॥ बाजत ताल पखावज युवतीजन मंगल गाय ॥१२॥ सुर कुसुमन वरषाकरें बोलत जय जयकार ॥ माणिकचंद प्रभु यह विधि गोकुल करो विहार ॥१३॥

१९ राग सारंग वल्लभलाल रसाल के खेलत रंग रह्यो ॥ एक छिरकत एक रही झुक एकन अरगजा कर लह्यो ॥१॥ सब मिल अबीर उडावें जो परस्पर नयनन नेह नयो ॥ पिचकाई भर भर जु चलावत वल्लभदास प्रभु रस ठयो ॥२॥

बसंत के पद (महासुद ६ से महासुद १४ तक)

१ राग बसंत रिंगन करत कान्ह आंगन में करलीयें नवनीत ॥ सोभित नील जलद तन सुंदर पहरें झंगुलीपीत ॥१॥ रुनझुन रुनझुन नूपुर बाजत त्यों पग ठुमकि धरें ॥ कटिकिंकिनी कलरव मनोहर सुनि किलकार करें ॥२॥ दुलरीकंठ कनिक दुई कानन दीयो कपोल दिठोना भालविशाल

तिलक गौरोचन अलकावलि अलिछोना ॥३॥ लटकन लट किरद्यो भ्रुवऊपर कुलह सुरंग बनी ॥ सिंघ पोरितें उझकि उझकि छबि निरखतहें सजनी ॥४॥ नंदनंदन उनतन चितवत प्रेम मगन मन आई ॥ कंचनथार साजि घरघरवतें बोहो विधि भोजन लाईं ॥५॥ मनिमंदिर मूढापे सुंदरि आछेवसन बिछावें ॥ बालकृष्ण कों जो रुचि उपजे अपने हाथ जिमावें ॥६॥ जलअचवाई वदन पोंछत ओर वीरी देत सुधारी ॥ हियें लगाय वदन चुंबनकरि सर्वस डारत वारी ॥७॥ नेनन अंजनदे लालनकें मृगमद खोरकरें ॥ सुरंग गुलाल लगाय कपोलन चिबुक अबीर भरें ॥८॥ चोवाचंदन छिरकि अबीर गुलालन फेंट भराई ॥ तनक तनकसी मोहनकों भरिदेत कनिक पिचकाई ॥९॥ आपु समांझ परस्पर छिरकत लालन पे छिरकावें ॥ न्हेंनींन्हेंनी मुठी भराई रंगनसों सेनन नेनभरावें ॥१०॥ निरखि निरखि फूलति नंदरानी तनमन मोदभरी ॥ नित्यप्रति तुम मेरे घर आवो मानो सुफलघरी ॥११॥ देतअसीस सकल व्रजवनिता जसुमति भागि तिहारो ॥ कोटि बरस चिरजीयो यह व्रजजीवन प्रानहमारो ॥१२॥

२ राग बसंत देखत वन व्रजनाथ आज अति उपजतहे अनुराग ॥ मानों मदन वसंत मिले दोऊ खेलत डोलत फाग ॥१॥ द्रुमगन मध्य पलाश मंजुरी उठत अगिन की न्यांई ॥ अपने अपने मेल मनोहर होरी हरखि लगाईं ॥२॥ केकी कीरकपोत ओर खग करत कुलाहल भारी ॥ जनपद लज्जा तजी परस्पर देत दिवावत गारी ॥३॥ झीली झांझ निर्झर निसान डफभेरि भमरगुंजार ॥ मानो मदन मंडली रची पुरवीथनि विपिन विहार ॥४॥ नवदल सुमन अनेक वरन वर विटपन भेखधरे ॥ जनोराजत ऋतुराज सभामें हँसि बहुरंगन भरे ॥५॥ कुंजकुंज कोकिल कलकूजत वानी विमलवढी ॥ जानों कुलवधू निलज भईहिं गावत अटनचढी ॥६॥ कुसमितलता जहां देखत अलि तहींतहीं चलिजात ॥ मानों विटप सवन अवलोकत परसत गनिकागात ॥७॥ लीने पुष्प पराग पवनकर फिरतचहूंदिशधाये ॥ तिहिं ओसर संयोगिनि विरहनि छांडत कर भर भाये ॥८॥ और कहांलों कहों कृपानिधि वृंदाविपिन समाज ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रीडत कृष्ण तुमारेराज ॥९॥

३ राग बसंत मोहन वदन विलोकत अलियन उपजतहे अनुराग ॥ तरनि तप्त तलफत चकरो शशि पीवत पीयूष पराग ॥१॥ लोचननलिन नयेराजत रति पूरेमधुकर भाग ॥ नानों अलिआनंद मिले मकरंद पिवत रस फाग ॥२॥ भमरीभाग भृकुटी पर चंदन वंदन बिंदु बिभाग ॥ तातकि सोम संक्यो घनघनमें निरखि तज्यो वैराग ॥३॥ कुंचितकेश मयुर चंद्रिका मंडित कुसुम सुपाग ॥ मानों मदन धनुष सरलीने बरखतहे बन बाग ॥४॥ अधराबिंबते अरुन मनोहर मोहन मुरली राग ॥ मानो सुधा पयोध घोरबर व्रजपर वरखनलाग ॥५॥ कुंडल मकर कपोलन झलकत श्रमसी करके दाग ॥ मानों मीन कमलवर लोचन सोभित सरदत डाग ॥६॥ नासातिल प्रसून पदवीतर चिबुक चारु चित खाग ॥ दारचों दशन मंद मुसिकावनि मोहत सुरनर नाग ॥७॥ श्रीगोपाल रस रूप भरेये सूर सनेह सुहाग ॥ नानों सोभा सिंधु बढ्यो अति इन अखियन के भाग ॥८॥

४ राग बसंत लालनसंग खेलन फागचली ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा छिरकत घोषगली ॥१॥ ऋतुवसंत आगम नवनागरि जोवन भार भरी ॥ देखन चली लाल गिरिधरकों नंदजूके द्वारखरी ॥२॥ रातीपीरी चोली पहरें नौतन झूमक सारी ॥ मुखहिं तंबोल नेन में काजर देत भामती गारी ॥३॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी गावत गीत सुहाये ॥ नवल गुपाल नवल व्रजवनिता निकसि चोहटे आये ॥४॥ देखो आई कृष्णजुकी लीला विहरत गोकुल माहीं ॥ कहतन बने दास परमानंद यह सुख अनतजु नाहीं ॥५॥

५ राग बसंत जुवतिन संग खेलत फागहरी ॥ बालकवृंद करत कोलाहल सुनतन कानपरी ॥ बाजत ताल मृदंग बांसुरी किन्नरसुर कोमलरी ॥ तिनहूं मिले रसिक नंदन मुरली अधरधरी ॥२॥ कुंकुम वारि अरगजा विविध सुगंध मिलाय करी ॥ पिचकाईन परस्पर छिरकत अति आमोद भरी ॥३॥ टूटतहार चीर फाटत गिरी जहां तहां ढंरनढरी ॥ काहू नहीं संभार क्रीडारस सब तन सुधि बिसरी ॥४॥ अतिआनंद मगन नहीं जानत बीतत जाम घरी ॥ कुमनदास प्रभु गोवर्धनधर सर्वस दे निवरी ॥५॥

६ राग बसंत फुली द्रुमवेली भांतिभांति ॥ नववसंत सोभा कहीन जात ॥ अंगअंग सुख विलसत सघन कुंज ॥ छिनछिन उपजत आनंदपुंज ॥१॥ देखि रंगरंगे हरखेनेन ॥ श्रवनन पोषत पिक मधुपवेन ॥ सुख दायक नासाअति अमोद ॥ रसना बहुस्वादन बहुविनोद ॥२॥ कुसुमन कुसुमाकर सुहाय ॥ त्रिविध समीर हृदो सिराय ॥ दास चत्रभुज प्रभु गुपाल ॥ वनविहरत गिरिधरन लाल ॥३॥

७ राग बसंत गिरिधरलाल रस भर खेलत विमल वसंत राधिका संग ॥ उडत गुलाल अबीर अरगजा छिरकत भरत परस्पर रंग ॥१॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी वीना मुरली तानत रंग ॥ कुंभनदास प्रभु यह विधि क्रीडत यमुना पुलीन लजावत अनंग ॥१॥

८ राग बसंत खेलत मदन गोपाल बसंत ॥ नागर नवल रसिक चूडामनि सव विधि सुघर राधिका कंत ॥१॥ नेन नेन प्रति चारु विलोकन वदन वदन प्रति सुंदर हास ॥ अंगअंग प्रति प्रीति निरंतर रति आगम निसजाई विलास ॥२॥ वाजत ताल मृदंग अधोटी डफवांसुरी कुलाहलकेलि ॥ परमानंद स्वामीके संगमिलि ॥ नाचत बागत रंगरेलि ॥३॥

९ राग बसंत खेलत वसंत गिरिधरनलाल ॥ जहां लाग्यो अबीर गुलाल भाल ॥१॥ केसरि छिरकत नवलवाल ॥ लपटावत चोवा अतिरसाल ॥२॥ रही पागढरकि अर्धभाल ॥ देखत मनमथ अतिभयो विहाल ॥३॥ चंदन लाग्यो दुहुंगाल ॥ तव मुरलीधर रिझवत गोपाल ॥४॥ श्रीगोवर्धनधर रसिकराय ॥ चत्रभुजदास बलिहारी जाय ॥५॥

१० राग बसंत मदन गुपाल लाल सब सुख निधि खेलत वसंत निकुंजदेश ॥ जुवतीजन सोभित समूह तहां पहरें भूषन नानावेष ॥१॥ मुकलित द्रुम नवमंजुरी साखा कोकिल कल कूजत बिशेष ॥ फूली नवमालती मनोहर मधुप गुंजारत तामधेस ॥२॥ वाजतताल मृदंग झांझडफ आवज वीना किन्नरेस ॥ निर्तत गुनी अनेक गुनभरे आवत जीयन्हेव्हे आवेस ॥३॥ कुंकुम रंगसों भरि पिचकाई तक तनेन ओर सीसकेस ॥ रंगरंग सोभा अंगअंग

प्रति निरखि विरह भाज्यो विदेस ॥४॥ जानत नहीं जाम घरी वीतत अति आनंद हृदें प्रवेस ॥ दास चत्रभुज प्रभु सव सुखनिधि गिरिवरधर जुवतीन रेस ॥५॥

११ राग बसंत विहरतवन सरस बसंत स्याम ॥ जुवतीजूथ गावें लीला अभिराम ॥ध्रु०॥ मुकलित नूतन सघन तमाल ॥ जाईजुही चंपक गुलाल ॥ पारजातही मंदारमाल ॥ लपटात मत्त मधुकरन जाल ॥१॥ कुटज कदंब सुदेश ताल ॥ देखिवन रीझे मोहनलाल ॥ अतिकोमल नौतन प्रवाल ॥ कोकिल कल कूजत अतिरसाल ॥२॥ ललित लवंग लता सुवास ॥ केतुकी तरुणी मानों करतहास ॥ इह विधि लालन करें विलास ॥ वारनें जायजन गोविंददास ॥३॥

१२ राग बसंत खेलतवन सरस बसंतलाल ॥ कोकिल कल कूजत अतिरसाल ॥ जमुनातट फूले नवतमाल ॥ केतुकी कुंद नौतन प्रवाल ॥ नवसत सजि आई व्रजकी बाल ॥ साजेभूषन वसन तिलक भाल ॥२॥ चोवा चंदन वंदन ओर गुलाल ॥ छिरकत प्यारी तकितकि गुपाल ॥ आलिंगन चुंबनदेत गाल ॥ पहरावत उर फूलनकी माल ॥३॥ यह विधि क्रीडत व्रजन नृपकुमार ॥ सुमन वृष्टि करें सुर अपार ॥ श्रीगिरिवरधर मनहरतमार ॥ कुमनदास बलिबलि विहार ॥३॥

१३ राग बसंत जुवति वृंदसंग स्याम मनोहर खेलत बसंत ओरहीभांति ॥ अरुनहरित मुकलित द्रुमपल्लव मधुपहलावत अंकुरपांति ॥१॥ तरणि तनया तट पुलिनरम्यमें जहंतहं बने कोकिल किलकांति ॥ पूरनकलारोहिनी वल्लभ उदित मदन कुसमा करिराति ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी वीना वेनु मुरली सुरभांति ॥ उरप तिरपगति अभिनव ललना पगनूपुर सिंचित किलकांति ॥३॥ विविध मुगंध अरगजा छिरकत पिय वनिता वनिता पियगात ॥ विविध विहार विविधपट भूषन किरन लजावत उडगनकांति ॥४॥ मोहनलाल गोवर्धन धरको रूपनेन पीवतन अघात ॥ कृष्णदास प्रभु वानिक निरखत व्योमयान ललना ललचात ॥५॥

१४ राग बसंत वृंदावन फूल्यो नवहुलास ॥ गोवर्धनगिरी के आसपास ॥ध्रु०॥ चलि सलज कदली पुंजझोप ॥ तरुतरुल तरुनता अरुनकोप ॥ जुवतीजन विहरत मदनचोंप ॥ तनमन धन जोवन हरिहिसोंपि ॥१॥ सितअसित कुसम मंडपनछांह ॥ कलकमोद मंदार तांह ॥ खेलत वसंत गिरिधरन जांह ॥ वृषभान सुताके कंठ बांह ॥२॥ भयो अनंग अंगविन सिवके ताप ॥ सोईफेरिअवथिर रहीथाप ॥ भई मगन मिट्यो अब सब संताप ॥ श्रीवल्लसुत पदरज प्रताप ॥३॥

१५ राग बसंत मधु ऋतु वृंदावन आनंदथोर ॥ राजत नागरी नबकिसोर ॥ जूथिका जुथरूप मंजुरी रसाल ॥ विथकित अलिमधु लाल गुलाल ॥१॥ चंपकबकुल कुल विधि सरोज ॥ केतुकी मेदनी मुदित मनोज ॥२॥ रोचक रुचिर बहे त्रिविध समीर पुलकित निरतत आनंदीत कीर ॥३॥ पावन पुलिन घनमंजुल निकुंज ॥ किसलयसेंन रचित सुख पुंज ॥४॥ मंजीर मुरजडफ मुरली मृदंग ॥ बाजत मधुर वीना मुखचंग ॥५॥ मृगमद मलयज कुंकुम अबीर ॥ चंदन अगर सोंर चितचीर ॥६॥ गावत सुंदर हरि सरस धमारि ॥ पुलकित खगमृग बहतन वारि ॥७॥ हित हरिवंस हंसहंसनी समाज ॥ एसेंही करो मिलि जुगजुग राज ॥८॥

१६ राग बसंत खेलत गिरिधर रगमगे रंग ॥ गोप सखा बनिक निआएहें हरिहलधर के संग ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझडफ मुरली मुरज उपंग अपनी अपनी फेंटन भरिभरि लिये गुलाल सुरंग ॥२॥ पिचकाई नीकेंकरि छिरकत गावत तान तरंग ॥ उतआई व्रज वनिता वनिवनि मुक्ता फल भरिमंग ॥३॥ अचराउ रसि फेंट कंचुकी कसि राजत उरज उतंग ॥ चोवाचंदन बंदन ले मिलि भरत भामते अंग ॥४॥ किसोर किसोरी दोऊ मिलि विहरत इतरति उतही अनंग ॥ परमानंद दोऊ मिलि विलसत केलिकलाजुनि संग ॥५॥

१७ राग बसंत सजिसेन पलानो मदनराय ॥ अबलय पर कोप्योहै रिसान ॥१॥ कुंजरद्रुम मदगज पलास ॥ भयभीत भयो नेकअति उदास

॥२॥ मोर महावत चढेहैं धाय ॥ ललित लाल पाखर बनाय ॥३॥ अंबसुभट पहरें सनाय ॥ बट बेरीया अंजानदाय ॥४॥ त्रिविध पवन चंचल तुरंग ॥ उडिरजपरत झुकि अतिउत्तंग ॥५॥ कदलीदल बेरख फरहरात ॥ सहचरीयां चालक धरपिपात ॥६॥ कमलनैन कोकिला अतिअनूप ॥ तूपकदार शुक कपट रूप ॥७॥ बाजे गाजे निर्झर निशान ॥ भ्रमर भेरि मिलि करत गान ॥८॥ ऋषिकेशके प्रभु बिनुगोपाल ॥ कैसें बिहाय यह कठिन काल ॥९॥

१८ राग बसंत रतन जटित पिचकाई करलियें भरत लालकों भावे ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा विविध वूंदवरखावे ॥१॥ कबहुंक कटिपट बांधि निसंक व्हे ले नवलासी धावे ॥ मानों शरद चंद्रमा प्रगट्यो व्रजमंडल तिमरन सावे ॥२॥ उडत गुलाल परस्पर आंधी रह्यो गगन सबछाई ॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि मोपे बरनी नजाई ॥३॥

१९ राग बसंत प्यारे हो कान्हर जो तुम आंखिन भरोजू ॥ एसें बदि खेलो खेल अबकें वसंत मोसों सोहें जु करोजू ॥१॥ हों कहे देत बात भूलि जिनजाओ ओरके खिलायवे कों हारजिनहरो नू ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधर निधरक काहू धायजिन धरोजू ॥२॥

२० राग बसंत रहो रहो बिहारीजू मेरी आंखिन में वूकाजिन मेलो अंतर व्हे मुख अबलोकनकों ॥ अरभामती तिहारी मिल्यो चाहे मिसकरि पैयां लागों पलपलकों ॥१॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सोनकोटिवल हेजुवतिनकों ॥ हरिदास के स्वामी को हँसत खेलत मुख कहा पाइयतहे यह सुख मनकों ॥२॥

२१ राग बसंत खेलत पिय प्यारी सोंधें भरिभरि लीयें कनिक पिचकारी ॥ छलकर छिरकति भरति परस्पर देतदिवात गारी ॥१॥ छीनलई मुरली प्रीतम की रंग बढावत भारी ॥ चोवा चंदन बूकाबंदन कुंवरपैडारी ॥२॥ केसरि आदि जवाद कुमकुमा भीजि रही रंग सारी ॥ देत नही डहकावति सुंदरि हंसति करति किलकारी ॥३॥ फगुवा देहु लेहु पियमुरली के कहो कुंमरि हाहारी ॥ बरनों कहा कहति नहि आवे बढ्यो सुख सिंधु अपारी

।।४।। इतमोहन हलधर होऊ भैया उतललिता राधारी ।। हित हरिवंश लेहु किन मुरली तुम जीते हम हमारी ।।५।।

२२ राग बसंत चलि देखन जैथें नंदलाल ।।ध्रु०।। बनिठनि आईं सब ब्रज की बाल ।। ऋतु बसंत गावहु रसाल ।।१।। चली राधे कुंवरि सहचरिन संग ।। लीयें ढफआवज किन्नरी मृदंग ।। बिच महुवर मधुर बाजे ऊपंग ।। ले मिली स्यामसों रागरंग ।।२।। रंगरंगी मदन पचरंग अबीर ।। आये करति कुलाहल यमुनातीर ।। ठाडे मधुसूदन गोपीनीर ।। नवकेसरि के रंगरंगे चीर ।।३।। जिहिं कुंज मधुप गुननिवास ।। बोले अंबडार कोकिल प्रकास ।। जहाँ स्यामसुंदर करें बिलास ।। श्रीजगन्नाथ भजि माधोदास ।।४।।

२३ राग बसंत फागुसंग बडि भागि ग्वालनि हरिसंग खेलति होरी ।। कुमकुम केसरि अगर अरगजा माट भरे रंग रोरी ।।१।। आगे कृष्ण पाछे रहे भामिनि करपिच काईलीने ।। बृंदावन में मोहन पकरे मनभायो सोकीने ।।२।। अरसपरस सब मिलि खेलति स्याम अकेले आये ।। अंक भरे आलिंगन चुंबन नानाभांत बनाये ।।३।। पकरि ग्वाल परस्पर दुहुंदिस सुरसुता तटभेटे ।। अबीर गुलाल अरगजा लेकें श्यामा श्याम लपेटे ।।४।। जाने को अंग लगे मोहन भेदनपावे कोहे ।। जुगल जोरि खेलो गोकुल में नित बृंदावन जोहे ।।५।।

२४ राग बसंत चलो बिपिन देखियें गुपाल संग सोहत नवब्रज की बाल ।।ध्रु०।। लपटति ललितलता अतिराजत तरुतरुवर ज्योंतमाल ।। जाही जुही कदंब केतुकी चंपक बकुल गुलाल ।।१।। कोमल कुल केलिकीजे पिय तरनि तनयातीर ।। सीतल मंदसुगंध मलयानिल बहत है त्रिविध समीर ।।२।। प्रफुलित बकुल विविध कुसुमावलि हों गूंथों पीयमाल ।। आसकरन प्रभु मोहन नागरि सुंदरि नैन बिशाल ।।३।।

२५ राग बसंत मुख मुसकिनि मनबसी नबलबर चितवन चित हरिलीनो ।। कुंजन केलि रहसि रस बरखति ओर अरगजा मीनो ।।१।। अबीर अगरसतबरन बिराजति राग बसंते कीनो ।। हरिदास के स्वामी स्यामा

कुंज बिहारी देखो मैनमन हीनो ॥२॥

२६ राग बसंत बनसपति फूली बसंत मास ॥ रसिक जनन मनभयो हुलास ॥ध्रु०॥ श्रीगोकुल फूल्यो अति रसाल ॥ बाजे चंग मृदंग उपंग ताल ॥ सोहे सुंदर तिलक बनायो भाल ॥ गोपी छिरकति केसरि भरि गुलाल ॥१॥ ब्रजजन फूले अंग अंग ॥ फागु खेलति हलधर कृष्णसंग ॥ फूले गोपीग्वाल मिलि युवतीजूथ ॥ मानोप्रगट भयोहे कामदूत ॥२॥ बृंदावन फूल्यो कुंजकुंज ॥ जमुना जल फूले करतिगुंज फूल कमल कली लीयें भंवर बास ॥ फूले खग बोलति आसपास ॥३॥ गोवर्धन फूल्यो ठोरठोर ॥ फूले पांडर केशू अंबमोर ऐसी शोभा बिलसे बार्योमास ॥ फूलेजन गांवें माधोदास ॥४॥

२७ राग बसंत पिय प्यारी खेलें यमुनातीर ॥ भरि केसरि कुमकुम नवअबीर ॥ध्रु०॥ घसि मृगमद चंदन अरुगुलाल ॥ रंगभीने अरगजा अति रसाल ॥ जहां कुलकुल केकी नवमराल ॥ बनबिहरति दोऊ रसिक लाल ॥१॥ बृंदादिक मोहन लईं जोरि ॥ बाजे ताल मृदुंग रबाब घोर ॥ हँसिकें गेंदुक दई चलाय ॥ मुखपट देराधे गई बचाये ॥२॥ ललिता मोहन पटगह्यो धाय पीतांबर मुरलीलई छिनाय ॥ होंतो सपथ करों छांडो नतोय ॥ श्यामाजु आज्ञा दई मोय ॥३॥ निज सहचरीं आईं बनिबसीठ ॥ सुनरी ललिता तुम सुनीढीठ ॥ हठ छांडि जानि देऊ नवकिशोर ॥ सुनि रीझि सूर तृन दीयो तोर ॥४॥

२८ राग बसंत प्यारी राधा कुंज कुसुमसंकेलैं ॥ गुहिगुहि कुसुम मनोहर माला पीतम केऊरमेलैं ॥१॥ पिय केबेन नैन अनियारे मैन हि रीझरिझे लैं ॥ गौर उरज स्थल श्याम उर स्थल मनों जुगल गढि घेरैं ॥२॥ नंदनंदनसों अति रस बाढ्यो मदनमोहन सों खेलैं ॥ कहि कल्याण गिरिधरकी प्यारी रसही में रसझेलें ॥२॥

२९ राग बसंत रितु पलटी मोपे रह्यो नजाय ॥ मधुकर माधो सों कहीयो जाय ॥ध्रु०॥ बहुवास सुबास फूली है बेलि ॥ अरु बने कोकिला

करति केलि ।। मधुप तापतन सह्यो नजाय ।। पिय प्रान गयें कहा करिहो आय ।।१।। प्रिय प्रान रहत हैं अवधि आस ।। पिय तुमबिन गोपी अति उदास ।। सूरदास इमबदतिबाल ।। पिय तुम बिन गोकुल कोनहाल ।।२।।

३० राग बसंत नवकुंज कुंज कूजत बिहंग ।। मानों बाजे बाजत नृपअनंग ।। द्रुम फूल रहे सब फलनि संग ।। मधि अति सुवास अरु विविध रंग ।।१।। जहं बाजति झालरि ताल संग ।। अधवट आवज बीनाउपंग ।। अरु-श्रीमंडल महुवरि मृदंग ।। कहि लाग डाट लेमोरि अंग ।।२।। ध्रुम धिधिकटि ताद्रिमताधिलांग दोऊ गानलेत नृत्यत सुधंग ।। बूका गुलाल डारति उत्तंग ।। बलिद्धारकेश छबि युग त्रिभंग ।।३।।

३१ राग बसंत बनफूले-द्रुम कोकिला बोली मधुप झंकार नलागे ।। सुनभयो सोर रोर बंदीजन मदन महीपति जागे ।।१।। तिनहदीने अंकुर पल्लवजे द्रुम पहले लागे ।। मानों रति पति रीझ जाचकन बरन बरन दीयेबागे ।।२।। नये पात नई लता पहोप नये नये रस पागे ।। नवल केलि बिलसति गिरिधर संग सूररंग अनुरागे ।।३।।

३२ राग बसंत खेलत बसंत आये मोहन अपने रंग ।। करत ताल कुनित बलिअबलि युवती मंडल संग ।।१।। मुरज मंजरी चंग महुवरि बैन बिषान मृदंग ।। झालरी जंत्र उपंग धुनि उपजत तान तरंग ।।२।। उडति अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि छिरके अंग ।। गलित कुसुम सिरपाग लटपटी नाचत ललित त्रिभंग ।।३।। कोऊ किन्नरि सरस गति मिलवत कोऊ चंग ।। जन त्रिलोक प्रभु बिपिन बिहारी चितवत उदित अनंग ।।४।।

३३ राग बसंत एतो झक झोरति सोधें बोरतिहैं गोरी सुखकारी ।। हाहा बिहारी बलाये लेहों तुम खेलोक्योंन सम्हारी ।।१।। केसरि कनक मोरी भरिभरि लेलेदेति पिय परढारी ।। सकल कोमल गात रसिकतुम देखोजियन बिचारी ।।२।। सखीबृंद मनमोहनगहि घेरे भरलीने अंकवारी ।। प्यारी बहोत अरगजाजीभी देख रिषीकेश बलिहारी ।।३।।

३४ राग बसंत खेल खेलरी कान्हर त्रियन फुलवारी मैं छिरकि छिरकि रंग भरतयोंसुखकरे ॥ अतिउत्तम चंदनबंदन लीने ओर अरगजा करिकें ऐसे अनुराग छिरकि छिरकि तरुनी बिहरें ॥१॥ एक कर पहुप माल गलेमेलति दूजे मोंर धरावति कोऊ धूप अगरले सुबास करें हरिदास के स्वामी स्याम कुंजबिहारी तीन लोक जाके बस सो राधाके मुखपै अबीडरपकैं धरैं ॥२॥

३५ राग बसंत ऋतु बसंत कुसुमित नवबकुल मालती ॥ कुरबक मल्लिका गुंजत बहुअलिपांति ॥१॥ कूजत कलकल हंसके की मिथुन कीरा ॥ बहत पवन मलय विमल सुरभि जमुना तीरा ॥२॥ गावति कलगीत युवती बोलत होहोरी ॥ केसरि मृगमद कपूर छिरकति नवगोरी ॥३॥ मनि नूपुर कटि किंकिनी कंकनधुनि झोहे ॥ हरि जीवन प्रभु गिरिवरधर त्रिभूवन मन मोहे ॥४॥

३६ राग बसंत मोह्योमन आज सखीरी मोहन बलबीर ॥ मधुर मधुर मुरली स्वर गावति सकल यमुना तीर ॥१॥ कनक कपिस अति शोभित कटित्त वरचीर ॥ मानिक द्युति ओढनी सांवल शरीर ॥२॥ सिखि शिखंड शिर सिंधु मुदित भेषअहीर ॥ मुकुलित नववृंदावन कूजति पिककीर ॥३॥ कृष्णदास प्रभु के हित त्रिगुनबहे समीर ॥ गिरिवरधर जुवतिन संग बिहरति रतिरनधीर ॥४॥

३७ राग बसंत आज सांवरो घोष गलिनमें खेलति मोहन होरी ॥ संग सखी लीयें राधिका बनीहै अनूपम जोरी ॥१॥ बाजति ताल मृदंग छंदसों बिच मुरली धुनि थोरी ॥ अरस परस छिरकति छिरकावति मोहन राधा गोरी ॥२॥ अबीर गुलाल उडति बुकारंग भरिभरि धरी कमोरी ॥ केसरि रंगसों भरि पिचकारी मारतिहैं मुखरोरी ॥३॥ छलबल सोंकरिआंख अंजावत लोकलाज सब तोरी ॥ लुटति सुख कीसीवां सब मिलि परमानंद करति निहोरी ॥४॥

३८ राग बसंत कबकी हों खेलत मोहीसों अरतहों सबन छांडि मेरी आंखिन भरतहो ॥ रहो हो रहो हो हरि होंहूंन ओर त्रिय नेंकुनटरतहो ॥१॥ नेनमींडि फिरिफिरि मुसिकात जात होंहूं जानत तेसी मोहीसों करतहो ॥ कल्यानके प्रभु गिरिधरपति विवस व्हैन डरतहो ॥२॥

३९ राग बसंत एसे रीझे भीजे आयेरीलाल गावतहैं धमारि ॥ होंजु गईरी भोर वृंदावन भरलीनी अंकवारि ॥१॥ सुधरी अलक बदनपर बिथुरी निजकरसों अली आपस कोरि ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी मिली है बिरह हिर दोरि ॥२॥

४० राग बसंत खेलत वसंत गोकुलके नायक जुवती जनके मंडलवीच ॥ सुरंग गुलाल उडाय अरगजा कुंकुमकी जहांकीच ॥१॥ हाथन लिये कनिक पिचकाई छिरकत आपुस मांझ ॥ तेसोई सुरंग रंग केसरि को मानों फूली सांझ ॥२॥ श्रीमंडल आवज डफ वीना झांझ झालरी ताल ॥ पटह मृदंग अधोटी महुवरि बाजत वेनुरसाल ॥३॥ रविकल कुल कोकिल अतिकूजत चहूं ओर द्रुमफूले ॥ तेसोही सुभग तीर कालिंदी देखत सुरनर भूले ॥४॥ यह विधि सब मिलि होरी खेलें मनमें अति आनंद ॥ गोवर्धनधर रूप पर जन वलिवलि गोकुलचंद ॥५॥

४१ राग बसंत उडत वंदन नवअबीर बहु कुमकुमा खेलत वसंत वन लाल गिरिवरधरन ॥ मंडित सुअंग सोभा स्याम सोभित ललन मानो मनमथ बान साजि आये लरन ॥१॥ तरणि तनया तीर रमनीक वनद्रुम लता कुसुम मुकलित सुनाना वरन ॥ मधुर सुर मधुप गुंजार करें पिक शब्द रस लुब्ध लागे दशों दिश कुलाहल करन ॥२॥ आईं वनिवनि सकल घोखकी सुंदरी पहरि तन कनिक नवचीरपट आभरन ॥ मधुर सुर गीत गावें सुधर नागरी चारु निर्तत मुदित कुनित नूपुर चरन ॥३॥ वदन पंकज अधर बिंब शोभित चारु झलकत कपोल अति चपल कुंडल करन ॥ दास कुमननिनाथ हरिदास वर्यधर नंदनंदन कुंवर युवतिजन मनहरन ॥४॥

४२ राग बसंत नंदनंदन वृषभान नृप नंदिनी सरस ऋतुराज विहरत वसंते ॥ इत सखा संग शोभित श्रीगिरिवरधरन उतजुवति जनमध्य राधा लसंते ॥१॥ सूरजा तट सुभग परम रवनी यवन सुखद मारुत मलय मृदुवहंते ॥ प्रफुल्लित मल्लिका मालती माधवी कुहु कुहु शब्द कोकिल हँसते ॥२॥ विविध सुर तीन गावत सुघर नागरी ताल कंठ ताल बाजत मृदंगे ॥ वेनवीना अमृत कुंडली किन्नरी झांझ बहु भांति चंग उपंगे ॥३॥ चंदनसु वंदन अबीर नव अरगजा मेदगोरा साख बहु घसंते ॥ छिरकत परस्पर सुदंपति रसभरे करत बहुकेलि मुसकनि हसंते ॥४॥ देखि सोभा सुभग मोहे सिव विविध तहां थकित अमरेश लजित अनंगे ॥ गोविंद प्रभु पिय हरिदास वर्यधर घोषपति युवतिजन मानभंगे ॥५॥

४३ राग बसंत देखरी देख ऋतुराज आगम सखी सकल बनफूल आनंद छायो ॥ ताल कदली धुजा उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी फोज लायो ॥१॥ कोकिला कीर कलगान आगें करे भृंग भेरी लीयें संग धायो ॥ घुरत निशान घनघोर मोरन कीयो करत पिक शब्द गजअति सुहायो ॥ उडत बंदन बहु कुमकुमा केसरि तियनके कुचन तकि तमकरायो ॥३॥ पंचले बान चहुंओर छाये प्रथम चांपले आपु हाथन चलायो ॥ दौर कर शोर धपधाय लरति अतिघेरि चहुंओर गढमान ढायो ॥४॥ परी खलबली सब नारिमुर मदन की मिलन मनस्याम अंचल फिरायो ॥ जिति सब सुभट कृष्णदास बृंदा विपिन आय गिरिधरन कों शीसनायो ॥५॥

४४ राग बसंत ऋतु वसंत वृंदावन विहरत व्रजराज काज साजे द्रुम नवपल्लव प्रफुल्लित पोहो पन सुवास ॥ कलापी कपोत कीर कोकिल कमनीय कंठ कूजत श्रवनन सुनत होत हे हो हिय हुलास ॥१॥ तेसोई त्रिविधि पवन बहत तेसोई सीतल सुगंध मंदरंग उपजत हे हो अति उजास ॥ प्रभु कल्यान गिरिधर उत जुवति जूथ मध्य राधा केसरि छिरकत अबीर गुलाल उडावत आवत हे हो करें रंग रास ॥२॥

४५ राग बसंत ऋतु वसंत तरु लसंत मनहसंत कामिनी भामिनी सब अंगअंग रमत फागरी ।। चर्चरी अति विकट ताल गावत संगीत रसाल उरप तिरप लास्य तांडव लेत लागरी ।।१।। वंदनबूका गुलाल छिरकत तकि नेन भाल लाल गाल मृगज लेप अधरदागरी ।। गिरिवरधर रसिकराय मेचक मुदरी लगाय कंचुकी पर छापदीनी चकित नागरी ।।२।। बाजत रसना मंजीर कूजत पिक मोर कीर पवन भीर जमुनातीर महल वागरी ।। विष्णु दास प्रभु प्यारी भेटत हँसि देत तारी काम कला निपट निपुन प्रेम आगरी ।।३।।

४६ राग बसंत लाल ललित ललितादिक संगलियें विहरतरी वरवसंत ऋतुकला सुजान ।। फूलन की करगें दुकलियें पटक तपट उरजछियें हंसत लसत हिलिमिलि सव सकल गुन निधान ।।१।। खेलत अति रसजो रह्यो रसना नहीं जात कह्यो निरखि परखि थकित भये सघन गगन जान ।। छीत स्वामी गिरिवरधर श्रीविठ्ठल पद पद्मरेनु वरप्रताप महिमातें कियो कीरति गान ।।२।।

४७ राग बसंत ऋतु वसंत वृंदावन फूलेद्रुम भांति-भांति सोभा कछुकही नजाति बोलतपिक मोर कीर ।। खेलत गिरिधरन धीर संग ग्वाल वृंदभीर विहरत मिलि जमुनातीर बाढी तनमदनपीर ।।१।। आईं व्रज नवलनारि संग राधिका कुमारि कीने नवसत सिंगार साजे नववसन चीर ।। वदन कमलनेन भाल छिरकत केसरि गुलाल बूकाचोवा रसाल सोंधो मृगमद अबीर ।।२।। बाजत वीनामृदंग बांसुरी उपंग चंग मदन भेरि महु वरि डफ झांझ झालरी मंजीर ।। निरखत लीला अपार भूली सुधिबुधि संभार बलिहारी कृष्णदास देखत व्रज चंदधीर ।।३।।

४८ राग बसंत खेलेखेल कान्हर त्रियन फुलवारी में छिरकि छिरकि रंग भरतयो सुखकरे ।। अति उत्तम चंदन वंदन लावे और अरगजा करिकें ऐसे अनुराग छिरका छिरक तरुणी बिरह हरे ।।१।। एक करपो होप माल गरेमेलत दूजेमोर धरावत कोऊ धूप अगरले सुवा सकरे ।। हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी तीन लोकजाके वससो राधाके मुखपर अबीर

डपकें धरे ॥२॥

४९ राग बसंत कहां आईरी तरकि अबहीजु खेलत ही प्रीतम संग एक कर अबीर दूजेकर फेंटाकर ॥ जब उनभुजन जोरि मुसिक्याय वदन मोर्यो तें जान्यों ओरन तन चित एसो यह न होय जिनभरे इन नेनन यही डर ॥१॥ जबहीतू उठचली तबही लालन उझकि रहे बूझन लागे ओरनसों में कछु न कह्यो झुकिगई कोन बात पर ॥ उठिचलि हिलमिल तोही सोंरंगरस और नसूं और सब लागत चूनी समान तुव मधिनायक संग सोहे लाल गोपाल गिरिधर ॥२॥

५० राग बसंत अबकें वसंत न्यारोई खेलें मेरीसों न मिलि खेलें नारी तेरीसों ॥ दुचितहोत कछुन सुख पईयतु काहूसों न मिलि मेरीसों ॥१॥ देखेंजी जोरंग ऊपजेगो परस्पर राग रंग नीकें करि फेरीसों ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रंगही में रंग उपजे केरीसों ॥२॥

५१ राग बसंत वसंत ऋतुआई अंगअंग सरसाई खेलति रसिक गिरधरपिय भाई ॥ बनबन फूलि रही बनराई मंद पवन लगत सुखदाई ॥१॥ बिहरति लाडिली लाल मनोहर महुवर मृदंग धुनि गतीयन भाई ॥ यह ऋतुराज केलि रस रह्यो ब्रजपे सरस रंग अद्‌भुत छबि छाई ॥२॥

५२ राग बसंत कुसमित वन देखन चलोआज ॥ तहां प्रगटभयो रति रंगराज ॥ अति गुंजत कोकिल कलसमेत ॥ जुवतीजन मन आनंददेत ॥१॥ राधिका सहित राजत निकुंज तहां मदन मोहन सुंदरता पुंज ॥ दंपति रतिरस गावें हुलास ॥ यह सदा वसोमन सूरदास ॥२॥

५३ राग बसंत ऋतु वसंत मुकलित वन सजनी सुवन जूथिका फूलीरी ॥ गुनन गुनन गुंजत दुहुंदिश मधुप मंडली झूली ॥१॥ गोवर्धन तट कोकिला कूजत वचननिकर रस मूली ॥ खेलत निरखि छेल नंदनंदन भई उडपति गति लूली ॥२॥ ऋतु कुसमाकर राका रजनी विरहनि नितप्रति कूली ॥ कृष्णदास हरिदास वर्यधर केलिकला अनु कूली ॥३॥

५४ राग बसंत आयो आयोरी यह ऋतु वसंत ॥ मधुकरन मन

मधुवन वसंत ।। देदेतारी त्रियमन हसंत ।। मलय मृगज केसरि घसंत ।।१।। खेल मच्यो व्रजपुर के मांझ ।। कोऊ गिनतन भोर मध्यान सांझ ।। गिरिधरपिय जल जंत्र हाथ ।। वल्लब वल्लवी भोर साथ ।। गावत गुन मधु माधो गाथ ।। निरखि मुरझि परयो रतिकोनाथ ।।३।। नितउठि घोस विनोदवात ।। पशुपंछी फूलेनमात ।। प्रतिबिंबत रवि शशि पातपात ।। विष्णुदास बलि जातजात ।।४।।

५५ राग बसंत आज मदनमोहन बने उपमाकों कोहे ।। रति पति राजा पाय बांध्यो हू न सोहे ।।१।। कोटि सुधानिधि सीतल जोहे ।। देखत बदन त्रैताप नसोहे ।।२।। ऐसी कोन नागरी जो निमिष बिछोहे ।। प्रभु रघुनाथदास व्रजजन मोहे ।।३।।

५६ राग बसंत चलोरी वृंदावन वसंत आयो ।। फूलि रहे फूलनके झोंरा मरुत मकरंद उडायो ।।१।। मधुकर कीर कोकिला ओर खग कोलाहल उपजायो ।। नाचत स्याम नचावत स्यामा राधाजू राग जमायो ।।२।। चोवाचंदन बूकाबंदन लालगुलाल उडायो ।। व्यास स्वामिनी की छबि निरखत रोमरोम सुख पायो ।।३।।

५७ राग बसंत नवल वसंत नवल वृंदावन नवलही फूले फूल ।। नवलही कान्ह नवलवनी गोपी निर्तत एकहीतूल ।।१।। नवल गुलाल उडे रंग बूका नवल वसंत अमूल नवलही छींट बनी केसरि की मेटत मनमथसूल ।।२।। नवलही ताल पखावज बाजत नवल पवनके झूल ।। नवलही बाजे बाजत श्रीभट कालिंदी के कूल ।।३।।

५८ राग बसंत नवल वसंत नवल वृंदावन खेलत नवल गोवर्धन धारी ।। हलधर नवल नवल व्रज बालिक नवल नवल बनी गोकुल नारी ।।१।। नवल जमुनातट नवल विमलजल नौतन मंद सुगंध समीर ।। नवल कुसम नवपल्लव साखा कूजत नवल मधुप पिककीर ।।२।। नव मृगमद नवअरगजा वंदन नौतन अगर सुनवल अबीर ।। नवचंदन नवहरद कुंकुमा छिरकत नवल परस्परनीर ।।३।। नवलवेनु महुवरिबाजे अनूपम भूषन

नौंतनचीर ॥ नवलरूप कृष्णदास प्रभु को नौतन जस गावत मुनिधीर ॥४॥

५९ राग बसंत नववसंत आगम नवनागरी नवनागर गिरिधर संग खेलत ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा ताकि ताकि पियसन मुख मेलत ॥१॥ पोहोपांजुलि जब भरत मनोहर वदन ढांपि अंचल गति पेलत ॥ चत्रभुज प्रभु रस रास रसिक कों रीझि रीझि सुख सागर झेलत ॥२॥

६० राग बसंत नववसंत आगमनी को लागत नवल फूल पल्लव वनये ॥ नाना वरन सकल वृंदावन जहां तहां द्रुम प्रफुलित भये ॥१॥ प्रगट्यो रति पति वसंत सुखद ऋतु हेमकाल कलहजु गये ॥ गुंजत मधुप कीर पिक कूजत ठोरठोर आनंदठये ॥२॥ जमुनातट रमनीक परमरुचि कुंज वितान ललित छये ॥ तहां साज नटवर नंदनंदन बैठि रहे नेरें जु लये ॥३॥ जानि सुसमय चत्रभुज प्रभु पिय आतुर संदेस तोकों जुदये ॥ वेगि चलिहि मिलि गिरिधर पिय संग सवसुखकरि विलसो जु नये ॥४॥

६१ राग बसंत पिय देखो वनछवि निहारि ॥ वारवार यह कहित नारि ॥ ध्रु ॥ नवपल्लव बहु सुवन रंग ॥ द्रुमवेली तन भयो अनंग ॥ भभरा भभरी भ्रमत संग ॥ जमुना करत नाना तरंग ॥१॥ त्रिविधि पवन मह्रा हरखदेन ॥ सदां वहत तहां रहतचेन ॥ सूर प्रभु करि तुरतगेन ॥ चलो नारि मन सुखद मेन ॥२॥

६२ राग बसंत आयो आयो पिय यह ऋतु वसंत ॥ दंपति मनसुख विरहिन अंत ॥ फाग खिलावो संगकंत ॥ हाहाकरि तृन गहतदंत ॥१॥ तुरत गये हरिलई मनाय ॥ हरखि मिले हरि कंठलाय ॥ दुःख डारचो तुरतहि भुलाय ॥ सोसुक दोउनके उरनमाय ॥२॥ ऋतु वसंत आगमन जानि ॥ नारिन राख्यो मात बानि ॥ सुरदास प्रभु मिले आनि ॥ रस राख्यो रतिरंग ठानि ॥३॥

६३ राग बसंत देखो प्यारी कुंज बिहारी मूरतिवंत वसंत ॥ मोरी तरुन तरुलता तनमें मनसिज रस वरसंत ॥१॥ चलि चूरन कुंतल अलिमाला मुरली कोकिल नाद ॥ देखत गोपीजन वनराई मदन मुदित

उनमाद ॥२॥ अरुन अधर नवपल्लव सोभा विहसन कुसम विकास ॥ फूले विमल कमलसे लोचन सुचित मन उल्लास ॥३॥ सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत परम सुहाये ॥ श्रीराधा माधवी गदाधर प्रभु परसत सुखपाये ॥४॥

६४ राग बसंत तेरी नवल तरुनता नववसंत ॥ नवनव विलास उपजत अनंत ॥ध्रु०॥ नवअरुन अधर पल्लव रसाल ॥ फूले विमल कमल लोचन विशाल ॥ चलि भृकुटी भृंग भृंगनकी पांति ॥ मृदु हसन दसन कुसमनकी भांति ॥१॥ भई प्रगट अल्प रोमावलि मोर ॥ स्वास सौरभ मलय पवन झकोर ॥ चल फलउरोज सुंदर सुठान ॥ बोले मधुरमधुर कोकिला गान ॥२॥ दुरि देखत व्रज कुंवरराय ॥ बाढ्यो मनमथ मन चोगनों चाय ॥ तोहि मिलि विलस्यो चाहतहें स्याम ॥ जाहि देखत लज्जित कोटिकाम ॥३॥ तब चली चरन मंथर विहार ॥ बाजे रुनन झुनन नूपुर झंकार ॥ सुनि पुलकित गोकुल पति कुमार ॥ मिलि भयो गदाधर सुख अपार ॥४॥

६५ राग बसंत फूले फूलेरी चलिदेखनजैये नववसंत द्रुमवेली ॥ नवरंग मदन गोपाल मनोहर नवराधिका नवकेली ॥१॥ ऋतु वसंत कुसमाकर सजनी मत्त मधुप धुनि सुनि हेली ॥ कानन मुदित जुवती मंडलमें खरजादिक ताननमेली ॥२॥ विविध विहार विविध पटभूषन विविध भांति खेला खेली ॥ सुनि कृष्णदास सुरति रस सागर गिरिधर पिय विहरत जु पेली ॥३॥

६६ राग बसंत कुसुमित कुंज विविध वृंदावन चलिये नंदके लाला ॥ पाडर जाईजुही केतुकी चंपक बकुल गुलाला ॥१॥ अंब दाख दार्‍यों नारंग फल जांबू परम रसाला ॥ ओर बहोत फूले द्रुम देखियत कहत मुदित व्रजबाला ॥२॥ कोकिलकीर चकोर मोर खग जमुनातट निकट मराला ॥ त्रिगुन समीर बहत अलिगुंजत नीकीठोर गुपाला ॥३॥ सुनि मृदु वचन चले गिरिवरधर कटितटि किंकिनि जाला ॥ नानाकेलि करत सखियन संग चंचल नेन विसाला ॥४॥ तहां वीनत कुसम राधिका भामिनि ग्रथित मनोहर माला ॥ कृष्णदास प्रभु के उर मेलत भेटत स्यामत माला ॥५॥

६७ राग बसंत देखिरी देखि ऋतुराज आगम सखी सकल बन फूल आनंद छायो ।। ताल कदली धुजा उमगि अति फरहरे संग सब आपुनी फौज लायो ।।१।। कोकिला कीर गुनगान आगे करें भ्रम भेरी लीए संग आयो ।। घुरत निसान घनघोर मोरन कीयो करत पिक सब्द गज अति सुहायो ।।२।। फिरत तहां हंस पदचर चकोरन बहु सैल रथ चमक चढि धमक धायो ।। उडत बारन बहु कुंमकुमा केसरि तियनके कुचन तकि तमकरायो ।।३।। पंच ले बान चहुँ ओर छाए प्रथम चांपले आपु हाथन चलायो ।। दोर कर सोर धप धाय लरति अति घेरि चहूं ओर गढमान ढायो ।।४।। परी खलबली सब नारि उर मदनकी मिलन मन स्याम अंचल फिरायो ।। जीति सब सुभट 'कृष्णदास' ब्रिंदा विपिन आय गिरिधरन कौं सीस नायो ।।५।।

६८ राग बसंत खेलत हैं हरि आनंद होरी ।। करतल ताल बजावत गावत रामकृष्ण की जोरी ।।१।। ऋतु कुसुमाकर कामदेव पिय माखन दूध दही की चोरी ।। जाके भवन कछु नहि पावत ताके चले उठि भाजन फोरी ।।२।। देखत गोपी सुंदर लीला घूंघट और हँसि मुख मोरी ।। 'परमानंद' स्वामी बहु रंगी सब यों सुख देखि कर पौरी ।।३।।

६९ राग बसंत दोऊ नवललाल खेलति बसंत ।। आनंदकंद गिरिधरन चंद ।।ध्रु०।। नवल कुंज द्रुम नवल मोर ।। नवल कुसुम सम मधुप सोर ।।१।। नव लीलाँबर नवल पीतपट नवल नवल अधर मुख बीरी दंत ।। नवरस केसरि नवल अरगजा नवल गुलाल अबीर उडंत ।।२।। नवल गुपाल नवल व्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनंत ।। 'चत्रभुजदास' दरस दृगलोभी नवल रूप गिरिधरनचंद ।।३।।

७० राग बसंत नंद नंदन वृषभानु नंदनी संग सरस ऋतुराज बिहरति बसंते ।। इत सखा संग सोभित श्रीगिरिवरधरन उत जुबति जन मधि राधा लसंते ।।१।। सूरजा तट सुभग परम रमनीय बन सुखद मारुत मलय मृदुल बहंते ।। प्रफुलित मल्लिका मालती माधवी कुहुँ कुहुँ सब्द कोकिल

हसंते ॥२॥ विविध सुर ग्राम तीन ग्राम गावत सुघर नागरी ताल कठताल बाजति मृदंगे ॥ बैनु बीना अमृत कुंडली किन्नरी झांझि बहु भांति चंग उपंगे ॥३॥ चंदन सु बंदन अबीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते ॥ छिरकति परसपरि सु दंपति रस भरे करतिं बहु केलि मुसकनि हसंते ॥४॥ देखि सोभा सुभग मोहे सिव बिधि तहाँ थकित अमरेस लजित अनंगे ॥ 'गोविंद' प्रभु हरिदास बर्य धरि घोष पति जुबति जन मान भंगे ॥६॥

७१ राग बसंत बन फूले द्रुम कोकिला बोली मधूप झँकारन लागे ॥ सुन भयों सोर रोर बंदीजन मदन महीपति जागे ॥१॥ तिनहु दिनें अंकुर पल्लव जे द्रुम पैलैं लागे ॥ मानौ रति पति रिझ जाचकन बरन बरन दिये बागे ॥२॥ नए पात नई लता पोहुप नए नए रस पागे ॥ नवल केलि विलसति मोहन सँग 'सूर' रंग नए अनुरागे ॥३॥

७२ राग बसंत ब्रिंदावन खेलति हरि जुवति जूथ संग लियै हो हो हो हो होरी सुहाई ॥ दुंदुभी, मृदंग, चंग, आवज, बीना, उपंग, ताल, झांझ, मदन भेरि, मुरली, मुखचंग, ढोल महूबरि गोमुख, सहनाई ॥१॥ म्रगमद चोवा गुलाल केसू केसर रसाल, छिरकति किलकारि देति, गावति गारी सुहाई ॥ निरखति सोभा अपार भूले सुधि बुधि सँभार सिव विरंचि सनकादिक बरखति गुन 'कृष्ण दास' बसंत ऋतु सुहाई ॥२॥

७३ राग बसंत ब्रिंदा बिपिन नवल बसंत खेलति तरुन नबल बलबीर ॥ ब्रज बधू संग मुदित नाचति तरनि तनया तीर ॥१॥ अरुन तरु मुकलित मनोहर विविध द्रुम गंभीर ॥ मधुप बिहंग करत कुलाहल, मलय बहै समीर ॥२॥ अगर कुँमकुम बहुत सौरभ, लसत भुषन चीर ॥ 'कृष्ण दास' बिलास सुखनिधि गिरिधरन गुन गंभीर ॥३॥

७४ राग बसंत खेलति बसंत आए मोहन अपने रंग ॥ करतल ताल कुनित बल अबलि जुवति मंडलि संग ॥१॥ मुरज, मंजरी, चंग, महुवरि, बैन, विषान, म्रदंग ॥ झालरी, जंत्र, उपंग, यंत्र, धुनि उपजत तान तरंग ॥२॥ उडति अबीर गुलाल कुँमकुमा केसरि छिरके अंग ॥ गलित कुसुम

सिर पागु लट पटी नाँचति ललित त्रिभंग ॥३॥ कोउ किन्नरि सरस गति मिलवत कोउचंग ॥ 'जन त्रिलोक' प्रभु बिपिन बिहारी चितवत उदित अनंग ॥४॥

७५ राग बसंत खेलति जुगल किसोर किसोरी ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा अबीर गुलाल लिये भरि झोरी ॥१॥ ताल म्रदंग झांझि ढफ बाजति मुरलीकी थोरी ॥ राग बसंत दोहुं मिलि गावत यह सांवल यह गौरी ॥ रिझवत मोहन रँग परसपर सब निरखति मुख मोरी ॥ दास 'गोविंद' कलिंद सुता तट बिहरति अद्भुत जोरी ॥३॥

७६ राग बसंत हो हो हरि खेलति बसंत ॥ मुकिलित बन कोकिल कल कुजति प्रमुदित मन राधिका कँत ॥१॥ बिबिधि सुगंध छींट नीकी सोभित सुरति केलि लीला लसंत 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधरि नागर ब्रज भामिनि हिलमिल हँसंत ॥२॥

७७ राग बसंत सरस बसंत सखा मिल खेले अद्भुत गति नंद नंदनकी ॥ केसरि म्रगमद और अरगजा बनी कीच सुभ वंदनकी ॥१॥ निरतति मुदित मंडलि कैं मधि कोटि मैंन दुःख खंडनकी ॥ 'सूर' स्याम छबि कहाँलौं बरनौ नंद लीला जग वंदनकी ॥२॥

७८ राग बसंत घन बन द्रुम फूलै सुमुख निहारै ॥ अंकुर मधि मदमत्त झुमति सखी मिथुन मधुप कुल डारहि डारै ॥१॥ कुहुकुहु पिक बोलै मदन सिंधु कलोलै बऊ बिहँग गावति अति सारै ॥ जुवती जूथ प्रति बिंबति पिय उर मनिगन खचित बिमल बर हारै ॥२॥ गिरिधरि नवरँग सुनि सखी तुव सँग चाहति बसंत विहारै ॥ 'कृष्णदास' प्रभु माधव मन हरि जीति लैहुं रति मंत्र विचारै ॥३॥

७९ राग बसंत आज गिरिराज सब साजि साजैं ॥ नवल नव रूप धरि दरस काजैं ॥१॥ नवल नंदलाल सकल ब्रज बाल लीनै सँग खेलि रस फागु सुख सरस लीनौ ॥ नवल हरिदास छबि निरखि अति हरखि मन करखि 'कल्यान' रस रँग भीनौ ॥२॥

८० राग बसंत इतहि कुँवर कान्ह कमल नैंन, उतहि जुवती जहँ सकल ब्रजबासी ॥ खेलति वर बसंत बांनिक सौं, बरनौं कहा छबि प्रगट भई मनौं काम कलासी ॥१॥ भरि भरि गोद अबीर उडावति निविड तिमिर में यौं राजति ठौर ठौर ससी प्रभा कलासी ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधरन रसिक वर तरु तमाल सँग लपटानि हैं कनक लतासी ॥२॥

८१ राग बसंत उमँगी वृंदावन देखों नवल-बधु आवै ॥ आज सखी ब्रजराज कौ बसंत लै बधावै ॥१॥ चारु चंदन चरचित अरचित तिलक दे सिर नावै ॥ देखति सुख लागति नीकौं बृंद बृंद गावै ॥२॥ कुंज भवन ठाढे हरि सुनि सुनि सचु पावै ॥ 'छीत स्वामि' गिरिधरन श्रीविट्ठल ब्रजजन मन भावैं ॥३॥

८२ राग बसंत नवल बसंत उनए मेघ मोरकि कुहकनी ॥ पिक बानी सरस बनी कुहु कुहु कुहोकनी ॥१॥ दंपति मधुपन की पाँति अंकुर महूकनी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर मदन जिति कोकिला टहुकनी ॥२॥

८३ राग बसंत बनि बनि खेलनि चली कमल कली विकास लस ब्रजनारी ॥ अपने अपने ग्रेह तैं निकसी एक ठौर भई सकल फूलि मनौं वारी फूलवारी ॥१॥ तरु तमाल लाल ढिग ठाढे राजत चहुं दिस तैं कनक बेलि गोपी भरति भाजति मनौं पवन डुलाए आगे पाछें होत जोबन बारि ॥ 'सूरदास' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अद्भुत वारि सँवारि ॥२॥

८४ राग बसंत वृंदावन बिहरति ब्रज जुवती जुथ संग फागु ब्रजपति ब्रजराज कुँवर परम मुदित ऋतु बसंत ॥ चोवा मृगमद अबीर, छिरकति भरि कुसुम नीर, उडवति वंदन गुलाल निरखि निरखि मुख हसंत ॥१॥ फूलै बन उपबन लखि वृक्ष बेलि पुहुप पुंज गावति पिक, मोर, कीर उपजति अति सुख लसंत ॥ करति केलि ऋतु बिलास "छीत स्वामी" गिरिवरधरि श्रीविट्ठलेस पद प्रताप सुमरति दुःख नसंत ॥२॥

८५ राग बसंत देखौं नवल बनें नवरंग ॥ नवल गिरिधरलाल

सुंदर नवल भामिनि संग ॥१॥ नवल बसंत नवल वृंदावन नवल है प्रथम प्रसँग ॥ नवल विटप तमाल कैं बीच नवल सुरत तरँग ॥२॥ नवल केसु फूलै प्रफुलित नवल स्यामा अंग ॥ नवल ताल पखावज बाँसुरी नवल बाजति चँग ॥३॥ नवल मुक्ताहार उर पै निरखि लजति अनंग ॥ 'सूर' नवल गुपाल हि निरखति भई मनसा पंग ॥४॥

८६ राग बसंत क्रिडति वृंदावन चंद व्रज जुवतिन संगे ॥ भाव पूरि भरित नैंन सुचित भुव भंगे ॥१॥ इक रूप सुधा सिंधु नैन खची पीवे ॥ इक अंग रस भरि भुजा लाई रही ग्रीवे ॥२॥ इक लेति तँबोल अधर छुवावैं ॥ इक अँक भरति इक आप अँक आवैं ॥३॥ इक बेन सुर समान उघटि तान गावै ॥ इक कुचन मँडलमें चरन कमल जावैं ॥४॥ चुंबति इक बदनकमल चिबुक गहे बाला ॥ इक उरज कुँमकुमतें चरचत बन माला ॥५॥ इक नीवी मोचन भए सचिकित भए नैंना ॥ इक नैंन देति पैलैं इक कहति बेना ॥६॥ इक चलित पवन ललित अँचरन सह्मारे इक ॥ सिथल बसन केस लाज तजि निहारै ॥७॥ स्याम द्रुम रसाल बाला कोकिल श्रम कुंजे ॥ 'रसिक' मनोरथ राधे राधे सम पूजे ॥८॥

८७ राग बसंत मोह्यौ मन आजु सखी मोहन बलवीर ॥ मधुरमुरली सुर गावति सकल जमुना तीर ॥१॥ कनक कपिस अति सौभित कटि तट वर चीर ॥ मानिकि हूति ओढनी साँवल सरीर ॥२॥ सखि सिखंड सिर सिंधु मुदित भेष अभीर ॥ मुकलित नव वृंदावन कूजति पिक कीर ॥३॥ 'कृष्णदास' प्रभु कै हित त्रिगुन बहै समीर ॥ गिरिवरधर जुवतीन सँग बिहरति रति रनधीर ॥४॥

८८ राग बसंत अद्‌भुत सोभा वृंदावनकी देखो नंद कुमार ॥ कंत वसंत आवत जानि बन बेलीन कीये हैं सिंगार ॥१॥ पल्लव बरन बरन तन पहरै बरन बरन फल फूल ॥ ऐतो अधिक सुहाए लागति मन अभरन समतूल ॥२॥ बालक बिहँग अनंग रँग भरि बाजति मनौं बधाई ॥ मंगल गीत गाइवेकौ जानो कोकिल बधु बुलाई ॥३॥ बहति मलय मरुत परिचारक सबकै मन संतोषे ॥ द्विज भोजन सौं होति अलीनकै मधु मकरँद

परोसे ॥४॥ सुनि सखी वचन 'गदाधर' प्रभुके चलौ पीतमपै जइए ॥ नव निकुंज महल मंडप मैं हिलिमिलि पंचम गैंए ॥५॥

८९ राग बसंत खेलति बसंत श्रीवृंदावन मैं मोहन कैं सँग प्यारी ॥ गौर स्याम सोभा सुख सागर प्रीति बढी अति भारी ॥१॥ चोवा चंदन बूका वंदन अबीर गुलाल उडावति न्यारी ॥ कंचन कलस लियैं जुवती, कर मारति भरि पिचकारी ॥२॥ ताल मृदंग झांझ ढफ बाजति बीना धुनि रस सारी ॥ खेलति फागु भाग भरि गोपी रसिकराइ गिरिधारी ॥३॥ स्यांम सुभग तन नील सरोवर कमल फूली सब ब्रजकी नारी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु या छबि उपर त्रिभुवन कौं सुख बलिहारी ॥४॥

९० राग बसंत गुरुजनमैं ठाडे दौऊ प्रीतम सेनन खेलति होरी ॥ नैनन वेनन कह्यौ जू परसपर परम रसिकनी जोरी ॥१॥ पिचकाई दृग छुटति कटाच्छन ढोरैं अरून रँग रोरी ॥ छिरकति रस सौं छेल छबीलौ कुंवरि छबीली गोरी ॥२॥ लसति दसन तँबोल रस भीनै हँसि निरखति पिय ओरी ॥ मनौ सुरंग गुलाल उडावति सुंदर नवल किसोरी ॥३॥ छुटी अलक बदन छबि लागति बरनि सकै कवि कोरी ॥ मनौं कनक कुपी चोवा की, कुंवरि सीस पै ढोरी ॥४॥ कठिन उरोज गाढी जू कँचुकी अरु अँचल ओट अगोरी ॥ सँकेत कुंजन जानि रसिक पिय नैन निमेष न मोरी ॥५॥ ललितादिक सखी पिय प्यारी अरुगिरिधारीकी चोरी ॥ 'गोकुल बिहारी' कौ मुख निरखति प्रेम समुद्र झकोरी ॥६॥

९१ राग बसंत चलि देखनि जैए नंदलाल ॥ध्रु०॥ बनि ठनि आई सब ब्रजकी बाल ॥ आज ऋतु बसंत गावहु रसाल ॥१॥ चली राधे कुँवरि सहचरिन संग ॥ लीए ढफ आवज किन्नरी मृदंग ॥ बिच महुवरि मधुर बाजे उपंग ॥ लै मिली स्यामा जू कौं राग रँग ॥२॥ रँग रँगी भूमि भवन पच रँग अबीर ॥ आए करति कुलाहल जमुना तीर ॥ ठाडे मधूसूदन रसन गोपी नीर ॥ नव केसरि कैं रँग रँगे है चीर ॥३॥ जिह कुंज मधुप गुनी बास ॥ बोलै अंब डार कोकिल प्रकास ॥ जहँ स्याम सुंदर करैं बिलास ॥ श्रीजगन्नाथ भजि 'माधौदास' ॥४॥

९२ राग बसंत फूल्यौं बन ऋतु राज आजु चलि देखिए ब्रजराज ।।ध्रु०।। निरखति सोभा कही न आवै मनौं उनयौ अनुराग ।। उत राधिका सखी सब सँग ले खेलनि निकसी फाग ।।१।। बहु सुगंध बहु अबीर कुँमकुमा लिए है सखन समाज ।। झांझ मृदंग झालरि ढफ बीना किन्नरि महुवरि साज ।।२।। जुरे टोल जहँ दोऊ जाय कैं भयौ परम हुलास ।। खेलति प्यारी परम रस उपजति बहु विधि करति बिलास ।।३।। सिव विरंचि नारद सब गावैं लीला अमृत सार ।। श्रीविट्ठलनाथ प्रताप सिंधु कौ किन हू न पायौ पार ।।४।।

९३ राग बसंत फूलि झूमि आई बसंत ऋतु ।। जमुना तट नव कान्हर बिहरति नँद कुमार घोख जुवतिन बितु ।।१।। गिरिधरि नागर तोहि बुलावति वऊ बिधान सखी कहा कहूं हितु ।। 'कृष्णदास' प्रभु कौतिक सागर तुम उपरि चलि धरैं चपल चितु ।।२।।

९४ राग बसंत भाँमिनी चंपेकी कली ।। वदन पराग मधुर रस लंपट नव रँग लाल अली ।।१।। चोवा चंदन अगर कुँमकुमा करि जू सिंगार चली ।। खेलति सरस बसंत परसपर रविकी कांति मली ।।२।। ताल मृदंग झांझ ढफ बीना बीच बीच मुरली ।। 'कृष्णदास' प्रभु नव रँग गिरिधर हिलि मिलि रँग रली ।।३।।

९५ राग बसंत हो हो हरि खेलत बसंत मुकलित बन कोकिल कल कूजत प्रमुदित मन राधिका कंत ।।१।। विविधि सुगंध छींटनी सोहंत ।। सुरति केलि लीलाधर लसंत ।। 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर ब्रज भामिनी हिलीमिली हसंत ।।२।।

९६ राग बसंत फिर बसंत ऋतु आई सजनी वृंदावन सुखदाई ।। चली जहँ तहँ बंसीबट श्री नंदकुमार कन्हाई ।।१।। कोकिल कीर मराल मंडली रंग भोमि मन भाई ।। ठोर ठोर बेली द्रुम फूले अबीर गुलाल सोंधाई ।।२।। कहा बरनौं कुंजन की सोभा कान्ह कुंवर मिलि खेलें ।। करत बिहार चले जमुना तट अंस अंस भुज मेलें ।।३।। नीलांबर पीतांबर सोहे चंदन

बंदन अति घोरी ॥ कही न जात दुहुन की सोभा स्यामा स्याम की जोरी ॥४॥ मंद सुगंध चल्यों मलया निल सीत पवन सुख रासी ॥ 'मान दास' बलि यह गिरिधर प्रभु ब्रिंदा बीपिन बिलासी ॥५॥

९७ राग बसंत कोकिल बोली बन-बन फूले, मधुप गुँजारन लागे ॥ सुनि भौ भोर, रोर बन्दनिको, मदन-महीपति जागे ॥१॥ ते दूने अंकुर द्रुम-पल्लव, जे पहिले दव दागे ॥ मानहु रतिपति रीझि जाचकनि, बरन-बरन दिय बागे ॥२॥ नवल प्रीति, नव लता, पुहुप नव, नवल नयन रस-पागे ॥ नवल नेह, नव नागरि हरषित, सूर, सुरंग अनुरागे ॥३॥

९८ राग बसंत खेलत बसंत ब्रजराज आज प्यारी राधाजु के संग ॥ उत जुवती इत ग्वालबाल संग करत रति केल भुव अभंग ॥१॥ गावत चाचर बाजत डफ ढोलक बीना ताल उपंग ॥ झांझ मुरज भेरी सहनाई महुवर मुरली मृदंग ॥२॥ गुलाल अबीर ले भरि-भरि झोरी घोरी केसर रंग ॥ हो हो हो हो बोले डोलत सोंधे भीने अंग ॥३॥ छिरकत फिरत सबे मिल मच्यो अरगजा पंक ॥ उत नवलासीन मारी गारी होरी को देत नीसंक ॥४॥ धाई लई भुज भरी सांवरो मानो चंदन लपटे भुजंग ॥ पीय सारंग रस सलिल मिल गई बाढी प्रेम तरंग ॥५॥ खेलत बाम बडभागिन पियसंग अति अनुराग उमंग ॥ विष्णुदास श्री गुपालजु को कौतुक निरखी लजत कोटी अनंग ॥६॥

९९ राग बसंत खेलनि आँई हम मोहन तुम सँग ॥ बेगि मँगाओ जु अबीर अरगजा और केसरि कौ रँग ॥१॥ धाई गहि बैयाँ गिरिधर की चोवा चंदन लपटावति अंग ॥ 'हरि वल्लभ' प्रभु दिजै फगुवा जानति तुम्हारे ढंग ॥२॥

१०० राग बसंत खेलति नंद महरि को ढोटा ठाड़ौ सिंह दुवारि होरी ॥ बालक सँग बुलाई घोष के कीन्हें बिबिधि सिंगारि होरी ॥१॥ सूथन लाल बागौ सेत पगिया केसर रँग बोर होरी ॥ फैंटनि पटका तार जरकसी, सीस चंद्रिका-मोर होरी ॥२॥ केसर रंग निचोई भरे घट मृगमद

अतर फुलेल ॥ करन कनक-पिचकाई छिरकति कीच मचीं सब गैल होरी ॥३॥ दुंदुभि ढोल भेरि सहनाई बाजति मधुर मृदंग होरी ॥ झाँझि ताल महुवरि किन्नरी ढफ सुर मधुरे मुख चँग होरी ॥४॥ धुनि सुनि कैं घर-घर तैं निकसी ब्रजनारी सिंगार बनाई होरी ॥ तिन मधि कुँवरि राधिका राजति पिय-चित लेति चुराई होरी ॥५॥ प्रमुदित्त मन खेलन कौ आवति गाबति सरस धमार होरी ॥ सैंननि सैंन मिलाई लाल सौं देति भाँवती गारी होरी ॥६॥ छूटन अब न पाओगे मोहन बलदाऊ लेऊ बुलाय होरी ॥ फगुवा के मिस धाई गहे हरि मुरली लई छिनाई होरी ॥७॥ चंद्रावलि चोवा चंदन लै छिरकति मदन गुपाल होरी ॥ करत मनोरथ मन के भाए बिबिधि भाँति के ख्याल होरी ॥८॥ तब हलधर सखन लै धाई घेरीं सब ब्रजबाल होरीं ॥ केसर कलस नवाई सीस तैं डारति सुरंग गुलाल होरी ॥९॥ तब नंदरानी बहु बिधि भूषण मेवा दयौ मंगाई होरी ॥ चिरजीयौ ब्रजराज लाड़िलै कहैं असीस सुनाई होरी ॥१०॥ दोउ हाथ मुख परसि स्याम कौ, पुनि-पुनि लेति बलाई होरी ॥ रस बस मगन भई ब्रज सुंदरि, चली संकेत बताई होरी ॥११॥ या बिधि राज करौं दंपति नित-प्रति रास बिलास होरी ॥ श्री विट्ठल पदरज प्रताप तैं गावत यह जसु 'दास' होरी ॥१२॥

१०१ राग बसंत चतुर नारि नागर नायक सों खेलनि आई हो ! होरी ॥ अंग-अंग भूषन अति राजत दियें ललाट बेंदी रोरी ॥१॥ सौंधें भीनी सारी सौहे नील कंचुकी कसी डोरी ॥ उड़त गुलाल अरगजा छिरकत केसर की छूटी कमोरी ॥२॥ ताल-मृदंग उपंग-बांसुरी द्वार निसान घन घोरी ॥ नवल बसंत होत 'परमानँद' नवल-नवल पिया जोरी ॥३॥

१०२ राग बसंत जदुपति जल क्रीड़त जुवति-संग, सागर सकुचित तजियत तरंग ॥ षोडस सहस सत अष्ट नारि, तिनमैं अति सोभित श्री मुरारि ॥ उडुगन समेत ससि सिंधु-बारि, मनु पुनि आयौ चित हित बिचारि ॥ मृगमद, मलयज, केसरि कपूर, कुमकुमा, कलित कृत अगरू चूर ॥ छूटत काटाच्छ सर भ्रकुटि पूर, मनु धनुष निपुन संग्राम सूर ॥ चंचल मलयानिल चलत सीर, अरू जलद-बृंद छित भित समीर ॥ बर बदन निकट कच

चुवत नीर, मकरंद निमित मधुकर अधीर ।। तहँ नारदादि मुनि करत गान, जग पूरत हरि जस सुचि बितान ॥ सुर सुमन सुधन बरषत विमान, जै जै सूरज प्रभु सुख निधान ॥

१०३ राग बसंत दोऊ नवललाल खेलति बसंत ।। आनंदकंद गिरिधरनचंद ।।ध्रुव०।। नवल कुंज द्रुम नवल मोर ।। नवल कुसुम सम मधुप सोर ।।१।। नव लीलाँबर नवल पीतपट नवल अधर मुख बीरी दंत ।। नवरस केसरि नवल अरगजा नवल गुलाल अबीर उड़ंत ।।२।। नवल गुपाल नवल ब्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनन्त ।। 'चत्रभुजदास' दरस दृगलोभी नवल रूप गिरिधरनचंद ।।३।।

१०४ राग बसंत विविध बसंत बनाएँ चलौं सब देखन कुँवर कन्हाई ।। गिरिघटियां द्रुमलता सुगंध अलि ठाडे सजि सुखदाई ।।१।। बागों केसरी चोवा सोहै सुरंग गुलाल उडाई ।। ब्रजबालक गावति कोलाहल धुनि 'ब्रजाधीस' मनभाई ।।२।।

१०५ राग बसंत वृंदावन क्रीडति नँद नंदन संग व्रषभान दुलारी ।। प्रफुलित कुसुम कुंज द्रुम वेली कोकिल कूजति मधुप गुँजारी ।।१।। चोवा चन्दन अगर कुँमकुमा मृगमद केसरि सुगंध संवारी ।। अति आनंद परसपर छिरकति हाथन लै कनक पिचकारी ।।२।। बाजति ताल मृदंग झांझ ढफ बीन रबाब मुरली धुनि प्यारी ।। अबीर गुलाल उडावति गावति नाँचति हंसति दै दै कर तारी ।।३।। चिरजीयौं सकल सुखदाइक लाल गोवरधनधारी ।। श्रीबल्लभ पदरज प्रताप तैं 'हरिदास' बलिहारी ।।४।।

१०६ राग बसंत बनि बनि खेलनि चलि कमल कली विकास लस ब्रजनारी ।। अपने अपने ग्रेह तैं निकसी एक ठौर भई सकल फूलि मनौं वारी फुलवारी ।।१।। तरु तमाल लाल ढिंग ठाढे राजत चहुँ दिस तैं कनक बेलि गोपी भरति भाजति मनौं पवन डुलाए आगै पाछैं होत जोबन बारि ।। 'सूरदास' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अद्‌भुत वारि सँवारि ।।२।।

१०७ राग बसंत बन उपबन ऋतुराज देखि मनमोहन खेलति बसंत आई ॥ केसरि सुरँग गुलाल परसपर मुख अंग लपटावति सुखदाई ॥१॥ त्रिबिध समीर पराग उडावति कोकिल गावति मृदु सरसाई ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु बलि मन मोह्यौं बाजति ताल मृदंग सुघराई ॥२॥

१०८ राग बसंत बन्यौ छबीलौ स्याम सखि चली बंसीबट बसंत सुखदाई ॥ करि सिंगार आई नंदनंदन जल छोरति पिचकाई ॥१॥ कोऊ कुसम माल ले आई सुरँग गुलाल कपोल लगाई ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु मृदु बीन बजावति गावति कोकिल सुसरसाई ॥२॥

१०९ राग बसंत रँग रँगीलो नंदकौं लाल रँगीली प्यारी ब्रजकी बीथनि मैं खेलति फागु ॥ रंग रंगीले संग सखागन रंगीली नव बधु तैसोंई जम्यौं रंगीलो बसंत रागु ॥१॥ रंग रंगकी ओझट छिरकति हरखि हरखि बरखि अनुराग ॥ 'नंददास' प्रभु कहांलौ बरनू बेदहु आपुन मुख कहयौ यह माननि बडभाग ॥२॥

११० राग बसंत हो हो होरी ! हलधर आवे ॥ ऐसी प्रीति स्यामसुंदर सों हरि-लीला अपने मुख गावे ॥ पियें बारूनी मत्त संकरषन नैन रसमसे कच कछु ढीले ॥ भौंह चढ़ी सिर पाग लटपटी बचन गंभीर अधर-पुट गीले ॥ नील बसन-छबि उगत चरन-गति सुभ्र सरीर रोहिनी नंदन ॥ 'परमानंद' राम जुवती प्रिय कुंडल एक चढ़ाए चंदन ॥

धमार के पद मंगलादर्शन होरी - खयाल के पद

१ राग काफी पीतांबर काजर कहां लग्यो हो ॥ ललना कोन के पोंछे हें नयन ॥ध्रु०॥ कोन के ग्रेहनेहे रस पागे वे गोरी कछु ओर ॥ देहु बताय कान राखति हों एसे भये चितचोर ॥१॥ अधरन अंजन लिलाट महावर राजत पीक कपोल ॥ घूमि रहे रजनी जागेसे दुरतन काम कलोल ॥२॥ नखनिसान राजत छतियन पर निरखो नयन निहार ॥ झूमरहीं अलकें अलबेली पागके पेच संवार ॥३॥ हम डरपें जसुदाजूके त्रासन नागर नंदकिशोर ॥ पायपरें फगुवा प्रभुदेहो मुरली देहु अकोर ॥४॥ धन्य-धन्य

गोकुलकी गोपी जिन हरि लीने हराय ।। नंददास प्रभु किये कनोंडे छांडेनाच नचाय ।।५।।

२ राग काफी मेरो नवरंग बिहारी ।। बलबल जांऊं तिहारी ।।१।। बाजे बहु भांत बजावें ।। गाना रसरंग बढावें ।।२।। गावें गुण गीत रसाला ।। भावे मोहि नंदको लाला ।।३।। लिये संग राधा गोरी ।। बोलें सब हो हो होरी ।।४।। सोंधे सों भीनों वागो ।। सारीरति रेनको जाग्यो ।।५।। शोभा कहा बेन बखानें ।। माधुरी के नयन ही जानें ।।६।।

३ राग काफी राधावर खेलत होरी ।। नंद गाम के ग्वाल इते उत बरसाने की गोरी ।। डफ करताल बजावत गावत केशर कुंकुम घोरी ।। परस्पर रंग मेंबोरी ।।१।। गावत गारी गवार मानों नव नागरी नवजोव न जोरी ।। नंदलाल बडो रसिया है हमते करत बराजोरी ।। फागुन में कोन की चोरी ।।२।। दशोदिश में गुलाल घुमड रह्यो काहू लखन पर्‌यौरी ।। औचक आय धाय चंद्रावलि ललितादिक सब दोरी ।। गह्यो कुंवर वर जोरी ।।३।। मोर मुकुट वन माल मुरलिका पीतांबर लियो छोरी ।। भामिन वेष बनाय कहतहें नंदराय की छोरी ।। बनि छबि काम कमोरी ।।४।। देदे तारी नचावत ग्वालिन अपनी अपनी ओरी ।। वादिन की सुध भूले ललारे यमुनातट चीरहचोरी ।। आज सखी दावपचोरी ।।५।। कृष्ण रंगफगुवाजोभा मतो देकर बहुत निहोरी ।। हैआधीन वृषभान सुताके विनती करेकर जोरी ।। देउ अपनो कर छोरी ।।६।।

४ राग काफी सांवरे मोहि रंग में बोरी ।। बैयां पकर मेरी सिर की गगरीया छीनकें सिरतें ढोरी ।। रंगमें लालन रसबस कीनो डारी गुलाल की झोंरी ।। गावन लाग्यो मुखते होरी ।।१।। आय अचानक मिल्योरी डगरमें तब निरख्यो नंदकोरी ।। भर भुजले मोहि पकरकें जीवन ने वरजोरी ।। माला मुतियन की तोरी ।।२।। मर्यादा मेरी कछूना राखी कही एक बात ठगोरी ।। तब इनकों में आंख दिखाई मत जानो मोहि भोरी ।। जानू तेरे चितकी चोरी ।।३।। मेरो जोर प्रभु कछुन चलत है कंचुकी की कसतोरी ।। सूरदास प्रभु तिहारे मिलन कूं रसियाने रंग में बोरी ।। गई में नंदकी पौरी ।।४।।

५ राग काफी व्रज में हरि होरी मचाई ।। टेक ।। इतते आईं सुघर राधिका उततें कुंवर कन्हाई ।। हिलमिल फाग परस्पर खेलें शोभा वरणी न जाई ।। नंदघर बजत बधाई ।।१।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी बीना डफ सहनाई ।। उडत अबीर गुलाल कुंकुमा रह्यो सकल व्रजछाई ।। मानो मघवा झरलाई ।।२।। लेलेरंग कनक पिचकारी सन्मुख सबै चलाई ।। छिरकत रंग अंग सब भीजे झुकझुक चाचर गाई ।। परस्पर लोग लुगाई ।।३।। राधा ने सेनदई सखियन कों झुंडझुंड घिरआई ।। लपट झपट गई स्याम सुंदर सों परवश पकर लेआई ।। लालजी कों नाच नचाई ।।४।। छीन लई मुरली पीतांबर सिरते चुनरी उढाई ।। वेनी भाल नयन विच काजर नकवेसर पहराई ।। मानो नई नार बनाई ।।५।। मुसकतहो मुख मोडमोड कें कहांगई चतुराई ।। कहां गये तेरे तात नंदजी कहां जसोदामाईं ।। तुम्हें अब लेय छूडाई ।।६।। फगुवा दिये विनजानन पावो कोटिक करो उपाई ।। लेहूं काढक सरसब दिन की तुम चितचोर चवाई ।। बहुत दधि माखन खाईं ।।७।। रास विलास करत वृंदावन जहां तहां यदुराई ।। राधा स्याम युगल जोरी पर सुरदास बलजाई ।। प्रीति उररहा समाई ।।८।।

६ राग काफी नेह लग्यो मेरो स्याम सुंदरसों ।। टेक ।। आयो वसंत सबी बन फूले खेतन फूलीहै सरसों ।। में पीरी पियाके विरह सें निकसत प्राण अधरसों ।। कहो जाय बंसीधर सों ।।१।। फागुन में बहोरी खेलत हें अपनेअपने बरसों ।। पियके वियोग जोगन व्है निकरी धूर उडावत करसों ।। चली मथुरा की डगर सों ।।२।। ऊधो जाय द्वारका में कहियो इतनी अरज मेरी हरि सों ।। बिरह व्यथा से जियरा डरतहें जबतें गये हरि घरसों ।। दरस देखन कोंहों तरसों ।।३।। सूरदास मेरी इतनी अरज है कृपासिंधु गिरिधरसों ।। गहेरी नदीयां नाव पुरानी अबकें ऊबारो सागरसों ।। अरज मेरी राधाबरसों ।।४।।

७ राग काफी माहि सब विधि रंगन रंगी निपट निडर ह्वै कैं ।। तकि मारी पिचकारी मो तन उर में आँन लगी ।।१।। नयौ फागु खेलि नवीनौं नब रँग पीत पगी ।। 'ब्रजाधीस' प्रभु सौं हिलमिल कैं सब

निस रैन जगी ॥२॥

मंगला के पद राग - भैरव

१ राग भैरव भोर भयें नंदलाल संग लीयें ग्वालवाल फेंटन भरि लियें गुलाल बोलत मुख होरी ॥ केसरि भरि कलस साथ पिचकाई लियें हाथ छिरकतहें सोंधो बहु डारत ब्रजखोरी ॥१॥ युवतिनके यूथ मांह धसि काढत पकरि बांह मनमें कछु सकुच नांहि लीने भरि झोरी ॥ बाजें डफ मृदंगताल कूजत मुरली रसाल झुंडन मिलि गावत विच महुवरि धुनिथोरी ॥२॥ यहविधि हरि करत केलि वरन्यों नहीं जात खेल अनुरागे पागे सव आए नंद पोरी ॥ निरख मुसकानी आरती वारती नंदरानी छवि पर वारि डारों हरिजीवन तृणतोरी ॥३॥

२ राग भैरव रात फाग खेलि प्रात आए लाल प्यारे ॥ अंग अंग मरगजे बागे सुंदर रंग सौंधे सुवास मंद मंद आवे अति उनीदे सिथिल - नैंन तारे ॥१॥ अलक भ्रकुटि भाल गाल, चिबुक भूषन अति रसाल, रसमसे रंजित गुलाल भाँमति रस भारे ॥ डगमगाई चलति पाई मुख जँभाई मुसिकाई मद सुरत चिह्न चरचित तानन सुनि प्यारे साँचें बोल प्रीतम-प्यारे मन सलोल बालम बदन बोल अपुने बिसतारे ॥ गोकुल प्रभु भले जु भले वेऊ भली, भ्रकुटि जिन भुराए आए हमारे सो यह करन उन सौं जारि बिजारे ॥३॥

३ राग भैरव प्रात समै नंदलाल खेलति हो हो होरी ॥ सीस पाग जु कर हि भरै रंग बोरी ॥१॥ सब नारि जुरि कैं आई नंद जु की पौरी ॥ हाथन पिचकाई लीये अबीर भरि झोटी ॥२॥ राधा जु खेलति खेलति साँकरी की पौरी ॥ सूरदास मदन मोहन भली बनी जोरी ॥३॥

४ राग भैरव पिछवारे तैं छान ऊडावै होरी कौं खिलवारि ॥ सास बुरी मेरी नँनंद हठीली कंथ सुनैं देइ गारि ॥१॥ गारी गावैं ढ़फ हि बजावैं धुम मचावैं द्वारि ॥ 'द्वारिकेस' प्रभु की छबि निरखति बार-बार बलिहारि ॥२॥

५ राग भैरव पीतम प्यारी कैं सँग होरी गरे-लाग पिय खेलैं ॥ चोवा चंदन अरु अरगजा अबीर गुलाल उडावैं केसरि रँग पिचकारी भरि भरि पीया पिय पै मेलैं ॥१॥ ताल पखावज बीन बाँसुरी ढ़फ मुख चँग बजावैं तारी दै दै गारी गावे करति परसपर केलैं ॥ हाथ जोरी करि नाँचैं मगन मन माँही मोहै ॥ सुर नर 'ब्रजपति' की छबि निरखि अति छबिली छेलै ॥२॥

६ राग भैरव लालन सँग राची हो खेलति फागु प्रवीनी ॥ रँग भीनीं आभूषन दुति तन झलकति सारी झीनीं ॥१॥ बीना मृदंग मधुर धुनि गावति दृगन नचावत नेह नवीनी ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु बिबिधि गुलालन घुमडिन मन की फीनीं ॥२॥

७ राग भैरव अपने पिया सँग खेलौं होरी ॥ घर घर तैं बानक बनि आँईं, साँवरी, सलौंनी, सुँदरि भोरी ॥१॥ बाजत ताल, मृदंग मुरज, ढ़फ, बिच मुरली धुनि थोरी ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा, अबीर लिए भरि झोरी ॥२॥ मैं अपुनो मन भायौ पायौ बंधी प्रेम रस डोरी ॥ 'सूर स्याम' प्रभु रस भरे खेलति मदन मोहन राधा जु गोरी ॥३॥

८ राग भैरव ए सुनि सजनी फागुन में ह्याँ कबहूँ न रहति जानति जु गोकुल नगर होरी ऐसी ॥ औरन की नारि अपुनी कर मानति ऐसै लंगर ढ़ीठ गुरुजन लोक लाज जानति कैसी ॥१॥ मुँह आई गारि गावति है देखति सब काहु लगति अनैसी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' कैं प्रभु की रीति अटपटी कहति न बनि आवैं निरखति हीं जैसी ॥२॥

९ राग भैरव खेलत नंदनंदन सघन कुंज होरी ॥ध्रु०॥ मोहन छबि बरनू कहा कोटि काम मोरी ॥ श्री राधाजूकी वदन जोति चंद हु तें गोरी ॥१॥ उलट पुलट ताल लेत मान तान तोरी ॥ उरप जित गति गावे वृषभानकी किसोरी ॥२॥ बाजत मृदंग ताल झांझ नादसों री ॥ ता थेई ता थेई थेई कोकिला गति थोरी ॥३॥ ललितादिक हरखि निरखि संग लागे दोरी ॥ 'केसोदास' गावे अब नये नेह चाह जोरी ॥४॥

१० राग भैरव प्रात काल नंदलाल कुंजन मधि डोलै ॥ सांवरे तन अलक मानौं अलि बोर कमल नैंन देखत दमकि मधुरे बैन हो हो होरी बोलै ॥१॥ बाजत बीना मृदंग अधवट आवज उपंग संख बंसी अमृत कुंडली झांझ झनक डोलै ॥ हँसि हँसि डारति बूका बंदन रसिकराई नँद नंदन करति है प्रेम फंदन कंचुकि बंद खोलै ॥२॥ छांड़ि लोक बेद भ्रम करनि बिबिध नेम केंधो मंजन करति सूर सुता रसमसे सुख सों ले 'कहि भगवान हित रामरई प्रभु कौं ऐसौ खेलि अपने ठाकुर और नंद कौ बस करत बिनु मोले ॥३॥

११ राग भैरव वृंदावन बंसीबट के तट व्रजभूषण खेलत हे होरी ॥ अगर अबीर गुलाल उडावत नंदलाल वृषभान किशोरी ॥१॥ अपनेअपुने गृहतें निकसी आली सास ननद की चोरी ॥ ओर सखी सब छांडि स्याम मेरो कर मरोड पहोंची गहितोरी ॥ सूरदास प्रभू सब सुखदायक कंचन अरू पारस की जोरी ॥३॥

१२ राग भैरव होरी के दिनन में तू जो नवेली मति निकसे बाहिर घर तेरी ॥ तू जो नई दुलही नवजोवन रहे घर बेठि मान सिख मेरी ॥१॥ डगर बगर और बाट घाट कान्हकर तनित चरचा तेरी ॥ जादिन तो हिलखे घनआनंद तादिन होय कौन गति तेरी ॥२॥

१३ राग बिभास होतों होरी नंदलालसों खेलोंगी ॥ भरूं भराऊं गति उपजाऊं जग उपहास संकेलोंगी ॥ नाचूं उघरि बजाऊं गाऊं पतिव्रत पायनोंपे लोंगी ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुसों रीझि मालगूलरी मे लोंगी ॥२॥

१४ राग बिभास चोंकिपरी गोरीहोरी में स्याम अचानक बांह गहीरी ॥ समर छूडाय रिसाइ चढीभ्रु अनखअधर कछु वात कही ॥१॥ चित्तेचित्ते हँसिकेंवसिकें कसिकें भुजमें रस रास लही ॥ हित हरिवंस बाल जाल छबि ख्याल रसालहि देखि रही ॥२॥

१५ राग बिभास आज तो छबीलो लाल प्रातही खेलन चल्यो

सखा संग लाय लीयें प्रेम गारी गायकें ॥ खेलत खेलत व्रषभान जु की पौरी आये हो हो-होरी बोले प्यारो मनभायकें ॥१॥ छबीली रच्यो उपाय स्याम कों लीने बुलाय मैया की दृष्टि बचाय लीने उरलायकें ॥ अरसपरस दोऊ महारस भीने सहचरी सुख पावें रसिक मुख गाइकें ॥२॥

१६ राग बिभास अनोखे होरी खेलन लागे ॥ मिसही मिस रंग भरत सांवरो कछु सोवत कछु जागे ॥१॥ लाल गुलाल लियें कर ललना नंदनंदन अनुरोगे ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभु बनेहें मरगजे वागे ॥२॥

१७ राग बिभास होरी खेलति हैं ब्रज नंद-लड़ैतौ-लाल ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा कंठ सोहै मौंतिन की माल ॥१॥ कोऊ गुलाल केसर भरि लिए कोऊ कंचन-थाल ॥ एकु नाँचत एकु मृदंग बजावति, गावति गीत-रसाल ॥२॥ छिपत फिरत हैं कुंजन महियाँ, हो हो करत बिहाल ॥ 'चतुरभुज' प्रभु पिय गरैं लगाई लई, रीझि दई उर माल ॥३॥

१८ राग बिभास होरी के मदमाते आए ॥ नवल लाल मेरे मन भाए ॥१॥ नैन तंबोल कहाँ रंग राचे ॥ खेलि बिनोद लाल के साँचे ॥२॥ होरी के मिसि सब बनी आई ॥ चोवा चोली कहाँ रँगाई ॥३॥ जावक रँग रगमगी पगीयाँ ॥ घूमति नैन रैंन जब जगियाँ ॥४॥ नेह नयौ कित लाल छिपावति ॥ चिह्न सकल अँग प्रगट जनाबति ॥५॥ गोपी जन मन मोद बढ़ावति ॥ 'नंददास' प्रभु काहे लजावति ॥६॥

१९ राग बिभास मोहन प्रात हि खेलति होरी ॥ चोवा, चंदन, कुँमकुमा, केसरि, अबीर, लिऐं भरि झोरी ॥१॥ कंचन की पिचकाई भरि भरि छिरकीं सकल किसोरी ॥ मुख माँडति गारी दे भौंडति, गहि राखति बर जोरी ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधौटी बिच मुरली धुनि थोरी ॥ 'छीत स्वामि' गिरिधर सँग क्रिड़ति यह बिधि सब मिलि गोरी ॥३॥

२० राग बिभास स्याम सँग खेले री होरी ॥ पिचकाई दृग सैंन इत उत रँग पीतम कों चित चोरी ॥१॥ उड़ति गुलाल अनुरागनि बादर छयौ री ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु गावति बहु धुनि कमल मुखी ब्रज खोरी ॥२॥

२१ राग बिभास मदन मोहन कुंवर वृषभानु नँदिनी सुभग नव कुंज में खेलति होरी ॥ गोप कुमार सँग एकु दाईं बने उत सकल ब्रज-बधू एकु जोरी ॥१॥ बाजति बीना, मृदंग झांझ, ढफ, किन्नरी, चैत, झूमकि गान करति गोरी ॥ उड़ति बदन नव अबीर बहु अरगजा अरु बिबिधि रँगन गुलाल झोरी ॥२॥ तब ही सब सखी जन मतौ करि धाईं गिरिधर गही नील पीत पट सौं गाँठि जोरी। एक सखी स्याम कैं सीस बैंनी गुही, एकु दृग आँजि मुख माँड़ि रोरी ॥३॥ तब ही ललिता दौरी झटकि कैं मुरली गहि सब हीं नँदलाल सौं करि ठठोरी ॥ एक नब कुँमकुमा कनक गागरि भरि आँनि कै दौऊन के सीस ढ़ोरी ॥४॥ तब सबन अपुनो फगुवा माँगि लीनौं, दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ 'दास गुपाल' बलि जाई यह छबि निरखि रहो हरि चरन मन दृढ़ मोरी ॥५॥

धमार के पद-मंगला

१ राग रामकली हो हो होरी खेले नंदकी कर अंबुजभरे मकरंदको ॥ तनसुख पाग बनी कसूंभी सिरधरे मोर के चंदको ॥१॥ एक ओर प्रगट्यो तरुनीमधि अंकुरपरमानंदको ॥ एक ओर ब्रजजन चकोरमधि उदय भयो मानों चंदको ॥२॥ लेले सुरंग अबीर दुहुंकर खेलभयो मनफंदको ॥ तिहि ओसर प्यारी मुख निरखत मान गयो अरविंदको ॥३॥ चोवाचंदन ओर अरगजा मृगमद कुंकुम गंधको ॥ भांति-भांति बाजे बाजत सुनि छूटि गयो मन बंधको ॥४॥ यह सुख निरखि बरखा वरखावत सुमनन मिलि सुर बृंदको ॥ तिहि औसर रघुवीर निरखि मुख हुलस्यो मन आनंदको ॥५॥

२ राग रामकली चलो सखी मिलि देखन जैयें नंदकेलाल मचाई होरी ॥ अबीर गुलाल कुंकुमा केसरि पिचकारिन भरि भरि ले दौरी ॥१॥ एक जु पियकी चोरा चोरी हमें लखे नहीं कोरी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुकों भरि हें राधा गोरी ॥२॥

३ राग रामकली हो हो होरी खेलोंगी ॥ अबीर गुलाल कुंकुमा

केसरि पिय पर मे लोंगी ।।१।। लोकलाज कुल को निसखारी पायन पेलोंगी ।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों भली बुरी सिर झेलोंगी ।।२।।

४ राग रामकली कान्ह सौं कौन कहे कहा आली री भोर हि नाम लै गावत डोलै ।। काम की डौंडी बसंत लीए दूजे होरी निसंक व्है लाज कौं खोलै ।।१।। कैसें रहे ब्रज में कन्हैया जोई मुख सोई बक करि बोलै ।। भरि पिचकारी मुख पै मारी 'सूरदास' के प्रभु कैसे समझाऊ मन आँई तोलै ।।२।।

५ राग रामकली रँग हो रँग हो पिया पै डारौंगी ।। स्याम सुंदर अविलोकि वदन छबि, तन मन धन सब बारौंगी ।।१।। अतर गुलाब अरगजा सब मिलि भरि भरि डारौंगी ।। 'सूर' के प्रभु साँवरे कारन हँसि हँसि घुंघट टारौंगी ।।२।।

६ राग रामकली हों हरि सँग होरी खेलोंगी ।। चोवा चंदन अबीर अरगजा पिचकाईन रंग मेलौंगी ।।१।। लोक लाज कुल कानि सबै तजि पतिवृत पाँइन पेलौंगी ।। 'सूरदास' स्वामी की बाँह द्वै पकरि कै झेलौंगी ।।२।।

७ राग रामकली स्याम सँग खेलेरी होरी ।। पिचकाई दृग सैंन इत उत रँग प्रीतम को चित चोरी ।।१।। उड़ति गुलाल अनुरागनि बादर छयौ री ।। 'ब्रजाधीस' प्रभु गावति बहु धुनि कमल मुखी ब्रज खोरी ।।२।।

८ राग ललित अहो हरि होरी में जबजो गये तुम भाजि ।। गारी देहूँभरूं भराऊं मुख मांडोंगी आज ।।१।। हो अपनों मनभायो करिहों सुनि व्रज राजकुमार ।। जगन्नाथ कविराय के प्रभुमाई सकल घोख सिरताज ।।२।।

९ राग मालकौस खेलन आई धमार नवल तरुनी गोपकुमारी ।। सहचरी में चोप चटकीली देत रसीली गारी ।।१।। कोऊ बनी नंद कोऊ बलदाऊ बहुत ढीठ बरसाने वारी ।। जसुमति सों गठजोरी

कीन्ही कृष्णदास हितकारी ॥२॥

१० राग देवगंधार आज माई मोहन खेलत होरी ॥ नौतनवेष काछि ठाडे भये संग राधिका गोरी ॥१॥ अपने भामते आईं देखन कों जुरिजुरि नवल किसोरी ॥ चोवाचंदन ओर कुंकुमा मुखमांडत ले रोरी ॥२॥ छूटी लाज तब तनन संभारत अति विचित्र बनी जोरी ॥ मच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों कोरी ॥३॥ देत-असीस सकल व्रज वनिता अंगअंग सब भोरी ॥ परमानंद प्रभु प्यारी की छबि पर गिरिधर देत अकोरी ॥४॥

११ राग देवगंधार मदनगुपाल लालसों रसभरि खेलत गोकुल नारी ॥ ऊंचेसुर गावत मन भावत लोकवेद डरडारी ॥१॥ चोवा मेद जवादसाख गोरा मृगमद घनसारी ॥ मथिमांडत मुख मुरलीधरको हंसतदेत करतारी ॥२॥ कनिक कचोल कुसम वारि घसि घोरि कुंकुमा रंग ॥ रतनजटित पिचकाई भरिभरि छिरकत प्रीतम अंग ॥३॥ अति सौरभ बूकावंदन रज डारत सुभग अबीर ॥ सुरंग गुलाल उडावत लालन मुख पोंछति अंचलचीर ॥४॥ मोहनलाल नवल नागरके मंडित करत कपोल ॥ उरश्रीफल कुंकुमसों चरचित क्रीडत मदन कलोल ॥५॥ तृनतोरत सहचरी व्रजपति कीं अद्भुत सोभा देखि ॥ कोटिमेन रतिमति भुलत हें हाव भाव उर लेखि ॥६॥

१२ राग देवगंधार रविजातट कुंजन में गिरिधर खेलत फाग सुरंग ॥ गोपबाल गोकुलके सबही लये जोरि सबसंग ॥१॥ श्रीवृषभान सुतासों प्रमुदित चले करनहितजंग ॥ सोभा अद्भुत बनी सबन की निरखि लज्यो अनंग ॥२॥ नवसतसाज सिंगार राधिका सनमुख आई दौरि ॥ प्रेम सहित नेनन अवलोकत साथ सखी सब जोरि ॥३॥ पिचकाई भरि लई कनिक की केसरि रससों घोरी ॥ छिरकत चोंप परस्पर वाढी हंसत मृदुल मुख मोरि ॥४॥ चोवामेद फुलेल अरगजा लीयो सुभग बनाय ॥ भरिभरि वेला सब छिरकतहें उर आनंद न समाय ॥५॥ सरस सुगंध उड्यो अतिबूका दिनमनि लख्यो नजाय ॥ चहूं ओर रस सागर उमड्यो श्रुतिपथ गयो वहाय ॥६॥ बचन बिवेक ना बोलत तिहिछिन सुधि भूली सवचेत ॥ सोर करत सबही धावतहें हो हो शब्द समेत ॥७॥ राधा लाल गुलाल मुठीभरि डारत

अति सुखहेत ॥ बाहिर उर अनुराग दुहुन को प्रगट दिखाई देत ॥८॥ पटह झांझ झालरि डफ आवज वीना सुरकल मंद ॥ ताल पखावज मुरली महुवरि बाजत मुरज सुछंद ॥९॥ गारी व्रज ललना मिली गावत मनमें अति आनंद ॥ फगुवा मनभायो सब मांगत पकरे आनंद कंद ॥१०॥ उलटि सखन तन चितये मोहन बाढ्यो रंग अपार ॥ भयो मूढमन शेष कहन कों राधाकृष्ण विहार ॥११॥ सिव समाधि भूल्यो विध मनमें पछि तायो वहुवार ॥ जों माग्यो फगुवा सो हसिकें दीनो नंदकुमार ॥१२॥ कुसमित विपिन सुबल वहु विधिसों दरस करन कोंआयो ॥ ऋतु वसंत केकी शुक पिक मिलि मधुपन बोल सुनायो ॥१३॥ थके देव किन्नर सुर वनिता अति मनमें सुख पायो ॥ गोकुलचंद सरूप सुखदको गुन संभ्रमसो गायो ॥१४॥

१३ राग देवगंधार होरी खेलि आए कहाँ सौं तुम रसिक साँवरे रँग भीनै ॥ फैंट गुलाल अबीर की झोरी कंचन पिचकाई कर लीनै ॥१॥ पलकन पीक अधरन पै अंजन सिथिल गात मरगजा बागे कीनै ॥ 'सूरदास' प्रभु काहे कौ छिपाव हि साँची कहि अब हँसि दीनैं ॥२॥

१४ राग देवगंधार हो हो होरी खेलति गिरिधारी ॥ इत सब बालक उत ब्रज जुबती सँग वृषभानु दुलारी ॥१॥ आँई जुरि सब नंद पौरि पै भीर भई अति भारी ॥ बाजति ताल मृदंग झांझ डफ गावति दै कर तारी ॥२॥ चोवा चंदन औरू अरगजा केसरि रंग संभारी ॥ रतन खचित पिचकाई कर लै छिरकति हैं पिय प्यारी ॥३॥ सुरँग गुलाल अबीर उड़ावति हो हो सबद उचारी ॥ बरन बरन भये वसन सबन के भीजि रही रँग सारी ॥४॥ सब सखियन मिलि मोहन पकरे कर जु गहे सुकुमारी ॥ नैंन आँजि छीनि लई मुरली, देति भाँवती गारी ॥५॥ फगुवा देहु हमारो लालन, मोहन मदन मुरारि ॥ मेवा बसन अभूषन दीने, देति असीस ब्रजनारी ॥६॥ निरखि बिनोद हरखति सुर पति, जिय पुहुप वृष्टि करि भारी ॥ 'श्री विट्ठल गिरिधरन' लाल की तन मन धन बलिहारी ॥७॥

१५ राग खट बरसानैं तैं वृषभानु पुरा की होरी खेलनि निकसी हो ॥ बरन बरन बन ठन आभूषन कनक बेल सी बिगसी हों ॥१॥ जोबन

रूप मदन मनमथ कौं उर मोहन मदमाती हो ॥ ऐंड़त चले चाल गरबीली मंद मंद मुसिंकाती हो ॥२॥ झोरी भरि अबीर कुँमकुमा करन कनक पिचकाई हो ॥ आवति चंग उपंग बजावति गाबति हरि कौं गारी हो ॥३॥ ठाड़े जहाँ सखा संग लीनें चतुर खिलारि कन्हाई हो ॥ सीस नवाइ दूर भई ठाड़ी हँसि हँसि निकट बुलाई हो ॥४॥ उमड़े हैं गोपी ग्वाल परसपर भारी खेलि मचायौ हो ॥ उड़ति गुलाल अबीर अरगजा अति ही अंबर छायो हो ॥५॥ गोपीन मतो बनाई धाई कैं मनमोहन गहि लीनें हो। आँखि आँजि मुख माँडि महावर हो करि तजि दीनें हो ॥६॥ अपुने दाव स्याम हु पाए तब गहि लीने राधे हो ॥ जेतेक दाव चाव चित उपजे सकल मनोरथ साधे हो ॥७॥ बेनी गुही बनाइ उलटि कैं कछुक सेंधानी कीनीं हो ॥ दुहुं और दिठौना दे कैं तब छौंडि रंग भीनीं हो ॥८॥ तारी दे दे ग्वाल हँसति है गोपिन मन मुसिकानी हो ॥ मन में मुदित भई बाहिर तैं राधा कछु कुमलानी हो ॥९॥ नँद नंदन वृषभानु लली की सोभा कहा बखानैं हो ॥ 'ब्यासदास' प्रभु रीझि भिंजि सौं वारति तन मन प्रानैं हो ॥१०॥

१६ राग खट कनक पुरी होरी रची मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा काढ्यों जाए सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥१॥ काहे की तुम ग्वालिनी ॥ मोहन ॥ का दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ॥२॥ गोकुल की हम ग्वालिनी ॥ मोहन ॥ मथुर दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ॥३॥ काहे के तुम दानैया ॥ मोहन ॥ काहे कों जु मुरार ॥ सुंदर ॥४॥ गोकुल के हम दानैया ॥ मोहन ॥ श्री मथुराजी को मुरार ॥ सुंदर ॥५॥ लौंग सुपारी दानैया ॥ मोहन ॥ दधि कौं दानी होय ॥ सुंदर ॥६॥ जाई पुकरो कंस पे ॥ मोहन ॥ पकर मंगाउ तोय सुंदर ॥७॥ कंस कों मार न सके ॥ मोहन ॥ करो मथुरा कों राज ॥८॥ सुंदर ॥ नैंन हमारे झूंड में ॥ मोहन ॥ चोखी चोर मजीठ ॥ सुंदर ॥९॥ श्रीविट्ठल पद पदम कैं ॥ मोहन ॥ पावन रैनु परताप ॥ सुंदर ॥१०॥ 'छीतस्वामि' गिरिधर मिलै ॥ मोहन मेंट्यों तन को ताप ॥ सुंदर ॥११॥

१७ राग खट हरि सँग होरी खेलनि आँई ॥ चंद्रभगा, चंद्रावलि भांमा, राधा परम सुहाई ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा सुरँग गुलाल

उड़ाई ।। रतनजटित पिचकाईन भरि भरि छिरकति कुँवर कन्हाई ।।२।। ताल मृदंग, पटह ढफ बाजै, घोष नगारे धाई ।। श्री मंडल सहनाई सुंदर बिच बिच बैनु बजाई ।।३।। अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न जाई ।। 'सूरदास' बलि जाई बदन की निरखि निरखि मुसिकाई ।।४।।

१८ राग खट आजु भोर ही नंदपौरि व्रजनारिन धूम मचाई ।। पकरि पानि गहि मारि पौरीया जसुमति पकरि नचाई ।।१।। हरि भागे हलधर हू भागे नंद महर हूहेरे ।। तबही मोहन निकसि द्वार व्हे सखा-नामले टेरे ।।२।। द्वारपुकार सुनत नहीं कोऊ तब हरि चढे अटारी ।। आओरे आओ सखा सब संगके घर घेरचो व्रजनारी ।।३।। सुनत टेर संगी सब दौरे जब अपने अपने धाम अर्जुन तोक कृष्ण मधु मंगल सुबल सुबाहु श्रीदाम ।।४।। ग्वालिनिदौरि पौरि जब रोकी आनन पाये नेरे ।। चंद्रावलि ललितादि आदिदे स्याम मनोहर घेरे ।।५।। कित जेहो वसपरे हमारे भजि नसको नंदलाल ।। फगुवामें मुरली हमलेहें पीतांबर वनमाल ।।६।। केसरि डारी सीसतें मुखपर रोरी मांडत राधे ।। विष्णुदास प्रभु भुजग हि गाढे मनवांछित फल साधे ।।७।।

१९ राग ललित तुम कोन के वस खेले हो रंगीले हो हो होरियां ।। अंजन अधरन पीक महावीर नेन रंगे रंग रोरियां ।।३।। बारंबार जृंभात परस्पर निकसि आईं सब चोरियां ।। नंददास प्रभु उहांई वसो किन जहां बसेंवे गोरियां ।।४।।

२० राग ललित होरी खेलै लाल लंगरवा अब तोए जानि न देहो ।। गहि बैयाँ इहि कुंज-भवन में, भुगरि-भुगरि रस लैहों ।।१।। करौं न संक अंक भरि भेटों कंकन पीठ बनै हों ।। व्हे जु रहौं उर मांझि लाल के अबीर गुलाल उड़े हो ।।२।। पीतम सौं अनुराग मिलि नोंतन नेह बढ़े हों ।। 'दास गुपाल' प्रभु प्यारे सौं इहि बिधि फागु खेलै हों ।।३।।

२१ राग ललित खेलति फाग बने गुपाल अति रंग भीने ।। मुरली धरे हो हो कहि बोले कोटि मदन छबि छीने ।।१।। हाथन बनी कनक

पिचकाई ग्वाल बाल सँग लीने ॥ तकि तकि छिरकति फिरति गोपिन कों गोकुल सदन अरुन कीने ॥२॥ रंग रंगीली ब्रज की ललनाँ निरखति स्याम ही मन दीने ॥ 'राम राई' प्रभु सोभा सागर हित भगवान नैन मीने ॥३॥

२२ राग ललित होरी खेलीए चित चाई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़फ रसीली धँवारन गाई ॥ केसर आदि अरगजा सौंधो अबीर गुलाल उडाई ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' कैं पीय की लीजे रीझि बलाई ॥१॥

२३ राग ललित मोहन खेलत आये फाग ॥ प्रात समे उठि लटकि आये ढरकि टेढी पाग ॥१॥ अंजन अधर गुलाल भाल पर अद्‌भुत भेख सुहात ॥ केसर छींट कहुं कहुं उर पर अरगजा भींजे गात ॥२॥ बोलत मुखतें होरी होरा सुरत समागम रात ॥ रसिकराय रैन सब जागे समर सुमर मुसिकात ॥३॥

पंचम राग

१ राग पंचम देखोदेखो ब्रजकी वीथनि वीथनि खेलत हें हरि होरी ॥ गीत विचित्र कोलाहल कौतिक संग सखा लख कोरी ॥१॥ आईं झूमि झूमि झुंडन जुरि अगनित गोकुलगोरी ॥ तिनमें जुवती कदंबसिरोमनि राधा नवलकिशोरी ॥२॥ छिरकत ग्वालबाल अवलनपर बूकावंदनरोरी ॥ अरुन अकास देखि संध्याभ्रम मुनिमनसा भइबौरी ॥३॥ रपटत चरन कीच अरगजा की केसरि कुंकुमघोरी ॥ कहीनजाय गदाधरपे कछु बुधिवल मति भई थोरी ॥४॥

२ राग पंचम हो हो होरी खेलन जैये ॥ आजभलो दिनहे मेरी प्यारी नितही सुहाग बढैये ॥१॥ सोवत जाय जगाई सुंदरी करि उबटनों सीस न्हवैये ॥ सादा चूरी खुभी नकवेसरि राधा कुंवरि बनैये ॥२॥ चोवा चंदन ओर अरगजा अबीरगुलाल उडैये ॥ नव मटुकी भरि केसरि घोरी प्रथम कुंज छिरकैये ॥३॥ धावत सब इततें व्रजनारी कमलन मारमचैये ॥ ताल मृदंग ढोलडफ महुवरि झांझन झमक मिलैये ॥४॥ इतराधा उतमोहन प्यारो मुरली शब्द सुनैये ॥ कूंज ओट ललिता हरीदासी राग दामोदर गैये ॥५॥

राग सुघराई

१ राग सुघराई दाऊ की सों मोहि अहोहरि तुमहीन छांडोंगी ॥ होरी सो दिन पाइ धाइ जाइ हों मुख मांडोगी ॥१॥ अब केसें छूटि हे मोपे विहसिर हसि गारिनभाडोंगी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु कों रंगले डारोंगी ॥२॥

२ राग सुघराई फगुवा के मिसि छलबल लालको रंगन रगमगोकीजे ॥ यह औसर होरी को गोरी सुखलेसुख किनदिजे ॥१॥ करत सेंत को संकोच सकुचजिय इनसकुचन कहीधोंकहाकीजे ॥ धरकोछांडि धायगिरीधर पियको निधरक व्है रसपीजे ॥२॥

३ राग सुघराई होरी खेलति नंददुलारो मोहन पिचकाईन रंग बरखत ॥ सुगंध अबीर अरगजा कुँमकुमा छिरकति नव पिय सरसत ॥१॥ मृगमद अगर घोरि ग्वालिनी लै ललिता कपोलन परसत ॥ सुठ सोभा मुख भरचो लाल को धनि 'व्रजजन' सुख दरसत ॥२॥

धमार पांडे के पद

१ राग बिलावल नंदगाम को पांडे व्रज बरसाने आयो ॥ अतिउदार वृषभान जानि सनमान करायो ॥१॥ पांडे जूके पायनकों हसिहसि सीस नवायो ॥ पाय धुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो ॥२॥ धाय आईं व्रजनारी जिन यह सूधो पायो ॥ भानभवन भईभीर फाग को खेल मचायो ॥३॥ सीसी सरस फूलेल अंगअंगन झलकायो ॥ हनूमानकी प्रतिमा मानों तेल चढायो ॥४॥ काजर सों मुख मांडि बदन विंदाजु बनायो ॥ कारे कलस श्रवत मानों चपरा चिपकायो ॥५॥ गजगामिनि गोंछनसों तुकमैया लपटायो ॥ देहधरें मानों फागुन खेलन व्रज में आयों ॥६॥ कहुं चंदन कहुं वंदन कहुंचोवा लपटायो ॥ ऋतु वसंत जानों केसूकोद्रुम नवफूलन छायो ॥७॥ काहू गूलरी माला काहू झंगला पहरायो ॥ मानोगज घंटान वीच गजगाह बनायो ॥८॥

रंग रह्यो चहोंटियन अंगरातो व्हेआयो ॥ गुंजनको गहनो मानो प्रोहितपहरायो ॥९॥ माथेतें मोहनीनें छाछ को माट ढरायो ॥ मानो काचे दूधसों गिरिगोवर्धन न्हायो ॥१०॥ चोर भोर भई खोर मानो गंगा जल ढायो ॥ महादेवकी जटा चूरि चरनोदिक आयो ॥११॥ लगतदंत सोंदंत गिडिगिडी अंग लगायो ॥ मानोहो सुघर संगीत ताल कठतार बजायो ॥१२॥ श्रीराधा राधाकहि अपनोंबोल सुनायो ॥ अरीभान की कुंवरि सरनिहों तेरी आयो ॥१३॥ सुनिकें प्रेम वचन गरो राधा भरि आयो ॥ बावाजूको दगला ले प्रोहित पहरायो ॥१४॥ कीरतिजू पांयलागि तातो पय प्यायो ॥ तोलों खेलत होरी व्रजमें दूल्हे आयो ॥१५॥ सांचे स्वांग न सजिकें सबे समूह सुहायो ॥ तपा व्यास को पूत धुत सूकदेव बनायो ॥१६॥ सनकादिक चारयोंनिस ज्यों सन्यास सुहायो ॥ घूमत आयो इंद्र स्वांग उन्मत्त नचायो ॥१७॥ व्रजकी बीथनि बीच कीचमें लोट पुटायो ॥ चारि वदनको स्वांग चतुर चतुरानन लायो ॥१८॥ पंचानन पांचों मुखसों संगीत बजायो ॥ हरिको व्हे जु बावरो नारद नाचत आयो ॥१९॥ देखि नंदकेलाल जंत्रधरि गाल बजायो ॥ महादेव पटतारदेत यह पट प्रभु भायो ॥२०॥ हो हो हो होरी हरि हांसीन हँसायो ॥ माया निपुन भई सो नारद हल हुलरायो ॥२१॥ कामकनी भयो सबन को चित्त चुरायो ॥ ललिता जोरी गांठि लालको व्याह रचायो ॥२२॥ गठजोरो वृषभान कुंवरिसों जाय जुरायो ॥ नवल अंबके मोरको मोरी मोर बनायो ॥२३॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप छायो ॥ फागुन की गारीनको साखा चार पढायो ॥२४॥ होरीकी अग्यारी करि दूल्हे परनायो ॥ होरी को पकवान सो भरिभरि झोरिन खायो ॥२५॥ फूलि फाग की फाग फल्यो जिन यह जस गायो ॥ जन हरीया घनस्याम वास बरसानें पायो ॥२६॥

२ राग काफी माई बरसानेते नंदगाम प्रोहित वृषभान को आयो ॥ नंदभवन को वैभव अद्भुत निरख परम सुख पायो ॥१॥ पायध्वायकें जल अचवायो धिरआईं व्रजनारी ॥ पा लागन कहि फूलफूल गावत होरीकी गारी ॥२॥ एकन चोवा आनसान ब्राह्मनके मुख पटायो ॥ एककपोलन मारतै

मींडत करत आप मन भायो ॥३॥ एकघर धसी घोर अरगजा पाछेते गहिनायो ॥ एकतो पकर फेंट झकझोरत इकलो करकें पायो ॥४॥ एक चोंहोंटियालेत चोरचित एक जु तारी बजावे ॥ एकतो पकरपोतिया झटकत हँसिहँसि वाख चढावे ॥५॥ एक अचानक व्हे पाछेते आंखिन में दियोहे गुलाला ॥ मींडत दृग यों कहत लुगइन मेरो परयोचाला ॥६॥ एक नवासी खाटी छाछिते माथेते गहिनाई ॥ इत यह एक उतेवे अनगिण ब्राह्मकी न बस्याई ॥७॥ गिडगिडात मारयोजाडेको चितवत भ्रोंहेतान ॥ हा हा होंहारचो तुम जीती छांडि देहु जिजमान ॥८॥ एक कहे याहि पकर टकि याके श्रवननकों सुखदीजे ॥ एक कहे हाहानी केव्हे घरी एक गहि लीजे ॥९॥ कहत परस्पर एव्रजनारी ॥ सब मिल यह बिचारी ॥ इतनी सुतन अथांईते चलि आयेकुंज बिहारी ॥१०॥ जोदेखे तो पांडेकों यहीं घेर रहीं व्रजबाला ॥ मुखपटुका दे निरखनिरख मुसिकाने नंदके लाला ॥११॥ भली मानसहो भलो आदर कियो भलो भोजन करवायो ॥ सुनोंहो कुंवरजू सगरी लुगाइन होंतो नाच नचायो ॥१२॥ एकन गुलगुलाय गुलचायो एकन कोहुंनी दीनी ॥ जानतहों अपने जीयमें जेसीपोहों नाई कीनी ॥१३॥ किचकिचाय मेरे लियो चोहोंटिया पीठ व्हे गई राती ॥ इनन बरजी इनतेहों डरपत धुकर पुकर करे छाती ॥१४॥ तब ललिता गद गद गद कायो स्यामस्याम कहिटेरचो ॥ पांडे जूकी ललित पीठपर लाल कमल कर फेरचो ॥१५॥ एकन मोकों नयन सेनदे एकन अंजन कीनों ॥ एकन मनहर लियो चितें आंखिन में बूकादीनों ॥१६॥ कह्यो स्याम अजह्यूबकसो तिहारे बहुत सुखपेहें ॥ जोचाहो सोई तुमकों मनभायो फगुबा देहें ॥१७॥ तुमतो अति उदार हो ढोटा तुमसे तुमही दानी॥ जान जाउ जियमे जगजीवन चीरहरण सुधिआनी ॥१८॥ जोसासुरेकी दयाकीजेतो हा हा खाय छूडावो ॥ तो हम छांडें पांडेकों पांडे नाचे तुम गावो ॥१९॥ काहे न पांडे गुनप्रगटो हरिसेन दई दृगमोरी ॥ मगन भयो तब नाचन लाग्यो बोलत हो हो होरी ॥२०॥ बांधत रोटी पेटफुलायो यों टेढी पाग बनाई ॥ अधिकवार बह्मनें टानरोतन अद्भुत फाग मचाई ॥२१॥ जानबूझ अनबोली व्हेकें दुरदेखत नंदरानी ॥ निरखनिरख नयनन कौतूहल मनहीं मन मुसिक्यानी ॥२२॥ इंद्रादिक ब्रह्मादिक शंकर ये सब रहे लुभ्याई ॥

हम न भये व्रज ब्राह्मन निरखनिरख मनमे पिछाई ॥२३॥ भई विमान भीर व्रज ऊपर पहोपन वृष्टि करावें ॥ निरखनिरख यह सुखन नयनन सुरबनिता मंगलगावें ॥२४॥ धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंद सुत धन्य ये व्रजकी नारी ॥ धन्य धन्य व्रजके ब्रजवासी धन्य स्याम बलहारी ॥२५॥

३ राग काफी माई समध्यानेतें ब्राह्मन आयो भर होरी के बीच भरूवा ॥ घेर लियो घर मांझ लुगांइन मूंड लगाई कीच ॥१॥ काहूलई खसकाय परदनी काहूकियो कजरारो ॥ पिसीपिठी गोंछन लपटाई ब्राह्मनको कहाचारो ॥२॥ काहूगुदी झगुला पहेरायो काहू गूलरी माला ॥ तारीदेदे महीगन गावें हँसिहँसि व्रजकी बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापरो निरमल नीरन्हवायो ॥ नयेवसन पहेराय गुदीते झगुला आनि छिडायो ॥४॥ तव ब्राह्मन निधरक व्हे बेठ्यो पहरि ऊजरेकपरा ॥ एक ग्वालिनि ने आनि उलेड्यो सरीकीचको खपरा ॥५॥ देख विमल गह्यो चतुरंगने भलेंभलें करिगावें ॥ अति खिलवार मोधुवा पांडे खेलेंहीं सुखपावें ॥६॥ पेजबांधिजो सुरपति नाचे तो ऐसी फागन माचे ॥ पेट फुलाय वदन टेढोकर विफरच्यो ब्राह्मन नाचे ॥७॥ गहने जोई माई दे पांडे हमतो फगुवा चाहें ॥ एकन कान पकर गुलचायो काहू ऐंठी बांहें ॥८॥ जानि सासुरे को यह ब्राह्मन मोहन कछु बन कहहीं ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुहरि सकुच सकुच जिय रहहीं ॥९॥

४ राग काफी प्रोहित वृषभानु कौ हो आयौ नंदराई दरबार ॥ध्रु०॥ सिंघ पौरि खेलैं व्रजबाला छिरकति कुँमकुम नीर ॥ व्रज की बीथिनि खेल मच्यौ हो भई परसपर भीर ॥१॥ घरि लयौ बाह्मन चहुँ दिस तैं लीनें बसन उतारि ॥ नैन आँज कैं दयौ दिठौंना बैंनी गुही संबारि ॥२॥ तन सुख चीर, लाह कौ लहिंगा, अँगिया बनी कटाब ॥ कंठ पोति, कर पौहोंची सोहै, बाजू बंद जड़ाव ॥३॥ तिया-भेष अदभुत जु बन्यौ है कहति सबैं ब्रज-नारि ॥ दै पटतार नचावैं पांड़े, गावति हैं मिलि गारि ॥४॥ उत तैं आवति हैं नँद-नंदन, गोप सखा सँग जोरि ॥ प्रोहित की गति देखि साँवरो हँसति, मुदित मुख-मोरि ॥५॥ तब मोहन जुवतिन मधि आए पांडे दियौ छुड़ाई ॥

फगुवा बहुत मँगाई सबन कौं देति है हरखि बुलाई ॥६॥ देति असीस चलीं ब्रज-बनिता, चिर जियौ ब्रजराई ॥ जाके राज सदाँ इहि बिधि सौं, खेलति है हम आई ॥७॥ तिहिं औसर पांड़े कौं दीने, नौतन बसन मँगाई चल्यों बहुरि वृषभान पुरा कौ फूल्यों अंग न माई ॥८॥ ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, रहे बिमानन छाई ॥ यह छबि निरखि बारि तन, मन, धन, 'विष्नुदास' बलि जाई ॥९॥

होरी डांडा के पद - महासुदि १५

१ राग सोरठ बिलावल होरी खेलिये सुंदरलाल ॥ चंचल नेन विसाल ॥ तुम ब्रजजन के प्रतिपाल ॥ तुम लीला नट गोपाल ॥ गहि ठोडी जसुमति कहे तुम संग लेहु ब्रजबाल ॥१॥ विविध सुंगध नउवटनों सव अंग बेठि उवटाऊं ॥ चंदन अंग लगायकें फिरिताते नीरन्हवाऊं ॥२॥ अंग अंगोछों प्रीतिसों घसि मृगमद तिलक बनाऊं ॥ अंजन नेन न आंजिकें अरुमसिविंदुका भुलाऊं ॥३॥ अलकावलि अति सोहनी मोतिन लर सरस गुथाऊं ॥ मधि लटकन लटकायकें हों देखत अति सुख पाऊं ॥४॥ पगिया पेच वनायकें खिरकिन की सीस धराऊँ ॥ मोर चंद्रिका तनकसी हों दिसदाहिनी ढराऊं ॥५॥ झीनी झंगुली अति वनीसोतो स्याम अंग पहराऊं ॥ अति सुगंध पहोपन बस्यो वरफुलेल चुपराऊं ॥६॥ सूथन गाढे अंगकी लाल चरन पहराऊं ॥ फेंटाकटि तट बांधिकें ओर सुरंग गुलाल भराऊं ॥७॥ आभूषन बहु भांतिके पहराऊं तिहिंतिहिं ठाऊं ॥ फूलनकी माला गरेधरि देखत नेन सिराऊं ॥८॥ घरघरते सब गोपके लरिकनकों पठे बुलाऊं ॥ केसरि के मटुका भरों पिचकारी हाथ धराऊं ॥९॥ सिंघद्वार ठाडे रहो तुमें संग देहुं बलदाऊं ॥ आगे व्हेमेरे लाडिले ललना सबहिन को छिरकाऊं ॥१०॥ वड्डे गोप बुलायकें रखवारे संग रखवाऊँ ॥ मनमानें तहाँ खेलिये सब ब्रजजन संग नचाऊं ॥११॥ विविध भांति ब्रजराज सों कहि बाजे बजवाऊँ ॥ फगुवा देवे झुं अबे बहुभूषन वसन मंगवाऊं ॥१२॥ सब ब्रज युवतिन को अब घरघरतें पठे बुलाऊं ॥ मेरे लालके चावसों फगुवाके गीत गवाऊं ॥१३॥ रगमगे बागे देखिकें अपने द्रगन सिराऊं ॥ मुक्ताफल थारीभरों

होंले आरती उतराऊं ॥१४॥ आंकों भरिले गोदमें घर भीतर ले जाऊं ॥ व्रजयुवतिन में बेठिकें नेंक फूली अंगन माऊं ॥१५॥ माय मनोरथ यों करे जाको हे जसुमति नाऊं ॥ दीये यह फल रसिक कों हों श्रीवल्लभ गुनगाऊं ॥१६॥

२ राग बिलावल आंनंदराय खेले फाग सोहो हो होरी आई ॥ लाल गिरीधरके काज अपने ग्रह न्योति बुलाई ॥१॥ कोया कों आदर देहे कोयाकों बैठन देहे ॥ जसुमति आदर देहे फूलदेवे ठन कहेहे ॥२॥ कासों राची आनितो काके संग खेलिहें ॥ गिरधर सोराची आनि तो दाऊ संग खेलिहें ॥३॥ डांडो रोपन चले नंदओर गिरिवर धारी ॥ वाजे वहोत वजावत ताल पखवाज थारी ॥४॥ नदी जमुनाके तीर जायरोपीहे होरी ॥ कुंवर धरी बनाय सबनता बपाछें जोरी ॥५॥ पूजा करि पाय लागि ओर परिक्रमा दीनी ॥ विप्रन वेद पढाय बेठिस बही विधि कीनी ॥६॥ खेलतहें नंदलाल कमल हाथ गहिलीने ॥ सुंदरि लईहें बुलाय रहसि उनके करदीने ॥७॥ अबीर गुलाल उडावत व्रजरानीके लाला ॥ सुंदर मुख झलकत पहरें उर फूलन माला ॥८॥ केसरि सोंधे भीजी पहरें झूमक सारी ॥ गिरिधर पिय संग खेलें घोष सकल व्रजनारी ॥९॥ होरी धरि घर आए नंदराय व्रजवासी ॥ गोप ग्वाल सब भीने ओर लालन सुखरासी ॥१०॥ रानीजू देखि सिहाय करत नोछावरि भारी ॥ धन्य जन्म करि मान्यो वारति नौतन सारी ॥११॥ चंद्रावलि राधाजू भीजि रही रसहीयें ॥ एकोपल नहीं छांडत डोलत लालन लीयें ॥१२॥ यह जो बडो त्योहार तोनि तनित तुमही आवो ॥ सकल घोषके राय नंद गिरिधारी कहावो ॥१३॥ चिरजीओ व्रजराज देखि ढोटन सुख पावो ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर कों हसिहसि फाग खिलावो ॥१४॥

३ राग बिलावल घोष नृपति सुत गाइयें जाके बसियें गाम ॥ लालवलि झूमिकाहो ॥ वहोरि सुहागिनि गाइये जाको श्रीराधा नाम ॥ लाल ॥१॥ चलीहें सकल व्रजसुंदरी नवसत साजि सिंगार ॥ गावत खेलत तहां गई जहां घोषराय दरबार ॥२॥ जाय नेन भरि देखिये सुंदर नंदकुमार ॥ नीलपीतपट मंडिता उर गजमोतिन हार ॥३॥ सखा संग अति रस भरे

पहरे विविध रंगचीर ।। गीत विचित्र कोलाहला ओर व्रजवासिन भीर ।।४।। डिमडिम दुंदुभी झालरी रुंजमुरज डफलाल ।। मदन भेरि राय गिडगिडी विचविच वेन रसाल ।।५।। अति रसभरी व्रजसुंदरी देत परस्पर गारि ।। अंचलपट मुखदे हंसी मोहन वदन निहारि ।।६।। पहलो झूमक ताही को जाको श्रीमोहन पूत देखि परोसिर मोहनी युवती जनमन धूत ।।७।। दूसरो झुमक ताही को जाकी श्रीराधा नारि ।। पिय प्यारी रोके गये मनमें चोंकि विचारि ।।८।। जुवति कदंव सिरोमनी श्रीराधा वरस कुमारि ।। उतव्रज सिसुगन नायका वलि ओर गिरिवरधारि ।।९।। एकन कर बुका लिये एक गुलाल अबीर ।। प्रमदा गन पर वरखही कूकेंदेत अहीर ।।१०।। रतन खचित पिचकाइयां नवकुंकुम जल सोंघोरि वरखही कूकेंदेत अहीर ।।१०।। रतनखचित पिचकाइयां नवकुंकुम जल सोंघोरि ।। पियसन सुखव्हे छिरकहीं तकितकि नवल किसोरि ।।११।। स्याम सुभगतन सोहही नवकेसरि के विंदु ।। ज्यों जलधर में देखिये मानो उदित बहुइंदु ।।१२।। युवतियूथ मिलि धाइयो पकरेवलि मोहन जाय ।। नवकेसरि मुख मांडिकें छांडे आंखि अंजाय ।।१३।। यह विधि होरी खेलहीं ग्याति वंधु संग लाय ।। पूरण शशि निस डहडही पून्यो होरी लगाय ।।१४।। परिवा सकल घोखजन भानुसुता चले न्हान ।। अरगजा अंग चढाइयों विमल वसन परिधान ।।१५।। दुतिया वंदन वांधियो सिंघासन युवराज ।। छत्रचंवर गोविंद गहे श्रीवल्लभकुल सिरताज ।।१६।।

४ राग बिलावल वंदों मुनसाई नंदके जुवती झंडा केसें लेहोजू ।। ये सब सुंदरि घोखकी क्यों परिरंभन देहो ।।१।। फागुन मास देत फगुवा अति क्रीडा रस खेलो ।। तनकी गति ओरें भई बोली ठोली मेलो ।।२।। काहेकों अकुलात हो हम मन को भायो करिहें ।। हों भैया बलदेवको पृथक पृथक करि धरि हें ।।३।। पांच सखी मिलि एक व्हे बीच झंडा ले रोप्यो ।। फरहर रति पति ऊपरे बहोत नगन जट ओप्यो ।।४।। सुनों पिया सांची कहूं जो तुम्हारे जिय भावे ।। अपने छलबल प्रेमके जीतेसो कहा पावे ।।५।। हम समेत सब ताहीको यामें कहा कछू लालो ।। अब जीतो तो जानिहें पानधरें प्रतिपालो ।।६।। पटह निसान मृदंगसो दुहुदिस दुंदुभी बाजें ।। इत

जुवती वर जोर में उत स्याम सखन संग भ्राजें ॥७॥ गावें चेत सुहावनें बिचबिच मीठी गारी ॥ चंग उपंग मधुरमुरली राग मिल्यो करतारी ॥८॥ केसरि कुंकुम घोरिकें नवकिसोर परधाई ॥ नायक धेरी नायका चोली बसन रंगाई ॥९॥ काहूसों मिलवत सखनदे काहूसों मिलवत बोली ॥ काहूकों परिरंभनदे काहूकी झटकत चोली ॥१०॥ रवकि रंगीली राधिका पीतांबर गहि झटक्यो ॥ हो हो हो कहि सुंदरी गहि करसों कर पटक्यो ॥११॥ उतवर सुंदर लाडिलो इत वृषभान किसोरी इत पिचकाई उत पिचका पियसन मुख लेदोरी ॥१२॥ सुरंग लाल अबीरसों व्योम रसातल छायो ॥ रसमें नायक नायका करत आप मन भायो ॥१३ ॥ गुलाल जंगाली छबि राजहीं दंपति प्रेम प्रसंसा ॥ उपमाकों कोऊ नहीं क्रीडत हंसीहंसा ॥१४ ॥ झंडा लीयो ओर रसकीयो प्रान पिया रस पेख्यो ॥ गिरधर क्रीडा नित नई सगुनदास रस लेख्यो ॥१५॥

५ (राग बिलावल) श्रीलक्ष्मन कुल गाइये श्रीवल्लभ सुबन सुजान ॥ लाल मनमोहना हो ॥ गुन निधि गोपीनाथजू निर्गुन तेज निधान ॥१॥ पुरुषोत्तम आनंदमें श्रीविठ्ठल व्रजके भूप ॥ कोटि मदन विधुवारनें मुख सोभा सुखरूप ॥२॥ भूतल द्विज वपु धारिकें श्रुतिपथ कियो प्रचंड ॥ मारग पुष्टि प्रकासिकें मायामत कियो खंड ॥३॥ श्रीगिरिधर गुन आगरे ॥ पूरन परमानंद ॥ राज सिरोमनि लाडिले करुनामय गोविंद ॥४॥ श्रीबालकृष्ण मुख चंद्रमा पंकज नेन विसाल ॥ श्रीवल्लभ गोकुलनाथजू प्रिय नवनीत दयाल ॥५॥ श्रीपति श्रीरघुनाथजू जगजीवन अभिराम ॥ रूप रासि जदुनाथजू कमला पूरन काम ॥६॥ नवकिसोर घनस्यामजू अंगअंग सुखदाय ॥ बालक सब ब्रह्मजानिकें बेदविमल जसगाय ॥७॥ बिंद्राविपिन सुहावनों ब्रजलीला सुखसार ॥ मानिकचंद्र प्रभु सर्वदा श्रीगोकुल करत विहार ॥८॥

६ (राग बिलावल) अरि आज कमल मुख देख्यों री जब तैं घर अंगना न सोहाई ॥ हौं जमुना जल भरन गई री बिसरी भरन जल माई ॥१॥ होरी डाँडो रोपत देख्यों मूरति रही उर छाँई ॥ तब तैं खान पाँन सुधि बिसरी मिलिवे कौं अकुलाई ॥२॥ मेरे जान कछू परी ठगोरी मुरली

तान सुनाई ॥ 'सूर स्याम' सोई हितू हमारी जो कोऊ मोहि मिलाई ॥३॥

७ राग सोरठ मनमोहन खेलत फागरी हों क्यों कर निकसों ॥ मेरे संग की सबे गई मोहि प्रगट भयो अनुराग ॥१॥ एकरेन सपनों भयोरी नंदनंदन मिले आय ॥ में सकुचन घूंघट कढ्यो उन भेटी भुज लपटाय ॥२॥ अपनों रस मोंकों दियोरी मेरो लीयो घूंट ॥ वैरिन पलकें उघरतें मेरी गई आस सब छूट ॥३॥ फिरमें बहुतेरो कियोरी नेंकन लागी आँख ॥ पलक मूंदिपर चोलियो में जाम एक किलों राख ॥४॥ तादिन द्वारें व्हे गयोरी होरी डांडो रोप ॥ सास ननद देखन गई मोहि घर रखवारी सोंप ॥५॥ सास उसासन त्रासहीरी ननद खरी अनखाय ॥ देवर डगधर वोगिने मेरो बोलत ना हरि स्याय ॥६॥ तिखने चढ ठाढी रहोंरी लेवो करों कनहेर ॥ रात दिवस हो हो रहे विचवा मुरलीकी टेर ॥७॥ एसी मन में आवहीरी छांड लाज कुलकान ॥ जाय मिलों व्रजईश सों रतिनायक रसकी खान ॥८॥

८ राग गौरी ऋतु बसंत सुख खेलियें हो आयो फागुन मास ॥ होरी डांडो रोपियो सब व्रजजन मन उल्लास ॥ गोकुलके राजा ॥१॥ रजनी मुख व्रज आईयो गोधन खरिक मझार ॥ सखा नाम सब बोलकें घरघर ते देत बगार ॥२॥ बडेगोप वृषभान के आये सब मिल पोरि ॥ श्रवन सुनत प्यारी राधिका चढि चित्र सारी दोरि ॥३॥ ऊझकि झरोखा झांकियो दोउन मन आनंद ॥ एसी छबि तब लागियो मानो निकस्यो घटातेचंद ॥४॥ बासर खेल मचाईयो नेरे आयो फाग ॥ झूमक चेतव गावही मनमोहन गोरी राग ॥५॥ नरनारी एकत्र भये घोषराय दरबार ॥ चहुंदिसते सब दौरियो भूषण वसन सिंगार ॥६॥ अगणित वाजे बाजहीं रुंजमुरज निसान ॥ डफ दुंदुभी ओर झालरी कछुवन सुनियत कान ॥७॥ पिचकाई कर कनक की अरगजा कुंकुमघोर ॥ प्राणपिया कों छिरकही तकतक नवलकिशोर ॥८॥ बहुरि सखा सबदोरियो आगेंदे बलबीर ॥ युवतीजन परवरखहीं नवल गुलाल अबीर ॥९॥ ललिता विसाखा मतो मत्यो लीनों सुबल बुलाय ॥ चेरी तेरे बापकी नेंक मोहन कों पकराय ॥१०॥ तबें सुबल कौतुक रच्यो सुनों सखा एक

बात ॥ इने भीतर जानदेहु बोलत जसोदा मात ॥११॥ हरेंहरें सब रेंगि चली नेरें निकसी आय ॥ सेन सबेदे दोरियो पकरे बलमोहन जाय ॥१२॥ प्यारी को अंचल लियो और पियको पटपीत ॥ सकतहीं गठजोरो कियो भले बने दोउमीत ॥१३॥ फगुवा में मुरलीलई ओर कंठ को हार॥ श्रीराधाकों पहराईयो हसत देदे करतार ॥१४॥ मेवा मोल मंगाईयो फगुवा दियो निवेर ॥ मनभायो कर छांडियो हसत वदन तनहेर ॥१५॥ यह विधि होरी खेलही ब्रजवासिन संग लगाय ॥ युगल कुंवर के रूपपें जन गोविंद बलबल जाय ॥१६॥

९ (श्री राग गौरी श्री) गोपन के आनंद व्रज फाग रमानो ॥ध्रु०॥ फागुन अतिबड भागन ऋतु वसंत के आगम ॥ पून्यों और गुरुवार मघा ऋतु शिशिर समागम ॥ गर्ग आपले ग्वेडें होरी डांडो रोप्यो आय ॥ कुशल बखाने देश की विप्रकह्यो समझाय ॥१॥ वासरगत रजनी जब आई घरघर बालक सिमिट मदन की फिरी दुहाई ॥ गारी देत निसंक व्हे ओर आरज पंथ छुडाय ॥ मुखकर सबे लजावही उर आनंद न समाय ॥२॥ स्याम सुबल सों मतो मत्यो दावजो पाऊं ॥ बड़े भोर वरसाने होरी खेलन जाऊं ॥ भली बात सबहीन कही रवि के उदय प्रमाण ॥ कनक कलश केसर भरे भई चलन की ठान ॥३॥ बलमोहन मिल सखन सहित बनबाजे साजे ॥ रुंज मुरज सहनाई झांझ झालर डफ बाजे ॥ आनंद भेरि मृदंग मिल गावत गोप धमार ॥ नंदीश्वरतें उतरत देखें सुख सागर की वार ॥४॥ नाचन स्वांग बनाय योग मुद्रा वलिलीयें ॥ तांडव नृत्य कराय मत्त बारूणीसी पीयें ॥ जाय सिमिट इकठोरे भये वृष भान की पोर श्रवण सुनत प्यारी राधिका गई अटापेदोर ॥५॥ उझक झरोखा झांकत कोटिक चंद लजाहीं ॥ रसिक कुंवर जहाँ आय निरख परसत पर छांहीं नयना सों नयना मिले कोऊन पावे पार ॥ श्री स्यामाजू रीझकें डारचो पियपें हार ॥६॥ मृगमद साखजवाद कुंकुमा अति घुसघोरी ॥ हरि पिचकाइन छिरकत बोलत हो हो होरी ॥ उडत गुलाल अबीर में वासर गयो छिपाय ॥ राधा ललिता सेन दे बल पकराये जाय ॥७॥ चन्द्रभगा मुख मांडत ललिता लोचन आंजत ॥ इंद्रा वृंदा प्रेम कलश

भर सिरतें ढारत ॥ पटुकालियो उतार कें मानो आवत गजराज ॥ स्याम सखन सों कहत हें भलेबने दाऊ आज ॥८॥ मेवा बहुत मंगाय दीन व्हे फगुबा दीनों ॥ पटुका लियो उतार मनोरथ सबको कीनो ॥ कीरतिजू आनंद भर चितेस्याम की ओर ॥ कछुमन में वांछित भई कर अंचल की छोर ॥९॥ जिनके मन हर लिये संग लागी फिरें भामिनि ॥ खेलत नांहिनकोऊ राधाजू की कामिनि ॥ मुरली मधुर बजाइयो मनमोहन मधुरीतान ॥ रही चित्र कीसी लिखी अब कोन कहे घर जान ॥१०॥ रातद्योस के खेल महीना जात न जान्यो ॥ नरनारी बड छोट सुफल जीवन कर मान्यो ॥ सांझ परी दिन आंथयो होरी पोंहोंचेग्वाल ॥ तहां रोक ठाडे भये मध्य नायक नन्दलाल ॥११॥ घर घरते सब सिमिट हितू देखन कों आई ॥ रेसम पाट पुआय माल गूलरी बनाई ॥ आनंदगारी गावहीं अपने अपने अगबार ॥ होरी कोई जान न पावें रोके सिंघ दुवार ॥१२॥ एकन के कर बांस एकलीने सिर झारें ॥ होरी पूजन चले ध्यान सिद्धन के टारें ॥ नवल कुंवर पोरिन रूपे करजेरिन की ओट ॥ कपट मार छबि चारु दे दीनी काम करोट ॥१३॥ घरी महूरत सोध नंद सबहितू बुलाये ॥ अक्षत पानी दूब सहित होरी पें आये ॥ नर नारीयों भेट हीं सब दिन आनंद जाय ॥ वेद ऋचा विप्रन पढी घृत आहुती कराय ॥१४॥ कुटुंब सहित सिरनाय सबन परिक्रमा दीनी ॥ कुशलमान जियजान धूरिकी वंदन कीनी ॥ बायस ओर भली भई भैया कहत सयाने लोग ॥ बलमोहन होरीमगारियो अजर अमर संयोग ॥१५॥ व्रजवासिन की चरणरेणु ब्रह्मा शिव यांची ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि द्वार घर घर प्रतिनाची ॥ व्रज रानो व्रज जन सहित गये भीतरी षोर ॥ रानी जसुमति कियो आरतो जुगल कुंवर परदोर ॥१६॥ गज मोतिन को हार डोरीकर कंकण दीने ॥ गोपी ग्वाल वुलाय दान विप्रन कों कीने ॥ देत असीस घर कों चले आनंद सिंधु बढाय ॥ रसिक कुंबर नंदलाल पें जनदयाल बल जाय ॥१७॥

१० राग बिहाग रंगनरंग हो हो होरी खेंले लाडिलो व्रजराजको ॥

सांवरेगात कमलदल लोचन नायक प्रेम समाजको ॥१॥ प्रथमहीं ऋतु वसंत बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानो फाग प्राणजीवन धन आनंदित सब व्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगरकेसर व्रजपति बहुघोर धरे ॥ सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥ प्रेमभरी खिलवारन के हित सुखके साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार जसोदा मैया बारबार जलवार पियें ॥४॥ भईहे रंगीली भीरद्वारन प्रीतम दरशन कारनें ॥ अब बन ठन निकसे मंदिरतें कोटि मदन कीये वारनें ॥५॥ फेंट भराय लई जननीपें आज्ञालई व्रजईशतें ॥ नंदराय तब रत्न पेंचरचि बांध्यो गिरिधर शीशतें ॥६॥ तापर मोर चंद्रिका सोहे ग्रीव ढरन लहकात हें ॥ मदनजीत को बानो मानो रूपध्वजा फहरातहें ॥७॥ तेसेई सखा संग रंग भीने हरख परस्पर मन मोहे ॥ वरणवरण युवतिन के कमल मानों अंबरदिन मणि संगसोहे ॥८॥ आनंद भर बाजे बाजत हें नाचत मधु मंगल रंगकिये ॥ हरिकी हसन दशनन की किरण नयनन की ढरन मन मोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोऊ चढ अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥ गोकुलचंद्रमा देखनकों मानो चंद्र विमानन चढचढ आये ॥१०॥ अबीर गुलाल उडाय चले देखत जेसें सब कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल नवरंगी कहा कहिये रस नव घन वरखे ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन निरख नयन मन घूमेंहों ॥ सन्मुख व्हेय पिय कल्प तरुवर महाभाग्य रस फल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा रसिक शिरोमणि सों खेलन आई ॥ दुहूंदिश शोभा उमग रंग मच्यो मान वेणु ध्वनि लांई ॥१३॥ नयनन बेन न खेलत वधू गेंदुक नवलासिन मारमची ॥ कमल नयन कर ले पिचकाई मृग नयनन सेनन भ्रुंहनची ॥१४॥ छिरकी छेल छबीली भांतन मनहरणी जोबन बारी ॥ सब अंग छींट बनी पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन अछन नेरे आंई ॥ दौर दामिनीं घनघेरयो पिय बात बनीं सब मन भाई ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत दे गलबइयां कोऊ पोंछत आछी छबिसों ॥ अलकन भ्रोहन मूल रंगरह्यो शोभा कहियन जाय कविसों ॥१७॥ कोऊ रचिरुचि पान खवावत पुलकित अधरन परस किये ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा

मागत पिय नयनन चेन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदरपर प्रीत उमग केसर ढोरी ॥ महामनोहर ताको राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी ॥१९॥ सरस्वती सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान् हित रामराय प्रभु हस चितवन वसी मन मेरे ॥२०॥

गारी की धमार

१ राग बिलावल रस सरस बसो बरसानोंजू ॥ राजत रवनी करबानों ॥ मनिमय मंदिर तहां सोहे ॥ रविशशि उपमाकों कोहे ॥१॥ वृषभान गोप तहां राजें ॥ ताकी कीरति जगमें गाजें ॥ नितपरम कुलाहल भारी ॥ गावत गारी ब्रजनारी ॥२॥ जब दिन होरी को आयो ॥ न्योंतो नंदगाम पठायो ॥ सुनिकें मनमोहन धाये ॥ सब सखा संग ले आये ॥३॥ जब जसुमति न्योति बुलाई ॥ समधिन समध्यानें आई ॥ कीरति आदर कर लीनी ॥ मनुहार बहोत विधि कीनी ॥४॥ अतिकृपा अनुग्रह कीने ॥ हमतो अपने करिलीने ॥ गुनगनेन परें कछू गाथा ॥ कीनों व्रज सकल सनाथा ॥५॥ तुमतो सबकी सुखरासी ॥ ये सुफल किये व्रजवासी ॥ आवो निज भवन बिराजो ॥ बरसानों सकल निवाजो ॥६॥ तुमतो सबकी सुखदाई ॥ मुखकीजे कोन बडाई ॥ तुमतो यह निजव्रत लीनों ॥ जिनजो जाच्यो सोदीनों ॥७॥ यह जस तुमारो जगजानें ॥ मुखपर कहि कोन बखानें ॥ तब करगहि ढिंग बेठारी ॥ गावत मंगल ब्रजनारी ॥८॥ तुमसों पूछें एक बाता ॥ तुम सांची कहो सब गाता ॥ जबगर्ग तिहारे आये ॥ वोहो नाम कृष्णके गाये ॥९॥ मुनि वासुदेव करिलेखे ॥ वसुदेव कहां तुम देखे ॥ यह सुनिसुनि बात तिहारी ॥ अचरज उपजे जीयभारी ॥१०॥ ओरोसंका जीय आवे ॥ ये भेद कोऊ नहीं पावे ॥ पति साधु परम तुम पायो ॥ यह पूत कहां ते जायो ॥११॥ याके गुन रूप नियारे ॥ यह मिलेन कुलहि तिहारे ॥ कछू कह्यो हमारो कीजे ॥ वसिकें सबकों सुखदीजे ॥१२॥ रहियें कछू दिवस हमारे ॥ हम तोहें सकल तिहारे ॥ यह दोऊ एक करि जानों ॥ नंदगाम सोई बरसानों ॥१३॥ जानत ज्यों नंद तिहारे ॥ तेसेई वृषभान हमारे ॥ ये दोऊ परम सनेही ॥ ये एक प्रान द्वे देही ॥१४॥ सुनिसुनि जसुमति

मुसिकानी ॥ बोली मधुरी एकवानी वसियें कछू दिवस तिहारे कीरति चलि बसो हमारे ॥१५॥ तब हंसी सकल ब्रजनारी ॥ जसुमति की ओर निहारी ॥ ब्रजभयो कुलाहल भारी ॥ नांचत दे दे करतारी ॥१६॥ यह रस बरसे बरसाने ॥ विन कुंवरि कृपा को जाने ॥ कीरति जसुमति जसगायो ॥ ब्रजवास माधुरी पायो ॥१७॥

२ (❀) राग बिलावल (❀) सुंदर स्याम सुजान सिरोमनि देहुं कहाकहि गारीजू ॥ बडे लोगके औगुन वरनत सकुच होत जिय भारी ॥१॥ कोकरि सके पिता को निर्णय जाति पांति को जानें ॥ जिनके जिय जेसी बनि आवे तेसी भांति बखानें ॥२॥ माया कुटिल नटी तन चितयो कोन बडाईपाई ॥ उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहा भई हंसाई ॥३॥ तुम पुनि प्रगट होई वारेंतें कोन भलाई कीनी ॥ मुक्तिवधू उत्तमजन लायक ले अधमनकों दीनी ॥४॥ वसि दस मास गर्भ माताके उनआसा करिजाये ॥ सोघर छांडि जीभ के लालच व्हे गये पूत पराये ॥५॥ वारेंहीतें गोकुल गोपिन के सूने ग्रह तुम डाटे ॥ हे निसंक तहां पेठि रंकलों दधिके भाजन चाटे ॥६॥ आपु कहाय बडेके ढोटा भातकृपन लों मांग्यो ॥ मान भंगपर दूजें जाचत नेंक संकोचन लाग्यो ॥७॥ लरिकाईतें गोपिन के तुम सूने भवन ढंढोरे ॥ जमुना न्हात गोप कन्यनके निपट निलज पटचोरे ॥८॥ बेनुबजाय विलास कियो वन बोली पराई नारी ॥ वेबातें मुनिराज सभामे व्हे निसंक विस्तारी ॥९॥ सब कोऊ कहत नंद बाबा को घर भरयो रतन अमोले ॥ गरे गुंजा सिरमोर पखौवा गायन के संग डोले ॥१०॥ राज सभा को बेठन हारो कोन त्रियन संग नाचे ॥ अग्रज सहित राज मारग में कुबिजा देखत राचे ॥११॥ अपनी सहोद्रा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाई ॥ भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाती लजाई ॥१२॥ लेले भजे राजन की कन्या यह धोंकोन भलाई ॥ सत्य भामाजु गोतमें व्याही उलटी चाल चलाई ॥१३॥ बहिन पिताकी सास कहाई नेकहु लाज न आई ॥ एते पर दीनी जु विधाता अखिल लोक ठकुराई ॥ मोहन वसीकरन चटचेटक जंत्रमंत्र सब जानें ॥ तातें भलेभले करिजाने भलेभले जगमानें ॥१५॥ वरनों कहा यथा मति मेरी वेदहू पार न पावे ॥ दास गदाधर प्रभु की महिमा गावत हीं उरआवे ॥१६॥

३ राग बिलावल मोहन वृषभान कें आएजू ॥ तहां अतिरस न्योंति जिमाए ॥१॥ वृषभानपुराकी गारी ॥ श्रीराधाकृष्ण पियारी ॥२॥ चढि दूल्हे व्याहन आये ॥ सिंघासन दे वेठाये ॥३॥ नानाविधि भई हे रसोई ॥ तहां जेंवत अति सुख होई ॥४॥ तहां मिली युवती वड भागी ॥ गावें कृष्ण चरित्र अनुरागी ॥५॥ तहां बोली एक व्रजनारी ॥ आवो देंहिं कृष्णकों गारी ॥६॥ इने गारि कहा कहि दीजे ॥ गुन ओगुन सरस लहीजे ॥७॥ द्वेवासवे कोउ जाने ॥ जिनेवेद पुरान बखाने ॥८॥ वसुदेवके सुत जु कहाये ॥ तुम नंद गोपकें आये ॥९॥ तेरी मैया आनआनजाती ॥ वेहिलि मिली बेठें पाती ॥१०॥ तेरी फूफी पंच भरतारी ॥ जाको जस पावन कारी ॥११॥ पतिपांडु सबे जग जानें ॥ सुत आन आनके आनें ॥१२॥ तेरी द्रुपद सुतासी भाभी ॥ वह पंच पुरुष मिलि लाभी ॥१३॥ जाकी जगवदत बडाई ॥ सोतो भक्त सिरोमनि गाई ॥१४॥ तेरी बहनि सुभद्रा कुमारी ॥ सोतो अर्जुन संग सिधारी ॥१५॥ श्रीकृष्ण तेरी महतारी ॥ वह पहरें तनसुख सारी ॥१६॥ रानी रातो लहंगा सोहे ॥ तेरी चितवनिमे जगमोहे ॥१७॥ तुम कहीयत हो ब्रह्मचारी ॥ जाके सोल सहस्र ब्रजनारी ॥१८॥ तुम कहीयतहो दधिदानी ॥ जिनकूवि जासों रतिमानि ॥१९॥ श्रीकृष्णजू तेरो बलबीरा ॥ जिनकरष्यो कालिंदीनीरा ॥२०॥ अहो तुम वनवन धेनुचराई ॥ भये घोख सकल सुखदाई ॥२१॥ वृंदावन वेनु बजायो ॥ ब्रजसुंदरि रास खिलायो ॥२२॥ सूने भवन पराये आये ॥ चोरी करि माखन खाये ॥२३॥ गारीं गावें हरिजूकी सारी ॥ वेहँसिहँसि देहें तारी ॥२४॥ गारी गावें हरिजूकी सासू ॥ वे ढरत प्रेमके आंसू ॥२५॥ गावो गावो सबेमिलि गारी ॥ तुम सुनहु लालबिहारी ॥२६॥ तुम करिकरि अपनों भायो अपनों जस जगत सुनायो ॥२७॥ वें हँसिहँसि गावे गोरी ॥ पटओट हंसी मुखमोरी ॥२८॥ छांडे दुरयोधनसे राजा ॥ तेरे कुलहिन आवेलाजा ॥२९॥ ललिता यह मंगल गायो ॥ सुनि सूरस्याम सचुपायो ॥३०॥

४ राग धनाश्री छेल छबिली समधिन हो यह छबि कोन की छलि लाई ॥ साच कहो हमसों समधिन तुम कोहे राम दुहाई ॥१॥ समधिन

सों समधोरो कीजे कीरति मनयों आई ॥ नंद गामतें महरि जसोदा समधिन न्योंति बुलाई ॥२॥ गिरिधारी जूकी महतारी सबही बिधि सुखदाई ॥ व्रजनारी गारी गावत सारी बहु पहराई ॥३॥ चंदवदन तेरो चित्तचोरे नयन घने नटरारे ॥ भारे पलकन में अति सोहे तेरे चंचल तारे ॥४॥ कज्जल रेख सहित सोहे लोचन मोचन जुललोहे ॥ हाहा नें कहेरि मोतन तोहि मेरे गरे की सोहे ॥५॥ भोंह धनुष नासा चंपकली बेसरिकी छबि न्यारी ॥ मुख देखें चकचोंधि रहत तेरी बेंदीकी बलिहारी ॥६॥ अर्धचंद तेरो बेंदा बन्यो बेनी बरनी न जाई ॥ मानो इंदुपे त्रिया फनिगकी अमृत अचवन आई ॥७॥ मानो मदनकी चपल चामठी कनिक खंभ लटकाई ॥ मानों निसा पतिके सुखलूटी होत प्रात उठिधाई ॥८॥ दारचोंदसन हसनिचोकाकी अधरनकी अरुनाई ॥ ठोढी गाढ गढ्यो मनमेरो तेरो संगन छोड्यो जाई ॥९॥ ललित कपोल अमोल गोल गोरे गोरे चितचोरें ॥ निरखि निरखि मुख छबि मृगनेनी रीझि रीझि तृनतोरें ॥१०॥ कानन करन फूलफवे कंठ मोतिन सरीसोहें ॥ कोन कोन उपमादीजे जु समधिन पटतर कोहे ॥११॥ अति उतंग कुंचन पर कंचुकी खयनवनी अतिगाढी ॥ कंचन कुंभन पर मनमथने मानोंसांचे ढारी ॥१२॥ बांये कर पल्लवन मुद्रिका खयेनबरा अतिगोल ॥ श्रवन सिरात्त सुनत समधिन तेरे मीठे मीठे बोल ॥१३॥ कर कंकन चुरोगजदंती गजरन फोंदा सोहे ॥ दुरिमुरिकें घूंघट जब काढै चितेचिते मनमोहे ॥१४॥ कटिलंहगा पचरंगी तन सोहे झूमक सारी ॥ कदली खंभ जे हरिराय की पायबनी अतिभारी ॥१५॥ पायल ओर बिछीयाजु छबीले नखनमहाबरिदीनों ॥ अटकि रहे उरमें अनबट समधिन सर्व सुहरिलीनों ॥१६॥ गति गयंद कटि किंकिनी बाजेमकर मधुर मनमीना ॥ धुनिसुनि थकित रहे मुनिमन नगर भयो आधीना ॥१७॥ सोंधे में सगवगी सदा सोहत समधिन सकुमारी ॥ मोहि रहे मकरंद बासरस भमर करें गुंजारी ॥१८॥ पानखात अलसात सखिनमें हंसत सहजहांसीरी ॥ जगमगात जोवनमदाती ओढें पावरी पीरी ॥१९॥ चंद्रभगा चंद्रावलि ललिता हसत देदे करतारी ॥ कोकिल केसे कंठ सबे गावति समधिन कों गारी ॥२०॥ कोमल कपोलनमें समधिनजू दसन चिन्ह किनदीने ॥ पलकन पीक कीलीक ललित लोचन रसमसे कहां कीने ॥२१॥ हृदेनखरेख कंचुकी

दरकी अंग अंग अलसाई मरगजी माल सिथल कटि पटलों पलपल लेत जृंभाई ॥२२॥ रस निधान रसरास रसिली रसिकन रसिक पियारी ॥ रसिक सबे रसबस करिलीने महामोहनी डारी ॥२३॥ सुनि सबही के ललित बचन समधिन जू तब हँसि दीनो ॥ हावभाव द्रगकरि कटाक्ष सबहिनको मन हरिलीनो ॥२४॥ भोंहकमान तमकि तरुनी द्रग बानता कही डारे ॥ जिनकें लागे ते रसपागे द्रगते टरे न टारे ॥२५॥ समधिनजू तुम्हारो रूपरंग रस मोपे कह्यो न जाई ॥ धन्य धन्य बिधिना बिचित्र जिन तोसीत्रिया बनाई ॥२६॥ देत असीस स्यामघन अलि श्रवनन विनती सुनि लीजे ॥ परमउदार सदां समधिनजू हमही दरसन दीजे ॥२७॥

५ राग धनाश्री रहसि घर समधिन आई ॥ ए सब सजनन के मनभाई ॥ध्रु०॥ समधिनसों समधोरो कीजे कीरति यह मन आई ॥ नंद गामते महरि जसोदा समधिन न्योति बुलाई ॥१॥ समधिन आई सब मन भाई निस समधी संग खेली ॥ खोलि हुलास आय ढिंग बेठी मोहोरन कीसी थेली ॥२॥ अति सुरंग सारी समधिनकी लहेंगा अतिही सुढार ॥ फाटि रही सगरी समधिन की चोली जोबनभार ॥३॥ समधिनकों हाथी को भावे आछो नीको पूरो ॥ रंग रंगीलो ओर चटकीलो हाथ भरे को चूरो ॥४॥ समधिन तो दीयोई चाहे खोलि डबाकी गांठि ॥ अपने समधिनके नेगिनकों हीरा पन्ना वांठि ॥५॥ समधिन कीहे गली सांकरी समधि आवन जोग ॥ आधो बाहिर आधो भीतर बहोत बराती लोग ॥६॥ समधिनकें मेल्यो ही चाहे गलफूलन को हार ॥ काढन कहे समधिन समधीसों डोलाकेजुकहार ॥७॥ यह लीला सुरनर मुनि गाई देखत रहे लुभ्याय ॥ चिरजीवो दुलहे ओर दुलहिन सूरदास बलिजाय ॥८॥

६ राग काफी तुम आवोरी तुम आवो ॥ मोहनजू कों गारी सुनावो ॥१॥ हरिकारो री हरिकारो ॥ यह द्वे बापन विचबारो ॥२॥ हरिनट बारी हरिनटवा ॥ राधाजूके आगें लट्टुवा ॥३॥ हरि मधुकररी हरि मधुकर ॥ रसचाखत डोलत घरघर ॥४॥ हरिखंजन री हरी खंजन ॥ राधाजु के मनको रंजन ॥५॥ हरिरंजन री हरिरंजन ॥ ललिता ले आई अंजन ॥६॥ हरिनागर

री हरिनागर ॥ जाकोबाबा नंद उजागर ॥७॥ हम जानेरी हमजाने ॥ राधा मोहन गहि आने ॥८॥ मुख मांडोरी मुखमांडो हरिहाहा खाय ॥ तोछांडो ॥९॥ हम भरिहेंरी हम भरिहें ॥ काहूते नेंक न डरिहें ॥१०॥ हरि होरीहो हरि होरी ॥ स्यामाजु केसरि ढोरी ॥११॥ हरिभावेरी हरिभावे ॥ राधा मनमोद बढावे ॥१२॥ रंगभीनो री रंगभीनो ॥ राधा मोहन बसकीनो ॥१३॥ हरिप्यारो री हरि प्यारो ॥ राधा नयनन को तारो ॥१४॥ हम लेहेंरी हमलेहें ॥ फगुवाले गारी न देहें ॥१५॥ यह जस परमानंद गावे ॥ कछु रहसि बधाई पावे ॥१६॥

७ राग सारंग भेरि बाजै भरुवा नाँचै आगें गधैया दौरे जू ॥ ता पाछे सब गोप के लरिका हो हो होरी बोले जू ॥१॥ कमर हलावैं बाँह मरोरे अधरन कौं रस लेवे जू ॥ नैन नचावैं बगल बजावै मुख पै गुलचा देवेजू ॥२॥ भरुवाजी को मूँड़ मुँड़ायौ निलज निपट अंग खोलै जू ॥ 'रामदास' प्रभु या होरी में ढोल ढोल की बोले जू ॥३॥

८ राग नट गारी हरि देत दिवावत ॥ व्रजमें फिरत गोपिकन भावत ॥१॥ दूधदही कोमातो डोले ॥ काहेन होहो होरी बोले ॥२॥ बगलन में पिचकाई वागे ॥ बांधत फेंट संभारत पागें ॥३॥ रुक गये वगरनर हे पेंडे ॥ नव केसरके माट उलेंडे ॥४॥ छाजनतें छूटें पिचकारी ॥ रंगगये बाखर भवन अटारी ॥५॥ चोवा चंदन कीच मचाई ॥ मानों व्रजमें वर्षा ऋतु आई ॥६॥ मोहन घेर भरीं व्रजनारी ॥ अबीर गुलाल रंगी रंग सारी ॥७॥ गोपी ग्वाल सबें रंग राचें ॥ वे सब सिंघ पोरिपेंनाचें ॥८॥ न्हान चले यमुनाके तीरा ॥ कृष्ण ओर हलधर दोऊ बीरा ॥९॥ प्रभु मुकुंद माधो सुख दायक ॥ युगल किशोर देखबे लायक ॥१०॥

९ राग बिलावल नवरंगीलाल विहारीहो ॥ तेरें द्वे बाप द्वेमहतारी ॥ध्रु०॥ नवरंगीले नवल विहारी ॥ हम देंहि कहा कहि गारी ॥१॥ द्वेबाप सबे जगजाने ॥ सोतो बेद पुरान बखानें ॥ वसुदेव देवकी जाये ॥ सोतो नंदमहरकें आये ॥२॥ हम बरसानेकी नारी ॥ तुह्मेदेहें हँसिहँसि गारी ॥ तेरी भूआ कुंतीरानी ॥ सोतो सूरज देखि लुभ्यानी ॥३॥ तेरी बहनि

सुभद्राक्वारी ॥ सोतो अर्जुन संग सिधारी ॥ द्रुपद सुतासी तेरी भाभी ॥ सोतो पांचपुरुष मिलि लाभी ॥४॥ हमजाने जू हमजाने ॥ तुम उषल हाथ बंधाने ॥ हम जानी बात पहचानी ॥ तुम कबते भये दधिदानी ॥५॥ तेरी मायानें सब जग ढूंढ्यो ॥ कोई छोड्योन वारो बूढ्यो ॥ जनकृष्णा गारी गावे ॥ तब हाथ थारकों लावे ॥६॥

१० राग सारंग मोहन होहो होहो होरी ॥ काल्ह हमारे आंगन गारी देआयो सो कोरी ॥१॥ अब क्योंदूर बैठे जसोदा ढिंग निकसो कुंज बिहारी ॥ उमगउमग आंई गोकुल की वे सब वाई दिन बारी ॥२॥ तबही लला ललकार निकारे रूप सुधाकी प्यासी ॥ लपट गई घनस्याम लालसों चमक चमक चपलासी ॥३॥ काजर दे भजिभार भरुवाकें हँसहँस व्रजकीनारी ॥ कहें रसखान एक गारीपर सो आदर बलिहारी ॥४॥

११ राग मरी तु जिन बोलेरी देन देवा हि गारी ॥ वह हेलबार जिंभार जगत को हमहें सुलक्षण नागरनारी ॥१॥ वाके जिये आवे सोई गावे हम कहा करें लाज की मारी ॥ होरी में कहो कोन विगोयो कृष्ण जीवन लछीराम झंझारी ॥२॥

१२ राग बिलावल नंदगाम को पांडे व्रज वरसाने आयो ॥ अति उदार वृषभान जानि सनमान करायो ॥१॥ पांडेजू के पायन कों हँसिहँसि सीस नवायो ॥ पायधुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायो ॥२॥ धाय आई व्रजनारी जिन यह सूधोपाया ॥ भानभवन भई भीर फागको खेल मचायो ॥३॥ सीसी सरस फूलेल अंगअंगन झलकायो ॥ हनूमान की प्रतिमा मानों तेल चढायो ॥४॥ काजरसों मुखमांडि बदन विंदाजु बनायो ॥ कारे कलस श्रवत मानों चपरा चिपकायो ॥५॥ गज गामिनि गोंछनसों तुकमैया लपटायो ॥ देहधरें मानों फागुन खेलन व्रज में आयों ॥६॥ कहुंचंदन कहुंवंदन कहुंचोवा लपटायो ॥ ऋतुवसंत जानों केसूकोद्रुम नवफूलन छायो ॥७॥ काहू गूलरी माला काहू झंगला पहरायो ॥ मानोगज घंटानवीच गजगाह बनायो ॥८॥ रंग रह्यो चहोंटियन अंगरातो व्हे आयो ॥ गुंजन को गहनो मानो प्रोहित पहरायो ॥९॥ माथेतें मोहनीनें छाछको माट ढरायो ॥ मानो

काचे दूध सों गिरि गोवर्धन न्हायो ॥१०॥ चोरभोर भई खोर मानो गंगाजल ढायो ॥ महादेव की जटा चूरिचरनोदिक आयो ॥११॥ लगत दंत सोंदंत गिडिगिडी अंग लगायो मानोंहो सुघर संगीत ताल कठतार बजायो ॥१२॥ श्रीराधा राधा कहि अपनों बोल सुनायो ॥ अरी भानकी कुंवरि सरनिहों तेरी आयो ॥१३॥ सुनिकें प्रेमवचन गरो राधाभरि आयो ॥ बाबाजू को दगलाले प्रोहित पहरायो ॥१४॥ कीरतिजू पांय लागि तातोपय प्यायो ॥ तोलों खेलत होरी व्रज में दूल्हे आयो ॥१५॥ साचे स्वांगन सजिकें सबे समूह सुहायो ॥ तपा व्यास कोपूत धुत सुकदेव बनायो ॥१६॥ सनकादिक चारयों निस ज्यों सन्यास सुहायो ॥ घूमत आयो इंद्र स्वांग उन्मत्त नचायो ॥१७॥ व्रज की बीथनि बीच कीच में लोट पुटायो ॥ चारिवदन को स्वांग चतुर चतुरानन लायो ॥१८॥ पंचानन पांचों मुखसों संगीत बजायो ॥ हरिकोव्हे जुवावरो नारद नाचत आयो ॥१९॥ देखि नंद के लाल जंत्र धरिगाल बजायो ॥ महादेव पटतारदेत यह पट प्रभु भायो ॥२०॥ हो हो हो होरी हरि हांसीनहँसायो ॥ माया निपुन भई सोनार दहलहुलरायो ॥२१॥ कामकाम नीभयो सवन को चित्त चुरायो ॥ ललिता जोरी गांठि लाल को व्याह रचायो ॥२२॥ गठजोरो वृषभान कुंवरि सों जाय जुरायो ॥ नवलअंब के मोर को मोरी मोर बनायो ॥२३॥ पीत पिछोरी तानि छबीलो मंडप छायो ॥ फागुन की गारीन को साखा चार पढायो ॥२४॥ होरी की अग्यारी करि दूल्हे परनायो ॥ होरी को पकवान सो भरिभरि झोरिन खायो ॥२५॥ फूलि फाग की फाग फल्योजिन यह जसगायो ॥ जन हरीया घनस्याम वास बरसानें पायो ॥२६॥

१३ राग काफी माई बरसाने ते नंदगाम प्रोहित वृषभान को आयो ॥ नंदभवन को वैभव अद्भुत निरख परम सुख पायो ॥१॥ पायध्वाय कें जल अचवायो धिर आई व्रजनारी ॥ पालागन कहि फूलफूल गावत होरी की गारी ॥२॥ एकन चोवा आनसान ब्राह्मनके मुख लपटायो ॥ एक कपोलन मारत मींडत करत आपमन भायो ॥३॥ एकघर धसी घोर अरगजा पाछेते गहिनायो ॥ एकतो पकर फेंट झकझोरत इकलोकर कें पायो ॥४॥ एक चोंहोंटियालेत चोरचित एकजु तारी बजावे ॥ एकतो पकर पोतिया

झटकत हंसिहंसिवाख चढावे ॥५॥ एक अचानक व्हे पाछेते आंखिन में दियो हे गुलाला ॥ मींडतदृग यों कहत लुगइन मेरोपारचोचाला ॥६॥ एकनवासी खाटी छाछिते माथेते गहिनाई ॥ इत यह एक उतेवे अनगिण ब्राह्मन कीनबस्याई ॥७॥ गिडगिडात मारचो जाडे को चितवत श्रोहेतान ॥ हाहाहों हारचो तुम जीती छांडिदेहु जिजमान ॥८॥ एक कहेयाहि पकरटकियाके श्रवनन कों सुखदीजे ॥ एक कहेहा हानीके व्हे घरी एक गहिलीजे ॥९॥ कहत परस्पर ए व्रजनारी ॥ सबमिल यह बिचारी ॥ इतनी सुतन अथांई तेचलि आये कुंजबिहारी ॥१०॥ जोदेखेतो पांडेकों यहीं घेर रहीं व्रजबाला ॥ मुख पटुकादे निरख निरख मुसिकाने नंदकेलाला ॥११॥ भलीमानसहो भलो आदरकियो ॥ भलोभोजन करवायो ॥ सुनों हो कुंवरजू सगरी लुगाईन होंतो नाचचायो ॥१२॥ एकनगुल गुलाय गुलचायो एकन कोहुंनीदीनी ॥ जानत हों अपने जीय में जेसी पोहों नाई कीनी ॥१३॥ किचकिचाय मेरे लियो चोहोंटिया पीठ व्हे गई राती ॥ इननवरजी इनते हों डरपत धुकरपुकर करे छाती ॥१४॥ तब ललिता गदगदगद कायो स्याम स्याम कहिटेरचो ॥ पांडेजू की ललित पीठ पर लालकमल कर फेरचो ॥१५॥ एकन मोकों नयनसेनदे एकन अंजन कीनों ॥ एक नमन हरिलियोचितें आंखिन में बूकादीनों ॥१६॥ कह्यो स्याम अजहूबकसो तिहारे बहुत सुख पेहें ॥ जो चाहोसोई तुमकों मनभायो फगुबा देहें ॥१७॥ तुम तो अति उदार हो ढोटा तुम से तुम ही दानी ॥ जानजाउ जियमे जगजीवन चीरहरण सुधि आनी ॥१८॥ जोसासुरे की दया की जेतो हाहा खाय छूडावो ॥ तो हमछांडें पांडे कों पांडेनाचे तुमगावो ॥१९॥ काहेन पांडेगुन प्रगटो हरिसेन दई दृग मोरी ॥ मगन भयो तब नाचन लाग्यो बोलत हो हो होरी ॥२०॥ बांधत रोटी पेट फुलायो यों टेढी पाग बनाई ॥ अधिकवार बह्म नेंटानरोतन अद्भुत फाग मचाई ॥२१॥ जान बूझ अनबोली व्हे कें दुरदेखत नंदरानी ॥ निरख निरख नयनन कौतूहल मनहीं मन मुसिक्यानी ॥२२॥ इंद्रादिक ब्रह्मादिक शंकर ये सब रहे लुभ्याई हम न भये व्रज ब्राह्मन निरख निरख मनमे पछिताई ॥२३॥ भई विमान भीर व्रज ऊपर पहोपन वृष्टि करावें ॥ निरख निरख यह सुख नयनन सुरबनिता मंगलगावें ॥२४॥ धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंदसुत धन्य ये व्रज की नारी ॥

धन्य धन्य व्रज के व्रजवासी धन्य स्याम बलहारी ॥२५॥

१४ राग काफी माई समध्यानतें ब्राह्मन आयो भरहोरी के बीच भरुवा ॥ घेरलियो घरमांझ लुगांईन मूंडलगाई कीच ॥१॥ काहू लई खसकाय परदनी काहू कियो कजरारो ॥ पिसी पिठी गोंछन लपटाई ब्राह्मन को कहा चारो ॥२॥ काहू गुदीझगुला पहेरायो काहू गूलरी माला ॥ तारी देदे महीगन गावें हँसि हँसि व्रजकी बाला ॥३॥ जसुमति लियो बचाय बापरो निरमल नीर न्हवायो ॥ नये वसन पहेराय गुदीते झगुला आनि छिडायो ॥४॥ तब ब्राह्मन निधरक व्हे बेठ्यो पहरि ऊजरे कपरा ॥ एक ग्वालिनि ने आनि उलेड्यो सरीकीचको खपरा ॥५॥ देख विमल गह्यो चतुरंग ने भलें भले करि गावें ॥ अति खिलवार मोधुवापांडे खेलेंहीं सुख पावें ॥६॥ पेजबांधि जो सुरपति नाचे तो ऐसी फागन माचे ॥ पेट फुलाय वदन टेढोकर विफरयो ब्राह्मन नाचे ॥७॥ गहेन जोई माई देपांडे हमतो फगुवा चाहें ॥ एकनकान पकर गुलचायो काहू अेंठी बाहें ॥८॥ जानि सासुरेको यह ब्राह्मन मोहन कछु बन कहहीं ॥ कृष्ण जीवन लछी राम के प्रभु हरि सकुच सकुच जिय रहहीं ॥९॥

१५ राग धमार प्रोहित वृषभानु को हो आयौ नंदराई दरबार ॥ध्रु०॥ सिंघ पौरि खेलैं ब्रज-बाला छिरकति कुंमकुम नीर ॥ ब्रज की बीथिनि खेल मच्यौ हो भई परसपर भीर ॥१॥ घेरि लयौ ब्राह्मन चहुँदिस तैं लींने बसन उतारि ॥ नैन आँजि कैं दयौ दिठौंना बैंनी गुही सँबारि ॥२॥ तन सुख चीर, लाह कौ लहिंगा, अँगिया बनी कटाव ॥ कंठ पोति, कर पौहौंची सोहै, बाजूबंद जड़ाब ॥३॥ तिया-भेष अद्भुत जु बन्यौ है कहति सबैं ब्रज-नारि ॥ दै पट तार नचावैं पांडे, गावति हैं मिलि गारि ॥४॥ उत तैं आवति हैं नंद-नंदन, गोप सखा संग जोरि ॥ प्रोहित की गति देखि साँवरो हँसति, मुदित मुख-मोरि ॥५॥ तब मोहन जुवतिन मधि आए पांडे दियौ छुड़ाई ॥ फगुवा बहुत मँगाई सबन कौं देति है हरखि बुलाई ॥६॥ देति असीस चलीं ब्रज-बनिता, चिर जियौ ब्रजराई ॥ जाके राज सदाँ इहि बिधि सौं, खेलति है हम आई ॥७॥ तिहिं औसर पांडे कौं दीने, नौतन बसन मँगाई ॥ चल्यौं

बहुरि बृषभानु-पुरा कौं फूल्यो अंग न माई ॥८॥ ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, रहे बिमानन छाई ॥ यह छबि निरखि बारि तन, मन, धन, 'विष्नुदास' बलि जाई ॥९॥

फागण सुद १५ होली उत्सव

१ राग गोरी (कछु) सबदिन तुम ब्रजमें रहो हरि होरीहे ॥ कबहुन मथुरा जाओ ॥ परब करो घर आपने ॥ कुशल केलि निबाहो ॥१॥ घरवा पिय चलिये नहीं ॥ सब सुखको फलफाग ॥ प्रकट करो अब आपनो अंतरको अनुराग ॥२॥ मानो द्रेज दिन सोधके भूपति कीयो काम ॥ शशि रेखा सिर तिलकदे सब कोऊ करे प्रणाम ॥३॥ कनक सिंहासन बैठकें युवतिन के उर आन ॥ अलक चमर अंचल ध्वजा घुंघट आत पतान ॥४॥ फागुन मदन महीपति इहि विध करहे राज ॥ पंद्रह तिथि भरवरण हूं सादर क्रिया समाज ॥५॥ तीज तिहूं पुर प्रगटियो अपनी आन नरेश ॥ सुन मगमग डफ दुंदुभी सोई करिये सवेदेश ॥६॥ चोथ चहुंदिशन चालिये यह अपनी इकरीति ॥ मेरे गुण कहे निर्लज्ज व्है छांड सकुच कुलनीति ॥७॥ पांचें परमित परहरो चलहु सकल इकचाल ॥ नारी पुरुष एकत्र करो ॥ वचन प्रीतिपाल ॥८॥ छटिछे रागछे रागिणी ताल तान बंधान ॥ चदुलचरित्र रतिनाथके सिखवो अति अभिधान ॥९॥ सातें सुन सब सजचले राजाकी रुचि जान करत क्रिया तैसीसबे आयुष मांथे मान ॥१०॥ आठे डर उनमानकें सबन मतो मत्यो एक ॥ नृपजु कहे सोई कीजिये क्यों राखिये विवेक ॥११॥ नवमी नवसत साजके कर सुगंध उपहार ॥ मानो चले मिल मेरकें मनसिज भवन जुहार ॥१२॥ दसेंदसो दिश शोधकें बोले राजाराय जगजीत्यो बल आपने ज्ञान वैराग्य छुडाय ॥१३॥ सुन आई एकादशी ॥ बोले सबसिर नाय ॥ ढोल भेरि डफ बांसुरी ॥ पटह निसान बजाय ॥१४॥ देखभले भट्ट आपने ॥ द्वादशी घोस विचार ॥ काज करो रुच आपने ॥ व्है निशंक नरनार ॥१५॥ रथरावक्क पावक सजे ॥ खरन भये असवार ॥ धूर धातु घट रंगभरे ॥ करण यंत्र हथियार ॥१६॥ जहां तहां सानेचली ॥ मुक्त कच्छ शिरकेश ॥ आप आप सूझे नहीं ॥ राजारंक आवेश ॥१७॥ जहां सुनत

तप संयमी ॥ धर्मधीर आचार ॥ छिरकें जाय निशंक व्है ॥ तोरें पकर किवार ॥१८॥ जे कबहू देखी नहीं ॥ कबहू सुनी नहिं कान ॥ तिनकुल वधू नारीनके ॥ लागे पुरुष पराण ॥१९॥ धायधरे बलकुल वधु ॥ पर पुरुष नहिं पहिचान ॥ मातपिता पति बंधुकी ॥ छूट गई सब कान ॥२०॥ भस्मभरें अंजन करें ॥ छिरकत चंदन वार मर्यादा राखें नहीं ॥ कटिपटलेहिं उतार ॥२१॥ तेरस चौदस मासमें ॥ जग जीत्यो डरडार ॥ शठ पंडित वेश्या वधू ॥ सबे भये एक सार ॥२२॥ पून्यो प्रकट प्रतापते दुरो मिले पालाग ॥ जहां तहां होरी लगी ॥ मानोमवासिन आग ॥२३॥ सब नाचें गावें सबें सबहि उडावें छार ॥ साधु असाधु न पेखही बोले बचन विकार ॥२४॥ अतिअनीत मतिदेखकें परिवा प्रकटी आन ॥ विमल वसन ज्यों स्यामको मर्यादा की कान ॥२५॥ आवतही बिनती करी उठजोरे हंस हाथ ॥ वरण धर्म सब राखिये कृपा करहु रतिनाथ ॥२६॥ आज्ञा दई रतिनाथने नृप समुझो मनमांह ॥ जायधर्म अपुने चलो बसो हमारी यांह ॥२७॥ सूर कहां लग वरणिये मनसिजके गुणग्राम ॥ सुनो स्याम यह मांसमें कियोजु कारण काम ॥२८॥ कान्ह कृपा कर घररह वरजेमथुराजात ॥ सरस रसिक मणि राधिका कही कृष्ण सोंबात ॥२९॥

२ राग गोरी ढोटा दोऊ रायके लाल खेलत डोलत फागहो ॥ लालेजो देखे सो मोहियो ओर प्रतिछिन नव अनुरागहो ॥१॥ सखा संग सबबोलकें घरघरते दे तव गारी ॥ सुनत कुंवर कोलाहला निकसी घोषकुमारी ॥२॥ भूषण वसन जो साजियो उरगज मोतिन हार ॥ झूमक चेतव गावही घोषराय दरबार ॥३॥ बाजे बहुत बजावहीं डफ दुंदुभी कंठताल ॥ बलमोहन मध्य नायका चहुंदिश नाचत ग्वाल ॥४॥ पिचकाई कर कनककी अरगजा कुंकुमघोर ॥ बलराम कृष्ण कों छिरकहीं हसवचली मुखमोर ॥५॥ कोलाहल सुन आइयो वल्लभ कुलके राज ॥ सिंघद्वारपें बैठियो बडरे गोप समाज ॥६॥ व्रजरानी तहां आइयो जहां बैठे नंद उपनंद ॥ सोंधे ठोडी लीपियो आंजत आंख सुछंद ॥७॥ यह विध होरी खेलही अरगजा पंक सुगंध ॥ विधसों होरी लगाइयो पून्यो पूरनचंद ॥८॥ परिवा वसन जो साजियो न्हाय धोय आनंद ॥

गोविंद बल वंदन करे जय जय गोकुलकेचंद ॥९॥

३ राग धनाश्री होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग मचायो ॥ केसरि सुरंग गुलाल अरगजा मदन वसंत जमायो ॥१॥ तालमृदंग झांझ डफ वीना होरी राग बनायो ॥ सुनि निकसी ग्रहग्रहते सुंदरि हावभाव फलपायो ॥२॥ आवत भावत गारिनगावत रसभरि लाल खिलायो ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधर युवतिन सों होरी त्योहार मनायो ॥३॥

४ राग सारंग भेरि बाजे भरुवा नाँचे आगे गधैया दौरे जू ॥ ता पाछे सब गोप के लरिका हो हो होरी बोले जू ॥१॥ कमर हलावें बाँह मरोरे अधरन कौं रस लेवे जू ॥ नैन नचावें बगल बजावे मुख पै गुलचा देवेजू ॥२॥ भरुवाजी को मूँड़ मुँड़ायौ निलज निपट अंग खोलै जू ॥ 'रामदास' प्रभु या होरी में ढोल ढोल की बोले जू ॥३॥

५ राग बिहागरो रंगन रंग हो हो होरी खेंले लाडिलो व्रजराजको ॥ सांवरे गात कमल दल लोचन नायक प्रेम समाजको ॥१॥ प्रथमहीं ऋतु वसंत बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानो फाग प्राण जीवन धन आनंदित सब व्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगर केसर व्रजपति बहुघोर धरे ॥ सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥ प्रेमभरी खिलवारनके हित सुखके साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार जसोदा मैया वारवार जलवार पियें ॥४॥ भई हे रंगीली भीरद्वारन प्रीतम दरशन कारनें ॥ अबबनठन निकसे मंदिरतें कोटि मदन कीये वारनें ॥५॥ फेंट भराय लई जननीपें आज्ञा लई व्रजईशतें ॥ नंदराय तब रत्न पेंचरचि बांध्यो गिरिधर शीशतें ॥६॥ तापरमोर चंद्रका सोहे ग्रीवढरन लहकात हें ॥ मदनजीत को बानो मानो रूप ध्वजा फहरातहें ॥७॥ तेसेई सखा संगरंग भीने हरख परस्पर मनमोहे ॥ वरण वरण युवतिन के कमल मानों अंबर दिन मणि संग सोहे ॥८॥ आनंदभर बाजे बाजत हें नाचत मधुमंगल रंगकिये ॥ हरिकी हसन दशननकी किरण नयननकी ढरनमनमोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोऊ चढ अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥ गोकुल चंद्रमा देखन कों मानो चंद्र विमानन चढचढ आये ॥१०॥ अबीर गुलाल उडाय चले देखत जेसें सब

कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल नवरंगी कहा कहिये रस नवघन बरखे ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन निरख नयन मन घूमेंहों ॥ सन्मुख व्हेय पिय कल्प तरूवर महाभाग्य रसफल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा रसिक शिरोमणि सों खेलन आई ॥ दुहूंदिश शोभा उमग रंग मच्यो मानवेणु ध्वनि लांई ॥१३॥ नयनन बेनन खेलत वधू गेंदुक नवलासिन मारमची ॥ कमल नयन करले पिचकाई मृगनयन सेनन भ्रूंहनची ॥१४॥ छिरकी छेल छबीली भांतन मनहरणी जोबन बारी ॥ सब अंग छींट बनी पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन अछन नेरे आंई ॥ दौर दामिनीं घनघेर्‍यो पिय बात बनीं सब मनभाई ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत देगलबईयां कोऊ पोंछत आछी छबिसों ॥ अलकन भ्रोहन मूल रंग रह्यो शोभा कहियन जाय कविसों ॥१७॥ कोऊ रचि रुचि पान खवावत पुलकित अधरन परस किये ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा मागत पिय नयन चेन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदरपर प्रीत उमग केसर ढोरी ॥ महामनोहर ताको राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी ॥१९॥ सरस्वती सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान् हित रामराय प्रभु हँस चितवन वसीमन मेरे ॥२०॥

धमार के पद

१ राग - बिलावल नंदसुबन व्रजभावते फाग संग मिलि खेलोजू ॥ आज हमें तुमें जानवी जों जुवती दल पेलोजू ॥१॥ रसिक सिरोमनि सांवरे श्रवन सुनत उठिधाए ॥ वलिसमेत सब टेरिकें घरघरते सखा बुलाये ॥२॥ बाजे बहु विधि बाजहीं ताल मृदंग उपंगा ॥ डिम डिमि दुंदुभी झालरी आवज कर मुख चंगा ॥३॥ उतते नवसत साजिकें निकसी सकल व्रजनारी ॥ झुंडन आई झुमिकें कलगावत मीठी गारी ॥४॥ केसरि कुंकुम घोरिकें भाजन भरि भरि लाई ॥ छूटी सनमुख स्यामके करन कनिक पिचकाई ॥५॥ उतहिं समाज गोपालसों भरेमहारस खेलें ॥ चोवा मृगमद सानिकें युवती यूथ पर मेलें ॥६॥ सोभित बालिक वृंद में हरि हलधर की जोरी ॥ उतहि चतुर चंद्रावली सबगुन निधि राधा गोरी ॥७॥ सोंहवदे ललिता कहे कोऊपगनपि

छोंडे डारे ॥ इतनायक उतनायका कोजीते कोहारे ॥८॥ टिके परस्पर देखिकें खेल मच्यो अति भारी ॥ इतउत ओटनमानही चौंकिपरे नरनारी ॥९॥ युवतियूथ दल पेलिकें छेकिसुबल गहिलीनो ॥ कंठ उपरना मेलिकें खेंचि आप वसकीनो ॥१०॥ सुनो सुबल साचीकहूं तो भलें छूटन पाओ ॥ छलबल वानिक वानिकें नेंक हलधरकों पकराओ ॥११॥ बहोरी सिमिटि व्रजसुंदरी संकरषण गहिघेरे ॥ फेंट गही चंद्रावली तब उलटि सखन तनहेरे ॥१२॥ सोंधों नावें सीसते ॥ एक काजर लेकें आई ॥ मोहन हंसि मुरियों कह्यो देखो दाऊ जू आंखि अंजाई ॥१३॥ फिर प्यारी नागरि राधिका तके स्याम जहां ठाडे ॥ ओर सखिन की ओट व्हे गहे ओचका गाढे ॥१४॥ देखसखी चहूंओरतें दौरि आय लपटानी ॥ अंगअंग बहुरंग सोंरंगे करत बात मनमानी ॥१५॥ केसरिसों पटवोरिकें श्रीमुख मांड्यो रोरी ॥ तारी हाथ बजायके बोलत हो हो होरी ॥१६॥ मगनभई व्रज सुंदरी नवरस भीज्योहीयो ॥ इत अग्रज उत स्यामपे दुहुंदिस फगुवा लीयो ॥१७॥ परसि परम सुख उपज्यो भयो त्रियन मन भायो ॥ सादर चारु चकोर ज्यों मानो विधु प्रीतम पायो ॥१८॥ नागरि अति अनुराग सों मुदित वदन तनहेरें ॥ सर्व सवारें वारनें एक अंचल हरिपर फेरें ॥१९॥ चत्रभुज प्रभु संग खेलहीं यह विधि घोषकुमारी ॥ सब व्रजछायो प्रेमसों सुखसागर गिरिधारी ॥२०॥

२ राग बिलावल गोपीहो नंदराय घर मांगन फगुवा आई ॥ प्रमुदित करहिं कुलाहल गावत गारि सुहाई ॥१॥ अबला एक अगमनी आगें दईहे पठाई ॥ जसुमति अति आदरसों भीतर भवन बुलाई ॥२॥ तिनमें मुख्य राधिका लागत परम सुहाई ॥ खेलो हंसो निसंक संकमानों जिनकाई ॥३॥ बहुमोली मनिमाला सबन देहुं पहराई ॥ मनिमाला ले कहाकरें मोहन देहु दिखाई ॥४॥ बिनु देखेंसुंदर मुख नाहिन परतहाई ॥ मात पिता पति सुतग्रह लागतरी बिषमाई ॥५॥ सुनिकें प्रेम बचन दामोदर दई दिखाई ॥ घरमेतें घनश्याम भुजा भरि भामिनि लाई ॥६॥ नवसिख सुंदरसींवा रूपलावन्य अधिकाई ॥ रही ब्रजबधू निहारि रंकमानो निधिपाई ॥७॥ अरगजा चंदन वंदन चहुंदिसतें लेधाई ॥ भरति भांवते लाले करन कनिक पिचकाई

॥८॥ दरस परस पिय अतिसय सुंदरि सब लपटाई ॥ कुचभुज वीच किचमची अतिश्रम की झपटाई ॥९॥ मंडित करहिं कपोल एक ले काजर आई ॥ आलिंगन चुंबन रस नहीं सुरझत सुरझाई ॥१०॥ अंचल सों पटजोरें रीझि सकुच सिरनाई ॥ दंपति सौभग संपति कोऊ पीवत न अघाई ॥११॥ यह लीला अति ललित सोतो नंदरानी भाई ॥ हरषित उदित मुदित सबहिन की करत बडाई ॥१२॥ पटदुकूल आभूषन चोली दिव्य मगाई ॥ जसुमति अति प्रफुलित मन सुंदरि सब पहराई ॥१३॥ यह मेरे आंगन ग्रह आवोरी नितमाई ॥ नेन श्रवन सुखभयो लालजूकी कीरति गाई ॥१४॥ निकसी देत असीस जियो तेरो मोहनराई ॥ यह व्रज माधोदास रहो नितनंद दुहाई ॥१५॥

३ राग बिलावल बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई ॥ कीयो हे जुहार नंदजूकों भीतर भवन बुलाई ॥१॥ एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी ॥ काहे मोहन राय दुरि रहे मैया यदि वावत गारी ॥२॥ आदर देत व्रजरानी अबनिज भागि हमारे ॥ प्रीतम सजनकुलवधू पायेदरस तुह्मारे ॥३॥ सुने कुंवरि मेरी राधे अबही जिन मुख मांडो ॥ जेंवत स्याम सखन संग जिन पिचकाई छांडो ॥४॥ केसरि बहोत अरगजा कित मोहन परडारो ॥ सीतलगे कोमल तन तुमही चित्त विचारो ॥५॥ अंचल ऊपर देरही दोऊ मैया त्रनतोरी ॥ बरजत भर कुंकुमा निर्भय नवल किसोरी ॥६॥ कहत रोहिनी जसोदा ओली ओडति आगें ॥ जायभरो व्रजराजे मोहन दीजे मांगें ॥७॥ मोहन मांगे पैयें तो दिन दसहमहिं देहो ॥ गोपकुंवर के पलटें जो चाहो सो लेहो ॥८॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये ॥ कंचन माट भरे दधि लें गोपिन सिरनाये ॥९॥ ग्वाल गुपाल सखा सब हँसत करत किलकारी ॥ दूध लीयो भीतरते छिरकीं सब व्रजनारी ॥१०॥ जो सुख सोभा बाढी कहत कहा कहि आवे ॥ ललिता कुंवरि कुंवर को अंचल गहि गहि लावे ॥११॥ भये निरंतर अंतर तजि वल्लभ व्रजबाला ॥ गिरि गिरि परत गलिनमें हारतोरि मनिमाला ॥१२॥ प्रभु मुकुंद व्रजवासी अटक कोनकी माने ॥ कहत भैया माधोजन चलो भरो वृषभाने ॥१३॥

इतनो मांग्यो पांऊं देहु वृंदावन वासा ।। कुंवर कुंवरि तहां विहरत चरन कमलकी आसा ।।१४।।

४ राग बिलावल परिवार प्रथम कुंवर अति विहरत गोपिन संगा ।। तालमुरज बहुबाजे ओर आनक मुख चंगा ।।१।। ढोल भेरि ढोलक छबिवेन मृदंग उपंगा ।। रुंज मुरज ओर दुंदुभी झालरि तरुलतरंगा ।।२।। विविध पखावज आवज झांझबीना डफजोरी ।। विचविच गोमुख सुनीयत विच मुरली की घोरी ।।३।। ग्वाल परस्पर राजें मनिमय जेरी हाथा ।। वूका कनिक पिचकाई भरि भरि छिरकत गाथा ।।४।। चलो सखी देखन जैयें विहरत सिंघढुवारा ।। सुनिमन हरखि सकल त्रिय लागीं करन सिंगारा ।।५।। नील वसन तनसारी लहेंगा लालसुरंगा ।। कंचुकी ललित कुचनपर मानो लजित अनंगा ।।६।। सोंधे सीस सरस करिवेनी सुमन संभारी ।। मानो कनिक खंभलगि झूमत पन्नगनारी ।।७।। सीसफूलर चितिलक भृकुटी बिच वंदन रोप्यो ।। मानों सरासन साजि वानमनमथ कोप्यो ।।८।। वंदन मांगन मधि अति राजत कच सुढारे ।। मानों शेष सीसपर ठाडो अक्षत डारें ।।९।। नेनकुरंग श्रगनजुग चारुचक्र बिराजे ।। मानहुं शशिअवनि पर देखियत रविरथ साजे ।।१०।। नखसिखतें जुवति बनि गई सब सिंघ ढुवारा ।। हमारो फगुवा देहु मोहन नंदकुमारा ।।११।। काहे मोहनराय भाजो काहे ओले लेहो ।। कुमुद बंधु जो निकसत नेंकु दिखाईदेहो ।।१२।। फगुवा को मिसझूंठो हरि दरसन की आसा ।। देखन कों जीय तरसत लोचन मरत पियासा ।।१३।। सुनिमन हरषि जसोमति उनकों आसन दीनो ।। कुंकुम जलसो घोरि सबन मुख मंजन कीनो ।।१४।। वरन वरन पटदीये गोदन भरी जु मिठाई ।। यह विधि नंद घरनी व्रज की तरुनी पहराई ।।१५।। गान करत मनहरत मुदित मनदेत असीसा ।। तुम्हारो कुंवर जसोमति जीवो कोटि वरीसा ।।१६।। जिन देखे नेंन सिरात अघातन पीवत प्यासा ।। तिनकी चरन कमल रज पावे माधो दासा ।।१७।।

५ राग बिलावल नँदगाम की गोपी बरसानैं चलि आँई ।। माँगति फगुवा कुँवरि पै कीरति जू लेति बुलाई ।।१।। इक गौरी इक साँवरी देति

वृषभानु जु कों गारी ॥ झील सरस सुर गावति हँसि हँसि दे तब गारी ॥२॥ नाँचति करति कुलाहल तन की दिसा बिसारी ॥ भीजि रही उर अंतर विकल भई अति भारी ॥३॥ लीए गुलाल अरगजा करन कनक पिचकारी ॥ तन तनसुख पहिरे अति रँगरँग रंजित सारी ॥४॥ स्यामा जु निकसो बाहिर ह्म तुम खेलैं होरी ॥ कमलन मार मचाई गई वृषभानु की पौरी ॥५॥ सुनि मनमोहन धाए जहँ जुबती समुदाई ॥ देखि नंद कैं लाले स्यामा जू बुधि उपाई ॥६॥ हाटक घट केसरि भरि लै मोहन सिर नावैं ॥ भए निरंतर अंतर रीझि रीझि सुख पावैं ॥७॥ सरबसु बारै बारनैं तन मन धन बिसरावैं ॥ चोवा आदि साख गोरा मृगमद बरसावै ॥८॥ चंदन बंदन बूकाल श्रीमुख लपटावै ॥ मोहन बदन निहारी कैं अपुनें दृगन सिरावैं ॥९॥ इक सखी उठि दौरी कीरति जु गही लीनैं ॥ हम तुम खेलै फागु आजु अपुनें कर लीनें ॥१०॥ एकु सखी लै धाँई कैं कुँमकुम घट भरि लीनै ॥ कीरति जु पै डारति रँग रँग में अति भीँने ॥११॥ फगुवा दीयै हिं बनै सुनहु कीरति माई ॥ पट दुकूल आभूषन देति सबन मन भाई ॥१२॥ यह बरसानैं को सुख कहति कहा बनि आवै ॥ निरखि निरखि सुर गन सबै लै पुहुपन बरखावैं ॥१३॥ ब्रज जुवति प्रफुलित मन निकसि देति असीसा ॥ कीरति जु तुमारी सुता जीवहु कोटी बरीसा ॥१४॥ इहि बिधि होरी खेलि ही ब्रज बासीन सुख पायौ ॥ फागु वडो त्यौहार हैं सबहिन मिलि कैं मनायों ॥१५॥ जुगल किसोर भाव तैं बनी हैं अनुपम जोरी ॥ 'गोबिंद' अपुनों तन मन धन बलि बलि कीनौं री ॥१६॥

६ राग बिलावल फगुवा माँगन आँई घोष सबै ब्रजनारी ॥ चंद्रावलि ब्रज मंडल मधि राधिका प्यारी ॥१॥ देहु राई जु फगुवा कुँवरि सब माँगन आई ॥ जसुमति गहने देहु हमें वृषभानु पठाई ॥२॥ गिरिधर तुह्मारी जु मैया आजु वृषभानु बुलाई ॥ आनँदराई बिछौना कीनें सब मिलि गारी गाई ॥३॥ यह सुनि आनँद राई हँसे औरु हँसि हँसि फूले ॥ फगुवा देन कौं आछे आछे सँचोना खोले ॥४॥ बहु मोलिक अभूषन सारी बहुत मँगाई ॥ जसुमति अति प्रमुदित मन ब्रज-तरुनी पहिराई ॥५॥ चिर जीवौं ब्रजराज कुँवर बलि जु

गिरिधारी ॥ रानी जसुमति चिर व्है रहो, नित अबिचल भारी ॥६॥ ऐसैई फगुवा दे दे हिं सबन ऐसैं पहिरावौं ॥ चंद्रावलि राधा जु कौं ऐसेई लाड़ लड़ावौं ॥७॥ रतन जटित सिंघासन अपुनो कुँवर बेठायो ॥ 'श्रीविट्ठल गिरिधर' कों हँसि हँसि फागु खेलायो ॥८॥

७ राग बिलावल ग्वालिनी फगुवा माँगनि आई ॥ आजु चलौ नँद जू की पौरी अद्‌भुत खेलि मचाई ॥१॥ सुरँग गुलाल अबीर उड़ावति, करन कनक पिचकाई ॥ झाँझ झालरी रबाब किन्नरी बाजे बहुत मँगाई ॥२॥ भरे अरगजा केसू, केसर सौंधो बहुत सुहाई ॥ ताल, मृदंग, उपंग, चँग, रँग, भेरि दमाम बजाई ॥३॥ या विधि तैं नंद जू के द्वारे बहु विधि खेल मचाई ॥ देखि जसोमति मन अति प्रफुलित अंग-अंग सुख पाई ॥४॥ सब मिलि आँई धाई महरि पै मोहन देंओ बताई ॥ सुनि बलबीर आई ठाढ़े भए चंद्रावलि पकराई ॥५॥ तब नँद लाल धाई जुवतीन पै चहुँ दिसि तैं जुरि आई ॥ मोहन पकरि स्यामा बस कींनौं होरी बोलि सुनाई ॥६॥ यह संकरषन देखि हँसे मन, मोहन पकर्‍यों जाई ॥ एकनु घेरि लेति मुख चुंबन, एकनु, काजर ल्याई ॥७॥ या बिधि होरी खेलति हैं जु भेट परसपर माई ॥ नंद-नँदन वृषभानु किसोरी गोपी मन हुलसाई ॥८॥ अब हीं फगुवा देहु लाल जू तौई छूटन पाई ॥ तब हीं मान लियौ नँद लाला कियौ सबन मन भाई ॥९॥ एकु हि नैन आँजि बृजनाथ हि एकनु पान खवाई ॥ एकु हि बाम भाग होई ठाढ़ी मुरली लेत छिड़ाई ॥१०॥ एकु हि केसर घोर सुरंगी सौंधों सिस नाई ॥ एकुई अंगिया झटकति पटकति तारी दै दै नँचाई ॥११॥ तब हि नारी को भेख बनायौ सैंदुर मांगि सुहाई ॥ सारी सुरँग रँगी बहु रँग तैं पुहुप माल पहिनाई ॥१२॥ श्री राधा नँद लाल भई नव सखि एकु लईं बुलाई ॥ उन बलबीर कौ भेख कियों है श्री स्यामा मुरली बजाई ॥१३॥ यह मुख लखि सुर नर मुनि मोहे, कोटि अनंग लजाई ॥ जोरी अद्‌भुत लीला-सागर, 'सूरदास' बलि जाई ॥१४॥

८ राग बिलावल परिवा प्रान समान राधा जू जोरी बनी री ॥ दूज दमन अति लाल अधर प्रवाल सनी री ॥१॥ तीज तुलनी है गुपाल

परम सिंगार धरे री ॥ चौथ चमर जू धाई और फूल गुल भरे री ॥२॥ पाँचे पंचक बैन नैन कौं रंग रचे री ॥ छठे छले बनमाल राधा सेज सचे री ॥३॥ सातैं सुंदर स्याम नटवर भेख धरें री ॥ आठौं अंग लगावो बाकी सामल देह री ॥४॥ नौमी नवल किसोर न आयो चंद धरै री ॥ दसमी दसो अवतार घर-घर बाजि रहे री ॥५॥ एकादसी मोतिन हार लटकन लटकि रहे री ॥ द्वादसी तिलक लिलाट हीरा लाल बने री ॥६॥ तेरस तरुनी गुवाल अंगो अंग चीर दए री ॥ चौदस लीऐ लीर सब नंद भवन गए री ॥७॥ पून्यों होरी लाल खेले तन-मन स्याम लए री ॥ नंद जू दे बहु दान जसुदा चीर दए री ॥८॥ मन में अति आनंद सबन तन साज सजे री ॥ जन 'परमानंददास' हरि के चरन भजे री ॥९॥

९ राग बिलावल नंदराय लला व्रजराय लला तुम राधा रस बस किनेहो ॥ नंदराय लला व्रजराय लला गुन प्रेम रूप रस भीनेहो ॥१॥ यह सुरति समागम नीकी ॥ हों कहत तिहारे जीकी ॥२॥ यह कोक कला सबजाने ॥ ताते तुमरे मनमाने ॥३॥ यह प्रति छिन नौतनलागे ॥ भयो मदन विकल फिरिजागे ॥४॥ यह गौर वरन तन सोहे ॥ मुरलीधरको मनमोहे ॥५॥ नखसिख परमसुदेसा ॥ यह मदन मनोहर वेसा ॥६॥ यह भागि सुहागकी पूरी ॥ घनस्याम सुजीवनमूरी ॥७॥ यह खेलत पियसंग होरी ॥ बरसंग लियें सतगोरी ॥८॥ मिलि बंसीवट तर आई ॥ सबसोंज फागकीलाई ॥९॥ तब पुलिन तिरोंछी धाई ॥ करलियें कनिक पिचकाई ॥१०॥ गिरिधरन कल्प तरुतीरा ॥ संगगोप कुंवर बलवीरा ॥११॥ डफताल वांसुरी बाजे ॥ कोऊ खेलत हँसत न लाजे ॥१२॥ नवसतसजि आंई गोरी ॥ पति मातपिता की चोरी ॥१३॥ कलगावत मीठी गारी ॥ रस खेल मच्यो अतिभारी ॥१४॥ तहां ऊडत गुलाल अबीरा ॥ चोवा चंदन अरगजा नीरा ॥१५॥ तहां भरत भरावत नारी ॥ रंगरंजित भीनी सारी ॥१६॥ एक हो होरी बोलें ॥ लटकत पियकेसंगडोलें ॥१७॥ एकनाचत गावतधावें ॥ पकरन पियकों नहीं पावें ॥१८॥ चंद्रावलि पीय संग दौरी ॥ राधा पकरे भरि कोरी ॥१९॥ श्रम छूटि गई उरगाती ॥ सुंदरमोहन रंग राती ॥२०॥ तब सुगह गहे गोपाला ॥ छीनी मुरली ओर माला ॥२१॥ नैना आंजि मांडि मुखरोरी ॥ हँसि तारी

देतकिसोरी ॥२२॥ एक कुचक पोल कर परसे ॥ सब सुख पिय प्यारी विलसे ॥२३॥ एक अंचल सों पटजोरे ॥ ललितादि सखी त्रनतोरें ॥२४॥ मनको मान्यों हम करिहें ॥ नही लोक वेदतें डरहें ॥२५॥ तुम इन नेनन के तारे ॥ धनजीवन प्रान हमारे ॥२६॥ सब सखा छुड़ावन आए ॥ मिलि सुबल श्रीदामा धाये ॥२७॥ फगुवाले मोहन मेले ॥ मिलि फाग भली विधि खेले ॥२८॥ वृखभान कुमारी जीती ॥ यह प्रगट प्रेम रस रीती ॥२९॥ विथुरी मनि मोतिन माला ॥ फिरि मुदित मदन गोपाला ॥३०॥ कंचुकी कसि टूटी लर छूटी ॥ मानो मदन सुरति पथलूटी ॥३१॥ अंगअंग अनंगन मोहे ॥ ललिता प्रियके संग सोहे ॥३२॥ व्रजगोपिनको धनजीयो ॥ राधाबस मोहन कीयो ॥३३॥ यह लीला त्रिभुवन भावे ॥ जनमाधो जुगजुग गावे ॥३४॥

१० राग बिलावल फाग खेलन व्रजसुंदरी नंदराय घर आंई ॥ जसुमति अति आदर देत रोहिनी लेत बुलाई ॥१॥ गावत गीत सुहावने हँसिहँसि देतवगारी ॥ दुरियेन होरी खेलिये नंदकुंवर गिरिधारी ॥२॥ सुनि मृदुवचन त्रियनके निकसेहें मोहन लाला ॥ मनहुं कनिक कमल ढिंग आवत मधुप रसाला ॥३॥ ताल मृंदंग उपंग चंग वीना डफ राजे ॥ दुंदुभी डिमडिम झालरी बिचबिच मुरली बाजे ॥४॥ कनिक कलस केसरि भरे संग लियें सतगोरी ॥ चोवा मृगमद गोरा चंदन वंदन रोरी ॥ अरगजा भरिभरि पिचकाई फेंटन सुरंग गुलाला ॥ छिरकत भरत परस्पर हो हो बोलत ग्वाला ॥६॥ मोहन गोपिन छिरकत केसू केसरि नीरा ॥ इतत्तें तकि तकि दृगन भरत मुठी अबीरा ॥७॥ घिरि आई व्रजनारी नंदलाल गहिलीने ॥ एक अधर रस पीवही एक आलिंगन दीने ॥८॥ प्यारी काजर देतहे ललिता गहे कर दोऊ ॥ चंद्रावलि मुख मांडत हँसत सखी सब कोऊ ॥९॥ हरद कपोल लगावत उढवत पीत पिछोरी ॥ हँसत देदे करतारी बोलत हो हो होरी ॥१०॥ यह विधि पिय संग खेलहीं आनंद उर न समाई ॥ देखत देव थकित भये पोहोपन वृष्टि कराई ॥११॥ न्हान चले जमुना सब सोभा अति बनि आई ॥ राधा गिरिधर देखिकें सूरदास बलिजाई ॥१२॥

११ राग बिलावल हो हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी ॥ सुरधुनि सुनि व्रजसुंदरि ग्रहग्रहतें सब दोरी ॥१॥ नागरि गुन आगर रस सागर वेस किसोरी ॥ तिनमें सरस सुहागिनि राजत राधा गोरी ॥२॥ उतबलिमोहन गोहन गोपकुंवर लखकोरी ॥ सबही तनतन रूपवेष भूषन सतनोरी ॥३॥ ताल मृदंग उपंग चंग सबही डफ होरी ॥ डिमडिम दुंदुभी मदनभेरि नांहिन धुनि थोरी ॥४॥ चंदन वंदन बूका भरिभरि लीने झोरी ॥ भरत भरावत गावत मुख लपटावत रोरी ॥५॥ मृगमद मलयकपूर कुंडीसत केसर घोरी ॥ अरगजा सोंधे सींचि सुगंध करी व्रजखोरी ॥६॥ लाज गई सबभाजि सोगा वे गारिन भोरी ॥ इत राधा ललितादिक उतवलि मोहन जोरी ॥७॥ भामा चंद्रभगा भाभा चंद्रभगा बलिजु पकरे भरी कोरी ॥ पकरि पेंज सों आयकरी झकझोरा झकझोरी ॥८॥ कुच कपोल कर परसत रज आरज की चोरी ॥ गहे गिरिधर श्रीराधाजु भुजबल बांह मरोरी ॥९॥ छीनी मुरलि माला ओर कटि पीत पिछोरी ॥ गोपिन गोपहराय गहेबलि मोहन तोरी ॥१०॥ बंस लिये गोपी हाथ भरे रंग भाजन फोरी ॥ मारपरीमुरी आय टिके व्रजराज की पौरी ॥११॥ बलिको बल जो विगोवे कोऊ वरज्यो न रह्योरी ॥ स्वांग सबेजु बनावें न पावें जान गहोंरी ॥१२॥ नैन आंजि मुख मांडि स्याम सिर गूंथी मोरी ॥ हो हो हो हो व्हे रही उढवत पीत पिछोरी ॥१३॥ मोहन कों पहरावत अपने भूषण छोरी ॥ वागो आप बनाय पाग बांधी तजि डोरी ॥१४॥ भूलि रह्यो सब गोकुल लोचन लगी हे ठगोरी ॥ पलटे तन तन सुख अंग सब दीसत नोरी ॥१५॥ रह्यो रस खेलत फाग जुगल वर केलि करोरी ॥ संतत माधो को मन मदनगुपाल हरोरी ॥१६॥

१२ राग बिलावल वदति नाहिनें ग्वालिनी जोवनके गारें ॥ या व्रजमें अेंडीफिरे मनमथ उपचारें ॥१॥ पहरें रातोपोमचा लहेंगा हरी किनारें ॥ अतिरसते निकरीफिरे अचराढिंग डारे ॥२॥ नकवेसरि गजरावने चोकी खगवारे ॥ अंगिया खमकिखयेंवनी कुचसूं भरवारें ॥३॥ फफुंदी डोरी केझवा सोहें फोंद फुंदारें ॥ सोने की वांकी वेंदुली सोहे ललित लिलारें ॥४॥ दीरघ लोचन छबिछटा कजरा अनियारे ॥ जगन्नाथ कविरायके प्रभु मोही कान्हर

कारे ॥५॥

१३ राग बिलावल काजरवारी गोरी ग्वारि ॥ या सांवलिया की लगवारि ॥ निसदिन रहेत प्रेमरंगभीनी ॥ हरि रसिया सों यारी कीनी ॥१॥ मदनगुपाल जानि रिझवार ॥ नानाविधिके करत सिंगार ॥ मिलनकाज रहे अंग अंगोछें ॥ सरस सुंगधन तेल तिलोछें ॥२॥ अंजन नाहि भटवेंदीये ॥ स्यामरंग ननन में पीये ॥ गावतहू जसुमति ग्रह आवे ॥ कृष्ण चरित्र बहु गाय सुनावे ॥३॥ सुंदरस्याम सुनेंढिगआय ॥ चितवत ही चित हरि लेजाय ॥ कोऊ कहे काहू की न माने ॥ अपने मनकी गायवखाने ॥४॥ रामरायप्रभु योंसमुझावे ॥ कहि भगवान् कोऊनीके गावे ॥५॥ लखिइनस्याम कहेनिरधार ॥ यह लगवारिन यह लगवार ॥६॥

१४ राग बिलावल होरी खेले मोहना रंगभीने लाल ॥ रसिक मुकुट मनि राधिका अंगअंग ब्रजबाल ॥१॥ कपूर कुंकुमा घोरिकें सुगंध संभारी ॥ कीयो अरगजा रंगको विच मृगमद डारी ॥२॥ रतन खचित करमें लई कंचन पिचकारी ॥ छिरकत कुंवर किसोरकों चंद्रावलि नारी ॥३॥ भरत गुपाले भामिनी झकझोरा झकझोरी ॥ कोऊ करते मुरली लई कोऊ पीत पिछोरी ॥४॥ ललिता ललित वचन कहे फगुवा देहु प्यारे ॥ के राधे के पाय परो नैनन के तारे ॥५॥ फगुवामें मुरली लई रसबस पिय प्यारी ॥ नवल जुगलके रूप पर विचित्र बलिहारी ॥६॥

१५ राग बिलावल आगमसुनि ऋतुराजको फूली सब ब्रजनारीजू ॥ वरनवरन सिंगारि कियें चंदन चरचित सारी ॥१॥ नवनवलासी फूलकीफूल लिये भरि झोरी ॥ अरगजा चंदन वंदन अरु घसि लीनी रोरी ॥२॥ मंगल साज सबे सजे तब निकट कुंवरि के आई ॥ प्रथमहि घोस वसंतहे मन हरखित देत बधाई ॥३॥ गांवें गारि सुहावनी अति प्रमुदित नवल किसोरी ॥ संग ब्रज कुसल समाज सों फिरि आई फागुन होरी ॥४॥ ताल मृदंग बजावहीं रुंज मुरज सहनाई ॥ डफ दुंदुभी अरु झालरी जनु बाजत मदन दुहाई ॥५॥ सुनि सुघोख कोलाहला जिय सबहिन को सरसानों ॥ गिरधरके अनुराग सों भीजि रह्यो बरसानों ॥६॥ यह विधि साज समाजले मिलि चली रायजू

की पौरी ॥ श्रीराधाजू के लेनकों उठि नंदरानी दौरी ॥७॥ प्रथमही केसरि नीरले अंग चीर सबनके वोरे ॥ केसरि अरगजा घोरि कें सिर भरिभरि गडूवा ढोरे ॥८॥ सोंधो सुरंग गुलालले बहु साखि जवाद मिलायो ॥ आनि अचानक लाडिली हंसि महरि वदन लपटायो ॥९॥ छिरक्यो सब मिलि धायकें छलबल सों उठि दौरी ॥ जानि कुंवरि वृषभानकी तब महरिलई भरि कौरी ॥१०॥ चुंबत चांपति प्रेमसों पुनिपुनि कंठ लगावे ॥ जो कछु आनंदजीयको मुख कहत कह्यो नहीं आवे ॥११॥ मनिमय नाना भांति के भूषन वसन मंगाये ॥ तब हम इनकों लेंइगी कहो गिरिधर कहां दुराये ॥१२॥ कछु एक ओचकचाहिकें तब महरि बदन मुसिक्यानी ॥ नागरि सब गुन आगरी बात हिये की जानी ॥१३॥ तब युवतीजन धाई कें चढी जाय चित्रसारी ॥ सकुचत वदन दुरावहीं हँसिगहे जाय गिरिधारी ॥१४॥ घेरिलिये चहुंओरतें अब छूटो कहां पलाये ॥ क्यों युवतिन के वसपरे तुम कहीयत अधिक बलाये ॥१५॥ काहू बातें भेदकी कहि कानन में उठि दौरी ॥ काहू अचानक आनिकें लाल लिये भरि कौरी ॥१६॥ काहू नाना भांतिसों रंगचित्र कपोलनकीयो ॥ काहूमरुबट मांडिकें मथिबेंदा रोरी दीयो ॥१७॥ काहू नीकी भांतिसों अंजननैन बनाये ॥ सहज ही चपल कुरंगसें ढरिकाननलों आये ॥१८॥ काहू गहिवेनीगुही रचि मोतिन मांग सुढारी ॥ तनसुख की सोंधेसनी सुठि सारी सरस संभारी ॥१९॥ चंपकलता चली धायकें तब चिबुक दिठोना दीनों ॥ मोहि रही सब मोहनी व्रजरूप मोहनी कीनों ॥२०॥ नाना वरन अबीरले मनमोहन वदन लगायो ॥ पूरनचंद मानोघनमें नवइंद्र धनकसो छायो ॥२१॥ केसरि ढोरी सीसतें बहिचले खार पनारे ॥ अरगजा ओर गुलालसों भरे घरनके द्वारे ॥२२॥ सनमुख मुखहि नीहारते सुखनिरखत कोऊन अघानी ॥ गारी देत सुहावनी अतिरस सों लपटानी ॥२३॥ आगें व्हे मोहन लिये हँसत हँसत सब आई ॥ घूंघट सों मुख ढांकिकें पगन महरिके लगाई ॥२४॥ यह कन्या काहू रायकी सो आप समर्पन कीनी ॥ रूप बेसगुन स्याम के यह बिधाता दीनी ॥२५॥ हरखत मन आनंदसों तुम बांटो आज बधाई ॥ विधिते रूप उजागरी हम कोन वधूले आंई ॥२६॥ विंहसि वधू को नामले तब महरि गोद बेठारी ॥ प्रमुदित अति आनंदसों विधितन गोद

पसारी ॥२७॥ घूंघट ओट उतारिकें तब युवती मुरि मुसिक्यानी ॥ हँसी परस्पर नागरी तब देखत महरि लजानी ॥२८॥ हो हो होरी बोलही नाचें देकरतारी ॥ प्रमुदित करहिं कुलाहल गावें मीठी गारी ॥२९॥ यह ब्रज होरी खेलको सब सुखते सुख न्यारो ॥ यह समाज नित माधुरीके टरत न हियते टारचो ॥३०॥

१६ राग बिलावल ब्रजनारी ब्रजराज गोपग्रह मोहन देखन आई ॥ सोडस साजि सिंगार सोरह बरसकी एकदाई ॥१॥ दिव्य बसन भूषन तन गावें गारि सुहाई ॥ श्रवन सुनत आनंद मनमोहन दई हे दिखाई ॥२॥ रगमगो बदन विलोकिकें नैन रहे अरुझाई ॥ सुंदर स्याम सरूप रूप अति छबि बरनी नहीं जाई ॥३॥ केसरि साखि जवाद कनिक कुंडी जो भराई ॥ रतन खचित पिचकाईन छिरकत कुंवर कन्हाई ॥४॥ खेल मच्यो ब्रजवीच अरगजाकी चमचाई ॥ ताल मृदंग ढोल डफ मुरली शब्द सुहाई ॥५॥ हो हो हो कहि बोलत आनंद उर न समाई ॥ तिनमें मुख्य श्रीराधाजू सेनन देत सिखाई ॥६॥ सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि मोहन पकरे धाई ॥ पीतांबर वनमाला मुरली लई हे छिनाई ॥७॥ हंसिहंसि हरि पे मांगत फगुवा देहु कन्हाई ॥ लीला ललित मनोहर माधो जनमन भाई ॥८॥

१७ राग बिलावल नागरि निपुन छबीली ॥ मनमोहनके रंगरंगीली ॥ जब होरी को ओसर आयो ॥ सब सखियन मिलि मंगलगायो ॥ छंद ॥ गायो जु मंगल बेठि सखीयन आय श्रीवृषभानकें ॥ तहां आय बेठी पास अलियन राधिका मिस गानकें ॥ गावें जो होरी नवकिसोरी प्रेमसों गदगद गरें ॥ निज सखीके कानमें कहिबात हियकी खुलि हरें ॥ मतोमति सब एक व्हे मन रूप गुनकी आगरी ॥ कीरतिजूसों करन बिनती उठी नवलजु नागरी ॥१॥ अतिप्रफुलित मनआई ॥ महरि निरखि मन अति सचुपाई ॥ जसुमति ग्रहकी बिनती कीनी ॥ दिन खेलनकी आज्ञा दीनी ॥ टेक ॥ दीनी जु आज्ञा महरि करिति फाग खेलो जायकें ॥ खेलको सबसाज लेकें रंग सों नंदरायकें ॥ उबटि कुंवरि सिंगार रुचिसों खेलकी अति चाडिली ॥ बोलि श्रीवृषभान सों कहि संग दीनी लाडिली ॥ तब चली

यूथन जोरि विहसत संग ले चंद्रावली ॥ निकट नंददुवार देखत सुबन अति प्रफुलितअली ॥२॥ एक सखा लखि आगें आयो ॥ बेगि दोरि मोहन पे धायो ॥ मोयदेखि गाई उनगारी ॥ बेहें बरसाने कीनारी ॥ टेक ॥ नारी जु बरसाने कीहेवे मुख्य जिनमें राधिका ॥ सकल कला गुननकी निधि मनोंरथकी साधिका ॥ आईजु सब मिलि सिंघद्वारें हुलसि तन मन गावहीं ॥ व्रजराज ओर बलिराम गिरिधर नामलेले मल्हावहीं ॥ सुनि कुलाहल चहूँदिसते सीस धरिकेकीपखा ॥ नंदद्वारें खेलको सब साजसजि लाये सखा ॥३॥ व्हे मगन मन मोहन धाये ॥ छलसों दोरि सखिन में आये ॥ विहंसि कह्यो तुम सब भलें आई ॥ उद्यम बिन हम घर निधि पाई ॥ टेक ॥ पाईजु घर निधि बिना उद्यम भागि के पूरे सबे ॥ आनिराजा मदनकीहे तजो आरज पथ अबे ॥ तब सुबल बोल्यो सुनों मेरी बात मनकी एकहे ॥ इत स्याम स्यामा उते नाय दुहुन की यह टेकहे ॥ सुनि हंसी सब ब्रजसुंदरी निरखि मोहन प्रेमहे ॥ एक नख सिख मुर्गाटोदे खेलनकों मनमगन हे ॥४॥ अति छबि छाकि रही यह गोरी ॥ पहलें रूपी खेलनकों होरी ॥ तब नियरें मधुमंगल आयो ॥ कछु हरुवे एक वचन सुनायो ॥ टेक ॥ सुनाय वचन उतावलो मुरिजाई डफ हि बजावही ॥ तब कोपि गोपी धाई सनमुख बंसमार मचावही ॥ ले अबीर उडाय सनमुख दिसाकीनीधूंधरी ॥ तब आई ओचक नंदनंदन बाल भेटी भुजभरी ॥ देहिं पोहोपट सबे उनमद मदनके फंदाफबी ॥ किहुक छलबल छूटि भागी ग्वालिछाकी अति छबी ॥५॥ सुंदरि सबे भई एक ठौरी ॥ सबन गुलाल लये भरि झोरी ॥ जब हरिके सनमुख व्हे आई ॥ इतते छूटी कनिक पिचकाई ॥ टेक ॥ पिचकाईछूटी रंगरंगन अरगजा कुंकुम सोंसनी ॥ इत कुसुम रंग पलासके भरितकि त्रियन कुच बिचतनी ॥ उतते उडायो गगन छायो रंगसों करि सरबरी ॥ बलिराम भुज आकर्षिलीनों मगन मन सब सुंदरी ॥६॥ चंद्रावलि छलकरि ले आई ॥ आज हम परम पदारथ पाई ॥ संकरषण यह नाम धरायो ॥ उलटो जमुना नीर चलायो ॥ टेक ॥ चलाय जमुना नीर उलटो तेभुजा अब लागहें ॥ अब पानी मुख में मेलि हा हा खाउ हँसि हँसि यो कहें ॥ आंजि द्रग मुख मांडि मृगमद नीलपटले

भायसों ॥ जाय कहो जुहार सबकों रोहिनी नंदरायसों ॥ तुमपे न फगुवालेंहिअबकें बिहसिबोलीं सबअली ॥ पोंहोंचाय दीने पेंडपांचक चमकि चली चन्द्रावली ॥७॥ ग्वालसबे बलि सनमुख आये ॥ भुजबल भेटि परम सुख पाये ॥ फगुवा में नीलांबर दीनों ॥ बलिको बल अबलन हरिलीनों ॥ टेक ॥ लीनो जु हरि अबला नवल बलिरामकों अचरज भयो ॥ गहि चिबुक मोचो सोचमन श्रीदामधीरज धरि कह्यो ॥ पहराय निज पटपीत द्रगमुख पोंछि मदनगुपालको ॥ आय अपने खेत ठाडे संग ले सब ग्वालकों ॥ बिहंसिबोली कुंवरि राधे सोच निज जियमत करो ॥ पहोंचाय देहें भवन अपने सखिनके पांयन परो ॥८॥ तब ललिता एक मतो उपायो ॥ आपुसमे एक सखा बनायो ॥ एक चतुर दूजे मंत्र सिखायो ॥ छलसों मोहन पास पठायो ॥ टेक ॥ पठायो मोहन पास एक दिस जोरि कर ठाडो भयो ॥ अब ताहि बूझत नंदसुत तेरे नैन अंजन किन दयो ॥ आय निकस्यो सहज अपने गामते यह गेलही ॥ उन पकरि काजर आंजि छांड्यो अति छबीली छेलही ॥ जो भरो ओचक जाइ रंगसों राधिका इकलीअबे ॥ फिरिदाऊ छलसों छूटिजेहें आयहे ललिता तबे ॥९॥ मोहन चले सुनत ही बतियां ॥ प्रेम उमगि सीतल भई छतियां ॥ नवल सखा ले संगही धाये ॥ श्रीवृषभान कुंवरि तकि आये ॥ टेक ॥ आये जु तकि वृषभान नंदनी देखि द्रग सीतल भये ॥ दूरिहीतेरवकि राधे दौरि भुज भरि गहिलये ॥ घेरि लीने चहूं दिसतें काहू परिरंभन दियो ॥ कोटि मनमथ मान हरलावन्य मुख चुंबन कियो ॥ भेद छल करि जाय लाई कित सखा छबि सोहना ॥ अधिक चतुर अजान के संग उठि चले मनमोहना ॥१०॥ प्यारी एक बात सुनि मेरी ॥ मोहि अब सोंह ववाकीतेरी ॥ यह निश्चें जियमें जोजाने ॥ रजनी मुखएहें बरसाने ॥ टेक ॥ बरसाने आय समाज सों हम रेनिहोरी खेलिहें ॥ बोल लीजे खेल कीजे अधिक बारन बेलिहें ॥ कह्यो सब मिलि बात नीकी सकल निस उजियारी हे ॥ अब चलो जसुमति भवनमें ले संग गिरिधर प्यारी हे ॥ गावेजु गारी लाजतजकें रंगसो रगमगरली ॥ नंदजूके भवनमें सब सुंदरी गावत चली ॥११॥ श्रीवृषभान दुलारी प्यारी ॥ संग लिये वे

गिरिवरधारी ।। चहुंओर तरुनी अतिराजें ।। मत्तगयंद निरखि गति लाजें ।। टेक ।। लाजें जुगति बर देख मतगज जबहि पोरी पग धरचो ।। लषि महरि जसुमति रोहिनी सनमुख बेठि आदर करचो ।। भीर भारी भवन में अति रंग सों गहगड मच्यो ।। चंद्रावलि ब्रजसुंदरी भुजजोरि मिलि मंडल रच्यो ।। विमल व्योम विमान छाये देवधुनि सुनि गानकी ।। दे गोद गिरिधर जसुमतिकें कुंवरि श्रीवृषभानकी ।।१२।। यह छबि वरनी न जाई ।। जसुमति उर आनंद न समाई ।। नंदराय सब साज पठायो ।। फगुवा दीयो जाहि जो भायो ।। टेक ।। भायोजु जाहि सो दीयो ताही लीयो अति मन मुदित व्हे ।। आनंद भरि प्रति रोमलखिद्रग रही पूरन प्रेमव्हे ।। आरती उतारें भरि निहारें दुहुंनके मुख चंदजू ।। धनि धन्य जसुमति कुखि धनिये नंद आनंद कंदजू ।। मुसिक्याय बोली बचन राधे वीनती चितधारवी ।। आज रजनी खेल व्हेहे जाय बरनी न यह छबी ।।१३।। बडो पर्व होरी को जान्यों ।। अपने सुतको नोंतो मान्यों ।। संग सकलदे गोपकुमारा ।। दीजे पठे भान दरबारा ।। टेक ।। दरबार श्रीवृषभानके ज्यों आज होरी रंग हे ।। अब होय आज्ञा जांयनिजग्रह राधिका विनती कहे ।। सुखवारि निधि वींचीनमें मनमीन जसुमति को भयो ।। सब ग्वाल हलधर संग पहलें स्याम में तुम संग दयो ।। ले चलीं ग्रह व्रज इसकों रसभरी जोवनगरवहे ।। सब मनोरथ पूरन भये व्रज मांझ होरी परवहे ।।१४।।

१८ राग बिलावल हरि सँग होरी खेलनि आँई ।। चंद्रभगा, चंद्रावलि भांमा, राधा परम सुहाई ।।१।। चोवा चंदन अगर कुँमकुमा सुरँग गुलाल उड़ाई ।। रतन-जटित पिचकाईन भरि भरि छिरकति कुँवर-कन्हाई ।।२।। ताल, मृदंग, पटह ढ़फ बाजै, घोष नगारे घाई ।। श्री मंडल सहनाई सुंदर बिच बिच बैनु बजाई ।।३।। अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न जाई ।। 'सूरदास' बलि जाई बदन की निरखि निरखि मुसिकाई ।।४।।

१९ राग बिलावल चलि चलि री सखी ब्रिंदाबन जैए मोहन खेलति होरी ।। बालक जूथ सखा सब सँग लीनैं हरि हलधर की जोरी ।।१।। चोवा चंदन बुका बंदन केसरि भरि हैं कमोरी ।। गारी गावति, भरति

भरावति सींचति ब्रज की खोरी ॥२॥ सुनि सब ब्रज देखनि कों उमड्यों भवन रह्यौं नहि कोरी ॥ बाजति ताल, मृदंग, झांझ, ढ़फ, मधुर मुरली धुनि थोरी ॥३॥ सुर बिमान कौतूहल भूलें, मुनि मनसा भई बोरी ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन के सँग, बिलसति राधा - गोरी ॥४॥

२० राग बिलावल फागुन मास ब्रज सुंदरि जसुमति घर आँईं ॥ गावति गारी सुहावनी, सब के मन-भाई ॥१॥ आव हु जसुमति भोर हीं आतुर हम धाँईं ॥ आज कछुक वृषभानु जू तुह्मैं बोलि पठाई ॥२॥ औरु कछू तुम सौं कह्यो संदेस तिहारो ॥ पियारी कन्या हमारी राधिका वरु पूत तिहारौ ॥३॥ मन, क्रम, बचन किए कहौं मोहि सौंह तिहारी ॥ तुम मोहि लागौ सदाँ एहो कीरति सौं प्यारी ॥४ ॥ जो कछु तुम सौं कहति हौं हित की करि जाँनौं ॥ बरसानौं नँदगाँउ कौं एकैं करि माँनों ॥५॥ भर होरी के दिवस में बरसानैं रहिए ॥ समझत हौ तुम सबैं तुम सौं कहा कहिए ॥६॥ फिरि नंदरानी बिहँसि कैं बोली मृदु-बानी ॥ जो कछु हम सौं कहति हो हम तों सब जानी ॥७॥ एकु सँदेसो जाई कैं कीरति सौं कहियो ॥ नंदरानीं ढिंग आइ कै कोऊ दिन रहियो ॥८॥ हँसी सकल ब्रज नागरी नाँचै दै तारी ॥ समझि-समझि मो सौं कछू कहै ठाड़े गिरिधारी ॥९॥ केसर-कलस भराई कैं सब कौं छिरकाए ॥ मृगमद, अरगजा घोरि कैं मुख सौं लपटाए ॥१०॥ मन भायौ फगुवा दयौ तनसुख की सारी ॥ अंक माल सब के हिए दींनीं जू दुलारी ॥११॥ खेलि मच्यों अति प्रेम कौं आनँद भयौ भारी ॥ फागु कियौ जु सुहाबनौं हरि सौं ब्रजनारी ॥१२॥ जोबन उर में अति बढ्यौ का पै कहि आवैं ॥ दिन दिन यह सुख 'माधुरी' निरखैं अरु गावैं ॥१३॥

२१ राग बिलावल तुम बेगि क्यौं न आवौं ॥ हो होरी खेलै रसभरि ॥ साँजि समै सब गाय गोप लै, बदन-कमल दरसावौं ॥१॥ मधुरी बैनु बजाई गाई कैं जुबती-जननि बुलावौं ॥ दुंदुभि ढ़फ औ मृदंग सुनाई कै स्रवनन सुख उपजावौं ॥२॥ चोवा अबीर गुलाल अरगजा, स्याम-अंग छिरकावौ ॥ 'सूरदास' प्रभु रसिक सिरोमनि, रँगमँगें नैंन दिखावौं ॥३॥

२२ राग बिलावल मेरी आँखि न भरौ गुलाल लाल हो हों तुम सौं बिनती करौं ॥ मोपै सह्यो न जाई गुलाल लाल यह निपट कपट कों ख्याल लाल हो ॥१॥ हम अपुने मन की कहै तुम सौ तुम सुनहु गुपाल लाल हो ॥ रँग जू ठान्यौं अटपटो हम भई हैं रँगीली बाल लाल हो ॥२॥ चोव चंदन अरगजा हो केसरि बहुत गुलाल लाल हो ॥ गागरि ढ़ोरी ओचका हम भई है हाल बिहाल लाल हो ॥३॥ मोहन मूरति साँवरो हो रसियो नँद कों लाल लाल हो ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' कैं प्रभु कों हम देखति भई हों निहाल लाल हो ॥४॥

२३ राग बिलावल होरी खेलति हैं ब्रज नँद लडैतौं लाल ॥ चोवा चंदन अरु अरगजा कंठ सौहैं मोतिन माल ॥१॥ कोऊ गुलाल केसरि भरि लीये कोऊ कंचन थाल ॥ एकु नाँचति एकु मृदंग बजावति गावति गीत रसाल ॥२॥ छिपति फिरति हैं कुंजन महियाँ हा हा करति भई बिहाल ॥ 'चतुरभुज' प्रभु पीय गरे लगाई लै रीझि दै उर माल ॥३॥

२४ राग बिलावल आली री भरति मोहन जित तित मोकौं गौहँन लाग्यौं डोलै ॥ माँडति बदन अबीर मुँठी लै औचक आय अन बोलै ॥१॥ हौं दृष्टि बचाई चलति हट सौं पट गहि घुंघट खोलै ॥ गिरिधर उर धरि सब रस लीनौं बस कींनीं बिनु मोलैं ॥२॥

२५ राग बिलावल सौंधे की हैं उठति झकौरैं, मोहन रंग-भरे ॥ चोवा, चंदन, अगरु कुंकुमा, सोहैं माट भरे ॥१॥ रतन जटित पिचकारी कर गहि, बालक बृंद खरे ॥ भरि पिचकारी रससौं डारी, सो मन प्रान हरे ॥२॥ सब सखियनि मिलि मारग रोक्यौ, अरु मोहन पकरे ॥ अंजन आँजि दियौ अँखियन मैं, हा हा करि उबरे ॥३॥ फगुवा बहुत मँगाई साँवरे, कर लै अरज करे ॥ धनि धनि सूर, भाग ताके, प्रभु जाकैं सँग बिहरे ॥४॥

२६ राग बिलावल जिन डारो जिन डारो जू अँखियन में अबीरा ॥ रतनजटित पिचकाई कर लिये भर-भर केसर नीरा ॥१॥ ललिता प्रीतमको मुख मांड्यो चरच्यो स्याम सरीरा ॥ सूर प्रभु रसवस कर लीनो इन हलधरको

वीरा ॥२॥

२७ राग बिलावल होरी खेलत सांवरो ग्वालबाल संग कीने जू ॥ मृगमद चोवा केसरसों पिचकाई भर लीने जू ॥१॥ छिरकत भरत आनंदसों प्यारी अति रस भीने जू ॥ तन मन धन सब बारहीं चत्रभुज प्रभु बस कीने जू ॥२॥

२८ राग बिलावल होरी खेले गिरिधरलाल ॥ संग बनी वृषभान नंदिनी गावत गारी ग्वाल ॥१॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी जंत्र पखावज ताल ॥ चोवा चंदन अगर अरगजा उडत अबीर गुलाल ॥२॥ फगुवा मन भायो हम लैहें यों जू कहति व्रजबाल ॥ विचित्र विहारी प्यारे तबही दीनो पीतांबर वनमाल ॥३॥

२९ राग बिलावल होरी खेले मोहना सुन्दर गिरिधारी ॥ नख सिख सुभग सिंगार सजै सोंधे सुखकारी ॥१॥ सीस कुल्हे छबि अति बनी सोहे ललित लिलारी ॥ केसरको वागा बन्यो सोहे अति जू भारी ॥२॥ लाल गुलाल उडावहीं रंग रह्यो सरसाई ॥ यह सुख सोभा निरखिके सूरदास बलि जाई ॥३॥

३० राग बिलावल अरी ते रंग राख्यो खेलत हरि संग होरी ॥ छबिसों गई लपटाय छबीली पिय मुख चन्द चकोरी ॥१॥ हँसिके छिरक्यो छेल छबीलो भर-भर कनक कमोरी ॥ रंग अनंग नगन रंग बाढ्यो हँसत ओट मुख मोरी ॥२॥ धन तेरो भाग सुहाग लाडीली धन वृषभान किसोरी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे चिरजीयो यह जोरी ॥३॥

३१ राग टोडी दोऊ खेलत व्रज में होरी हो ॥ नंदलाल नवल किसोरी हो ॥१॥ एक चंग मृदंग बजावे हो ॥ एक तान तरंग बढावे हो ॥२॥ एक मुरली मधुर बजावे हो ॥ एक हो हो हो करि गावे हो ॥३॥ एक ललिता लोचन आँजे हो ॥ एक मुरली ले कर भाजे हो ॥४॥ एक अबीर गुलाल उडावे हो ॥ एक फगुवा ले पहरावे हो ॥५॥ जन रामदास पिय प्यारी हो ॥ तोहि नेक न करिहे न्यारी हो ॥६॥

धमार फेंटा के पद

१ राग सारंग खेलैं होरी मनमोहनाँ ।। फैंटा सीस केसरी सुभग छूटी अलक मुख सौहनाँ ।।१।। डारति रंग मन हरति फिरन लाग्यों रस बस ह्वै तिय गोहनां ।। नागरि कमल कमल प्रति लटकति जहँ कुँवर ब्रज जोहनाँ ।।२।।

२ राग काफी मेरे लाल छबीले मन हर्यौ हो ।। हो सखी री मोहे और कछु न सुहाय ।।ध्रु०।। आज सखी मैं देख्यौ ढोटा एक साँवर गात ।। नँद पौरी आगे ह्वै निकस्यौ चल्यौ खरकि को जात ।।१।। पियरी-सी पाग पुरिये वागे पहरे लाल इजार ।। फैंटा सरस कुसुम को सोहै मानहु कोटिक मार ।।२।। कुंडल लोल कपोल की झाँई मुक्ता दुलरी ग्रीव ।। ऊपर दीपत हार गुंजा कौ सुंदर है ताकी सीव ।।३।। बाजूबंद अँगुरिन मुंदरी सोभा बरनि न जाय ।। छुद्र घंटिका राजत कटि तट नूपुर बाजत पाँय ।।४।। देखत रूप ठगोरी लागत चरन चल्यौं नहीं जाय ।। पूछत नाम कहा है तेरौ हँसि मेरे ढिग आय ।।५।। उर की माला मोहि पहिराई अधर सुधा रस प्याय ।। यह सुख तीन लोक में नाही 'स्यामदास' बलि जाय ।।६।।

३ राग बिलावल मोहे और कछु न सुहाई सखी मेरो कुँवर छबीलें मन हरचौ हो ।।ध्रु०।। आजु सखी मैं देख्यों ठाड़ो एक साँवरौ-गात ।। नँद-पौरि आगैं यौं निकसे, चल्यौ खिरक कौं जात ।।१।। पीरी-पाग, चौपरीया बागौ, पहिरै लालइजार ।। फैंटा सोहै कसुंभी रंग कौ मानों कोटिक मार ।।२।। कुंडल लोल कपोलन झांई, मुक्ता दुलरी ग्रीव ।। ऊपर धावत हार गुंज कौ, सुँदरता की सीव ।।३।। बाजुवंद अंगुरीया मुदरी सोभा कही न जाई ।। छुद्रघंटिका राजत कटि तट, नूपुर बाजत पाँई ।।४।। खेलत रूप ठगोरी सी ल्याई चरन चल्यौ नँहि जात ।। बूझति नाँहि नाम कहा तेरौ हँसि मेरे ढिंग आत ।।५।। उर की माला मोकौं पहिरावत अधर मधुर-रस प्याई ।। यह सुख सखी कहति नहिं आवे 'स्यामदास' वलि जाई।।६।।

धमार छुमाला के पद

१ राग काफी एरी सखी खेलति गिरिधर लाल ।। ग्वाल बाल सब सँग लाये ।। एरी सखी फैंटन अबीर गुलाल सखा अंस पै भुज दये ।। रँग फागुन मास सुहावनौं ।।१।। एरी सखी सोहै दुमालो सीस, पीत बसन तन छबि दये ।। एरी सखी चोवा चंदन नीर केसर सुरँग रँगन कीये ।। रँग फागुन मास सुहावनौं ।।२।। एरी सखी खेलति साँवरो लाल ।। रँग भलो गहगड़ रह्यौ ।। रँग फागुन मास सुहावनौ ।। एरी सखी 'ब्रजाधीस' बलि जाइ ।। तहुँ जात न सुख मोपै कह्यो ।। रँग फागुन मास सुहावनौ ।।३।।

धमार कुल्हे के पद

१ राग काफी होरी खेलै मोहना सुंदर गिरधारी ।। नख सिख सुभग सिंगार सजे सौंधे सुखकारी ।।१।। सीस कुल्हे छबि अति बनी सोहै ललित लला री ।। केसर को बागो बन्यौं सोहै अति भारी ।।२।। लाल गुलाल उड़ाव हीं रँग रह्यो सरसा री ।। यह सुख सोभा निरखि के 'सूरदास' बलिहारी ।।३।।

चुनरी के पद

१ राग काफी चूनरी मेरी भीजे हो लाल । भरि पिचकारी डारि गयौ हैं करति लंगर मोसौं ख्याल ।।१।। चूनरी और मँगाउ पीया तुम मोर पपैया लगाई ।। आधी रात पै बोलन लागै सेज पै रह्यौ न जाई ।।२।। चूनरी और मंगाउ पीया तुम सुन्हैरी तार लगाई ।। अँगिया भुजन पै एसी बिराजति यह छबि बरनी न जाई ।।३।। गौरे तन नीलांबर सोहै ओढ़ै चूनरी लाल ।। बेगि मिलो प्रभु वेसि साँवरो 'स्यामदास' बलि जाई ।।४।।

२ राग सारंग स्याम रंगीली चूनरी रंगरंगी हे रंगीले बिहारी हो ।। अति सुरंग पचरंग वनीतन पहरें श्रीराधा प्यारी हो ।।१।। चंपक तन कंचुकी खुली स्याम सुदेश सुढार ।। मांडन पिय पटपीतकी ता ऊपर मोतिनहार ।।२।। सीसफूल सिरसोहही मोतिन मांग संवारी ।। विविध कुसुम वेनीगुही चंपक

बकुल निवारी ॥३॥ श्रवनन झलमल झूलहीं सिर सटकारे केस ॥ खुटिला खुभी जरायकी मृगमद आड सुदेश ॥४॥ नकवेसर अति जगमगे दूर करे रवि जोती ॥ कंठसरी ओर मुक्तसरी वीच जंगाली पोती ॥५॥ चोकी हेमजराय की रत्नखचित निरमोल ॥ नोगरी अरुकर पहोंचियां खयेनवरा अतिगोल ॥६॥ कटि किंकिणी रुनझुन करें पगनूपुर झनकार ॥ चलत हंसगति मोहियो शोभा कहतन पार ॥७॥ यह विध बनि व्रज सुंदरी चली रसिक पियपासा ॥ कुंज महल मोहन मिले पूजीमन अभिलाषा ॥८॥ व्रजवृंदावन भूपती पिय प्यारी की जोरी ॥ गोविंद बल बल बल जाय नवल किशोर किशोरी ॥९॥

धमार शेहरा के पद

१ राग बिभास मदन-मोहन कुँवर वृषभानु-नँदिनी सुभग नव कुंज में खेलति होरी ॥ गोप कुमार सँग एकु दाई बने उत सकल ब्रज-बधू एकु जोरी ॥१॥ बाजति बीना, मृदंग झांझ, ढफ, किन्नरी, चैत, झूमकि गान करति गोरी ॥ उड़ति बंदन नव अबीर बहु अरगजा अरु बिबिधि रँगन गुलाल झोरी ॥२॥ तब ही सब सखी जन मतौ करि धाँई गिरिधर गही नील, पीत पट सौं गाँठि जोरी ॥ एकु सखी स्याम कैं सीस बैंनी गुही, एकु दृग आँजि मुख माँड़ि रोरी ॥३॥ तब हि ललिता दौरी झटकि कैं मुरली गहि सब हिं नँद-लाल सौं करि ठठोरी ॥ एकु नव कुँमकुमा कनक गागरि भरि आँनि कै दोऊन के सीस ढ़ोरी ॥४॥ तब सबन अपुनो फगुवा माँगि लीनौं, दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ 'दास गुपाल' बलि जाई यह छबि निरखि रहो हरि चरन मन दृढ़ मोरी ॥५॥

२ राग टोडी माइरी नीकें लागे दुलहे दुलहनि खेलति फागु ॥ जाकों नाम राधिका गोरी ताकों नित सुहाग ॥१॥ बाजैं ताल मृदंग झांझ ढ़फ गावैं रागिनि राग ॥ अद्भुत तान जम्यों सुर टोडी उरप तिरप गति लाग ॥२॥ अगर जवाद कुँमकुमा चोवा छिरकै चंद्रावलि ललिता ॥ बहुत सुगंध कहाँलौं बरनौं उमँगि चली रस सलिता ॥३॥ मुक्ता हार उरज कुच अंतर घन दामिनी की छबि छलिता ॥ रस भरि 'गोविंद' प्रभु सँग खेलति मदन नृपति की सेना दलिता ॥४॥

३ राग धनाश्री हो मेरी आली भानुसुता के तीर अबीर उडावहीं ॥ मिलि गोपी गोपकुमार मधुर स्वर गावहीं ॥१॥ बाजत मधुर मृदंग वेनु सुहावनी ॥ आवज सरस उपंग चंग मनभावनी ॥२॥ नाचत गोपीग्वाल ताल बजावहीं ॥ मधुर भाभती गारी सबे मिलि गावहीं ॥३॥ भाल सुभग मध्य विशाल गुलाल विराजहीं ॥ चिंबुक चारू अबीर अधिक छबि छाजहीं ॥४॥ कृष्णागरकोपंक बदन लपटावहीं ॥ सुरंग गुलाल उडाय गगन सब छावहीं ॥५॥ केसर भर पिचकारी परस्पर मारहीं ॥ केसू कुसुम निचोय सीसपर ढारहीं ॥६॥ पियके सीस सेहरो सब मिलि बांधही ॥ चपल नयन की चोट मेंनसर सांधही ॥७॥ प्यारीकों ऊबट न्हवाय वसन पहरावहीं ॥ मधुर व्याह के गीत सबे मिलि गावहीं ॥८॥ करत ब्याह को खेल सकल मिल भामिनी ॥ विविध सुगंध उडाय कियो दिन यामिनी ॥९॥ दूल्हे दुलहनि जोट बनी मन भामनी ॥ राजत मंडल मांझ परम सुहावनी ॥१०॥ यह विधि नित व्रज मांझ परम सुख वरखही ॥ व्रजयुवतिन मुखनिरख अधिक मन हरखही ॥११॥

४ राग सारंग नंदकिशोर किशोरी की जोरी हो हो हो कहि खेलत होरी ॥ ग्वाल बजावत डफ मृदंग मोहन मुरली ध्वनि थोरी ॥१॥ इत व्रजनारी गारीदेत परस्पर रंगबढ्यो दुहुंओरी ॥ गिरिधरदौर आय बदन लगावत चंदन बंदन रोरी ॥२॥ वचन बांध के छलकर लाई गांठ स्याम सों जोरी ॥ तेल चढावत गीत व्याहके सबे सयानी भोरी ॥३॥ मोरमुकुट को मोर बनायो दई है चंद्रिका की मोरी ॥ दूल्हे पर्वतसेन को प्रभु दुलहनि राधा गोरी ॥४॥

५ राग सारंग नंदमहर को कुंवर कन्हैया होरी खेलन जाने हो ॥ रसमें विरसकरे अरवीलो लघुदीरघन पहेंचाने हो ॥१॥ अंगुरी गहत गहेकर पोंहोंचो भुज मूलन लग आवे ॥ देख विराने श्रीफलऊपर लालची मन ललचावे ॥२॥ आंज्यो चाहे ओर के नयना अपने नयन दुरावे ॥ पकरचो चाहे सुधा निधि हाथन अधर सुधा क्यों पावे ॥३॥ तेतफुलेल उलेंडे सिरतें

ग्रंथदुकूलनजोरी ।। बहुत गुलाल डार आंखन में हस लंगर झकझोरी ।।४।। कमल पत्रकार चेकपोलन मरुवट मुखहि बनावे ।। दुलहनी सीकर पठवत उततें दूल्हे आप कहावे ।।५।। जो हम रूठ जांय घर बैठें तो सखी हम हि मनावे ।। सकल सनेह करे युवतिनसों सेनन अरथ जनावे ।।६।। राजा मित्र सुन्यों नहीं देख्यों भयो ऊपखानों सांचो ।। मुरारीदास प्रभु सोंजिन बोलो कोटिक नांचकिन नांचो ।।७।।

६ राग सारंग दुल्हे श्री ब्रजराज दुलारो दुलहनि भानु किसोरी ।। सीस सेहरो सोभित नीकों भली बनी यह जोरी ।।१।। राजति रंग भरे दोऊ रस रस में आई जुरी ब्रज नारी ।। गावति मंगल गीत बधाए हँसि हँसि देति परस्पर तारी ।।२।। बूका वंदन चौवा चंदन गुलाल अबीर उड़ावे ।। मृगमद केसर लै लै छिरकति सबहीन के मन भावे ।।३।। आरति वार करति न्योछावर ब्रजनारी सुख पायो ।। जुगल रूप मन मौंही बसो 'रघुनाथदास' मन भायो ।।४।।

धमार मुगट के पद

१ राग सारंग माधो चांचर खेलही खेलतरी यमुना के तीर ।।ध्रु०।। बीचबीच गोपी बनी विचविचरी वे बने हें मुरारि ।। मरकत मणि कंचनमणी मालारी जानों गुही संवारि ।।१।। कुंकुम वरनी गोपिका केसोरी घनस्याम शरीर ।। नीलपीतपट मंडित्ता नाचतरी वे प्रेमगंभीर ।।२।। करतल ताल बजावहीं गावेंरी वे गीत रसाल ।। मदनमोहन मन हरच्यो लीला सागर गिरिधरलाल ।।३।। किंकिणी नूपुर बाजही शब्दवरी कोलाहल केलि ।। क्वणित वेणु मधिनायका लटकत लाल भुजागलमेलि ।।४।। एकजु पान खवावही एकजु मांगे देहु उगार ।। एकजु मुख चुंबन करे एकजो वीने टूटेहार ।।५।। चंदभूल कौतुक रह्यो हरणारीवे मोहेनाद ।। थाक्यो रथ केसें चले व्रजयुवतिनरी वह लाये वाद ।।६।। चढ़ विमान सब देवता बरखनरीवे लागे फूल ।। जय जय जय यदुनंदना रास रच्यो रतिनायक भूल ।।७।। जो प्रसाद उनकों भयो हरि पररंभण बाहु पसारि ।। परमानंद प्रभु श्रीपती पुण्यपुंज कृत गोकुल नारि ।।८।।

२ राग सारंग अहो श्रीगुपाल ग्वालिनी को झूमका हो ॥ सुघर सुर गावै चतुर ब्रज नार ॥ अहो पिय चात्रक ज्यौं किलकार ॥ फाग रस झूमका हो ॥ सीस मुकुट काछनी काछे पट औढै कनक अनुहारी ॥ करनकार के किरन वैजंती मुरली मधुर उचारी ॥ उघटत राग रागिनी अद्भुत नट ज्यौं दै कर तारी ॥ त्रिबिध पवन जमुना तट उपवन ठाड़े लाल बिहारी ॥१॥ तरुनी अरुनी अनार मानौं दसन देह दुति गोरी ॥ केस सुदेस कुटिल अलकाबली भौंह धनुष ज्यौं भोरी ॥ कमल गहे कमला लाजति रति रंभा रति की थोरी ॥ झुनकति कटि किंकिनि कटि तर नव दामिनी सी ढिंग होरी ॥२॥ पहिरे सारी सब सुकुमारी केसर बरन सुरँग ॥ लहेंगा लाल नील अँगीया लसे सिंदुर पुरित मँग ॥ केहरी लंक मयंक मुखी सुठ कठिन उरोज उतंग ॥ चाल चले कल हंस विमोहे मद तजि मत्त मतंग ॥३॥ नैना चपल मीन खंजन के चित चौगुने चोभे ॥ भाल दीये बंदन की बिंदुरी बीरी वदन मधि सोभे ॥ चिबुक की चमक छबक ग्रीवा की मंद हँसन मन लोभे ॥ बैनी सिथिल डोलति नितंब पै मानौं पन्नग छबि सोभे ॥४॥ नासा नथ जड़ाव मोती झलकै पोत सुकंठ बधाई ॥ माला चंपकली त्रिवली चौकी चंदहार सुखदाई ॥ कर कंकन बाजुबंद पहौंची पग जेहरि सुहाई ॥ रूप अनुप निहारी विवस भये नंद किसोर कन्हाई ॥५॥ कुँमकुम जल पिचकारी भरि भरि अबीर गुलाल उड़ावै ॥ सोंधो घोरि अरगजा पीतम परसि गात लपटावै ॥ गुंजति अलि प्रफुलित बेलि द्रुम कुंज भुवन सचु पावै ॥ श्री विट्ठल गिरिधरन कृपानिधि नित ही नाँच नँचावैं ॥६॥

३ राग काफी कान्हर मोहे घर जान देहो ॥ हो लाल तेरी अंग की लेहु बलाई ॥ध्रु०॥ बहुत दिनन कौ गोकुल बसिबौ कब हु न दीनौ दान ॥ कहा जू भयो जो नंद भये नाहिन घाटि बृखभान ॥१॥ मातपिता की खरी री दुलारी श्री राधा मेरो नाम ॥ छांड दे कान्हर जान दे मो घर सुनि पायेगो वृषभान ॥२॥ पान खाय पिचकारी मारत मंद-मंद मुसिकाइ ॥ 'दास' बिराजत के प्रभु प्यारे इह ब्रज बसिबो न जाई ॥३॥

४ राग नट बहोरि डफ बाजन लागे हेली ॥ध्रु०॥ खेलत मोहन

साँवरो हो किहिंमिस देखन जाय ॥ सास ननद वैरिन भई अबकीजे कोन उपाय ॥१॥ ओजत गागर ढारीये यमुना जलके काज ॥ यह मिस बाहिर निकसकें हम जाय मिलें तजि लाज ॥२॥ आओ बछरा मेलियें वनकों देहिं विडार ॥ वेदेहें हम ही पठे हम रहेंगी घरींढ्चार ॥३॥ हा हारी हो जातहों मोपें नाहिन परत रह्यो ॥ तूतो सोचतहीं रही तें मान्यों न मेरो कह्यो ॥४॥ राग रंग गहगड मच्यो नंदराय दरबार ॥ गाय खेल हँस लीजिये फाग बडो त्योहार ॥५॥ तिनमें मोहन अतिबने नाचत सबे ग्वाल ॥ बाजे बहुविध बाजही रुंज मुरज डफ ताल ॥६॥ मुरली मुकुट बिराजही कटिपट बांधे पीत ॥ नृत्यत आवत ताजके प्रभु गावत होरी गीत ॥७॥

५ राग गौड मल्हार गुलाल की धूँधर में मुकुट झलक तेसी भूषण बसन की ॥ सोंधो अरगजा अबीर की अँधियारी अरसपरस भरन में किलकनी दसन की ॥१॥ ब्रजभामिनी तामें दामिनी सी कोंधत छूटी द्युति दशन की ॥ बरन-बरन रंग की बलि-बलि वल्लभ छबीली त्रियन पर बरखा होत कुँवर की ॥२॥

६ राग गौड मल्हार छैल छबीला मोहना, (री) घूंघर बारे केस ॥ मोर-मुकुट, कुंडल लसै, (री) कीन्हें नटवर-भेष ॥ राखे भौंह मरोरिकै, (री) सुँदर नैन बिसाल ॥ निरखि हँसनि मुसुकानिकी, (री) अतिहि भई बेहाल ॥ कीर-लजावन नासिका, (री) अधर बिंबतैं लाल ॥ दसन चमक दामिनि हुँ तैं, (री) स्याम हृदय बन-माल ॥ चिबुक चित्तकौ हरन है, (री) राजत ललित कपोल ॥ मारग गहि ठाढ़ौ रहै, (री) बोलत मीठे बोल ॥ चंदन खौरि बिराजई, (री) स्यामल भुजा सुचारु ॥ ग्वाल-सखा सब संग लिये, (री) करत गुलालनि मारु ॥ इक भाजत, इक भरत है, (री) कुसुम बरन रंग घोरि ॥ सौंधें कीच मची भली, (री) खेलत ब्रज की खोरि ॥ सुनत चलीं सब धाईकें, (री) देखन नंद कुमार ॥ फागु साँझ-सी ह्वै रही, (री) उड़त गुलाल अपार ॥ मिलीं तरुनि तहँ जाइकै, (री) जहँ बिहरत गोपाल ॥ सूर, स्याम-सुख देखिकै, (री) बिसरचौ तनु तिहिं काल ॥८॥

७ राग गौरी नवल कन्हाई हो प्यारे ॥ एसो झगरो निवार ॥

दान काहे को हो लागे ।। चले जाहु अपने हो मग ।।ध्रु०।। आवत जात सदा रहीं कबहू सुन्यों नहीं कान ।। अब कछु नईये चलाइये दूध दहीकोदान ।।१।। सदा सदा हम दान लियो सुनहौ नवल कुमारि ।। ओर गले व्हे तुम गई दान हमारो मारि ।।२।। ठालेठूले फिरतहो चलो हमें घरकाम ।। इनकी कछुन चलाइये ख्याली सुंदर स्याम ।।३।। स्याम सखन सोंयों कह्यो घेरो सबनकों जाय ।। ढीठ बहुत ये ग्वालिनी मटुकी लेहु छिनाय ।।४।। गोचारन मिस विपिनमें लूटतहो परनारि ।। कहेंगी जाय व्रजरायसों ऐसो झगरो निवारि ।।५।। मधु मंगल कह्यो कृष्णसों दान लेहु कछु छाड ।। इनसों दिनदिन कामहे मति बलेहु कछू आड ।।६।। सांची कहत के हसत हो हमकों होत अवार ।। सब सखियन सेनावेनीकर गहने देहो मोती हार ।।७।। मदनमोहन पिय हरखियो लीयो हस्त करहार ।। अपने कंठले पहरियो गजमोतिन अतिचार ।।८।। सब सखियन मिल मतोमत्यो कीजे कहा उपाय ।। राधा गहने दीजिये ओर नहीं कछुदाय ।।९।। ललिता विसाखा भाजियो राधा तजी हे अकेली ।। गोविंद प्रभु नवकुंज में पियप्यारी की केलि ।।१०।।

८ राग गौरी मदनमोहन गहवर वन खेलत सरस धमार ।। सेंदुर भर बहु मंगे आईं सकल व्रजनार ।।१।। फूली लता चहूंदिश वरणवरण बहु भांत ।। भहो हुलास सब जंतही कोकिल कुलकलकांत ।।२।। गुंजत मधुप सुहाये श्रवण सुनत सुखहोय ।। वैभव निरखन यो रंग उठधाये सबकोय ।।३।। बाजत ताल पखावज आवज डफ मुख चंग ।। वेणु मधुर ध्वनि सुनियत स्याम सुंदर ता संग ।।४।। नृत्यत नानाबानी गानी सुघर सुदेश ।। बोलत हो हो होरी भयो अधिक आवेश ।।५।। चोवा अगर अरगजा केसर मिलीहे सुरंग ।। छिरकत भर पिचकाई शोभित छींट अनंग ।।६।। तब सखी पांच सात मिल मोहन पकरे जाय ।। सोंधो छींट नयनन में मुरली लई छिनाय ।।७।। एक सखी कर मेलत फिरत मंडली जोर ।। तिनहीं मध्य व्रजपति गति लेत चिते चितचोर ।।८।। परसत करउर चोली बोली ठोली डारी ।। मंदमंद मुसिक्याय कें देत परस्पर गारि ।।९।। रहत चीर द्रुमद्रुम प्रति टूटत मोतिनहार ।। मगनभयो मनसबको तनकी तजी संभार ।।१०।। अंचल फेरत

हरिपर सर्वस्व डारत वार ।। प्रेममगन रस बस भई सबे मनोहर नार ।।११।। चर्तुभुज प्रभु गिरिधर संग बाढ्यो रंग अपार ।। देववधू अति लालच चाहत घोष बिहार ।।१२।।

९ राग गौरी रसभरी श्याम मचाईं रास मंडल में होरी ।। गोपी बहुत एक मोंहनपें जहां तहां लखिये जोरी ।।१।। एकपकरदृग कों आंजतहे एकन मुख लपटावत रोरी ।। एक करतें पिचकाईं लेतहें एकनकी कंचुकी टकटोरी ।।२।। केसर रंग गुलाल भरेपट करत हें झकझोरा झकझोरी ।। कृष्णजीवन लछीराम हरि नांचत नवलकिशोर अरुनवल किशोरी ।।३।।

धमार टीपारा के पद

१ राग बसंत वृन्दाबन बिहरति बसंत चलि देखों नँद दुलारो ।। नटवर भेष सज्यों रँग भीनों सोभित सीस टिपारो ।।१।। सँग सखा सोभित रँग भीनें रंगन रगमगे ग्वाल ।। सुनति चली उठि धाई लाडिली संग लीए ब्रजबाल ।।२।। साजि सिंगार बनी अति सुंदर इक बेष इक सार ।। कोकिल कैसें कंठ हि गावति मंगल गीत सुढार ।।३।। बाजति ताल मृदंग झांझ ढफ लागति परम सोहाये ।। जूथ परस्पर टोल दोऊन कै सबहिन के मन भाये ।।४।। चोवा चंदन अगर कुंमकुमा छिरकति अरु छिरकावें ।। लाल गुलाल अबीर धुंधरि में तन अभिलाष बढ़ावें ।।५।। भली भई आयो बसंत नर नारिन अति सुख पायो ।। आनँद भयो गयो दुःख अब पसु पंछीन मन सरसायो ।।६।। गोपीजन फूले समात नहीं ब्रज सुख कहति न आवे ।। 'नंददास' ब्रज बास बसै अरु जो देखैं सौं गावे ।।७।।

२ राग सारंग हेली गोवरधनधरि लाल हेली नटवर खेलति रँग भरचौ। हेली बन ठन साज समाज सौं मग निकसति दृष्टि परचो हेली ।।१।। हेली सबन चित विह्वल भयौ जनु मन आकर्ष लयो री हेली ।। हेली अँग अँग अति सौहनौ स्याम लढ़ि रन छयो री हेली ।।२।। हेली लाल काछनी कटि तट वाके ललित टिपारो सीस हेली ।। हेली वाके पटतर कहा दीजै न्याव गोकुल कौ ईस हेली ।।३।। हेली कौतिक लखि मन थकि रह्यौ

जाके सँग सखा दस बीस हेली ।। हेली इन अँखियन के भाग ते प्यारौ जीवहु कोटि बरीस हेली ।।४।। हेली बंक चिते मुसिकाई मो पै डारचौ अबीरन आई हेली ।। हेली निरतति नाना भाँति सौं तहँ ग्रीवा हार लटकाई हेली ।।५।। हेली ग्रगतत-ग्रगतत थेई-थेई बोलै सबदन चटक लगाई हेली ।। हेली मौन गहे कछू कर चले माँनौं मन-ही-मन डहकाई हेली ।।६।। हेली हौं जु नैंकु ठाड़ी रही फिरि चितए मृदु मुसिकाई हेली ।। हा हा करि मोसौं कह्यौ तजि घुंघट मुख हि दिखाई हेली ।।७।। हेली हौं लाजन सकुचित रही पचिहारे समुझाई हेली ।। हेली कहनों होई सो कही लीजै हरि छिन इत उत नहिं जाई हेली ।।८।। हेली होरी के दिन जानि कैं तहँ नर नारिन के ठाट हेली ।। हेली साम दाम बिधि भेद सौं मेरो पाथर तर को हाथ हेली ।।९।। हेली जब तैं प्यारे रूस गये तब तैं कछू न सुहाय हेली ।। हेली कठिन-कठिन दिन भरति हुँ रजनी कलप सम जाति हेली ।।१०।। हेली पूरे पून्यन पाइवौं सहज भई पहिचान हेली ।। हेली 'कृष्णदास' प्रभु सौं मिली बर पायौ जदुकुल भान हेली ।।११।।

३ राग सारंग होरी खेलति नंद को लाल ।। चोवा चंदन औरु अरगजा भरि-भरि लींनें थाल ।।१।। सीस टिपारो लाल के उर बैजयंती माल ।। नाँचति गाबति सब मन भाये खेलति फागु गुपाल ।।२।। बाजति ताल मृदंग झाँझ ढ़फ गावति गीत रसाल ।। 'गोबिंद' प्रभु कौ श्रीमुख निरखति बलि-बलि गई ब्रज बाल ।।३।।

४ राग मारू आज बन ठन ब्रज खेलन फाग निकस्यो नंद दुलारो ।। फब्यो हे ललित भाल लालकें जटित लाल टिपारो ।।१।। बडरे बंक विशाल नयन छबि भरे इतराई ।। बन्यो हे मंजुल मोरचंद चलत देखत छांई ।।२।। उतबनी ब्रज नवकिशोरी गोरी रूपही भोरी ।। बोरी प्रेम रंग में मानो एकही डारकी तोरी ।।३।। ब्रजकी बालले गुलाल मोहनलाल छाये ।। मानो नील घनके ऊपर अरुण अंबर आये ।।४।। ताही धूंधर मदमत्त भ्रमर भ्रमत एसें ।। बनीहे छबि विशाल प्रेम जाल गोलक जेसें ।।५।। बन्यो हें जलजंत्र खेल छूटि रंग की धारें ।। जानों धनुर्धर सरनलरत धारसो धार मारें ।।६।। और

कहां लगि कहिये खेल परम रस की मूली ॥ गावत शुक शारद नारद शिव समाधि भूली ॥७॥ जहीं जहीं हरि चरित्र अमृत सिंधु सो रति मानी ॥ नंददास ताकों मुक्ति लोनकोसो पानी ॥८॥

धमार के पद (राग टोडी)

१ राग टोडी हो हो होरी खेले नंदको नवरंगी लाला ॥ अबीर भरिभरि झोरीहाथन पिचका रंगन बोरी तेसीये रंगीली ब्रजकी बाला ॥१॥ मूरति धरें अनंग गावत तान तरंग ताल मृदंग मिलि बजावे बीनाबेनु रसाला ॥ नंददास प्रभु प्यारीके खेलत रंग रह्यो छबि बाढी छूटीहे अलक टूटीहे माला ॥२॥

२ राग टोडी तुम छके छेलसे डोलो ॥ मनमोहन तुम रात्यामात्याजी चाहे सोई बोलो ॥१॥ अनतजाय तुम धूम मचावो, हमरे बगर तुम कबहु न आवो, रहो कहां ब्रजमोहन प्यारे गढगढ बतीयां छोलो ॥२॥ जानी मोहनरीत तिहारी कपटगांठ नहीं खोलो ॥ आनंदघन होरीके ओसरको करि राखोंओलो ॥३॥

३ राग टोडी कांकरीन मारि लंगर लागेगीरे ॥ जायकहोंगी कहा घर उत्तर मांगेगीरे ॥१॥ देखतननंद रिस्याय विना कहें जानेंगी ॥ जो कोऊ केसेंऊ आनि कहे सोई मानेंगी ॥२॥ क्यों तुम अति अकुलात फाग जब आवेगी ॥ कीजोहु जो उपजे मन में सोई भावेगी ॥३॥ खेलन कों ऊमह्यो सब गोकुल गामरो ॥ राजतमनो चकोर यूथ शशि सामरो ॥४॥ जायजुरे वृषभान गोपकी पोरी ॥ जो जहीं सो तहींते सब देखन दोरी ॥५॥ चंग मृदंग उपंग बांसुरी बाजे ॥ वीना वेनु रवाव किन्नरी गाजे ॥६॥ जो इतते नंदलाल ग्वाल संगलीने ॥ त्यों उतराधा नारि यूथ संगकीने ॥७॥ खेल मच्यो दुहुंओर बढ्यो रंग नीको ॥ क्रीडत सुंदर स्याम भावतो जीको ॥८॥ ले पिचकाईन हाथ चले व्रजराई ॥ त्योंकरवंसनले तरुनी सबधाई ॥९॥ केलिकला सुखदेखि थकी सुरनारी ॥ फूलनकी बरखा जु करी अतिभारी ॥१०॥ लाज गई तनते उमगी व्रजनारी ॥ देत परस्पर प्रेम सुहाई गारी ॥११॥ न्हान चले जमुना

व्रजजन संग लाई ॥ देखि तहां रघुवीर वारनें जाई ॥१२॥

४ राग टोडी मेरे नन लगे व्रजपालसों ॥ बोलत वचन रसालसों ॥ध्रु०॥ मोरचंद्रका सोहे सीस ॥ संग सखा सोहें दसवीस ॥१॥ मृगमद तिलक बनाये भाल ॥ गति मोहे गजराज मराल ॥२॥ भोंह नचावें गावें गीत ॥ सोहें अंबर ओढे पीत ॥३॥ कानन कुंडल दुलरीकंठ ॥ मधुरमधुर बाजे परिमंठ ॥४॥ अरुन कमलदल नेन विसाल ॥ उर सोहें वैजंतीमाल ॥५॥ रतनजटित पोहोंची अतिवनी ॥ निरखि थकी सरदशशिवदनी ॥६॥ नासा को मुक्ता अति चारु ॥ सब ऊपर गुंजा को हार ॥७॥ कटि किंकिनी मोहे रतिमेन ॥ गोपिन रिझवत देदे सेन ॥८॥ रुनुझुनु नूपुर बाजें पाय ॥ जनु पंकज अलिकुल किलकाय ॥९॥ भूषन विविध सजे सब अंग ॥ देखि भयो रवि को रथपंग ॥१०॥ वनवन फिरें चरावें धेनु ॥ जमुना के कुल वजावें धेनु ॥११॥ हाथ लकुटिया नाचें सुदेस ॥ गौरज मंडित सोहें केस ॥१२॥ ग्रहग्रहते दौरी सबअली ॥ फूली सरद सरोजसी कली ॥१३॥ अंचल पटमुख देजुहसी ॥ सब हरिके उरवीचबसी ॥१४॥ जबमोहन दुरिकें चितयो ॥ ते छिन मोमन चोरिलयो ॥१५॥ सोचि संभारि संकेत चली ॥ भूलि गई नवकुंज गली ॥१६॥ तहां ओचकामो भुजगही ॥ बिनबोलें मुख देखि रही ॥१७॥ मुखसों खात खवावत पान ॥ करत मधुर अधरा मृत पान ॥१८॥ तब उरलागि करी रति केलि ॥ पलपल बढी परम सुख वेलि ॥१९॥ यह सुख निरखित सुरनर रहे भूलि ॥ आनंद बरखे नौतन फूलि ॥२०॥ पुनि विपरीत सुरति मति करी ॥ राग रंग आनंद भरी ॥२१॥ त्रिविधि सुखद मलया निल चल्यो ॥ सबे निकुंज फूलीले हल्यो ॥२२॥ तिहिं औसर पलटे पटचीर ॥ देखि बलैयां ले रघुवीर ॥२३॥

५ राग टोडी नीको बन्यों गोकुल गाम सुहावनों जहां खेलत हरि होरी ॥ इतही सकल व्रजके बालक सब झुंडन जुरि आई तरुनी सब तिनमे राधा गोरी ॥१॥ विविध भांति बाजेबाजत नवकेसरि अरगजा कुंकुम घोरी ॥ रतन जटित पिचकाई करगहि छिरकत तकि तकि मुदित परस्पर नवल किसोर किसोरी ॥२॥ यह विधि करि खेलत रस सिंधु तरंग भरी

व्रज खोरी ॥ मोही अमर वधू निरखत बरखत कुसमन रघुवीर फिरत संग भरि भरि वीरा झोरी ॥३॥

६ राग टोडी हां हो हरि चले फाग खेलनकों ॥ध्रु०॥ सब व्रजके लरिका संग लये ॥ भूषन वसन बनायदये ॥१॥ तिनमें सोभित बलि ओर स्याम ॥ ऐनमेन सोभा के धाम ॥२॥ हो हो बोलत ग्रहतेचले ॥ कोटि काम अभिमान दले ॥३॥ जायजुरे सब व्रजजन जोरि ॥ श्रीवृषभान गोपकी पोरि ॥४॥ सखी सकल दौरी तहां गई ॥ तब प्यारी वे बोलि लई ॥५॥ खेलत ही सब गुरजन मांझ ॥ यों लागत मानों फूली सांझ ॥६॥ सखी एककी बांहगही ॥ उझकि झरोखां झांकिरही ॥७॥ तब उततें चित्तये नंदलाल ॥ रहीनवाय सीस व्रजवाल ॥८॥ तिहि ओसर कछु सेन दई ॥ प्यारीकी रूचि जानि लई ॥९॥ भरि भरि थार पठायेपान ॥ अति आनंदसों लागे खान ॥१०॥ द्वादश भूषन अंगबने ॥ अरुन बसन सिंगार सने ॥११॥ खेलनकी सब सोंजकरो ॥ जनजनकों सब जाय भरो ॥१२॥ उठि ठाडे हरि अपने खेत ॥ इत राधा सब सखिन समेत ॥१३॥ आयजुरे तब दोऊ टोल ॥ जोरी सरस बनी निर्मोल ॥१४॥ विविध भांति सब बाजे बजे ॥ खेलत बीचबीच बरसजे ॥१५॥ चोवा चंदन कलस भरे ॥ ढेरन सुरंग गुलाल धरे ॥१६॥ पिचकाई सुंदर करलई ॥ उतबंसन की मारभई ॥१७॥ होरी खेलत रंग रह्यो ॥ देखनकों गोकुल उमह्यो ॥१८॥ जो मांग्यो फगुवासो दयो ॥ सब मनको मान्यो सो भयो ॥१९॥ देत असीस चली सब बाल ॥ चिरजीवो व्रजको प्रतिपाल ॥२०॥ जब हरि लोचन चलेनवाय ॥ माधोदास निरखि बलिजाय ॥२१॥

७ राग टोडी देखो व्रज की वीथिनि बिथिनि हो हो करति खेलति ग्वाल बाल ॥ साजि रबाब बीन बाजे अधवट उपंग चंग बिच बिच मुरली धुनि मृदंग ताल ॥१॥ जोई जोई निकसत तिन कौं पकरि लेति, छतियाँ लगावति करति ख्याल ॥ यह विधि होरी खेले रँग भरे रस सिंधु झेले बलि बलि जाई तहाँ 'लघु गुपाल' ॥२॥

ताल मृदंग उपंग ॥ झांझझालरी किन्नरी ॥ आबजकर मुखचंग ॥३॥ उतहि समाज गोपालके ॥ बलियुत नंदकुमार ॥ इतगोपी नवजोवना ॥ अंबुज लोचन चारु ॥४॥ गारीदेत सुहावनी प्रमुदित गोप कदंब ॥ युवति यूथ एकत्र भये ॥ गावत मदन विटंब ॥५॥ रतनजटित पिचकाईयां ॥ कर लीये गोकुलनाथ ॥ तकि छिरकें बनिताबृंदकों ॥ जे राधाके साथ ॥६॥ केसू कुसम निचोयकें ॥ भरत परस्पर आनि ॥ मृगमद चोवा कुंकुमा ॥ चारुचतुर सबसानि ॥७॥ सुरंग गुलाल उडावहीं ॥ बूका बंदनधूलि ॥ चढि विमान सुरदेखहीं ॥ देह दिसा गई भूलि ॥८॥ खेल मच्यो अति गहगह्यो ॥ चितवत व्रज बधूधाय ॥ राधा रसिक गुपालकी ॥ आसकरन बलिजाय ॥९॥

३ राग आसावरी बरसानेतें सजि चली ॥ रंग भीनी ग्वाल ॥ फाग खेलन हरि संग ॥ होरि रंग रह्यो रंग भीनी ग्वालि ॥ करि सोल्हे शृंगारसबे ॥ रंग भीनी ग्वालि ॥ भरिभरि सेंदूर मंग ॥ होरी रंग रह्यो रंग भीनी ग्वाल ॥१॥ गृहगृहतें सब निकसी ॥ अपने अपने रंग ॥ बहुविधि वाजे वाजहीं ॥ ताल मुरज डफ चंग ॥२॥ मधि हें गोरी राधिका ॥ अलियन वृंदन मांह ॥ फूलन की छरी हाथले ॥ गहि ललिता की बांह ॥३॥ कंचन घट कुंकुम भरे ॥ चोवा अगर अबीर ॥ बांधे फेंट गुलालकी ॥ केसुकेसरि नीर ॥४॥ गावत गीत तहां गई ॥ घोष राय जूकी पोरि ॥ सुनत कुंवर कोलाहल ॥ आये हें गिरिधर दोरि ॥५॥ पिचकाई सोंधे भरी ॥ करलियें मदन गुपाल ॥ तकितकि तिनकोंछिरकहीं ॥ जे मृगनयनी बाल ॥६॥ इतखिलारबल मोहना ॥ लरिका गोपकुमार ॥ उत ललिता चंद्रावली ॥ राधा गोपी अपार ॥७॥ अंचल ओट दुरावहीं ॥ भरिभरि कनक कचोल ॥ प्यारे के सीस नवावही हो होकर बोल ॥८॥ काजर नयनन आंजिकें ॥ मंडित करहिं कपोल ॥ फिरफिर श्री मुख देखही ॥ फूले करहिं कलोल ॥९॥ फगुवा कोंपट अेंचहीं ॥ लीनें हार ॥ प्यारी कों पहरावही ॥ हसत देदे करतार ॥१०॥ कमलनमार मचावही ॥ भीजि रहे रस रंग ॥ खेलतहे नंद लाडिलो ॥ वृषभान लडेंतीके संग ॥११॥ सिथिलचीर कटिमेखला ॥ गये कंचुकी बंद टूटि ॥ गलित कुसुम कबरीनतें ॥ गईहे बेनी छूटि ॥१२॥

८ राग टोडी मन मेरे की इच्छा पूजी आयो मास फागुन को नीको ॥ लाज सकुच तजि सास ननद की दौरि गहूंकरसों कर पीको ॥१॥ अब मेरो कोऊ कहा करेगो यह तो औसरहे होरीको ॥ मेनभरी मूरति व्रजपतिकी देखत दुःख मिटेगो जीको ॥२॥

धमार के पद - राग आसावरी

१ राग आसावरी धनिधनि नंद जसोमति हो धन्य श्रीगोकुलगाम ॥ धन्य कुंवर दोऊ लाडिले बलिमोहन जाको नाम ॥१॥ छबीलेहो ललना ॥ श्रीवल्लव राजकुमार छबीले ॥ श्रीगिरिवरधारी लालछबीले तुम या गोकुलके चंदछबीले ॥ध्रु०॥ सखा नाम ले बोलियो सुबलतोक श्रीदाम ॥ श्रवन सुनत सबधाइयो बोलत सुंदर स्याम ॥२॥ भेष बिचित्र बनाइयो भूषन बसन सिंगार ॥ मंदिर ते सब सजि चले बालिक बलि बनवारि ॥३॥ गिरिवरधर अतिरस भरे मुरली मधुर बजाय ॥ श्रवनसुनत सब व्रजवधू जहां तहाँते चलिंधाय ॥४॥ रुंज मुरज डफ झालरी बाजे बहुविधि साज ॥ बिचबिच भेरिजुबाजही रह्यो घोख सब गाजि ॥५॥ पिचकाई करकनिककी अरगजा कुंकुम घोरि ॥ प्रान पिया कों छिरकहीं तकितकि नवलकिसोरि ॥६॥ एक ओर जुवतीभई एक ओर बलबीर ॥ कमलन मार मचाईयो रूपे सुभट रनधीर ॥७॥ उलटि आई ठाडी भई अपने अपने टोल ॥ झूमक चेतबगाबही बिचबिच मीठे बोल ॥८॥ हँसतहँसत सब आइयो लीनों सुबल बुलाय ॥ हा हा काहू भांतिसों नेकमोहनकों पकराय ॥९॥ वोहोरि सिमिटि सबधाइयो मोहनलीनेघेरि ॥ नैनन अंजन आंजिके हँसत बदन तनहेरि ॥१०॥ यह बिधि होरी खेलही सकल घोष संगलाय ॥ गोवर्द्धनधर रूपपे गोविंद बलि बलि जाय ॥११॥

२ राग आसावरी या गोकुलके चोहटे रंग राची ग्वालि ॥ मोहन खेलें फाग नैन सलोने री रंगराची ग्वालि ॥ नरनारी आनंद भयो ॥ सामलके अनुराग नैन ॥१॥ दुंदुभी बाजे गहगहे ॥ नगर कुलाहल होय ॥ उमड्यो मानस घोखको ॥ भवन रह्यो नहीं कोय ॥२॥ डफ बांसुरी सुहावनी ॥

आनंद सिंधु मगन भये ॥ देह दशा गई भूल ॥ उदय चंद गोविंदहे युवती कुमुदिनी फूल ॥१३॥ रस गिरिधारी सों विलसहीं ॥ बढ्यो हृदय अनुराग ॥ कृष्णदास प्रभु अधरकी ॥ पीवही सुधा बडभाग ॥१४॥

४ राग आसावरी रूप अनुपम मोहनी रँग राचे लाल ॥ मोहे कुँवर किसोर लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ॥ वदन सुधा रस स्रवत री रंग राचे लाल ॥ पीबत नैन चकोर लाड गहेल री रंग राचे लाल ॥१॥ नैंन कमल मुख कमल कै ॥ रंग राचे लाल ॥ चरन कमल कर लाल ॥ लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ॥ तन मन फूले कमल री ॥ रंग राचे लाल ॥ मोहन मुदित मराल ॥ लाड़ ॥२॥ हासि कुसम जोबन लता ॥रंग॥ अलि आसक्त तमाल ॥लाड़ ॥ बचन रचन सुर सबद के ॥ रंग ॥ मृग मन मोहे रसाल ॥ लाड़ ॥३॥ ये घन तुम दुति दामिनी ॥ रंग ॥ मिलि बरसहु प्रेम सुहाग ॥ लाड़ ॥ आलस क्यों बलि कीजियै ॥ रंग ॥ हिलिमिलि खेलहु फागु ॥ लाड़ ॥४॥ सुनति भयौ चित चाउ री ॥ रंग ॥ सुघर सिरोमनि जानि ॥ लाड़ ॥ सहचरी सचि सुरनि लियै ॥ रंग ॥ करति मधुर कल गान ॥ लाड़ ॥५॥ श्री कुंज बिहारी खेल ही ॥ रंग ॥ प्रेम भरे रस रंग ॥ लाड़ ॥ बूका बंदन मेल ही ॥ रंग ॥ कुँमकुम कुसम सुरंग ॥ लाड़ ॥६॥ मदन मुदित अंग अंग री ॥ रंग ॥ सुरति सुखद कल केलि ॥ लाड़ ॥ उर कर बर परसे हँसे ॥ रंग ॥ जुगल नवल रस झेलि ॥ लाड़ ॥७॥ पीबत सुधा रस माधुरी ॥ रंग ॥ चित्रत पीक कपोल ॥ लाड़ ॥ अंग अंग अनुराग री ॥ रंग ॥ कहत मधुर मुदु बोल ॥ लाड़ ॥८॥ राग रंग अति रंग रह्यो ॥ रंग ॥ श्री हरि दास बिनोद ॥ लाड़ ॥ बिचित्र बिहारन दास री ॥ रंग ॥ विपुल बढावति मोद ॥ लाड़ ॥९॥ छिनि छिनि प्रति रति साज ही ॥ रंग ॥ कुंज सदन सुख रासि ॥ लाड़ ॥ मधुर प्रेम रस बिलस ही ॥ रंग ॥ बलि बलि 'नागरीदास' ॥ लाड़ ॥१०॥

५ राग आसावरी धनि धनि शुभ घड़ी धनि आज ॥ श्री गोकुल सुख वास बसे अब, श्री विट्ठलेश प्रभु महाराज ॥१॥ मोतिन चौक पूरे घर घर प्रति, कुमकुम हाथन शोभित द्वार ॥ मंगल कलश अरू ध्वजा

पताका, घर घर बिथनि बंदनवार ॥२॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, दुंदभी मदन भेरि सहनाई ॥ स्वस्ती वचन पढ़त ऋषिवर तहां निज जन नाचत गावत आई ॥३॥ तिहिं अवसर हरि जु को अलंकृत, बागो पाग केसरी रंग ॥ कुल्हे केसरी तीन चंद्रिका भूषन भूषित राधा संग ॥४॥ वृजजन के उत्साह भाव सों मेवा मिठाई बहु विधि भोग ॥ बीरा धरि आरती उतारत आनन्द मगन सबे वृज सबे वृज लोग ॥५॥ छिरकत हैं गिरिधर प्यारे कों, केसर चोवा अबीर गुलाल ॥ मनहु अरुण उदय घन बिजुरी कनिक बेलि संग स्याम तमाल ॥६॥ जुग जुग राज करो श्री गिरिधर श्री विट्ठलनाथ सदा वृजवास ॥ श्री वल्लभ पद रेणु कृपा बलि यह सुख मांगत है हरिदास ॥७॥

६ राग आसावरी धुनि सुनि श्याम सुंदर खेले होरी बहुरि डफ बाजन लागे ॥ उघटति सबद तत थेई तत थेई गावति धमार अनुरागे ॥१॥ बरन-बरन के अंबर पहिरें केसर सौंधे भीने बागे । 'माधो' यह छबि निरखि-निरखि कैं दुसह बिरह दुःख भागे ॥२॥

७ राग आसावरी भयौ मदन परंचड ए हरि खेलिए मिलि आई ॥ गोप सब मिलि मतो मतिए रोकिए ब्रज जाई ॥१॥ तरनि-तनया तट बिपिन में घेरि सकल समाई ॥ रैन दिन इकु ठौर रहिए छौंडिए बन गाई ॥२॥ साजिए कर कनक-पिचकाई बिबिधि रतन जराई ॥ तकि तकि चलाई सनमुख डारिए मुसिकाई ॥३॥ जोरिए किन साज अपनौं एकु एकु सिखाई ॥ लै गुलाल मुँठिन भरि भरि भाजिए किलकाई ॥४॥ घोरि केसू कुँमकुमा रस सीस कलस चढाई ॥ ताल, बीना, झांझ, किन्नरि, लेहु ढ़फ मढ़वाई ॥५॥ दौरिए ब्रज बाल ऊपरि देहु तिन हि हराई ॥ कुसुम पल्लव माल अपने उर पहिराई ॥६॥ घोख काहु न जान कहिए दीजिए जु दुहाई ॥ लीजिए अचरा पकरि कैं कीजिए मन भाई ॥७॥ अंग अंग अनंग प्रकट्यौं बिबसता कौं पाई ॥ भवन भवन निसाँन लै लै फिरति उनमद भाई ॥८॥ तान कोऊ तोरि नाँचै फागु गीत गवाई ॥ जाई पनघट एकुठे व्है बाल बृंद लराई ॥९॥ भयौ ब्रज में अतुल आनँद कहा रसना गाई ॥ देव गन निज गेह भूले केलि

लखि सुखदाई ॥१०॥ बसन भूषन दए रुचि सौं मोल सरस मँगाई ॥ पढ़ति अस्तुती परसपर मिलि जियौ ब्रज के राई ॥११॥ बिबिधि कुसुमनि होत बरखा सुर बिमानन छाँई ॥ कमल बदन निहारि ब्रज जन रहति मन अरुझाई ॥१२॥ देति सरबसु वारि मुख पै धरति चित में चाई ॥ कांनि करति न गुरु जनन की लसति भुज लपटाई ॥१३॥ बजे बाजे मुरझ, आबज ढ़ोल अरु सहनाई ॥ गारी गावैं दिहुँनि सातैं हाव भाव बताई ॥१४॥ रँगमँगे नँदलाल हरखे, हियो अधिक सिराई ॥ कहा बरनौं बाल मति सौं जाति सुधि बिसराई ॥१५॥ श्रीविट्ठलेश प्रताप कौं बल लेहु निस दिन गाई ॥ यह लीला देखि 'जन गिरिधरि' गहे जिन कैं पाँई ॥१६॥

८ राग आसावरी जमुना तट क्रीड़ति नँद नंदन होरी परम सुहाई हो ॥ जुबती जूथ सँग लियैं राधा, सनमुख खेलनि आई ॥१॥ ठौर ठौर तैं सखा बुलाये औ बलदाऊ भाई ॥ आये दौरि मदन मोहन पै, उर आनँद न समाई ॥२॥ रतन जटित की भरि भरि लींने करन कनक पिचकाई ॥ प्रान प्रिया मुख निरख स्याम कों छिरकति मृदु मुसिकाई ॥३॥ प्यारी सुरँग गुलाल मुँठि लै, पिय की ओरि चलाई ॥ मानौं उमगि अनुराग अधिक बल बाहिर देति दिखाई ॥४॥ मृगमद चोवा भरि बेला कर सखी एकु लै धाई ॥ सखा जूथ बैनु बजावति मोहन मुख लपटाई ॥५॥ आँधी अधिक उड़ी जु अबीर की, दिन मनि गयों लुकाई ॥ श्रीदामा हलधर सौं बोल्यों, कीजे कहा उपाई ॥६॥ जुबति बृंद सब जोरि करति अति, क्यौंहूं वच्यो न जाई ॥ तब संकरषन मतों उपायों ललिता सखी बुलाई ॥७॥ सुबल सखा के उपरैना सौं खेंचि जु गाँठि बँधाई ॥ सनमुख बचन कहति गिरिबरधरि, यह किन बुधि बताई ॥८॥ ललिता सुबल किये इक ठौरें, भली जोरि बनि आई ॥ जैसैं चंद्र चकोर सुधानिधि, पीबति नैंन अघाई ॥९॥ दौरी कुँबरि अचानक राधा, गहे स्याम सुखदाई ॥ प्रेम गाँठि सौं मन अरुझानौं, सुरझति नहिं सुरझाई ॥१० ॥ ब्रज बनिता सब गारी गावैं, मधुरे बचन सुनाई ॥ सुर बिमान चढ़ि कौतुक भूले जै जै गोकुल राई ॥११॥ बाजति ताल पखाबज आबज मदन भेरि सहनाई ॥ पटह झांझ झालरी

महुवरि ढ़फ, सुनि घन गयों लजाई ॥१२॥ विविध भाँति कुसुमित ब्रिंदाबन सौरभ कह्यों न जाई ॥ ऋतु बसंत की कीरति मानौं, केकी, अली, पिक, गाई ॥१३॥ केलि सिंधु बरनौ कहाँलौं विधि रसना एकु बनाई ॥ तन मन धन सौं जुगल रूप पै 'गोकुलचंद' बलि जाई ॥१४॥

९ राग आसावरी बरसानेकी नबल नारि मिलि होरी खेलनि आंई हो ॥ बरबट धाय जाय जमुना तट घेरे कुंवर कन्हाई ॥१॥ अतिझीनी केसरि रंग भीनी सारी सुरंग सुहाई ॥ कंचन बरन कंचुकी उपर झलकत जोवन झांई ॥२॥ केसरि कस्तुरी मलयागर भाजन भरि भरि लाई ॥ अबीर गुलाल फेंट भरि भामिनी करन कनिक पिचकाई ॥३॥ खेलत खेलत रसिक सिरोमनि राधाजु निकट बुलाई ॥ ऋषिकेस प्रभु रीझि स्यामघन बनमाला पहराई ॥४॥

१० राग आसावरी जमुना तट खेलत गोपी हो ॥ नंद को लाल गोवर्धनधारी ताके नखमनि ओपी हो ॥१॥ चल री सखी जैये जहां छिन जियरा न रहाई हो ॥ वेनु शब्द में मन हर लीनो नाना रंग बजाई हो ॥२॥ सजल जलद तन पीतांबर करमुख मुरलीधारी हो ॥ लटपटी पाग बनी मनमोहन ललना रही निहारी हो ॥३॥ नैनसों नैन मिले करसों कर भुजा ठई हरिग्रीवा हो ॥ मधि नायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो ॥४॥ करत केलि कुतुहल माधो मधुरी बानी गावे हो ॥ पूरन चंद सरदकी रजनी संतन सुख उपजावे हो ॥५॥ सकल सिंगार सजे ब्रजबनिता नख सिख लों न लखानी हो ॥ लोक वेद कुल धर्मकी नेकउ न राखत कानि हो ॥६॥ बलि जाऊँ बलके वीर त्रिभंगी संतन सुखदाई हो ॥ सकल बिथा जू हरी या तनकी हरि हँसि कंठ लगाई हो ॥७॥ माधो नारी नारी माधोको छिरकत चोवा चंदन हो ॥ एसो खेल रच्यो जु परस्पर नंदनंदन जगबंदन हो ॥८॥ ब्रह्मा इंद्र देवगन गंधर्व सबै एक रस बरसे हो ॥ सूरदास गोपी बडभागी हरि मुख क्रीडा दरसे हो ॥९॥

११ राग धनाश्री जमुना तट धूम मची है री माई कृष्ण साँवरो खेलै होरी ॥ चलो सखी मिल देखन जेयै नीकी बनी राधा गोरी ॥१॥

घर घरतें बनिता बनि आई अबीर लिए भरि भरि झोरी ॥ बदन उघार उघार निरखत मुँख माँड़त अपनी रोरी ॥२॥ एक नाचत एक मृदंग बजावत एक गावत हैं धुनि थोरी ॥ 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे आनंद सिंधु झकझोरा झकझोरी ॥३॥

१२ राग आसावरी डफ बाजन लागे हेली ॥ चलहु चलहु जैये तहँ री ॥ जहँ, खेलत स्याम, सहेली ॥ जहँ घन-सुंदर साँवरो, नहिं मिस, देखन दाँऊ॥ ये गुरुजन बैरी भए, कीजे कौन उपाउ ॥१॥ आवहु बछरा मेलियै, बन को देहिं बिडारि ॥ वै देहे हमको पठे, देखैं रूप निहारि ॥२॥ औंजत गागरि ढ़ारियै, जमुना जल कैं काज ॥ इहिं मिस बाहिर निकसिकै, जाई मिलैं ब्रजराज ॥३॥ राग रंग रँगि मँगि रह्यो, नंद राई दरबार ॥ गावति सकल गुवारिनी नाचत सकल गुवार ॥४॥ घरी घरी आनंद करि, जीवन जानि असार ॥५॥ खाइ, खेलि, हँसि लीजियै, फाग बड़ौ त्यौहार ॥ मुरली मुकुट बिराजही, कटि पट राजत पीत ॥ सूरज प्रभु आनंद सौं गावत होरी गीत ॥६॥

१३ राग आसावरी बरसानें तैं वृषभानु पुरा की होरी खेलनि निकसी हो ॥ बरन बरन बन ठन आभूषन कनक बेलसी बिगसी हों ॥१॥ जोबन रूप मदन मनमथ कौं उर मोहन मदमाती हो ॥ ऐंड़त चले चाल गरबीली मंद मंद मुसिंकाती हो ॥२॥ झोरी भरि अबीर कुँमकुमा करन कनक पिचकाई हो ॥ आवति चंग उपंग बजावति गाबति हरि कौं गारी हो ॥३॥ ठाड़े जहाँ सखा संग लीने चतुर खिलारि कन्हाई हो ॥ सीस नवाई दूर भई ठाड़ी हँसि हँसि निकट बुलाई हो ॥४॥ उमड़े हैं गोपी ग्वाल परसपर भारी खेलि मचायौ हो ॥ उड़ति गुलाल अबीर अरगजा अति ही अंबर छायो हो ॥५॥ गोपीन मतो बनाई धाई कैं मनमोहन गहि लीने हो ॥ आँखि आँजि मुख माँडि महावर हो हो करि तजि दीनें हो ॥६॥ अपुने दाव स्याम हु पाए तब गहि लीने राधे हो ॥ जेतेक दाव चाव चित उपजे सकल मनोरथ साधे हो ॥७॥ बेनी गुही बनाई उलटि कैं कछुक सेंधानी कीनीं हो ॥ दुहुँ और दिठौना दे कैं तब छाँडि रंग भीनीं हो ॥८॥ तारी

दै दै ग्वाल हँसति है गोपिन मन मुसिकानी हो ॥ मन में मुदित भई बाहिर तैं राधा कछु कुमलानी हो ॥९॥ नँद नंदन वृषभानु लली की सोभा कहा बखानैं हो ॥ 'ब्यास-दास' प्रभु रीझि भिंजि सौं वारति तन मन प्रानैं हो ॥१०॥

१४ राग आसावरी बरसानैं तैं कुंवरि राधिका होरी खेलनि आँई हो ॥ सँग सखी वृंद लीए बहु नागरी उड़गन चंद सुहाई हो ॥१॥ गावति गारी बनीं ब्रजनारी नंद भुवन में आई हो ॥ पकरि लये स्याम सुंदर, घन दामिनि देति दिखाई हो ॥२॥ तब सखी भेख बनाई मोहन कौं सारी सुरंग सुहाई हो ॥ अति बहु मोली अरगजा चोली केसरि रँग रँगाई हो ॥३॥ नख सिख भेख बनाई स्याम कौं उपमा कहत न जाई हो ॥ जुबति बृंद में जुबति भेख धरि बैठें कुंवर कन्हाई हो ॥४॥ तब नंद रानी अति सरसानी मेवा बहुत मँगाई हो ॥ चिरजीयो नट नागर जुग जुग 'सरस रंग' गुन गाई हो ॥५॥

धमार के पद - राग सोहनी

१ राग सोहनी साँवरो री आज खेलै होरी ॥ उड़ति गुलाल लाल भए बादर छाँई रह्यौ नँदगाँव सबरो री ॥१॥ होरी गोरी रँग में बोरी मिटि गयो तन ताप सब जोरी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर नागर चितवन में जुरि अवरो री ॥२॥

२ राग सोहनी हो होरी के खिलार मेरी अँगिया रँग भरि डारी हो ॥ बहियाँ मरोरी मेरी चुरियाँ तोरी और दींनी हैं गारी हो ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा पिचकाईनि भरि मारी हो ॥ खेलि मच्यों जमुना तट कुंजन 'रसिक राई' बलिहारी हो ॥२॥

धमार के पद - राग हिंडोल

१ राग हिंडोल नँद नँदन नवल नागर किसोर बर खेलति बसंत बन्यों रंग अति भारी ॥ राग हिंडोल गावति नवल नागरी अति हिं रस भीज रही है देति तारी ॥१॥ लाल गुलाल रह्यो गगनलों घुमड़ि कैं केसरि
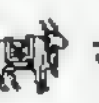
कुँमकुमा भरि हो पिचकारी ॥ ताल किन्नर मुरज बीन ढफ बाज ही बिच मोहन मुरली सप्त सुर धारी ॥२॥ सुभग जमुना तीर ठौर ब्रिंदा बिपुन बाल सुक कोकिला कीर किलकारी ॥ गहे द्रुम डार ठाढे नँदलाल जहाँ राधिका सब सखि मधि सुकुमारी ॥३॥ बढ्यों दुहूँ दिस खेलि अधिक सोहावनी हँसति मुसिकाय यौं ब्रजनारी ॥ मदन मोहन गिरिधर वर पीय जु देव मुनि करति कुसुम बरखारी ॥४॥

धमार के पद राग सिंधुडा

१ राग सिंधुडो झूम सब आई गोपी लपट रही नंदलाल ॥ मानो स्याम घन में चपलासी ज्यों सोभित ब्रजबाल ॥१॥ नेनन सेनन बेनन गारी दे अंचर और ऐंचत गाल ॥ सुघर खिलार नवल धीरज प्रभु कर पाई हो ख्याल ॥२॥

२ राग सिंधुडो अरेकारे प्यारे रतनारे भोंरा बदन कमलके लोभी ॥ फिरत पराग हेततबहीते उपजत कलिकागोभी ॥१॥ फूलरहे द्रुम डारडार झुक भारकुसुम मकरंद ॥ ताहि छांड पियो चाहत तुम सुधाकिरण मुखचंद ॥२॥ जो तूहोहितृषा आतुरतो रहिब अलक लरलाग ॥ पुनि विश्राम कियो चाहेतो चिबुक गाढ खगखाग ॥३॥ जो उन्मत्त गान करें तो श्रुतिपथ लग गुंजार ॥ क्यों भटकें व्रज बन वन वीथन यह निश्चय उरधार ॥४॥

३ राग सिंधुडो अरे कुमलाने आनन मोहना क्यों फिरत अनमनो आज ॥ बीतत जान ख्याल होरीको बिसर गयो सब काज ॥१॥ यह खेल बाहिर गरियारें विफरिंन चेंतजिलाज ॥ कहा भयो जोहें सिर ऊपर मदन गरीब निवाज ॥२॥ सेवा फाग चतुराई के बल जुर चल्यो सुरतसमाज ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुहरि दिन दूल्हे व्रजराज ॥३॥

धमार के पद राग धनाश्री

१ राग धनाश्री हरिसंग खेलन जांय अरी चलि बेगि छबीली ॥ध्रु०॥ निकस्यो मोहन सामरो हो फाग खेलन व्रज मांझ ॥ घुमड्यो अबीर

गुलाल गगनमें मानो फूली सांझ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ कहीन परत कछुबात ॥ रंगरंगभीने ग्वाल बाल सब मानो मदन बरात ॥२॥ जुरि आंई व्रजसुंदरी करिकरि अपनोठाट ॥ खेलत नहीं कोऊ कान्ह कुंबर सों चाहत तिहारी वाट ॥३॥ बिनराजा दलकोन काज बलि उठिये छांडीये अंड ॥ उमग्योहे निधि ज्यों नवलनंदको रुकतरावरी मेंड ॥४॥ उठीहे विहंसि वृषभान कुंवरिवर करपिचकाई लेत ॥ सहि न सकत कोऊ महासुभट लों सुनत समर संकेत ॥५॥ आई रूप अगाधा राधा छबि वरनी नहीं जाय ॥ नवलकिसोर अमलचंदे मानो मिली हे चंद्रका आय ॥६॥ खेल मच्यो व्रज बीथनि महियां बरखत प्रेम आनंद ॥ दमकत भाल गुलाल भरे मानों वंदन भुरके चंद ॥७॥ दुरिमुरिभरन वचावन छबिसों बाढ्यो रंग अपार ॥ मेनमुनीसी बोलत डोलत पग नूपुर झनकार ॥८॥ ओर रंग पिचकारिन भरिभरि छिरकत हरि तनतीय ॥ कुटिल कटाक्ष प्रेमरंग भरिभरि तकितकि पियको हीय ॥९॥ सिव सनकादिक नारदसारद बोलत जयजयजे ॥ नंददास अपने ठाकुरकी जीयूं बलैयांले ॥१०॥

२ राग धनाश्री राधाकुंवरि रसिक मनिसों हो हरिहोरी खेलोजू ॥ध्रु०॥ जमुनातीर सघन कुंजनमें मिलि युवतीदलपेलोजू ॥ सरस गुलाल अबीर अरगजा तकि आंखिनमें मेलो ॥१॥ तब व्रजके लरिका घरघरतें टेरिटेरि सब बोले ॥ आये अपने थोकनजुरि मानो मदगज मोकल खोले ॥२॥ जेसेमन भाये बागेले सबहिन कों पहराये ॥ तेसेई अपने काजेंसव सोंधे सहित मंगाये ॥३॥ पहले सबन कनिक पिचकाई परममुदित मनदीनी ॥ तापाछें द्वे रतन जटित वलदाऊ आपुन लीनी ॥४॥ अतिसुरंग केसरि के रससों कनिक कलस भरिलीने ॥ फेंटन सुरंग गुलाल अबीर भरायभरे रंगभीने ॥५॥ चोवामेद जवादिसाखि गोरामृगमद घसिघोरी ॥ चले लिवाय अरगजा कुंकुम चंदन बंदन रोरी ॥६॥ भेरिगजक आवज महुवरि डफ झांझताल मुखचंगा ॥ बीनरवाष किन्नरीझालरी बाजत सरस मृदंगा ॥७॥ सबसमाजले जाय जुरे वृषभान रायकी पोरा ॥ तब राधासों कहीयत मुदितमन जहां तहां ते उठि दौरी ॥८॥ श्रवनसुनत वृषभान नंदनी अतिआतुर उठिधाई ॥ सखी

सकल घेरें चहूंदिसतें निरखि स्याम मनभाई ॥९॥ अंचलबीच दुरायकनिक पिचकाई भरिलाई ॥ ताकिताकि सुंदरमुखऊपर छिरकीं ओर छिरकाई ॥१०॥ बलि समेत सब सखा उमगि तरुनीगन ऊपर धाये ॥ होहो करत पलास कुसम रंग भरि भरि कलसन माये ॥११॥ करि बिचार मनमें ललिता मधुमंगल केढिंगआई ॥ तेरे पांय लागतिहों क्योंहू नंदलाल पकराई ॥१२॥ तब मधुमंगल कह्यो सखनसों सुनों एकविधि कीजे ॥ हम सब एक ओर व्हेकें पकराय स्याम कोंदीजे ॥१३॥ लेले सुरंग गुलाल उडावत अरुन अंबर कीनों ॥ देखत अचरज होत घोस मानो रजनी करलीनों ॥१४॥ एकदौरत बीसकदौरी ले गई स्याम भरिकोरी ॥ सोंधे सोंमुख मांडि कहत अब भलीबनी यह जोरी ॥१५॥ पीतांबर मुरली करतें ले ललिता बिसाखा भाजी तिहिं ओसर पकरे छलबलसों करगहि अखियां आंजी ॥१६॥ कहोकहा फगुवा देहो तुम सुनों गोकुलके राई ॥ फगुवादेन कह्यो मुखसों तब मुरली आनि गहाई ॥१७॥ केसें छूटन पेहो हमपे बिन दीयें बलिभाई ॥ रतनजटित आभूषन रंगके अंबर मोल मगाई ॥१८॥ अनुरागे पागे रससूं सब नंदद्वारपे आये ॥ वारि आरती विविध भांतिसों जसुमति करत बधाये ॥१९॥ न्हानचले जमुना किलकत सब सोभावरनी न जाई ॥ देखतही अंमरेस थकित भये पोहोंपन बृष्टि कराई ॥२०॥ खेलिफागु अनुरागसिंधु बढ्यो व्रजजन संग लगाई ॥ सुंदर वदन कमल ऊपर रघुवीर वारने जाई ॥२१॥

३ राग धनाश्री गोरे अंगगुवालि गोकुलगामकी ॥ध्रु०॥ लहर लहर जोवना करेहो थहर थहरकरेदेह ॥ छतियां धुकर पुकर करे वाकोनयो रसिकसों नेह ॥१॥ कुवटाको पानीभरे गोरी नवि नवि लेजू लेय ॥ घूंघट दाबेदांतसों ये गर्व न उत्तरदेय ॥२॥ पहरे नौतन चूनरी लावनि लईसकोरि ॥ अरग थरगसिर गागरी वहचितेचली मुखमारि ॥३॥ चालचले गजहंसकी ऊंची नीची दीठ ॥ ओढनके मिस मुरकिकें नेंक हरिहे दिखारे पीठ ॥४॥ ठमकि चले मुरिमुरि हसे गोपी फिरि फिरि ठाडी होय ॥ घायलसी घूमत फिरे याको मर्म न जानें कोय ॥५॥ तिलक बन्यों अंगिया बनी वाकी पायल की झनकार ॥ बडेबगरतें नीकसी स्याम खरे दरबार ॥६॥

४ राग धनाश्री मनमोहनकी यार गोरी गूजरी ॥ सब ब्रजके टोकत रहें याते निकसे घूंघट मार ॥१॥ झूठे हूं कोऊ कहि उठे आये मदन मुरारी ॥ रहि न सके इत उत तके मुरिदेखे बदन उघारि ॥२॥ तनसुख की सारी लसे कंचन सोतन पाय ॥ मानो दामिनि की देहसों रही जोन्हलपटाय ॥३॥ धरतपगन लाली फिरे ढरे भरें रीत जाय ॥ काचकरोती जल रंग्यो कछु यही जुगति ठहराय ॥४॥ गुरु निबंतमधि पातरो ओप्यो सो मुखइंदु ॥ अरुन अधर मुसिकातसो भाल सेंदुरको बिंदु ॥५॥ लाललखें लाली चढे उतसासत्रास पियराय ॥ मानोसंयोगिनि विरहनी अरुझी बीच सुभाय ॥६॥ ज्योंज्यों नरनारी सबे हिलिमिलि करत चवाव ॥ सिरोमनि प्रभु दोऊ मिले तातें भयो चोगुनों चाव ॥७॥

५ राग धनाश्री छांडि देहु यह बानि प्यारे कमलनयन मनमोहना ॥ध्रु०॥ प्यारे आबत जाति सदा रहीं कबहुन देखी एसी रीत ॥ अनहोती श्रवनन सुनी केसें होय प्रतीत ॥१॥ गिरि घटियां उठि भोरही मारग रोकत आय ॥ बहुरि अचानक सीसतें मटुकीदेत ढुराय ॥२॥ ऐसी तुमहीन बूझिये अटकि रहत गहिबांह ॥ मातपिता भैया सुने सांझपरत वन मांह ॥३॥ हँसतही मेमन मसतहो कहि कहि मीठे बोल ॥ सेंतमें तक्यों पाइये यह गोरस निर्मोल ॥४॥ चत्रभुज प्रभु चित करखियो चितवनि नयन विशाल ॥ रतिजोरी मिसदानके गिरिगोवर्धनलाल ॥५॥

६ राग धनाश्री नेंक मोहोंडो मांडनदे होहोरीके खिलैया ॥ जो तुम चतुर खिलार कहावत अंगुरिन को रसलेहो ॥१॥ उमडे घुमडे फिरत रावरे सकुचत काहेहो ॥ सूरदास प्रभु होरी खेलो फगुवा हमारो देहो ॥२॥

७ राग धनाश्री होरी खेलि कहांते आये लालन रसके सांवरे रंग भीने ॥ रंगचुचात पीतांबर कांधें कनिक पिचककरमें लीने ॥१॥ प्रीत पगे कितलाल गुलालन कोन नारि रस बस कीने ॥ प्रान पिया रे पैयत मनकी होत कहा अबहंसि दीने ॥२॥ हिय अंकित नख चंदन वलकें लखियतहे पटझीने ॥ अंकभरी मुसिकाय छबीले घनदामिनिकी छबिछीने ॥३॥

८ राग धनाश्री माई मेरो मन मोह्यो सामरे अबघरहो मोपे रह्यो न जाय ।। चपल तिरछी भोंहसों सर्वसुहो मेरो लियोहे चुराय ।।१।। माईहों गोरसले निकसी श्रीवृंदावनही मंझार ।। आय अचानक औचका मटुकीहोमेरी दीनी ढार ।।२।। गहि अचरा मोसों यों कह्यो कोनबहूतू काकी नारि ।। केविरियां यह मग गई दान बहू तूहमारो मारि ।।३।। कंचुकी पटनी वीगही लई बहोते केतिक मोल ।। कनिक खुभीके व्याजमें परसे वहो मेरे पानकपोल ।।४।। हंसि वीरी मुखमें दई ग्रीबाहो मेरे मेली बांह ।। मिसही मिस मोहिले चले गहवरहो अंधियारे मांह ।।५।। जिय औरे मिसदानके बतीयनहो मेरे परसे पाय ।। करतब सीठी मिलनकी सनमुखरी मेरेनेन चलाय ।।६।। ओर कहां लगि बरनीये कहत बहो मोहि आवे लाज ।। जन त्रिलोक प्रभु सोंरमी देखि सखी मेरे तनकोसाज ।।७।।

९ राग धनाश्री खेलत मदनगुपाल फाग सुहावनों ।। ब्रजजीवन नंदकोलाल अनंगलजाबनों ।।१।। सुबल सुबाहु श्रीदामा सखा संग राजही ।। बहुआबज रुंज मुरज मुरली डफ गाजही ।।२।। करनकनिक पिचकाई फेंट अबीरकी ।। बहुभावरसों भरिकाबरि केसरि नीरकी ।।३।। सजिकें साज समाज चले वृषभानकें ।। मुनिमनसा गई भूलि सुनत धुनि कानकें ।।४।। उतते जुरि झुंडन आंई ब्रजबासिनी ।। तिनमें कुवरि किसोरी नित्य बिलासनी ।।५।। रंगरंगीलो साज लिये नवनागरी ।। बरनबरन लीये राजत फूलन कीछरी ।।६।। जुरिआये दोऊटोल पोरी ब्रजरायकी ।। इतही चेत उत गारी देत बहुभायकी ।।७।। जे कबहूं बधूनवदरसी रवि ने कहू ।। ते गुरजन की लाज करतन हीं एकहू ।।८।। खेलनकों हरिसों हुलसी सब आवही ।। भरि कुंकुम कनिक कटोरन ओट दुरावही ।।९।। छिरकी जाय परस्पर मोहन भामिनी ।। उडत गुलाल अबीर कियो दिन जामिनी ।।१०।। संग सखा नहीं सुझत कीधों कहां गये ।। सब सखीयन मिलि स्याम अचानक गहिलये ।।११।। घिरिआंई सब बाम ठोर दसवीसतें ।। दीयो हे अरगजाढारि मनोहर सीसतें ।।१२।। लेललिता दई गांठि नील पटपीतसों ।। घनदामिनि ज्यों राजत मोहनमीत सों ।।१३।। फगुवा मांगत रंग रह्यो नकह्यो परे ।। यह सुख देखत

कोन अबधीरजकों धरे ॥१४॥ खेलि फाग नरनारि भरे अनुरागसों ॥ ब्रजबासिन में स्याम संग बडभाग सों ॥१५॥

१० राग धनाश्री खेलो होरी फाग सबे मिलि झूमक गावो ॥ध्रु०॥ संगसखा खेलन चले वृषभान गोपकी पौरी ॥ श्रवनसुनत सबगोपिका गईहेंकुवरिपेदौरी ॥१॥ मोहन राधा कारनें गुहिलीनों नोसर हार ॥ हारहेत दरसन भयो सब ग्वालनकियो जुहार ॥२॥ राधा ललितासों कह्यो नेंक हार हाथते लेहु ॥ चंद्रभगा सों यों कह्यो नेंक इनहीं वेठन देहु ॥३॥ बहोत भांति बीरादिये कीनो बहोत सनमान ॥ राधामुख निरखत हरिमानो कमल करत मधुपान ॥४॥ मोहनकर पिचकाई लीये बंसलीये व्रजनारि ॥ जीती राधा गोपिका सब ग्वालन मानीहारि ॥५॥ फगुवाकों पटऐंचते मुरली आई हाथ ॥ फगुवादीयेहीं वनेंतुम सुनि गोकुलके नाथ ॥६॥ मधुमंगल तब टेरियो लीनो सुबल बुलाय ॥ मुरली तो हम देइंगी प्यारी राधा कों सिरनाय ॥७॥ ढोल मुरज डफ बाजहीं ओर मुरलीकी घोर ॥ किलकत कोतुहल करें मानों आनंद निर्ततमोर ॥८॥ राधामोहन विहरहीं सुंदर सुघर सरूप ॥ पोहोप वृष्टि सुरपति करें तुम धनि धनि ब्रजकेभूप ॥९॥ होरी खेलत रंग रह्यो चले जमुनाजल न्हान ॥ सिंघपोरि ठाडे हरी गोपीवारिदें दान ॥१०॥ नरनारी आनंदभयो तनमन मोद बढाय ॥ श्रीगोकुलनाथ प्रतापतें जनस्यामदास बलिजाय ॥११॥

११ राग धनाश्री खेलें होरी फाग चलो मिलि देखन जैये ॥ध्रु०॥ सुनियतहें दरबारमेंहो नंदरायकें आज ॥ ठोरठोर आनंद बढ्यो अति भलो बन्योहे साज ॥१॥ द्वादश भूषन साजिकें नवसत करो सिंगार ॥ कज्जलले करसोंसवे रसआंजत नेन सुढार ॥ अपने अपने झुंडसों निकसीहें ब्रजनारि॥ तजि लाजें बस लाडिली कहि गावति मीठी गारि ॥३ ॥ आवत देखे दूरितें गोपिन नंद कुंवार ॥ हुलस्यो मन बहुप्रेम सों तन बाढ्यो अतिमार ॥४॥ संगसखा सब बोलिकें उतते आये स्याम ॥ इत तरुनी मधि राधिका कंठधरे वनदाम ॥५॥ चारचों नेन मिले जबे तब बाढ्यो सरस अनुराग ॥ मानो नवराजीवके ढिंग पीवत भ्रमर पराग ॥६॥ पंच शब्द बाजे बजें बिचबिच

बेनु रसाल ॥ सुंदरमुख निरखत सबे ले केसरि मींडत भाल ॥७॥ सुरंग गुलाल उडायकें अंबर कीनों लाल ॥ मानो आथे सूरके वीररूपे दे ढाल ॥८॥ अतिसुख केलि विलाससों चले जमुनाजल न्हान ॥ पहोपन बरखत देवता हुलसत चढे विमान ॥९॥

१२ राग धनाश्री रिझवत रसिक किसोरकों खेलतरी प्यारी राधाफाग ॥ पहरे नवरंग चूनरी अंगियारी आछे अंगलाग ॥१॥ कनिक खचित खुभियावनी दुलरीरी मोतिन बिचलाल ॥ किंकिनी नूपुर मेखला लोचनरी सुभसुखद बिसाल ॥२॥ गौरगातकी कहाकहूं बेसरि रही कच अरुझाय ॥ सब सुंदरि मिलि गावही देखत हूं मनमथ हिलजाय ॥३॥ मृदुमुसकनि मुखपट दयो पिचकाई करलई हे दुराय ॥ बंदनबूका अंजुली नागरि ले दई हे उडाय ॥४॥ मीडत लोचन नागरि पकरच्यो पीतांबर धाय ॥ सबे सखी जूरि आय गई धेरेहो मोहन बलिआय ॥५॥ मुरलीछीनि चुंबनदीयो कीनों अधरामृतपान ॥ कमलको सज्यों भृंगकों छांडतनही बिनभये विहान ॥६॥ मानो बहुरंग विकसत कमल मधुकर मनमोहनलाल ॥ नयनन स्वाद सबे गहे पीवत मकरंद रसाल ॥७॥ ऋतु वसंत वन गहगह्यो कुंजत शुकपिक अलिमोर ॥ तानमान गति भेदसों गावत गिरिधर पियजोर ॥८॥ वेन झांझ डफझालरी गोमुख ताल मुरज मुखचंग ॥ युवती यूथ बजावही निर्तत मधिसाल अंग ॥९॥ त्रिगुनसमीर तहां बहे सुंदर कालिंदी कूल ॥ सुरसुरपति सुरअंगना डारत जयजय कहि फूल ॥१०॥ निरखि निरखि सचुपावही हमन भये खगमृग ब्रजबास ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रतापबल गावत विष्णुदास रसरास ॥११॥

१३ राग धनाश्री ब्रजनायक गोपकुमार सब लीनें संग खेलें होहोहोरी ॥ इत ब्रजयुवती यूथ मधिराजत श्रीवृषभान किशोरी ॥१॥ इत ब्रजकुंवर करनलीये राजत रतनखचित पिचकाई ॥ उनकर कमल कुसुम-नवलासी गावति गारि सुहाई ॥२॥ मोहन संग दुंदुभी डफ सहनाई सरस धूनि राजे ॥ बीचबीच युवती मनमोहन महुवरि मुरलीबाजे ॥३॥ स्यामासंग मृदंग झांझ आवज अनघात बजावे ॥ किन्नरीबीन आदि बाजे साजेगण

गणत न आवे ॥४॥ तब मोहन युवती यूथपर विविध रंग बरसाये ॥ अतिसुख फाग सोंजलीने उनये मानो नवघन आये ॥५॥ तब ललिता चंद्रावली मतोकरि सुबल सेनदे लीनों ॥ छलबल करि गिरिधर गहिवेकों यह मतोमन कीनों ॥६॥ सखाभेद गिरिधर गहि पाये भये युवतिन मनभाये ॥ आंखि आंजि गूंथबेनी मृगनयनी भेष बनाये ॥७॥ फगुवाके गहने मोहन मोतिन उरमाल उतारी ॥ बंसी झटकि लई झुकि प्यारी अधरन विलसन हारी ॥८॥ दीने छांडि आप भायो करि स्याम सखन में आये ॥ तब अपनी समसर करिबेकों बलदाऊ पकराये ॥९॥ तब हलधर बस परे युवतिनके केसर कलस नवाये ॥ जोइ जोइ विध उपजी जाके जिय तिहिं तिहिं भांति नचाये ॥१०॥ कीनों बीच सुबल श्रीदामा दाऊ आनि छुडाये ॥ फगुवा देन कह्यो मनमोहन व्रजपति टेरि सुनाये ॥११॥ तब व्रजराज बसन भूषनले युवती यूथढिंग आये ॥ अति आनंद बदन प्रफुल्लित सो दीये बसन मनभाये ॥१२॥ देत असीस सकल व्रज सुंदरि रसना नहीं लखकोरी ॥ चिरजीवो मदनमोहन पिय स्यामा स्याम समजोरी ॥१३॥

१४ राग धनाश्री रसिक सिरोमनि खेलें होरी नंदरायकी पौरीहो ॥ एकओर बलिराम कृष्ण भये एक ओर सब गोरीहो ॥१॥ अपनी अपनी भीर बांटिले मेली परस्पर होडी ॥ बंसनमार होति हे अतिशय गोप चलेपगु छोडी ॥२॥ व्रजललना सब हँसि बोलीहें हम जीते तुम हारे ॥ अबही ओर छोडिहें नाहीं सुनो रसिक पर प्यारे ॥३॥ चंद्रभगा चंदन लीनेकर कृष्णगही पिचकारी ॥ राधादौरि भरे सुंदरवर खेल मच्योहै भारी ॥४॥ सुरविमानगन मोहि रहेहें जयजय शब्द उचारी ॥ कहा वैभव बरनोंया व्रजको बलभद्रजन बलिहारी ॥५॥

१५ राग धनाश्री होहोहोरी होहो होहोरी ॥ इतहि गुपाल ग्वाल समूह उत युवती मधि राधागोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंगरंग दरसत परसत बरसत दुहुं ओरी ॥ देकर ताल उघट नाचत मिलि आप आपमें बांहां जोरी ॥२॥ केसर बहुत मंगाय अबीर उडाय ओर लीने भरिझोरी ॥ ललिता मुठीचलाय दुहुंन दृष्टिबचाय गांठि गहि जोरी ॥३॥ अंचल खिच्यो जानि

सकुचेदंपतिमन हँसिहँसिभोंह मरोरी ॥ चतुरसखी लखिहाथदेपाई जानीजातिदुहुंन की चोरी ॥४॥ बनिहें फगुवादी ये मोहनप्रभु फेंटगहे जो कहत किसोरी ॥ कीजे आज आप भायो हरि पायेहें घेरि सांकरी खोरी ॥५॥

१६ राग धनाश्री रंगीलेरी छबीले नयना रसभरे नयना नाचत मुदित अनेरे ॥ खंजरीट मानों महामत्त दोऊ केसेहूं घिरतन घेरे ॥१॥ स्याम सेतराते रंगरंजित मानों चित्रचितेरे ॥ कुमनदासप्रभु गोवर्धनधर स्याम सुभग तनहेरे ॥२॥

१७ राग धनाश्री होरीके खिलार भामते योंहीं जाननदेहों ॥ मनभाये बागे बनि आये जागे भागि हमारे नयननहींमें भरि रसलेन फगुवा लेहों ॥१॥ चोवाचंदन ओर अरगजा केसरि कलसन वेहों ॥ अग्र स्वामीसों कहत स्वामिनी मिलि तनतपत बुझेहों ॥२॥

१८ राग धनाश्री खेलत फाग सखा संगलीने ब्रजवीथनि गिरिधारीहो ॥ युवती यूथ संग ले आई श्रीवृषभान दुलारीहो ॥१॥ विविध भांति पहरे बहुभूषन तन तन सुखकी सारी ॥ रूपदेखि अपने मनहीमन काम कामिनिहारी ॥२॥ केसररंग कनिक पिचकाई भरि धाईं व्रजनारी ॥ मदनगुपाल लालकों छिरकत गावत मीठीगारी ॥३॥ एकअबीर गुलाल मुठीले मोहनमुखपर डारी ॥ एकजु आंखिन आंजत काजर एकबजावत तारी ॥४॥ नंदनंदनतन चितबत राधा तनकीदशा बिसारी ॥ नेह गांठि छूटत नही छोरी ललनारतन उजारी ॥५॥ प्रेम मगनदौरी त्रियगनते लालभरे अंकवारी ॥ अधरामृतदीनों पियकोतब बढ्योरंग अतिभारी ॥६॥ राधाबदन विलोकि स्यामघन मनमें बात विचारी ॥ मुठीकामरस सिंधुमगन व्हे होहोमंत्रपढि डारी ॥७॥ चहुंओर व्रज वनितन घेरे फगुवा मांगत प्यारी ॥ सुघरराय अपनों तनमनधन दियो सबन सुखकारी ॥८॥

१९ राग धनाश्री नवल कुंवर मिलिखेलें फाग होहोहोरी बोलही ॥ आगम सुनि ऋतुराजको उपज्यो मनमें अति अनुराग ॥१॥ बरस द्योस लागी रहे या सुखकी आसाजिय मांहि ॥ जोबिधना ऐसीकरे सवेद्यो सहोरी व्हें

जांहि ॥२॥ अतिहुलास चितमेंबाढ्यो अब रोक्यो यहकापे जाय ॥ उमगि चल्यो रससिंधुको अपनी मर्यादा विसराय ॥३॥ सुबल सुबाहु सखा सबे जोरिलियो निज संग समाज ॥ अपने अपने घरनते निकसे करि खेलन को साज ॥४॥ एक सखाहोहो करे एककरे उलटी कछु रीत ॥ मधुमंगल नाचतचले गावतहें होरी कें गीत ॥५॥ एक दिगंबर रूपधरे नखसिख अंगविभूत चढाय ॥ एक कोउ कामिनि भई चलेहें दुहुंन की गांठिजुराय ॥६॥ ताल पखावज बाजही बाजेंरुंज मुरज सहनाय ॥ दुंदुभी डफ ओर झालरी रह्यो कुलाहल सब व्रजछाय ॥७॥ सेननहींमें सांवरे कह्यो सुबलसों यों समझाय ॥ आजभैया यह साजसों खेलें बरसानेमें जाय ॥८॥ आये वट संकेतमें जहांकीनी मुरलीकी घोर ॥ श्रवन सुनत प्यारी राधिका चोंकि परीचित रह्योन ठोर ॥९॥ निकसी संग समाजले खेलनको सब साज बनाय ॥ पावस ऋतु सरिता मानों उमगि चली रससिंधुसमाय ॥१०॥ एकन करगेंदुक सोहे एकन नवलासी बहुरंग ॥ झुमक मिलि गावत चली झोरिन भरि गुलाल सुरंग ॥११॥ ताल पखावज बाजही सुरवीना महुवरि मुखचंग ॥ मधुर मधुर स्वर बाजहीं मदनभेरि डफ चंग उपंग ॥१२॥ आयप्रिया पोहोंची तहां खेलतहें जहां नंदकिशोर ॥ मानोसमर संकेतमें रूपे सुभट सनमुख दोऊ ओर ॥१३॥ विविध भांति फूलनगुही पहलें गेंदुक दइ चलाय ॥ मानो रस संग्रामकी आगें दईवसीटपठाय ॥१४॥ पिय पिचकारी पूरिकें दई प्रिया उर ऊपर तानि ॥ अगर अरगजा घोरिकें मुख सोधों लपटायो सानि ॥१५॥ बरखतहे दुंहु ओरतें मनोमेघ उमडे जलरास ॥ गौरघटा ओर सांवरी बरखत केसरनीर सुबास ॥१६॥ सब सखियन ढिंग स्यामके दीनो लाल गुलाल उडाय ॥ दुरि पाछेते घातसों गहेकुंवरि मनमोहन जाय ॥१७॥ एकन भुज गाढीगही एक बनावत चित्र कपोल ॥ एक निडर आंजन लगी नयन कमलदल परम सलोल ॥१८॥ इक सनमुख मुख चाहही एकलेतकर चिबुक उठाय ॥ बहुत कहावतहो आपुनकों आज वदूंजो जाओ छुडाय ॥१९ ॥ एकन मुरली हरिलई एकन मोतिनमाल उतारि ॥ नवकेसर मुखमांडिकें एक नाचतहे देदेकरतारि ॥२०॥ एकन गहिवेनी गुही एकन मोतिन मांग संवार ॥ उरज परकंचुकी कसी तापर मोतिन माल सुढार ॥२१॥ तनसुख की सारी बनी

अतिझीनी सोंधे सोंसान ॥ अगर अरगजा बोरिकें पहरावत प्रीतमकोंआन ॥२२॥ नूपुर कंकन किंकिनी नखसिख भूषणसजे सिंगार ॥ सो सुखदेखेही बने अद्भुत सोभा बढी अपार ॥२३॥ कर परकर धरि लेचली बेठेरी प्यारी ढिंगजाय ॥ आई नई यह सहचरी चाहत हो देखन को पाय ॥२४॥ अति प्रवीन गुन आगरी बेन बजावत परमअनूप ॥ सेवा अंग सिंगारमें सुघर सखी सावरी स्वरूप ॥२५॥ उतकंठा तुम मिलनकों लगी रहत याके जीय मांहि ॥ हँसि भेटो दोऊ अंकभरो जेसें तनमन नयन सिरांहि ॥२६॥ अतिआनंद हुलाससों मिली सखी दोऊ भरि अंकवारि ॥ जब जान्यो यह भेदकछू तबही सकुच मुसिकाय निहारि ॥२७॥ जो आनंद उरमें बढ्यो एक रसना वरन्यों नहीं जाय ॥ दिनदिन यह सुख दुहुंनकूं निरखि माधुरी नयनसिराय ॥२८॥

२० राग धनाश्री पिय प्यारी खेले फाग बागे मरगजा ॥ इत चंदन वंदन बूकाउत अबीर अगर ओर अरगजा ॥१॥ जोरे सकल ग्वाल संग आये मोहन मनमें धरिगजा ॥ श्रीस्वामिनि कामिनिलेधाईं आंई गिरिधर करिगजा ॥२॥ सब जन निठुर भईं तिहिं ओसर छिरकत रंगरंगजा ॥ रसिक राय हरि अति छबिबाढी सुरमुनि मोहेगरगजा ॥३॥

२१ राग धनाश्री बाढ्यो अतिआनंद खेलत फाग हरी ॥ संगसकल आभीर अरगजा माट भरी ॥१॥ ताल मृंदगउपंग मुरज डफ बेन धुनी ॥ जग मोहन मुरली भई छुडावत ध्यान मुनी ॥२॥ वाजत पटह निसान अरुकठ-ताल धरी ॥ बीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरतिकरी ॥३॥ रतन जटित पिचकारी केसर घोरि भरी ॥ उडत अमित गुलाल अंबर गति अरुनकरी ॥४॥ बोले सुबल श्रीदामा श्रीमुख स्याम कह्यो ॥ चलित बरसानें जांय श्रीराधा जाय गहो ॥५॥ गावत अगनितगोप चले सब रंग भरे ॥ बोलत हो हो होरी श्रीराधा द्वार खरे ॥६॥ श्रवन सुनत सबनारी द्वार न झुंड भईं ॥ अनेक अरगजा घोरि सनमुख स्याम गईं ॥७॥ धायगहे बलबीर धीरमन कछु न रही ॥ चंदन बंदन रोरी कपोल न लायलही ॥८॥ दृगसों कज्जल लावति गावति गारि खरी ॥ मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥९॥ वेनी बनावत सीस हरिजू के हाथ गये ॥ श्रीराधा वदन निहारत वारत

प्रानदये ॥१०॥ मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गहे ॥ फगुवा देहु मंगाय युवतिनयों जु कहे ॥११॥ मोहन मनहिं विचारिकें बलिहिबचायलये ॥ जो मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ॥१२॥ व्रज ही चले व्रजराज गावत रंग भरे ॥ देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥१३॥ यह लीला रस सिंधु कोकविवरनिसके ॥ दास गदाधर गाय निरखत नयन थके ॥१४॥

२२ राग धनाश्री अपने पिय संग खेलों मिलि होरी पिचकारिन रंग भरों गोरी ॥ गृह गृहते बानिक वनिवनि आंई साँवरी सलोनी सुंदर भोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ वीच वीच मुरली धुनि थोरी ॥ चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर लिये भरि भरि झोरी ॥२॥ में अपनों वर पायोरी सजनी वांधि प्रीति रस की डोरी ॥ सूर स्याम प्रभु रस भरे खेलत मदन मोहन राधा जोरी ॥३॥

२३ राग धनाश्री खेलति राधा फाग गिरिधर धीरसों ॥ युवती यूथ मिले आवहीं अति रंग मच्यो बलवीरसों ॥१॥ गारी मीठी गावहीं मिलि युवतीन की भीरसों ॥ होरी हो हो बोलिकें मिलि कूकेंदेत अहीरसों ॥२॥ पिचकाई कर कनिककी भरि छिरकत केसरि नीरसों ॥ सुरंग गुलाल उडावहीं लेमारत मुठी अबीरसों ॥३॥ प्रेम रंग सोंभरि रहीं तन पहरें दक्षिन चीरसों ॥ वचन विवेकन बोलहीं सब व्याकुल मनमथ पीरसों ॥ ताथेई ततथेई उघटत धुनि मधुर मंजीरसों ॥५॥ प्रफुल्लित वृंदावन भयो बहुविध कालिंदी तीरसों ॥ मधुर मधुर धुनि बोलही अलिकेकी कोकिलकीरसों ॥६॥ ऋतु कुसुमा कर सुखद को मानो आयो त्रिविध समीरसों ॥ यह विध खेलत रंग रह्यो गोकुल चंदस्याम शरीरसों ॥७॥

२४ राग धनाश्री होरी खेले सावरो मनमोहन जाको नाम ॥ फाग सकल ब्रजरमरह्यो रसभीजि रह्यो सब गाम ॥१॥ नटवर भेष उतारिकें विप्रभये गोपीनाथ ॥ जिनके नयनन कौतिक वारे तेइ व्रजके लरिका साथ ॥२॥ नव तरुनी ओर रूप बतीहें हरिताकी बाखर जात ॥ चितवत अति अनुरागसों ओर कहत भेद की बात ॥३॥ गोपी कहे अहो बिप्रजू हम कछु

पूछत तुमसों ॥ हमारी प्रीति हरिसों लागी कछु हरिहूकी हमसों ॥४॥ कहत हों बाके जियकी तुमसों तुम सुनों हितू कोहेत ॥ जो कछू करत तुम कारनें हरि चाहत सदा संकेत ॥५॥ पियकी हँसि चितवनिलखी ओर सोभा रही निहारि ॥ रीझि रीझि सब संग लगी लोक लाज डरडारि ॥६॥ श्रीराधा मंत्र जपत चले हरि जहां कीरति वृषभान ॥ कहिन सकत चाहत कहा दानन में कन्यादान ॥७॥ करगहिकें डफ लाडिली आई गावत सखियन संग ॥ कहि भगवान हित रामराय प्रभु भई नयन गतिपंग ॥८॥

२५ राग धनाश्री खेलोंगी चांचरि माई अपने लालन संग ॥ सखी सब जुरजुर मोरिहें अंग ॥१॥ उतते गोप बालक सुवन सबआये ॥ तिनमें सुंदर स्याम लागत सुहाये ॥२॥ उतते झुंडन जुरव्रज वधुआईं ॥ तिनमें राधिका गोरी बनी एकदाईं ॥३॥ उततें कनक पिचकाई छूटी ॥ इततें युवती करबंसलेटूटी ॥४॥ गोरा जवादमेद केसर घोरी ॥ छिरकें परस्पर चंदनरोरी ॥५॥ ढोल आवज ताल डफ मोंहों चंगा ॥ बीनरबाववाजे सरस मृदंगा ॥६॥ बोलत हो हो होरी कर बजावत तारी ॥ बीच बीच धुनि राखिकें देत हेंगारी ॥७॥ तब सब मतोमति चहुंदिस आई ॥ औचका तककेहीं स्याम गहिलाई ॥८॥ अरगजा वंदनसों पिय मुख मांडे ॥ तब अपनों मन भायो करि कें छांडे ॥९॥ ललिता करते मुरली तब लीनी ॥ सदाही रहत अधरन रंग भीनी ॥१०॥ उडत गुलाल तहां भयो हे अंधेरो ॥ रति सुख केलि किये मैनचेरो ॥११॥ पीत पट अंचलसों दुहुंगांठि जोरी ॥ यह छबि वरणि सके कवि कोरी ॥१२॥ बोहोरचों सिमिटि बलदाऊ जाय घेरे ॥ काजर नयनन आजि मुख तनहेरे ॥१३॥ फगुवा बिनादीये छूटन केसेंपेहो ॥ पीतांबर मुरली तबही भलेंलेहो ॥१४॥ विविध भूषण पटमोल मंगाये ॥ फगुवा निवेरि व्रजराज ढिंग आये ॥१५॥ देत असीस प्रमुदित सब गोपी ॥ अपनपों बरन करत चोंपा चोंपी ॥१६॥ यमुना चले न्हान जुरजूरटोल ॥ कहीन परत यह सोभा निरमोल ॥१७॥ सुरनर सुनिजन वरखावत फूल ॥ कहत हें इन की कोऊ नहीं समतूल ॥१८॥ यहविध होरी खेलें सब सुखदाई ॥ यह सुख देखि रघुवीर बलजाई ॥१९॥

२६ राग धनाश्री मेरी अंखियन जिन डारो हो गुलाल लाल रहो तुमसों बिनती करों ।। मोपें सह्यो न परेगो लाल यह निपट कपटको खेललाल ।।ध्रु०।। चोबा चंदन अरगजा हो केसर बहुत रसाल गागरी ढोरी औचका मन भई हे रंगीली बाल लाल ।।१ ।। हों अपने मन की कहों तुम सुनियो हो गोपाल ।। रंग जो ठान्यो अटपटो हो हम भई हें हाल वेहाल लाल ।।२ ।। मोहन मूरति सांवरी हो रसिक नंद के लाल ।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु कों देखि भई हों निहाललाल ।।३।।

२७ राग धनाश्री हो हो होरी बोलि ही ।। नवल कुँबर मिलि खेलैं फागु ।। आगम सुनि ऋतुराज कों उपज्यों मन में अति अनुरागु ।।१।। बरस द्यौस लागी रहे या सुख की आसा जिय माँहि ।। जो बिधना ऐसी करै सबै द्यौस होरी व्हैं जाँहि ।।२।। अति हुलास चित में बढ्यों अब रोक्यों यह कापै जाई ।। उमगि चल्यों रस सिंधु कों अपनी मरजादा बिसराई ।।३।। सुबल सुबाहु सखा सबै जोरि लियौं निज सँग समाज ।। अपने अपने घरन तैं निकसे करि खेलनि कों साज ।।४।। एकु सखा हो हो करे एकु करै उलटी कछु रीत ।। मधुमंगल नाँचति चले गावति हैं होरी के गीत ।।५।। एकु दिगंबर रूप धरि नख सिख अंग बिभूति चढ़ाई ।। एकु कोउ कामिनि भई चलैं हैं दुहुँन की गाँठि जुराई ।।६।। ताल पखावज बाज हीं बाजै रूंज मुरज सहनाई ।। दुंदुभि ढ़फ औ झालरी रह्यों कुलाहल सब ब्रज छाई ।।७।। सैननि ही में साँवरे कह्यों सुबल सौं यौं समुझाई ।। आजु भैया यह साज सौं खेलैं बरसानैं में जाई ।।८।। आये बट संकेत में जहँ कीनीं मुरली की घोर ।। स्रबन सुनति प्यारी राधिका चौंकि परी चित रह्यों न ठौर ।।९।। निकसी संग समाज लै खेलनि कों सब साज बनाई ।। पावस ऋतु सरिता मनौं उमगि चली रस सिंधु समाई ।।१०।। एकन कर गैंदुक सोहे एकन नबलासी बहु रंग ।। झूमक मिलि गावत चलीं झोरिन भरें गुलाल सुरँग ।।११।। ताल पखाबज बाज हीं सुर बीना महुवरि मुख चंग ।। मधुर मधुर सुर बाज हीं मदन भेरि ढ़फ चंग उपंग ।।१२।। आइ प्रिया पहुँची तहाँ खेलति हें जहाँ नंद किसोर ।। मानौं समेर संकेत में रूपे सुभट सनमुख

दोऊ और ॥१३॥ बिबिध भाँति फूलन गूही पहिलैं गेंदुक दई चलाई ॥ मानौं रस संग्राम की आगैं दई बसीठ पठाई ॥१४॥ पिय पिचकारी पूरी कैं दइ प्रिया उर ऊपर तानि ॥ अगर अरगजा घोरि कैं मुख सौंधौं लपटायों सानि ॥१५॥ वरखत हे दुहुँ और तैं मनौं मेघ उमड़े जलरास ॥ गौर घटा औ साँवरी बरखति केसर नीर सुबास ॥१६॥ सब सखियन ढ़िग स्याम के दीनौं लाल गुलाल उड़ाई ॥ दुरि पाछे तैं घात सौं गहे कुँवरि मन मोहन जाई ॥१७॥ एकन भुज गाढ़ी गही एकु बनाबति चित्र कपोल ॥ एकु निडर आँजन लगी नैन कमल दल परम सलोल ॥१८॥ इकु सनमुख मुख चाह हीं एकु लेति कर चिबुक उठाई ॥ बहुत कहावत हों आपुन कौं आजु बंदों जो जाउ छुडाई ॥१९॥ एकन मुरली हरि लई एकन मोतिन माल उतारि ॥ नब केसरि मुख माँडि कैं इकु नाँचति हैं दै दै कर तारि ॥२०॥ एकन गहि बैनी गुही एकन मोतिन माँग सँवार ॥ उरज पै कंचुकी कसी तापै मोतिन माल सुढ़ार ॥२१॥ तनसुख की सारी अति झीनी अरु लींनी सौंधे सौं सॉन ॥ अगर अरगजा बोरि कैं पहिरावति पीतम कौं आँन ॥२२॥ नूपुर कंचन किंकिनि नख सिख भूषन सजे सिंगार ॥ सो सुख देखैं ही बने अद्भुत सोभा बढ़ी अपार ॥२३॥ कर पै कर धरि लै चलीं बैठारे प्यारि ढिंग जाई ॥ आई नई यह सहचरी चाँहति है देखन कौं पाई ॥२४॥ अति प्रवीन गुन आगरी बैनु बजावत परम अनूप ॥ सेबा अंग सिंगार में सुघर सखी साँवरी सरूप ॥२५॥ उतकंठा तुम मिलन की लगी रहत जाके जीय माँहि ॥ हँसि भेटो दोऊ अंक भरो जासौं तन मन नैन सिराहि ॥२६॥ अति आनंद हुलास सौं मिली सखी दोऊ भरि अँकवारि ॥ जब जान्यो यह भेद कछू तब हि सकुचि मुसिकाई निहारि ॥२७॥ जो आनँद उर में बढ्यों एकु रसना बरन्यौं नहिं जाई ॥ दिन दिन यह सुख दुहुँन कौं निरखि 'माधुरी' नैंन सिराई ॥२८॥

२८ राग धनाश्री एकु दिना ब्रज नारि सिमिटि चली फगुवा माँगन ॥ मृगमद साख जबाद लियैं कर गोप घनी गन ॥ राधा प्रमुख सबै चलीं उपमा कही न जाई ॥ माँनहु मत्त गयंद पै ज्यौं करिनी चली धाई ॥१॥

फगुवा देहों लला नातरु उपरैना अरु पाग भरैंगी ब्रज अबला ॥ध्रु०॥ किन कँचुकि लाँक कीने बर पीत बनाई ॥ तनसुख सारी साजि माँग सिंदूर सुहाई ॥ नकवेसर मोतिन की कीनीं अरु नुपूर घन घोर ॥ नैननि में कजरा बने अरु सौंधे झकझोर ॥२॥ गावति धावति गई सबे नँद राई की पौरी ॥ मन में मदन गुपाल गह्यों चाहति भरि कौरी ॥ फागुन मास बसंत ऋतु मदन जु ब्यापत अंग ॥ झुंडन मिल आई सबै खेलनि हरि के संग ॥३॥ बाजति ताल मृदंग चंग मुख चंग उपंगा झांझ झालरी पटह भेरी दुंदुभी सुर उतंगा ॥ बीन अरु प्रनव ढफ तुरी सुबंस रसाल ॥ औरु अधोटी सबद वर, उघंटत हैं कट ताल ॥४॥ मोर मुकुट सिर बने बनी मुकता फल माला ॥ कुंडल मंडित गंड कुटिल भ्रू नैन बिसाला ॥ पीतांबर कटि किंकिनी कर मुरली सबद रसाल ॥ कोलाहल सुनि द्वार पै निकसे हो नँदलाल ॥५॥ उझकत इत उत ग्वालि तकत मोहन की घातैं ॥ गहवे कों छल करत मदन मोही मदमाँतिं ॥ सौधों पिचकारी भरी अंचर ओट दुराई ॥ आसपास सिंघ द्वार पैं रही गैल सब छाई ॥६॥ बाढ्यों अद्भुत झुंड राधिका मधि दुराई ॥ सब तरुनी सिर तिलक करौं चाहत हरिराई ॥ तब ही सब मिली नारि धाई हरि के ढिंग आई ॥ सखी परसपर सैंन दे सिर पै रंग दियो ढरिकाई ॥७॥ तब लीये अरगजा लाल जुबती मंडल मधि दौरे ॥ मानौं मदन मदमत्त गज करिनी गन ओरे ॥ पट झीने पहचानि मुख श्री राधा दृग लोल ॥ छूबति अरगजा ब्याज कैं कुच वर ललित कपोल ॥८॥ कोऊ कर अंचर गहै कोऊ पटका झकझोरे ॥ कोऊ आन गहे दाम नैंन सौं नैना जोरै ॥ काजर हरद कपोल बर लावति गावति ग्वार ॥ स्यामा सनमुख आई कैं भरि लींने अँक वार ॥९॥ हम अँकवारो भरच्यो करों जीय कों तुम भायों ॥ श्री भामिनि कों अतरौंट खैंचि काऊ जु उढ़ायों ॥ मुरली पगिया पीत यह आनि चंद्रिका मोर ॥ भामिनी अंग बनाव ही हरि सिर गूंथी डोर ॥१०॥ कोउ कर अंजन करै किनहुँ लै माँग सँवारी ॥ रोरी बिंदुका भाल चिबुक काजर बिंदुका री ॥ सारी सुरँग बनाई कैं बागो लियों उतारि ॥ प्यारी कौं पहिराव हीं दै सिर मुकुट सँवारि ॥११ ॥ कोऊ नकबेसरि दई किनहू मुक्ता फल हारा ॥ खुभी चोकी पदक पोत दुलरी ब सुढारा ॥ बलैय पौंचिका

मुद्रिका झाँवे झूमका चार ।। कर कंकन अरू किंकिनि पग नूपुर झनकार ।।१२ ।। कर जोरे कोउ सखी कोऊ पै गाँठि बनावे ।। मंडल कर जु फिराई सरसधमार हि गावैं ।। कुँवरि कुँवर बिलसति अधिक कोक कला सब जान ।। नव नागरि दुलहा भई नव दुलहनि भए कान ।।१३।। कोऊ आलिंगन करै कोऊ मुख चुंबत नीकैं ।। लाल भुजा उर धरै धरै भुज अंसन पीके ।। पीबन पिबाबत अधर मधु मुख में बीरी दैन ।। खंडित दसनन अधर पुनि आपुन मुखि धरि बैन ।।१४।। पुनि आये सब ग्वाल सबै नाना रँग भींने ।। अरगजा कुँमकुम नीर सरस सौंधो सँग लींनि ।। फूल माला गरै धरैं अरू फुलेल धरि माथ ।। गोद गुलाल बीरा मुखै धरि पिचकारी हाथ ।।१५।। तब बोले बलराम ग्वालि घेरो एकु ठोरी ।। ठौर ठौर तैं जाई रोकि रहों ब्रज की खोरी ।। एकु एकु करि कैं भरों कुसुम रंग के माँझि ।। ए सब बन तैं एकु घर जान न पावै साँझि ।।१६।। सिमिटि कैं सब ग्वाल प्रथम पूजो बलि देवा ।। कुँमकुम रोरी हरद करों वाई की सेवा ।। सौंधे कनक बेला भरि लै बल ऊपर ढोरी ।। तारी हाथ बजाई कै मुख बोलति हो हो होरी ।।१७।। तब सुबल सुबाहु बांधि फैंटा अरू दौरे ।। केसर केसू कलस आनि जूबतिन पै ढोरे ।। मोहन पिचकाई लिये चोवा चंदन घोरि ।। अरू सखियन की ओट दै स्याम सनमुख दई छोरि ।।१८।। अरी सब पिचकाईन धरों अब कों ये खेला ।। एकु ही बेर सौं छोरि भरों तुम कान्ह अकेला ।। छुटी एकु ही वार सुभ धार बिबिध बिध रंग ।। घन गन बरखत मानौं अमृत चातक नब रँग ।।१९।। लै गुलाल नंदलाल जुबति मंडल मधि दौरि ।। सब सखीयन में भामिनि मूठि डारत मुख मोरि ।। तेल गुलाल लगाई कैं हाथ पिछौरा कींन ।। रसिक सिरोमनि साँवरे सब के मुख पै दींन ।।२०।। तब राधा अति चतुर हँसति मोहन ढ़िग आई ।। करी रसीली बात मुख हि हेर रहे कन्हाई ।। सैंन दई सब सखिन कौं हरैं हरैं ढिंग आई ।। स्याम परे बस तियन के मुरली लई छिनाई ।।२१।। कान लागि कैं कह्यो सखी स्यामा सुन स्याम ही ।। तो तुम मुरली देहि नैकु पकराव हु राम ही ।। इतनौं कहत में और सखी सब झटकत पट हि उतार ।। पीतांबर तब लै भजी मोहन रहे हैं निहार ।।२२।। मधुमंगल के भेद स्याम हलधर पकराए ।। सब गोपिन कौं घेर करो तुम मन के

भाए ॥ केसू कुँमकुमा कुसुम रंग हरद लगावति गाल ॥ एकु आँखि आँजी सखियन तब हँसि हौं ब्रज बाल ॥२३॥ तबै आनि कैं नंद बीच कीनौं यह औसर ॥ विविध बसन परिधान हार दीने हैं नौसर ॥ पीतांबर मुरली लई दई स्याम के हाथ ॥ तब निकसी निज गेह तैं भरयो है जाई ब्रजनाथ ॥२४॥ एकु उछारत फूल एकु गुलाल उड़ावै ॥ उरप तिरप गति लेत एकु पट ताल बजावै ॥ सौंधो सौरभ नभ बढ्यो धरनि अरगजा कीच ॥ ग्वालन मिल उधम कियों अनेक नागरी बीच ॥२५॥ तब राधा नँदलाल देखि रानी बिहँसानी ॥ करि आरती दै अरध अंग अंग सुखसानी ॥ करि न्योछावर तोर सून बढो सत्रु सिर सुल ॥ दुंदुभि देव बजाव ही बरसन लागे फूल ॥२६॥ हरि जस गावति सबै चली निज निज गृह नारी ॥ मदन गुपाल के सँग रंग रस भींनीं सारी ॥ देति असीस जीयो सदाँ ब्रज के जीवन प्रान ॥ राज करो वृषभानुजा सौं सदाँ गिरिधरन सुजान ॥२७॥

२९ राग धनाश्री सखी री रसिया नंद कुँमार दधि बेचन गई ॥ गलिन गलिन सखी हौं फिरी दधि काहु नाँहि लई ॥१॥ चितबनि में चित चोरयो मोहन हम ब्याकुल जु भई ॥ चपल पथ भारि भयौं मोकों प्रेम की गाँठि दई ॥२॥ अब न जाउ सखी या गोकुल घर बैठें बेचो सही ॥ 'सूरदास' प्रभु वे बहु नाइक जिनि मेरी बाह गही ॥३॥

३० राग धनाश्री इक समै घनस्याम कैं मंदिर सुंदर होरी की हो बारि बँधी ॥ भीज रही सब नारि ब्रज की धौवति दाग अरगजा सुगंधी ॥१॥ नारि ब्रज की धौवति दाग अरगजा सुगंधी ॥१॥ केसू केसर ओर कुँमकुमा पिचकाईन भरि भरि साँधि ॥ चोवा की कीच फूलेल की रेल गुलाल कों मेह अबीर की आँधि ॥२॥ बाजत बीन मृदंग बाँसुरी छायो है रागु धनासरी छंदी ॥ सखीयन घूमर दै दै गावति निरखि 'सूर' भयों परमानँदी ॥३॥

३१ राग धनाश्री खेलनि आँई हम मोहन तुम सँग ॥ बेगि मँगाओ जु अबीर अरगजा और केसरि कों रँग ॥१॥ धाँई गहि बैयाँ गिरिधर की चोवा चंदन लपटावति अंग ॥ 'हरि बलभ' प्रभु दिजे फगुवा

जानति तुह्मारे ढंग ॥२॥

३२ राग धनाश्री खेलै नगर अजोध्या माँहि रघुवीर जानकी ॥ कस्तुरी कों तिलक हों बलि जाँऊ मुख पान की ॥१॥ इत तै निकसे जनक नँदिनी उत ते निकसे राम ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा छिरकति मोहन स्याम ॥२॥ गुनी गंधरव सुर नर मुनि मोहै चंग बजावति हनुमान की ॥ 'परमानँद' कर जोर कहति मेरी बिरध हरि नाम की ॥३॥

३३ राग धनाश्री मिलि दियौ है सखी को भेष अपुने लाल कों ॥ मिलि गावत चली हे धमार गजगति चाल सौं ॥१॥ वृषभानु सुता नंद लाल कों हो दियौ है सखी कों भेष ॥ सारी सुरंग सुहावनी हो नैननि काजर रेख ॥२॥ जसुमति आगैं राधिका को कहति हैं बात बिचारि ॥ स्याम सुंदर के कारने हम लाई हैं एकु नारि ॥३॥ जसुमति बुझे राधिका हो कहा की कन्या होई ॥ कहा नाम या बाल कों हों में फुनि जानों सोई ॥४॥ नंद महर की यह सुता हो मोहनी जाकों नाँऊ ॥ महारावर साँची कहौं हो गोकुल जाकों गांऊ ॥५॥ यह रावर मुसिकाई के हो जब जान्यौं या भेव ॥ तन मन धन नोछावरि हो बलिहारी या देव ॥६॥ फगुवा माँगै राधिका हो महा रावर गहि धाई ॥ अब भलें तुम छूटी हो मोए फगुवा देहु मँगाई ॥७॥ फगुवा दीयौ जसुमति हो पांन फूल पकवांन ॥ फगुवा लीनै राधिका हो भए सकल कल्यान ॥८॥ लाल गुलाल उड़ाव हि गगनलौं सब छाई ॥ एकु एकनु अँक भरे हो सोभा कही न जाई ॥९॥ रस बाढ्यों गोपिका हो खेलति झूमक चारि ॥ एकु सखी मिलि एकु सौं देति है होरी की गारि ॥१०॥ पुहुप सुरंग सुहाबनों हो फूले फले सुवास ॥ जसोदा नँदन राधिका हो खेलें रँग बिलास ॥११॥ ऐसी सोभा फागु की हो मोपै बरनि न जाई ॥ 'रसिक' सुंदर लाल पैं हो निरखि सदाँ बलि जाई ॥१२॥

३४ राग धनाश्री ब्रज में होरी खेलति साँवरो मनमोहन जाकों नाम ॥ फागु सकल ब्रज रम रह्यो रस भीजि रह्यों सब ग्राम ॥१॥ नटवर भेष उतारि कें बिप्र भये गोपीनाथ ॥ जिनके नैननि कौतुक बारे तेइ ब्रज कें लरिका साथ ॥२॥ नव तरुनी और रूपवती हैं हरि ताकी बाखर जात ॥

चितवत अति अनुराग सौं औ कहति भेद की बात ॥३॥ गोपी कहे अहो विप्र जू हम कछु पूछत तुम सौं ॥ हमारी प्रीत जू हरि सौं लागी कछु हरि हू की हम सौं ॥४॥ कहति हौं बाके जिय की तुम सौं तुम सुनौं हि कों हेत ॥ जो कछु करति तुम कारनें हरि चाहत सदाँ संकेत ॥५॥ पिय की हँसि चितवनि लखी ओर सोभा रही निहारि ॥ रीझि रीझि सब सँग लगी लोक लाज डर डारि ॥६॥ श्री राधा मंत्र जपत चले हरि जहाँ कीरति वृषभानु ॥ कहि न सकत चाहत कहा दानन में कन्या दाँनु ॥७॥ कर गहि कें ढ़फ लाड़िली आई गावत सखियन सँग ॥ कहि 'भगवान हित रामराई' प्रभु भई नैन गति पंग ॥८॥

३५ राग धनाश्री सलौनें श्री गोरे गात सुंदर नागरी ॥ हंस चाल रबि तें छबि नीकी चंचलता लै मीन ॥ अंबुज जोति बदन छबि तिय की चंदा भये मलीन ॥ सुंदर नागरि ॥१॥ छूटी लर लपटी छतियन पै सोभा बरनी न जाई ॥ माँनौं माँगन चली हे सुभ्र पै मौतिन चौक पुराई ॥ सुंदर ॥२॥ केवरा कर कंकन सोहै कंठ सोहै दुलरी ॥ माथे तिलक भाल माँनौं राजति कामिनि काम भरी ॥सुंदर॥३॥ केसर लंक बरन चंपे कों बोलति है पिक बैंन ॥ आसा नासा ईल कील माँनौ लुटै सारंग बैंन ॥सुंदर॥४॥ थोरे दिनन की गोरी भोरी होरी खेलन आई ॥ 'रामदास' प्रभु मिले परसपर चितवनी चली मुसिकाई ॥सुंदर॥५॥

३६ राग धनाश्री श्री राधा नवल किसोर डोलैं गुजरी ॥ वाके नैन चपल चित चोर डोलैं गुजरी ॥ संग लिए सकल ब्रज सुंदरी अति रस रंग ढरी ॥१॥ कानन करनफूल, नकबेसर, मौतिन माँग भरी ॥ अधर प्रवाल नैन खंजन, मृग सावक तैं अगरी ॥२॥ मुकत माल चौकी हमेल खग वारी पर दुलरी ॥ अँगिया बनी कटाव की निज जोबन करि सुघरी ॥३॥ सुवन पाट की ओढ़नी ओढ़नि पै इँडुरी ॥ कनक मटुकियाँ सिर धरे बाबा नंद जु के द्वार खरी ॥४॥ बिद्यापति बरनैं काहा हो अंग अंग सुघरी ॥ कोकिल बन संपुट खुले माँनों फूली कमल करी ॥५॥

३७ राग धनाश्री आंखिन में जिन डारौ-डारौ जू अबीर ॥

रतनजटित पिचकाइन कर लिये अहो भरि केसरि नीर ॥१॥ ललिता मोहन को मुख माँड्यो चरच्यो स्याम सरीर ॥ 'सूरदास' प्रभु सर्वसु करि लीनो इन हलधर के वीर ॥२॥

३८ राग धनाश्री कनकपुरी होरी रची मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा काढ्यों जाए सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥१॥ काहे की तुम ग्वालिनी ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ का दधि बेचन जाई ॥ सुंदर राधिका मोहन ब्रज बाला ॥२॥ गोकुल की हम ग्वालिनी ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ मथुरा दधि बेचन जाई ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥३॥ काहे के तुम दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ काहे कौ जु मुरार ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥४॥ गोकुल के हम दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ श्री मथुराजी को मुरार ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥५॥ लौंग सुपारी दानैया ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ दधि कौ दानी होय ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥६॥ जाइ पुकारों कंस पै ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ पकर मंगाउ तोय ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥७॥ कंस को मार न सके ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ करो मथुरा को राज ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥८॥ नैंन हमारे झुंड में ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ चोखी चोर मजीठ ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥९॥ श्री विट्ठल पद पदम कैं ॥ मोहन ब्रज बाला ॥ पावन रैनु परताप ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥१०॥ 'छीत स्वामि' गिरिधर मिलै ॥ मोहन मेंट्यों तन को ताप ॥ सुंदर ब्रज बाला ॥११॥

३९ राग धनाश्री खेलत फाग कुँवर नँदनंदन श्री वृषभानदुलारी हो ॥ संग लिए सहचरी रंगीली नाचत दै कर तारी हो ॥१॥ बीन मृदंग मुरज डफ मुरली कल मुख चंग बजावै हो ॥ गावति राग रागिनी सुन्दर नाना गति उपजावै ॥२॥ मृगमद केसर सत गुलाल को घोरि परसपर मेलै हो ॥ त्रिबिध समीर बहति ले आवत अति सौरभ की रेलै हो ॥३॥ अति आनंदित कुँवरी बिबिध रंगभरी पिय मुख की निहारी हो ॥ नख सिख लालच भयों लालची लै प्यारी उर धारी हो ॥४॥ लटकत ललना लाल मिलि दोऊ करत बहु बिधि केलि हो ॥ मानों तरुन तमाल हि लपटी नवकंचन की बेली हो ॥५॥ दुलह मदनगोपाल विराजति दुलहनि नवल किसोरी हो ॥ ललित विलास करत वृन्दावन नवल एक सम जोरी हो ॥६॥

४० राग धनाश्री नँद कुमार लाड़िले अब कैसें छूटि जैहो ॥ अब तो परे तियन बस मोहन गहेरे उसासन लैहो ॥१॥ तब छाँड़ेंगी ब्रज नारी जब पाँइन पर हा हा खैहो ॥ 'सूरदास' प्रभु गहैनों दै राधा को फगुवा दैहो ॥२॥

४१ राग धनाश्री मिलि दियौ है सखी को भेष अपुने लाल कों ॥ मिलि गावत चली हे धमार गजगति चाल सों ॥१॥ वृषभानु सुता नंदलाल कों हो दियौ है सखी कौ भेष ॥ सारी सुरंग सुहावनी हो नैननि काजर रेख ॥२॥ जसुमति आगैं राधिका हो कहति हैं बात बिचारि ॥ स्याम सुंदर के कारने हम लाई हैं एकु नारि ॥३॥ जसुमति बुझे राधिका हो कहाँ की कन्या होई ॥ कहा नाम या बाल कौ हौ मै सुनि जानों सोई ॥४॥ नंद महर की यह सुता हो मोहनी जाकौ नाँऊँ ॥ महारावर साँची कहौं हो गोकुल जाकौं गाँऊँ ॥५॥ यह रावर मुसिकाइ कैं हो जब जान्यौं या भेव ॥ तन मन धन नोछावरि हो बलिहारी या देव ॥६॥ फगुवा माँगे राधिका हो महा रावर गहि धाई ॥ अब भले तुम छूटी हो मोए फगुवा देहु मँगाई ॥७॥ फगुवा दीयौ जसुमति हो पान फूल पकवांन ॥ फगुवा लीनै राधिका हो भए सकल कल्यान ॥८॥ लाल गुलाल उड़ाव हि गगनलौं सब छाई ॥ एकु एकनु अँक भरै हो सोभा कही न जाई ॥९॥ रस बाढ्यौ गोपिका हो खेलति झूमक चारि ॥ एकु सखी मिलि एकु सौं देति है होरी की गारि ॥१०॥ पुहुप सुरंग सुहाबनों हो फूले फले सुबास ॥ जसोदा नँदन राधिका हो खेलें रँग विलास ॥१॥ ऐसी सोभा फागु की हो मोपै बरनि न जाई ॥ 'रसिक' सुंदर लाल पैं हो निरखि सदाँ बलि जाई ॥१२॥

४२ राग धनाश्री रंग भरि डारचो रे अबीर ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा छिरकत केसर नीर ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ फिरत जमुना के तीर ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे हरि हलधर दोऊ वीर ॥२॥

४३ राग धनाश्री होरी खेलत ब्रज-खोरिनि मैं, ब्रज-बाला बनि

बनि बनवारी ॥ डफ की धुनि सुनि बिकल भई सब, कोउ न रहति घर घूँघटवारी ॥ जाहि अबीर देत आँखिनमैं, ताहीकौं छिरकत पिचकारी ॥ सौंधे तेल अबीर अरगजा, तैसि जरद केसरि चटकारी ॥ उड़त गुलाल, लाल भै बादर, रँगि गै सिगरे अटा-अटारी ॥ सूरदास, वारी छवि-ऊपर, कल न परति छिनु बिनु-गिरिधारी ॥

४४ राग धनाश्री हो हो होरी खेलै लाल ॥ एक गारि निपट उघारी गावत कौन टेव परी गोपाल ॥१॥ पिचकारिन रंग भरत भरावत मुख मांडत ले गुलाल ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' के प्रभु संग लिये सब ग्वाल बाल ॥२॥

४५ राग धनाश्री हों बलि जाऊँ लाडिलि चलौ खेलिए फागु ॥ रस निधान नबल नँदलाल सौं प्रगट करौ अनुरागु ॥१॥ जाय लाल चोहटे सजि कैं सरस सखा लै सँग ॥ नाँचति गावति करति कौतुहल बाजति ताल मृदंग ॥२॥ जब आये हरि निकट पौरि कैं तब रही है न सँभार ॥ सकल साज रतिराज सँग लै चरन धरो निज दुआर ॥३॥ तब बोली बृषभानु नँदनी जाउ नँद ग्रह तीर ॥ बिविध भाव मन हि मन संचति मुसिकात रति रनधीर ॥४॥ दोऊ ग्रहे कर गहें बलि बलि कैं हरखि चली चंद्रावलि ॥ काम खबरी रति लैं चली मनौं पहिरावति निज मालि ॥५॥ उत तैं जाइ नँद लाड़िलो इत तैं गोप कुमार ॥ पुलकति तन निरखति नैंननि करै घुंघट जोट जुहार ॥६॥ मोहन उत मुरली में उघटति नबल सखि कौ नाम ॥ एहि कलि कंठ कोकिला कूजे पूजे मन के काम ॥७॥ उत तैं धुँधरि करति गुलालनि इत पिचकाईन धार ॥ मनौं अरुन घन में झलकति है चपल चमकि सुढ़ार ॥८॥ एक सखि नब घन साँवल सौं कहि रस जिय की बात ॥ लै पधराइ चले मंदिर में जहाँ दामिनी दुति गात ॥९॥ पीय सौं मिलि सरस ससि बदनी करत भाँवते छेलि ॥ मनौं कलप सिंगार द्रुम पहिरे कनक बेलि रही झेलि ॥१०॥ मोहन पीय निज भुज अंतर लै डारौ कुँमकुम नीर ॥ मनौं राधिका नव दुति बिलसैं साँवल सुभग सरीर ॥११॥ पिय मुख कमल पराग लगाबैं जोति अद्भुत छबि होत ॥ सुधा सिंधु मनौं चंद

प्रगट भए परी कमल मुख जोत ॥१२॥ इंदु मुखि चोवा बिंदु लावैं पिय बदनार बिंद ॥ ब्रज जुबतिन कौं मन मधुकरि वे मनौं पीयौ मकरंद ॥१३॥ मन तब एके स्याम चंद कौं निरखेई ढिंग जाई ॥ ज्यौं ज्यौं किरन सुधा छबि बाढैं त्यौं त्यौं तृषा बढ़ाई ॥१४॥ जोरे भरति लाल जब देख्यो कोऊ दुरि हरि भरि जाई ॥ कोऊ पिचकाईन की छुटति हैं मींडति अंग बचाई ॥१५॥ कोऊ प्यारी उलटि जात है सरस रंग लै ग्वारि ॥ भरति ताप पनह तन लाल कौं पीय नहि सकत सह मारि ॥१६॥ भरति लाल एक भरे अंक में एक अंजन दे नैंन ॥ एकु चुंबति जाँऊ दुरि मुरि कै अपनों बदलो लैन ॥१७॥ पीय बने भाम दस दिस ठाड़ें देखि अन देखि री नारी ॥ जोरी गाँठि सब सुख निरखति है 'रसिक' सखी बलिहारी ॥१८॥

४६ राग धनाश्री हो हो होरी राधा खेलति नंद के लाल सौं ॥ ब्रिंदाबन खेलनि चली गज हस्ती छूटैं ढाल सौं ॥१॥ चोवा चंदन कुँमकुमा पिचकारी भरति गुलाल सौं ॥ चंद-बदनि मृगलोचनी ढ़फ बाजति नाँचति ताल सौं ॥२॥ स्याम राधिका जोरी बनी हो उरझि रहे बनमाल सौं ॥ इत राधा बानक बने, उत मोहन बने ग्वाल सौं ॥३॥ 'धोंधी' के प्रभु तुम बहु नाइक फगुवा देति खुसाल सौं ॥४॥

४७ राग धनाश्री गोपकुंवर लिये संग होरी खेले ब्रजनायक होरी ॥ इत ब्रज जुवतिजूथ मधि नायिका श्रीवृषभान किसोरी ॥१॥ मोहन संग डफ दुंदुभि सहनाई सरस धुनिजु बाजे ॥ बीच-बीच जुवति मनमोहन महुवरि मुरली राजे ॥२॥ संग स्याम मृदंग आवज झालर झांझ बजावे ॥ किन्नरी बीना आदि बाजे साजें गिनत न आवे ॥३॥ इत व्रजयुवति लिये कर राजें रतन खचित पिचकाई ॥ उन करकमल कुसुम नवलासी गावत गारी सुहाई ॥४॥ तब मनमोहन जुवतिजूथ पर विविध रंग बरखाये ॥ अति सुख सोंज फागकी लीने नव घन उनये आये ॥५॥ ललिता चन्द्रावलि मतो कर सुबल सने दे लीनो ॥ छलबल करि गिरिधर गहिबेको यह जु मतो मन कीनो ॥६॥ सखा भेद गिरिधर ही पाये भयो जुवति मन-भायो ॥ आंख आंजी गुंथी जु बेनी मृगनेनी भेख बनायो ॥७॥ फगुवाके गहने मनमोहन

मोतिनमाल उतारी ॥ बंसी झटक लई झुक प्यारी अधरन विलसनहारी ॥८॥ दीने छाँड आप भायो करि स्याम सखन में आये ॥ तब मोहन सरवर करिवेको बलदाऊ पकराये ॥९॥ तब हलधर बस जुवतिनके जु केसर कलस नवाये जोइ जोइ विधि अपनी जाके जिय तिहि तिहि भाँति नचाये ॥१०॥ कीनो बीच सुबल श्रीदामा दाऊ आन छुडाये ॥ फगुवा देन कह्यो मनभायो व्रजपति टेर सुनाये ॥११॥ तब व्रजराज बसन भूषन लिये जुवतिजूथ ढिंग आये ॥ अति आनंदवदन हरख तब दिये वसन मनभाये ॥१२॥ देत असीस सकल व्रजसुंदरी रसना नहीं लखी कोरी ॥ चिरजीयो मदन मोहन पिय स्यामा गौर स्याम सम जोरी ॥१३॥

४८ राग धनाश्री इत माधौं उत राधिका ॥नँद ललनाँ॥ खेलति जमुना तीर ॥ मोहन मूरति नँद ललनाँ ॥१॥ काहू के माँथे रोचनाँ ॥नँद॥ काहु के बहुत अबीर ॥ मोहन मूरति ॥२॥ मोहन माँथे अरगजा ॥नँद॥ गोपीन बहुत गुलाल ॥ मोहन ॥३॥ काहु के कर पिचकाईयाँ ॥नँद॥ काहु के सिर पाटिर ॥ मोहन ॥४॥ काहु के चोवा कुमकुमा ॥नँद॥ बूका बंदन धूरि ॥ मोहन ॥५॥ ढ़फ बाँसुरी सुहावनी ॥ नँद ॥ ताल मृदंग उपंग ॥ मोहन ॥६॥ गोकुल तैं गोपी चली ॥ नँद ॥ पहिरे दछिन चीर ॥ मोहन ॥७॥ सेस पताले मोहियो ॥ नँद ॥ मोहें चंदा सुर ॥ मोहन ॥८॥ जान अजान बिनति करें ॥नँद॥ 'आसकरन' बलि जाई ॥ मोहन ॥९॥ यह लीला कों दरस देहु ॥ नँद ॥ कृपा करो प्रभु हरिराम ॥ मोहन ॥१०॥

४९ राग धनाश्री कान्ह कुँवर खेलनि चले रँग भीनें हो ॥ संग सखा बलराम ॥ लाल रंग भीने हो ॥ भूषन बसन बनाई कैं रंग भीने हो ॥ सोभा सुख के धाम ॥ लाल रंग भीने हो ॥१॥ बनि ठनि निकसे अति बने रंग ठाढ़े सिंघ दुवार ॥ लाल०॥ स्याम सुभग अति राज ही ॥रंग॥ पूरन चंद ऊदार ॥लाल॥२॥ बाजे बहु बिधि बाज ॥ ही ताल मृदंग ढ़फ चंग ॥ बिच बिच मुरली सुर लिये हुलसत सब के अंग ॥३॥ सूनि कैं दौरि ब्रज वधू आँई नंद जू की पौरी ॥ तिन में तरुनी सिरोमनी राजति नबल किसोरी ॥४॥ सनमुख ठाड़ी लाल कैं गावति मीठी गारि ॥ मुख

पर अंचल दे हँसी हासि चितवन वर नारि ॥५॥ मोहन के चित रति बढ़ी खेलि मच्यों अति जोरि ॥ भरि लीये सुरंग गुलाल सौं फेंटन के दोऊ ओरि ॥६॥ मृगमद कुंमकुम घोरि कैं भरति कनक पिचकाई ॥ छिरकति तकि तकि प्यारी कौं चितवति चितहि चुराई ॥७॥ मुख पर चंदन डारि के ओहट फिरति हँसि लाल ॥ कोलाहल सब करत हैं हो हो बोलत ग्वाल ॥८॥ ये ऊन के वे ऊन ही के मह्यो चाहत पीय प्यारी ॥ छल बल सौं सबन सब तकि के पगन परत नर नारि ॥९॥ तब ललितादिक दौरि हे गहे अचानक कान्ह ॥ सबै मिली है सुंदरी पाए है जीवन प्रान ॥१०॥ निरखि हँसी मुख मुसकि कैं परसत बैन अघाई ॥ मोहन सौं ललिता कहे छाँडो करि मन भाई ॥११॥ बैंनी गूंथी माँग सौं भूषन सबै सिंगारि ॥ पहिरावे पट कंचुकि अँजन दीये सँवारि ॥१२॥ नील नलिन खंजन मृगी डारै उन पै वार ॥ अति अनूप नव नागरी भूले भवन नर नार ॥१३॥ चोवा मृगमद अरगजा छिरकति केसर घोरि ॥ छाये गगन गुलाल सौं अरुन घटा घन घौर ॥१४॥ बरखति अति अनुराग सौं स्यामा स्याम किसोरि ॥ पिप प्यारी मुख चंद के पीवत नैंन चकोर ॥१५॥ छाँडे मन जु मनाइ कैं पकरे फिरि बल घेरि ॥ जुबति भेष बनाई के पहिरावे पट फेरि ॥१६॥ नैंननि अँजन दे हँसी भले बने बल दाऊ ॥ छिरकति केसर घोरि कैं कहो कुंवरि कौं नांऊ ॥१७॥ इहि बिधि होरी खेलि ही बाढ्यो अति अनुराग ॥ सुधि कछू न समार ही प्रमुदित ब्रज बडभाग ॥१८॥ नवल लाल रसिक मनी गिरिधर प्रान आधार ॥ नैंननि कौ फल यह सखी निरखे नँदकुमार ॥१९॥

५० ❁ राग धनाश्री ❁ फगुवा देहो लला नातर उपरैना और पाग भरेंगी ब्रज अबला ॥ध्रु०॥ इक दिना ब्रज नार सिमिट चली फगुवा मांगनाँ ॥ मृगमद साख जवाद लीए कर गोप घनी घनाँ ॥ राधा प्रमुख सबै चलीं हो उपमा कही न जाई ॥ मनहु मत्त गयंद पै हो ज्यौं किरिनी चलीं धाई ॥ फगुवा देहो लला ॥१॥ किनहु कंचुकी लाल किनहु लै पीत बनाई ॥ तनसुख सारी साज माँग सेंदुर भराई ॥ नकबेसरि मोतीहरा हो किंकिनि नुपूर घोर ॥ नैननि में कजरा बन्यौं हो अरु सौंधे झकझोर ॥ फगुवा ॥२॥ गावति धावति

चली सबैं नंदराई की पौरि ॥ मन में मदनगुपाल गह्यौ चाहत भरि कोरी ॥ फागुन मास बसंत ऋतु हो मदन ब्यापत अंग ॥ झुंडन आई सबै हो खेलन हरि जू के सँग ॥ फगुवा ॥३॥ बाजत ताल मृदंग और मुख चंग उपंगा ॥ झाँझ झालरि पटह भेरि दुंदुभी सुरंगा ॥ बीना महुवरि प्रनव ढफ हो तूरी बंस रसाल ॥ और अधोटी सबद बर हो उघटत हे कठताल ॥ फगुवा ॥४॥ मोर मुकुट सिर बन्यौं बनी मुक्ता फल माला ॥ कुंडल मंडित गंड कुटिल भौंह नैन बिसाला ॥ पीतांबर कटि किंकिनी हो मुरली सबद रसाल कोलाहल सुनि द्वार पै हो पौरि निकसे नंदलाल ॥ फगुवा ॥५॥ उझकि इत उत ग्वालि तकत मोहन की घाते ॥ गहवे को छल धरति मनहू मोहि मदमाते ॥ सौंधे पिचकाई भरि हो अंचल ओट दुराई ॥ आसपास सिंघ द्वार पै हो रही गेल सब छाई ॥ फगुवा ॥६॥ बाढ्यौं अद्भुत झुंड राधिका मधि दुराई ॥ सब तरुनी तिलक हरचौ चाहति हरिराई ॥ तबहि तलमली नैन हरचौ हो ढिंग आई अकुलाई ॥ सखी परसपर सैन दे हो सिर रँग दीयौ ढ़रिकाई ॥ फगुवा ॥७॥ लिये अरगजा लाल जुबती मंडल मधि दौरे ॥ मनहु मदन मत्त गज तरुनी गन घेरे ॥ पट झीनों पहेचान मुख हो श्री राधा ढिंग लोल ॥ छूवत अरगजा ब्याज के हो कुच भरि ललित कपोल ॥ फगुवा ॥८॥ कोऊ कर अंचल गहे कोऊ पटुका झकझोरे ॥ कोऊ भौंम लै दाम नैन सौं नैना जोरे ॥ काजर हरद कपोल बर हो गावति धावति नारि ॥ स्यामा सनमुख आई कें हो भरि लीनें अंकवारि ॥ फगुवा देहो लला ॥९॥ में अंकवारो भरचौ करो जीय कौं तुम भायो ॥ भाँमिनि को अचरोट खैंचि काहु को उढ़ायौ ॥ मुरली पगीयाँ पीत पट हो आनि चंद्रिका मोर ॥ स्यामा अंग बनाव हीं हो हरि सिर गूंथी है डोर ॥ फगुवा ॥१०॥ कोऊ कर अंजन करे कोऊ लै माँग सँवारी रोरी बिंदुका भाल तिलक काजर बिंदुका री ॥ सारी सुरँग बनाई कैं हो बागो लियौ है उतारि ॥ प्यारी कौं पहिराव ही हो दै सिर मुकट सँवारि ॥ फगुवा ॥११॥ किन नकबेसरि दई किनहु मुक्ताफल हारा ॥ खुभी चौकी पदक पोति दुलरी व सुढारा ॥ बलय पहौंचिका मुद्रिका हो झांबे झूमक चार ॥ बर कंकन अरु किंकिनि हो पग नुपूर झनकार ॥ फगुवा ॥१२॥ कर जोरे कोऊ सखी कोऊ पट

गाँठि बनावे मंडल करि जु फिराइ सरस धमार हि गावे ॥ कुँवरि कुँवर विलसति अधिक हो कोक कला ब सुजान ॥ नव नागरि दुलहो भईं हो नव दुलहनि भए कान्ह ॥ फगुवा ॥१३॥ कोउ आलिंगन करे कोउ मुख चुंबत नीके ॥ लाल भुजा उर धरे करे भुज अंसन पीय के ॥ पीबत पीबाबति अधर मृदु हो कर मुख बीरी देत ॥ खंडित दसनन अरध फुनि हो अपुने मुख धरि लेत ॥ फगुवा ॥१४॥ सुनि आए सब ग्वाल सबै नाना रंग भीने ॥ अरगजा कुँमकुम नीर सरस सौंधे सँग लीनें ॥ फूलन माल गरे धरी हो अरु फुलेल धरचौ माथ ॥ गोद गुलाल बीरा मुखे हो धरि पिचकारी हाथ ॥ फगुवा ॥१५॥ तब बोले बलराम ग्वालि घेरो इक ठौरी ॥ ठौर ठौर तैं जाई रोकि रहो ब्रज की खोरी ॥ इक इक गहि डारियौ हो कुसुम रंग के माँझ ॥ इन जुबतीन में इक धरी हो जान न पावे साँझ ॥ फगुवा ॥१६॥ ओर सिमिट सब ग्वाल प्रथम पूजो बलदेवा ॥ रोरी हरद गुलाल करो याही की सेवा ॥ सौंधे कनक बेला भरे हो लै बल पै ढोरी ॥ तारी हाथ बजाई कैं मुख बोलत हो हो होरी ॥ फगुवा ॥१७॥ सुबल सुबाहु उठे बाँधि फेटा अरु दौरे ॥ केसर के सत कलस आनि जुबति पै ढ़ोरे ॥ मोहन पिचकाई लई हो चोवा चंदन घोर और सखीन की ओट के श्री भाँमिनी मुख दई छोर ॥ फगुवा ॥१८॥ सब पिचकाई भरौ करौ अब कैं एकु खेला एकही बेर सौंधे भरो तुम कान्ह अकेला ॥ छूटी एकु ही और सबै हो धार बिबिधि बिधि रँग ॥ घन जानौं बरखत मानौं अमृत हो चातक श्री नवरंग ॥ फगुवा ॥१९॥ लै गुलाल नंदलाल जुबती मंडल मधि दौरे ॥ सब सखियन में भाँम मूठि डारति मुख मोरे ॥ तेल गुलाल लगाई के हो हाथ पिछोडे कीन ॥ रसिक सिरोमनि साँवरे हो सबन के मुख भरि लीन ॥ फगुवा ॥२०॥ तब राधा अति चतुर हँसति मोहन ढिंग आई ॥ करी रसिली बात हेरी मुख रहे कन्हाई ॥ सैन दई सब सखियन सौं हो ढिग आई हरि वाई ॥ स्याम परे बस मैन के हो मुरली व लई है छिनाई ॥ फगुवा ॥२१॥ कान लागि कै कह्यौ सखी स्यामा की स्यामें ॥ तो तुम्हे मुरली देहुं नैकु पकरावौ रामे ॥ इतनौ कहत में और सखी हो चटक ही में पट मार ॥ पितांबर तब लै भजी हो मोहन रहे

निहार ॥ फगुवा ॥२२॥ मधुमंगल कहति स्याम हलधर पकरायौ ॥ सब गोपीन की घरुनी करो जीय को तुम भायौ ॥ कुँमकुम केसर कुसुम रँग हो हरद लगावत गाल ॥ इक आँखि आँजी सखी तब हँसी सकल ब्रज बाल ॥ फगुवा ॥२३॥ तब ब्रजरानी आई बीच कीनौं तिहिं औसर ॥ बिबिधि बसन परिधान हार दीने है नौसर ॥ पीतांबर मुरली लै हो दई स्याम के हाथ ॥ तब निकसी निज गेह तैं हो भरे जात ब्रजनाथ ॥ फगुवा ॥२४॥ इक उछारत फूल इक गुलाल उड़ावे ॥ उरप तिरप गति लेति इक पट तार बजावे ॥ सौंधे सौरभ नभ बढ़यौ हो धरनी अरगजा कीच ॥ ग्वालिनी मिलि उद्यम रच्यौ हो ब्रज गलीयन के बीच ॥ फगुवा ॥२५॥ तब राधा नंदलाल देखि रानी बिहँसानी ॥ करि आरती अरघ अंग अंग अति सुख सानी ॥ करि न्योछावर तौरि तृन हो परो सत्रू सिर धूल ॥ दुंदुभी देव बजाव ही हो बरखन लागे फूल ॥ फगुवा ॥२६॥ हरि जसु गावति चली सबै निज घर ब्रजनारी ॥ मदन गुपाल के सँग रंग भरि भींनी सारी ॥ देत असीस जीयौ सदाँ हो 'ब्रज जन' जीबन प्रान ॥ राज करौ वृषभानुजा हो सो गिरि धरन सुजान ॥ फगुवा ॥२७॥

धमार के पद राग जेतश्री

१ राग जेतश्री खेलत फाग संग मिलि दोऊ आनंद भरि पिय प्यारी हो ॥ नवल किसोर रसिक नंदनंदन नव वृषभान दुलारी ॥१॥ नवऋतु राज लताद्रुम फूले बरन बरन छवि न्यारी ॥ गुंजत मधुप कीर पीक कुंजत श्रवन सुनत सुखकारी ॥२॥ तेसेई सुभग गौर सामलतन बनी जोटइक सारी ॥ कमलनेन पर बूकामेलत हँसि सकुचत कुमारी ॥३॥ भरि अरगजा कनिक पिचकाई धांईसबे ब्रज नारी ॥ भरत भावते मदन गुपाले बढ्यो रंग अतिभारी ॥४॥ वोहोरच्यों मिलि दसपांचअली गोविंद भरे अकवारी ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा दियो सीस तें ढारी ॥५॥ प्रेम मगन मोहन सुख निरखत तन सब दसा बिसारी ॥ चत्रभुज प्रभु सुरनर मुनि मोहे गुननिधान गिरिधारी ॥६॥

२ राग जेतश्री खेलत बलि मनमोहना ऋतु बसंत सुख होरी

हो ॥ सखा मंडली संग लिये बलिराम कृष्ण की जोरी हो ॥१॥ भेरि मृदंग डफ झालरी बाजत करकठताल ॥ सबतन मदन प्रगट भयो नाचत ग्वालिनि ग्वाला ॥२॥ व्रजजन सब एकत्र भये घोखराय दरबारा ॥ इतवनी नवल कुमारिका उतवने नवल कुमारा ॥३॥ युवति यूथ चंद्रावली अपने यूथ श्रीराधा ॥ झूमक चेतबगावही बाढ्यो रंग अगाधा ॥४॥ बलि मोहन एकत्र भये सुबलतोक एक कोदा ॥ दुहूदिस खेल मचाइयो बाढ्यो हें मनसिजमोदा ॥५॥ चमकिचली चंद्रावली सुबलतोक पर आई ॥ उतहीकोपि प्यारी राधिका बलिराम कृष्ण परधाई ॥६॥ कमलन मार मचाइयो जुरेदुहूंनके टोला ॥ मधु मंगल पकरि कढेरियो बांधि गुदी में ढोला ॥७॥ बहोत हँसे बलि मोहना हँसे सकल व्रजवासी ॥ छोरेहू छूटेंनहीं परिगई गाढी पासी ॥८॥ हँसतहँसत सब आइयो गावति गारी सुहाई ॥ सेनाबेनी करिसबे बलिमोहन पकरेधाई ॥९॥ बलिजूकी आंखिजो आंजीयो पीयकी मुरली छीनी ॥ मन मान्यो फगुवालियो पाछें जायबह दीनी ॥१०॥ यह विधि होरी खेलही व्रज वासिन सब सुख पायो ॥ भक्तनमन आनंद भयो ॥ गोविंद यह जस गायो ॥११॥

३ राग जेतश्री रसिकफाग खेलेनवनागरी सोसर सब ऋतुराज की ऋतुआई ॥ पवन मंद अर्बिंद ओर कुंदबिगसेबिसदचंद पियनंद सुत सुखदाई ॥१॥ मधुपटोल मधुलोल संग संग डोलें पिकन बोल निरमोल श्रुतचारु गाई ॥ रचित रास सो बिलास जमुना पुलिन में सघन वृंदाबिपिन रही फूलि जाई ॥२॥ कनिक अंग वरुनीसुकरनी विराजे गिरिधरन युवराज गजराज राई ॥ युवती हंसगामी मिले छीत स्वामी कुनित वेनु पदरेनु वड भागी पाई ॥३॥

४ राज जेतश्री नंद कुंवर खेलत राधा संग जमुना पुलिन सरस रंग होरी ॥ नव घन स्याम मनोहरराजत स्यामा सुभग तन दामिनी गोरी ॥१॥ केसरि रंग कलस भरेबहु संग सखा हलधर की जोरी ॥ हाथ न लिये कनिक पिचकाई छिरकीं व्रज की नवल किसोरी ॥२॥ चीर अबीर उडावत नाचत कटिसों बांधि गुलाल की झोरी ॥ मगन भई क्रीडत सब सुंदरी प्रेम समुद्र तरंग झकोरी ॥३॥ बाजत चंग मृदंग अघोटी पटह झांड

झालरि सुरघोरी ॥ तालरवाब मुरलिका बीना मधुर शब्द उघटत धुनि थोरी ॥४॥ अतिअनुराग बढ्यो तिहिं ओसर कुललज्या मर्यादा तोरी ॥ मदन गुपाल लाल संग बिहरत देहदसा भूली भईबोरी ॥५॥ एक गहत फेंटा फगुवाकों एक करत ठाडी जुठठोरी ॥ एकजु आंखि आंजि कें भाजी एक बिलोकि हंसी मुख मोरी ॥६॥ एकनलई छिनाय मुरलिका देति गारि मोहन कों भोरी ॥ एक फुलेल अरगजा चोवा कुंकुम रस गागरि सिर ढोरी ॥७॥ विविध भांति फूल्यो वृंदावन कूंजत कीर खट पद पिकमोरी ॥ निरखत नेहभरी अंखियांसो योंचितबतनिस चंद चकोरी ॥८॥ थकेदेव किन्नर मुनिगन सब मन मथनिज मन गयो लज्योरी ॥ परमानंददास यासुखकों जाचत विमल मुक्ति पदछोरी ॥९॥

५ राग जेतश्री ऋतु बसंत के आग माहो प्रचुर मदन को जोर ॥ केलिरस झूमकरारेझूमकरा ॥ राधा गोरी सुंदरी सुंदर नंद किसोर ॥१॥ झूंडन मिलि गावत चलीं झूमक नंद के द्वार ॥ नृत्य करें ब्रज सुंदरी मोहि लियो मनमार ॥२॥ बिपिन गली सुंदर वनी ललित लवंगन मेलि ॥ अंबमनोहर मोरियो करन केतुकी बेलि ॥३॥ गोकुल गाम सुहावनो वृंदाबनसो ठोर ॥ खेलहिं ग्वालिनि ग्वारिया रसिक कान्ह सिरमोर ॥४॥ एक गोरी एक सांवरी एक चंदवदन सोहे बाल ॥ एकन कुंडल जगमगे एकन तिलक सुभाल ॥५॥ एकन चोली अधखुली एक रहे वंद छूटि ॥ एक अलकावलि उरधरें एक रही लटखूटि ॥६॥ एकनचीर जोखसिपरे एकन लटकतलूम ॥ एक अधर रसघूंटहि एक रही कंठझूम ॥७॥ ताल पखावज बाजही वीना बेनु रसाल ॥ महुवरि चंगजो बांसुरी बजावत गिरिधर लाल ॥८॥ चोवा चंदन कुंकुमा उडत गुलाल अबीर ॥ सुरनर मुनि मनमानियो व्योमविमाननभीर ॥९॥ सुरति समागम रस रह्यो मनहुं महागजमंत ॥ परमानंद प्रभु श्रीपति रसिक राधिका कंत ॥१०॥

६ राग जेतश्री फागु खेलै राधा गोरी श्री वृषभानु जु की पौरि हो ॥ नंदलाल वृषभानु नँदनी भली बनी यह जोरी हो ॥१॥ चारु, अबीर, गुलाल, लसत तन, बिच बिच राजति रोरी हो ॥ झख करदम हरि रहसि

भरे तब, केसर कुँमकुम घोरी हो ॥२॥ तन सुख चारु छींट छिरकति तन, डगमगात डोरी हो ॥ अंचल पट सोभित ऊरू कुच पै उपमा श्रीफल कोरी हो ॥३॥ स्याम सुभग के बाम अंस पै राजति नवल किसोरी हो ॥ नूपुर रुनति कुनित कटि मेखला निरखि मदन मति भोरी हो ॥४॥ रीझि-रीझि तब 'रसिक राई' कौं मृदु मुसिकनि मुख मोरी हो ॥ प्रेम गाँठि परि जू परसपर छुटत नहिं क्यौं हुँ छोरी हो ॥५॥

धमार के पद - शिवरात्री के दिन

१ राग ललित भोरही आयो मेरे द्वार जोगीया अलख कहे कहे जाग ॥ मोहन मूरति एनमेनसी नैन भरे अनुराग ॥१॥ अंग विभूतिगरें बिचसेली देखीयत विरह बिराग ॥ तनमन वारूं धीरज के प्रभुपर राखूंगी बांध सुहाग ॥२॥ तुम कोनकेवस खेले हो रंगीले हो हो होरियां ॥ अंजन अधरन पीक महावरि नेनरंगे रंगरोरियां ॥३॥ वारंवार जृंभात परस्पर निकसिआईं सब चोरियां ॥ नंददास प्रभु उहांई वसोकिन जहां वसेंवेगोरियां ॥४॥

२ राग काफी वाघंबर ओढें सांवरो हो यामें जोगी कोहुनरकोन ॥ध्रु०॥ संखशब्द ध्वनि सुनजित तितते घिरि आंई ब्रजनार ॥ वदन विलोकि कुंवरि राधे को बेठे हें आसन मार ॥१॥ हँसि बूझत वृषभान नंदिनी रावल उत्तर देह ॥ कारन कोन रूपतसीको वनतज ढूंढतगेह ॥२॥ कोन देसते आए हो रावल कहां तेरी मनसाजाय ॥ आपुन साधि मौन धरि बेठे दक्षन दिस बताय ॥३॥ सींगी पत्र विभूतिन बटुवा सिर चंदन की खोर ॥ मेरे जिय ऐसी आवति हे संकर विसरी गोर ॥४॥ चुटकी विभूत दई राधाकों चले हें वाघंबर झारि ॥ मनहरि लियो तनक चितवन में गोहन लागी सकुमारि ॥५॥ नगर नगर प्रति भवन भवन प्रति निशदिन फिरत उदास ॥ नयन चकोर भये राधा के हरि दरसन की प्यास ॥६॥ जतन जतन कर मनमोह्यो हो निरख नयन की कोर ॥ जगन्नाथ जीवन धन माधो प्रीति लगी दुहुंओर ॥७॥

३ राग सारंग मोहन मुनि हे आये हो ।। हो मेरे ललना सबको मनहरलीनों ।।ध्रु०।। रसमसीचाल चले अलबेली अंग चढाय विभूत ।। कानन कुंडल मुकुट विराजत पीतांबर ओढे कटिपूत ।।१।। दंड कमंडल गहीजपमाला आसन लीनों बनाय ।। कोटि जतन राधा पचिहारी मुख न बोलत मुसिक्याय ।।२।। जगजीवन जोगी हे आये अरस परस लिये ग्वाल ।। मानों कोटि उडुगण शशि जैसे ऐसे वने नंदलाल ।।३।। दृग दृग थेई थेई धुनि बाजे इत गोपी उतग्वाल ।। आनंद भई हें सकल व्रज वनिता बोलत वचन रसाल ।।४।। ब्रह्मादिक इंद्रादिक मुनिवर देखत कोटि तेतीस ।। श्री गोपीनाथ एक ख्याल बनायो सकल रचना को ईस ।।५।। जान्यों भेद वलि मोहन को मुख माड्यो सकल सुवास ।। जय जय कार करत सुरनर मुनि वरखत कुसुम अकास ।।६।। नवल किसोर कहां लो वरनो शोभा कही न जाय ।। सूरदास वलि लाल छबीले निगम निरंतर गाय ।।७।।

४ राग सारंग होरी खेले में भेख धरिके आयो लंगरवा जोगी ।। ब्रज जुबतिन के जूथ लै खेलत अति अनुरागी ।।१।। कांख कुबरी गुदी गुदरी तिलक छाप गुदी सेली ।। ब्रजनारी मधि राधा प्यारी देखत आई पहेली ।।२।। बोले नहीं सेननि समुझा वे अधर उरज पर चाहे ।। कर सों बताय कुंजन में चलिए अंक भरें दोऊ बाँहें ।।३।। ललिता अबीर लाई मुख माँड्यौ रोरी केसर ढोरी ।। गोपी सब मिलि गावें बजावें बोलत हो हो होरी ।।४।। चंचल नैन चिते चित चोर्यो मोहन मेदक रोरी ।। उठि लै आतुर संकेत कुंज में गोहन लागी गोरी ।।५।। मगन भए रस बस दोऊ आनन्द उरन समाय री ।। 'श्री विठ्ठल गिरिधर' ब्रज जुवतिन स्वांग मनाय री ।।६।।

५ राग सारंग होरी खेलै साँवरो मनमोहन जाको नाँउ ।। फागु सकल ब्रज रमि रह्यों रस भीजि रह्यो सब गाँउ ।।१।। नट भेष बनाई कैं हो बिप्र भए गोपीनाथ जिन कैं नैन कौतिक हारे ब्रज लरिका के नाथ ।।२।। नव तरुनी नव रूपवंत हरि जाकी बाखरि जात ।। चितवति अति अनुराग

सौं अरु कहति भेद की बात ॥३॥ गोपी कहति अहो बिप्र जू हम बूझति हैं तुम सौं ॥ हमारी प्रीति हरि सौं लागी कछु हरि हू की हम सौं ॥४॥ कहति हौं बाके जिय की तुम सौं नाहिन ताकौं हेत ॥ जो कछू करत तुमारे कारन हरि चाहति सदाँ संकेत ॥५॥ राधा मंत्र जपत चलै हरि जहँ कीरति वृषभानु ॥ कहि न सकत चाहत कह्यौं दानन मनि कन्या दानु ॥६॥ कर गहि ढफ नव लाड़िली हो गावति सखियन संग ॥ कहि 'भगवान हित राम राइ' प्रभु नैन की गति पंग ॥७॥

धमार के पद - राग काफी

१ राग काफी एरी सखी निकसे मोहनलाल ॥ खेलन व्रज में फागरी ॥ रंग हो हो हो होरियां ॥ एरी सखी घुमड्यो अबीर गुलाल ॥ मानो उनयो अनुरागरी ॥१॥ शोभित मदन गोपाल ॥ कटि बांधे पट सोहनों ॥ काछनी काछें लाल ॥ लालनिचोय रंगीमानों ॥२॥ मोर मुकुट छबिदेत ॥ बंक दृगनहँसि देखनों ॥ सब ही को मनहर लेत ॥ एनमेन मानो पेखनों ॥३॥ पट आबज सुरबीन अनाघात गतिगाजही ॥ ताल मृदंग उपंग रुंज मुरजडफ वाजही ॥४॥ घिरआईं व्रजनारि मृगनयनी गजगामिनी ॥ रोके हें सावरेलाल घनघेरयो मानो दामिनी ॥५॥ छिरकत पियनंदनंद ॥ त्रियपट ओट बचावहीं ॥ मानो घन पूरनचंद ॥ दुरनिकसें पुनि आवहीं ॥६॥ बने हें त्रियन के अंग छिरकछींट छबिछेलकी ॥ मानो फूली रंग रंग ॥ ललितलता जनुप्रेमकी ॥७॥ बढ्यो परस्पर रंग ॥ उमग उमग रस भरनमें ॥ निरख भई मतिपंग ॥ पीतांबर फरहरनमें ॥८॥ जब गहि रंगन भरे ॥ मोहन मूरति सांवरे ॥ हर हर हर हँसि परे ॥ मुनि मन व्हे गये बावरे ॥९॥ भई सरस्वती मतिबोर ॥ ओर खेल कहां लोंकहें ॥ रस भरे सांवलगौर ॥ नंद दास केहियरहें ॥१०॥

२ राग काफी एरी सखी निकसी वृषभान कुमारि होरी खेलन स्यामसों ॥ रंग हो हो हो हो होरियां ॥ एरी सखी उडत अबीर गुलाल कटिपिच काई भामसों ॥१॥ शोभित राधाबाल सब सुंदरिनमें सोहनी ॥

शोभित लहेंगालाल मोहन को मनमोहनी ॥२॥ झूमक सारी पीत अंगिया कुचन पर राजही ॥ सोहे नकवेसर आड पायल रुनझुन वाजहीं ॥३॥ आभूषण बहुसार मन्मथ कोटिल जावही ॥ राधा वदन चंददेख युवती नक्षत्र छबि पावही ॥४॥ आवत बल नंदनंद चहुंओर डफ वाजही ॥ उडत गुलाल सुरंग सुबल तोक मध्य्य गावहीं ॥५॥ केसर के भरमाट पिचकाई इत उतचली ॥ चोवा मृगमद भान बलमोहन के मुखमली ॥६॥ सबको मनहर लेत गजगति चाल चलनमें ॥ ज्यों घन पूरनचंद राधा सखियन दलनमें ॥७॥ फूलदंडागहि हाथ मारत सबहिन भालसों ॥ ज्यों मृगसेना देख लपटी स्यामत मालसों ॥८॥ घेर लिये नंदलाल घनघेर्‍यो मानो दामिनी ॥ मुरली पीतांबरछीन चली ललिता गजगामिनी ॥९॥ चंद्रावलि चलीजाय दोऊ दृगन अंजन कियो ॥ पुष्पन गेंदचलाय दोउन मुख बीरा दियो ॥१०॥ बाजत ताल मृदंग मुरली वेणु सुहावनी ॥ हो हो हो सब बोल बलमोहन कोनचावनी ॥११॥ झूमक खेल मचाय सब हिन कों बैठारकें ॥ वंसलिये कर धाय सखादीये सब मारकें ॥१२॥ दुंदुभी देव बजाय फूलन वरखत आयकें ॥ सुर ललना भईचूर श्रीमुख देखें जायकें ॥१३॥ देवमुनी मनपंग खेल फाग मनमेलहे ॥ छबि देखत कृष्णदास खेल फाग को कहा कहे ॥१४॥

३ राग काफी खेलति स्याम सुजान सखा सँग राजे हो ॥ ज्यौं व प्रभाकर रवि सुकमल बिराजें हो ॥१॥ उत बनी नवल किसोरी सखी संग सोहनी ॥ इक तै इक सरूप स्याम मन मोहनी ॥२॥ बाजति वर ढफ झांझि परम मन भाव ही ॥ गावत गारी धमारि प्रेम उपजाव ही ॥३॥ छिरकति केसरि नीर अबीर उड़ाव ही ॥ कमलासी नवलासी लीये तीय धाव ही ॥४॥ गह्यो अचानक आई लला ब्रजराज के ॥ करन लगी मन भायो डारि डर लाज कें ॥५॥ इक धरे भुज अंस बनी अति भाँमिनी ॥ इक रही उर लागि मनौं घन दामिनी ॥६॥ लै करि केसर अंग प्रिया ससि प्रिया मुसिकाय कैं ॥ छिरके हें मोहन लाल हीयें हुलसाइ कें ॥७॥ बोलि उठी हो होरी सखी सब आई कें ॥ मगन भये जे कृष्ण ध्यान उर लाई कें ॥८॥

४ राग काफी श्रीगोकुल राजकुंमार लाल रंग भीनेहें ॥ खेलत डोलत फाग सखा संग लीनेहें ॥१॥ चित्र विचित्र सुदेस सबे अनुकूलेहें ॥ राजत रंग बिरंग सरोजसे फूलेहें ॥२॥ एकनके करकंकण जेरी जरायकी ॥ एकन के पिचकाई सुहेम भरायकी ॥३॥ कुंकुम घोर भरें घट हाटिकके घने ॥ पंकज पुंज पराग सुमृगमद सोंसने ॥४॥ ढोलकी ढोल निसान मुरज डफ बाजहीं ॥ मेनके मेघ मानो रस वृष्टि सों गाजही ॥५॥ धुनि सुनकें अकुलाई चली नव नागरी ॥ एकते एक महागुण रूपकी आगरी ॥६॥ राधाके संग सुहाई अनेक सहेली हें ॥ कामके काननकी मानों कंचन वेली हें ॥७॥ भेष बनायेकी भांति न जात वखानी हें ॥ जेती तेती उपमा मनमें बिलखानी हें ॥८॥ कोयल कूरकहा सुर भेदहि जानही ॥ कुंजर कायर कोन कहा गति ठानहीं ॥९॥ केरनकोजुसुभाव पर्‍यो अति कंपको ॥ हेमलियो हठनेम सुपावक झंपको ॥१०॥ खंजन कंजसों लागिरहे गति लासतें ॥ के हरिकंदर मंदिरमें दुर्‍यो त्रासतें ॥११॥ पंक में पंकज मूलरह्यो छिपि लाजतें ॥ नित्य प्रकास विलास मिट्यो द्विज राजतें ॥१२॥ ताल पखावज आवज बाजे जंत्रहें ॥ गान मनोहर मेनके मोहन मंत्र हें ॥१३॥ सो इतकी उतकी धुनि लागे सुहाई हें ॥ मानो अनंगके आंगन बाजे बधाई हें ॥१४॥ गोकुल गोरिन खोरिन खेल मचायो हे ॥ रंग विरंग अबीरसों अंबर छायो हे ॥१५॥ लाल गुलालकी धूंधरमें मुखच्यों लसें ॥ प्रात पतंग प्रभाविच कंचन कंजसें ॥१६॥ दृष्टि करी पिचकारी भरी अनुरागसों ॥ जाय लगी व्रजराज लला बडभागसों ॥१७॥ उज्वल हास कपूरकी धूर उडावही ॥ सुंदर स्याम सुजानसों नयन जुडावही ॥१८॥ गावत गारिन नारि सबे झुक प्रीतिकी ॥ बात बनावत आपनी आपनी जीतकी ॥१९॥ घिरिआईं अबला सब लाल गोपालसों ॥ हेमलता लपटी मानो स्याम तमालसों ॥२०॥ कोऊ गहें पटपीत कोऊ वन दामकों ॥ कोऊ निसंक व्हे अंकभरे घनस्यामकों ॥२१॥ स्यामके सीसतें स्यामाजू केसरढोरी है ॥ दे करतारी कहें सब हो हो होरी है ॥२२॥ एसोई ध्यान सदा हरिको जीय जोरहे ॥ तोपें गदाधर याके भागिकी को कहे ॥२३॥

५ राग काफी श्रीवृषभान कुंवरि महारंग भीनी हें ॥ सखी स्वरूप

अनूप सबे संग लीनी हें ॥१॥ खेलत फाग सुहाग भरी अनुराग हें ॥ नंद के लालसों बाल वडीवड भागहें ॥२॥ कंचन वेलि सुकोन कहा द्युति दामिनी ॥ चंद कहा अरविंद को काम की कामिनी ॥३॥ खंजन मीन आधीन करी कदली जहां ॥ केहरि हंस प्रसंस करें अति से तहां ॥४॥ कोकिला कुंद कपोत सुकीरन कोगिनें ॥ बिंब बंधूक प्रवाली वारी वारनें ॥५॥ वास सुवास बने सु बने रंग रंग हें ॥ हेम मणि खची है रची भूषण अंग हें ॥६॥ सोंधेकी सरसाई कहां लोंकही परे ॥ गुंजत हें अलि पुंज अंग अंग उपरे ॥७॥ दुंदुभी ताल मृदंग बाजे बजावहीं ॥ ले रसरीतिसों प्रीतिसों चाचर गावहीं ॥८॥ वेसुन सुंदर स्याम सखा संग आयेहें ॥ झीने सुगंधसो भीने बागे बनाये हें ॥९॥ देखत दोरी किशोरी भरोरी भरो भनी ॥ रीझीहें रूप निहार सनेहसों सनी ॥१० ॥ सोंधे भर पिचकारी जरीनगहेमसों ॥ छबिसों छोडी छबीली छकीहे प्रेमसों ॥११॥ कंचनकी जु कमोरी सो केसरसों भरी ॥ डारति हें पिचकारी सखी सबहें खरी ॥१२॥ भामकों स्याम चलाई गेंदुक फूलकी ॥ आय लगी उरमांझके कामके मूलकी ॥१३॥ कंज पराग कपूरकी धूरि गोपालकें ॥ लावत गालसों बाल लगी उरलालकें ॥१४॥ आंधी करी हरि वीर अबीर गुलाल हें ॥ धूंधरमें झकझोर टूटी उरमाल हें ॥१५॥ आई झुंडन झूमकें घूमके वारकों ॥ फूल छरीवधरी उर कंचन की मारकों ॥१६॥ यह रस श्रीगिरिधारी की प्यारी को गानहें ॥ श्रीविट्ठल गिरिधरसो जीवन प्रान हें ॥१७॥

६ राग काफी तृभंगी मोहन मन हरचो हो ॥ सब व्रजजन सुख देन ॥ध्रु० ॥ घर घर तें बनि बनि व्रज वनिता चली हें नंददरवार ॥ देखन रूप मदन मोहन को कीनो हे प्रेम विस्तार ॥१॥ तन तन सुख की सारी पहरें अतरोटा छवि देत ॥ नील कंचुकी अति राजत हें कसंबी फूल समेत ॥२॥ रत्नजटित राखरी विराजत वेनी सो छवि देत ॥ कनिक खंम पर चढ्यो भुजंगम जानों अमिके हेत ॥३॥ विधि वांहन वखमांग विराजत सीस फूल की कांति ॥ करनोटी अरु करन फूल मानो शशि उडुगन की पांति ॥४॥ मृगमद आड ललाट विराजत विच वंदनको बिंदु ॥ कही न जाय

कछु एसी शोभा मनहुं राहु पर इंदु ॥५॥ पंकज लोचन ऊपर भृकुटी मनहुं काम के बान ॥ छूटत नहीं आप बस राखे मदन रायकी आन ॥६॥ नयनन न अंजन खंजन मोहे चंचलता थके मीन ॥ चपल चितवनी मृग मोहे पुतरी कमल आधीन ॥७॥ नासा बेसर जल सुतराजे कहिये कहा बनाय ॥ मानो चंद निज बंधु जानिकें लीनो निकट बुलाय ॥८॥ अधर सुधा मुख मधुरी वानी मुसकनि बरखत फूल ॥ दसन तडित के बीज बयेहें मध्य सुधा के कूल ॥९॥ चिबुक चिन्ह एसे देखियत हें मधुकर सुत जेसें होय ॥ करि मधुपान प्राण सुखदीनों रह्यो कमल ढिंगसोय ॥१० ॥ मुक्तामाल चौकी हमेल खगवारो दुलरी पोत ॥ कंठ पदिक सरी जगमगात मखतूल जामें जोत ॥११॥ चार चार चूरी रही पोहोंची खुभि परवरा सु घाट ॥ कर पल्लव मुदरी अति राजें बाजूबंद भरे पाट ॥१२॥ क्षुद्र घंटिका कटितट राजें सप्तसुरनकल वाज ॥ आतुर व्हे आये धाये सब मनहुं मत्त गजराज ॥१३॥ गजगामिनि भामिनि अति प्रमुदित पग नूपुर झनकार ॥ मानो मराल मंडली शोभित रह्यो नरति अहंकार ॥१४॥ सकल सिंगार किये व्रजवनिता उपमा कही न जाय ॥ कोटि कोटि राकेश मानो प्रगट भयें हें आय ॥१५॥ कोकिल बेन सकल व्रज सुंदरि करत मधुर स्वर गान ॥ मानो एकचट सार पढी हें घट बढ परतन तान ॥१६॥ चावा चंदन ओर अरगजा साख गुलाल अबीर ॥ नब मटुकी भर केसर घोरी निरमल यमुना को नीर ॥१७॥ छिरकें जाय गोपाल बाल सब बाढ्यो मन आनंद ॥ गावत हसत करत कौतूहल राजत श्री नंदनंद ॥१८॥ दुहुंदिसते बाजे वाजत हें मुरली चंग उपंग ॥ रुंज मुरज डफ झांझ झालरी वाजत मधुर मृदंग ॥१९॥ सब सखियन मिल मोहन पकरे छांडे आंखि अंजाय ॥ तब तो वसनहीं हरे अब दाव परयो हे आय ॥२० ॥ मुख मांडत ओर आंखि आजतहें राजत सुभग सुदेस ॥ देखत रूप मदन मोहन को होत प्रेम आवेस ॥२१॥ ताल घेर गायन गायें गंधर्व से गुनी अपार ॥ मोहन रीझ देत पीतांबर राधा उर को हार ॥२२॥ हरिनारायण फगुवा दीनों मेवा बहुत मंगाय ॥ गावत चलीं सकल व्रजवनिता स्यामदास बल जाय ॥२३॥

७ राग काफी त्रिभंगी मोहन रंग भरे हो ॥ रंग भरे खेलति फागु बिलास ॥१॥ होरी डाँडौ रोपन कों मिलि चले सखा लिए संग ॥ बाजत धौसा भेरी झालरी आबज ताल मृदंग ॥२॥ ढोलक ढोल किसांन किन्नरी झांझि और कठताल ॥ कर ढफ लिए बजावत गाबति किलकत नाँचत ग्वाल ॥३॥ फैंटन भरे गुलाल सुरंग रंग उड़वत विमल अबीर ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा कलस भराए बलबीर ॥४॥ एकनि पै बीरा भरि ओरी एकनि पै कुसुमनि हार ॥ एकु कर लिए गेंद बकुलन की करत परसपर मार ॥५॥ जाय चोहटे होरी कौ आरोपन कियौ हैं गुपाल बिधि सों द्विजन सों पढ़ाई मंत्र करि धुनि पहिरावत माल ॥६॥ इहि बिधि करी पूजा होरी की, ब्रज जन मन आनंद बरखत ॥ पुहुप देब गन उचरत, जै-जै गोकुल चंद ॥७॥ सुनि कुलाहल लरिकन कौ उठि धाई सब ब्रज नारी ॥ झुंड झुंडन जुरी आँई हो देति भाँमती गारी ॥८॥ नवसत साजि सिंगार कनक तन बरनि सके कबि कौन ॥ अंग-अंग रूप सुधा की सीमा देखत लाजत मौन ॥९॥ देखि ग्वाल सब मतौ मत्यौ मन जुबती जूथ पै दौरी ॥ हो हो हो करी कनक कलस भरि री ढोरी है केसरि घोरी ॥१० ॥ तब गोपी अति कोपी बोहर्यौ सिमिटि सबै इक ठौर ॥ करी धूंधरी ललिता उठि धाई पकरे हैं नंद किसोर ॥११॥ झटकत पीत बसन कटि ते कर मुरली लई छिंड़ाई ॥ गूंथि स्याम सिर बैंनी बनावत काजर नैन अंजाय ॥१२॥ एकु लाल कौ अंक भरति है एकु जु चुंबन देति ॥ एकु अधर रस पान करत हैं अति दुर्लभ सुख लेति ॥१३॥ मनमोहन कौ बागौ लै श्री राधा कौं पहिराई ॥ स्यामा के आभूषन स्याम को सजि सब लेति बलाई ॥१४॥ गाँठि जोरि मुख माँडि कुंमकुमा फगुवा लियौ मँगाय ॥ इहि बिधि फागु खेलि प्रमुदित मन बहुरी आपुने घर आय ॥१५॥ आरति करति जसोदा मैया राई लौन उतारि ॥ बिबिध भाँति के बसन देत हैं बारि न्योछावरि डारि ॥१६॥ यह सुख श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल चरन कृपा बिनु नाँहि ॥ नँद नंदन की या छबि पै 'दास' वारने जाँहि ॥१७॥

८ राग काफी मन मोहन ललना मन हर्‌यो हो ॥ हर्‌यो मन

सकल घोष सिरताज ।। ध्रु० ।। गृह गृहतें सुंदरि चली देखन व्रजराज कुमार ।। निरख बदन बिथकित भई हरिठाडें सिंघ दुवार ।।१।। डिमडिम पटह झांझ डफ बीना मृदंग उपंगन तार ।। गावत चेत सुबल श्रीदामा बाढ्यो रंग अपार ।।२।। रत्न जटित पिचकाईं कर लियें छिरकत घोख कुमार ।। मदन मोहन पिय अति रसकमाते कछु बन अंग सह्मार।।३।। इत राधा प्रभृति चंद्रावली ललिता गोपि अपार ।। उत हलधर मोहन दोऊ भैया खेल मच्यो दरबार ।।४।। शिथिलित कटि तट बसन मेखला उरगज मोतिन हार ।। बिथुरी अलक बदन छबि राजत गलित कुसुम सिरभार ।।५।। मोहन प्यारी सेनदे हलधर पकरे जाय ।। आपुन हसत पीतपट मुखदे आये हें आंखि अँजाय ।।६।। बहोरच्यों सिमटि सकल सखियन मिल मोहन पकरे धाय ।। अधर माधुरी पीबत पिबाबत मुरली लई हे छिनाय ।।७।। परिवा सिमिटि सकल व्रजबासी चले जमुना जल न्हान ।। बार कुंवर नंदरानी हो देत बिप्रन बहु दान ।।८।। द्वितीया पाट सिंघासन बैठे छत्र चवर सिरताज ।। राजत सभा सहित श्रीदामा बल बल बल युवराज ।।९।। स्याम सुभग तन अति राजत हें अरगजा पीत सुवास गोविंद प्रभु पर सकल देवता बरखत कुसुम अकास ।।१०।।

९ राग काफी सलोनी स्यामा मन हरचो हरचो मन रसवस कीने नंदकुमार ।।ध्रु०।। सब युवतिन में राजत आज भली वृषभान कुमार ।। नख सिखलों अंग अंग प्रतिमानो उदयो कोटि कमार ।।१।। चरण कमल वर विमल कंचन के नूपुर के झनकार ।। मानो हो मराल बालकी मंडली बोलत डोलत चार ।।२।। कदली खंब जंघ जुग मानो मद गयंद अतिचार ।। केहरि कटि किंकिणी हाटक तन पहरें नील पटसार ।।३।। नीवीनाभि त्रिवली रोमावलि कंचुकी कुंच बिचहार ।। मानो सुभग सुमेर अंगतें धसीहें गंगद्वे धार ।।४।। कर पहोंची फुंदना मुद्रावलि कंकन चुरी सुढार ।। राजत अति फल फूल भरीद्वे मोनो कल्पतरू डार ।।५।। वदन इंदु अरविंद नयन भय मनहुं मधुप गुंजार ।। ताटंक श्रवण सरस नकवेसर बिंदु चिबुक सिंगार ।।६।। हसन दसन द्युति अधर बिंब छबि मृगमद तिलक लिलार ।। रसना एक छबिसरसिसीसछबि मानो तरंग निधिवार ।।७।। अपनी बुद्धि हरिहेत

विरंचि रचि जनु राधाजु नारि ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर निरखत वदन निहारि ॥८॥

१० राग काफी मोहन की मुरली मन हरचो हो ॥ हो मेरे प्यारे जब तें सुनि है मधुर धुनि कान ॥ ध्रु० ॥ प्रथम प्रारंभ निकसि सखी ब्रजते ब्रिंदाबन की भूमि ॥ ता पर केलि करत नँदनंदन ललित लता रही झूमि ॥१॥ तेसौई रितु बंसत प्रगट्यौ ब्रज सबहिन के जिय फूल ॥ जाग्यौ मदन देखि कुसुमावलि भँवर भयौ मन भूल ॥२॥ श्री ब्रजराज सखी सँग लीने राजत जमुना तीर ॥ उत राधिका झुंडन अपने सों गावत गहर गँभीर ॥३॥ मोर मुकुट बनमाल बिराजत उर पीतांबर अंग ॥ सुनि सजनी गिरिधर नहीं चितवत लज्जित कोटि अनंग ॥४॥ बाजत तहाँ मृदंग ताल बीना श्री मंडल डफ ढोल ॥ खेलत फाग, कान्ह हो हो कहि नाचत करत कलोल ॥५॥ लिये ग्वाल हाथ पिचकारी तकि-तकि करत हैं घात ॥ भिजवत चीर गात गोपिन के रीझि स्याम मुसकात ॥६॥ दुचित भये जब ही हरि नागर राधा दीनी सैन ॥ पकरे आय अचानक सखियन आंजि लिये दोऊ नैन ॥७॥ लियौ छीन पीत पट बाँसुरी तारी दै-दै नचाय ॥ एसे सुत 'जन हरिया' के प्रभु फगुवा दियौ है मँगाय ॥८॥

११ राग काफी गोकुल को जीवनि मन हरचो हो सखी री, खेलति होरी फाग ॥ ध्रु० ॥ दुहुँदिस रंग बढ्यौ अति भारी सोभा कही न जाई ॥ नौंचत ग्वाल करति कुलाहल सुरँग-गुलाल उड़ाई ॥१॥ लै लै करन करन पिचकाई केसरि कलस भराई ॥ चोवा साख जवादि कुँमकुमा गोरा मेद मँगाई ॥२॥ सनमुख ह्वै छिरकत गोपिन कौं ग्वाल सबै सतराई ॥ दीठि बचाई आई ललिता तब पकरे हलधर धाई ॥३॥ अपने मन कौं भायौ करि कैं छाड़े है तब जाई ॥ पिय तन देखि रही ब्रज बनिता आनँद उर न समाई ॥४॥ दुंदुभि ढोल पखावज आबज बाजत ढफ सहनाई ॥ बैंनु रबाब किन्नरी महुवरि मुरली मधुर बजाई ॥५॥ सब समाज ले कै घर आए प्रफुल्लित भए नंदराई ॥ करि आरति जसुमति अति आदर सौं आतुर सनमुख आई ॥६॥ इंद्रादिक सनकादिक संकर कुसुमन वृष्टि कराई ॥ यह जोरी

अविचल या जग में 'रामदास' बलि जाई ॥७॥

१२ राग काफी श्रीराधा नागरि मन हरच्यो हो हरच्यो मन सकल घोख सुखदेन ॥ ध्रु० ॥ मोंहन तेरी प्राण प्रिया को वरनों कहा शृंगार ॥ जो तुम मेरो आदि अंतलों मानो यह उपकार ॥१॥ चंद्रमुखी भ्रूँह कलंक विच चंदन तिलक लिलार ॥ मानो वेनी भुजंग के चांपे स्रवत सुधाकी धार ॥२॥ नयन मीन आनन सरोवर में परत हें पलकनजार ॥ मानो करण फूल चारचों के रवकत वारंवार ॥३॥ वेसर बनी सुभग नासा पर मोती सजल सुढार ॥ मानो तिल प्रसून सूक्षम शशी द्वेदिस बूंदतुसार ॥४॥ सुठ सुठोन ठोडी पर लोनो लीला यह आकार ॥ चुवत चुवत अधर रस मानो पर गयो चिन्ह मझार ॥५॥ कंठसरी विच पदिक विराजत यों राजत उरहार ॥ दहनावत देत धूतारे मानो नक्षत्र की माल ॥६॥ कुचवर कुंभ सूंढ रोमावलि नाभीसरसि अनुहार ॥ मानो पानी पीवत सै सब तहां जोवनगज मतवार ॥७॥ खमकि बने कंचन बिजायठे शोभा भुजन अपार ॥ फोंदा सुरंग फूल फूले मानो मदन विटप की डार ॥८॥ छीन लंकनीवीकटि के हरि यों राजत व्योहार ॥ मोरबांध मानो बेठ्योदुले मन्मथ आसनमार ॥९॥ युगल जंघजे हरि जरायकी पग नूपुर झनकार ॥ चलत हंस गति राजकिशोरी अतिनितंबके भार ॥१० ॥ छटक रह्यो लहेंगा गुलगजको मिलतन सुखकी सार ॥ सूरदास स्वामिनी के ऊपर भ्रमर करत गुंजार ॥११॥

१३ राग काफी मोहन के खेलत रंग रह्यो हो श्री राधा गिरिधर खेलत फाग ॥ध्रु० ॥ खेलत चलत करत अतितरकें छिरकत पिय पें धाय ॥ खेलि चली जोवन मदमाती अधर सुधारस प्याय ॥१॥ वागे दुहुं दिस सरस विराजत राजत कंचन माल ॥ इते रंग रंगीली राधा उते नंदजू के लाल ॥२॥ इतलिये कनक लकुटिया नागरि उत हरि ओढन साल ॥ झुंडन जुर चहुंदिसते आईं गावत गीत रसाल ॥३॥ मारलगी तब उलटि चलीहें वेनीहले चहुं अंग ॥ मानो इंदु के वदन सुधा पर उडि उडि परत भुजंग ॥४॥ खेलदगाको जिनकरो लालन कें लागेगी चोट ॥ मोहन मूरति सांवरी राखोंगी अचरा की ओट ॥५॥ एकजु आई आन गामते सुंदर चतुर सुजान ॥ यह ढोटा

माई कोन गोपको मारत मोहन बान ॥६॥ झांझ भेरि दुंदुभी पखावज ओर आवज डफताल ॥ मदनभेरि ओररराय गिडगिडी बिच बिच बेनु रसाल ॥७॥ यमुना कुल मूल बंसीबट गावत गोप धमार ॥ लेले नाम गाम बरसानों देत परस्पर गार ॥८॥ खेलें फाग प्रेमसों मोहन फगुवा दियो मगाय ॥ हरिनारायण प्रभु सोभा बाढी स्यामदास बल जाय ॥९॥

१४ राग काफी खेलत मोहन रंग रह्यो हो ॥ लाल माई सुंदर सब सुखरास ॥ ध्रु० ॥ स्याम संग खेलन चली स्यामाजू सखियन जोर ॥ अबीर गुलाल कुंकुमा केसर बहु चंदन घटघोर ॥१॥ फूलन की गेंदुक नवलासी कनक लकुटिया हाथ ॥ धायगही ब्रज खोरि राधिका कोटिक युवतिन साथ ॥२॥ उतते हरि आये जब हो हो बोलत ग्वालन संग ॥ कान परी सुनियें नहीं बहु बाजत भेरि मृदंग ॥३॥ पहलें सुधि पाई नहीं अब घिरेहें सांकरी खोर ॥ अब हलधर उलटो कहा तुम धावो ग्वालन जोर ॥४॥ भरत धरत भ्राजत राजत गेंदुक नवला सिनमार ॥ बसन रसन छूटत न संभारत टूटत मुक्तन हार ॥५॥ उडत गुलाल अबीर कुंकुमा जुरि आईं सब वाम ॥ गयो हे गुलाल नयन कर मींडत गहि पाये सखि स्याम ॥६॥ मोहन पिय इकले करि पाये चहुंदिसते आईं घेरि ॥ बोलोजू अब आनि छुडावे बलिभैया देहुं टेर ॥७॥ आज हमारे बस परेहो भले होतो जाउ छुडाय ॥ केबल छूटो आपने के जसुमति माय बुलाय ॥८॥ एक श्रवन में कहि कछु भाजत एक भरत अंक वार ॥ एक निहारत रूप माधुरी रही अपन पोहार ॥९॥ एक बनाय देत बीरी कर पल्लव छुवत कपोल ॥ वल्लभ युवती बड भागिनि हरि वस कीने बिन मोल ॥१०॥ एक उठावत बदन चिबुक गहि हम तन स्याम निहार ॥ एक नयन कीसेन मिलावत वेनन देत बगार ॥११॥ तब तुम बसन हरे हमारे कीने अनेक उपाय ॥ सब तुम नगन करी हतीं हम छोडेंगी तुमहि नंगाय ॥१२॥ आंखि दिखावत हो कहा तुम करहो कहा रिस्याय ॥ हम करिहें अपनों मन भायो छांडेंगी तुमहि नचाय ॥१३॥ एक गहे कर फेंट एक पीतांबर लियो हे छिनाय ॥ राधा हसत ओटभी ठाडी सेनन देत बताय ॥१४॥ उडत गुलाल अरुण भयो अंबर छबि छाई मानो

सांझ ॥ राधा प्रगट करें नहीं मुखचंद नीलांबर मांझ ॥१५॥ हरि अपने छलबल सों घूंघट पटकीनो दूर ॥ हसत प्रकास होत चहूंदिसते सुधा किरन भरपूर ॥१६॥ हसि हसि कहत लाल सबहिनसों आभूषण मेरे लेहु ॥ नासा को मुक्ता हों देहूं पीतांबर मेरो देहु ॥१७॥ कहो कहा फगुवा देहो तुम बोलो सांचे बोल ॥ केहमसों हा हा करो के देहु श्रीदामा ओल ॥१८॥ मुख की कहत सबे झूंठी सी मन में अधिक सनेह ॥ कूट करेंगे बलभैया तुम हमहि जान किन देह ॥१९॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो तब मची हे अरगजा कीच ॥ व्रजनारी कुमुदिनी फूली हरि शशि राजत बीच ॥२० ॥ देखत शोभा सुख संपति की मनमें यह विचार ॥ व्रजनारी क्यों न भई यों कहत सकल सुर नार ॥२१॥ काम कोटि ओर भाम कोटि कोटि रमा रहि लाज ॥ रोम रोम प्रति कोटि कोटि शशि सुधा किरण बहु भ्राज ॥२२॥ अष्ट सिद्धि नव निधि व्रजवीथन डोलत घर घर द्वार ॥ सदा वसंत रहत वृंदावन लता लता द्रुमडार ॥२३॥ जुगल किशोर चरण रज याचूं सरस धमारहिं गाय ॥ मदन मोहन की या छबि ऊपर सूरदास बल जाय ॥२४॥

१५ राग काफी खेलत जाके रंग रह्यो हो व्रजवासिन संग फाग ॥ ध्रु० ॥ वीना ताल मृदंग झांझ डफ वाजत वंश रसाल ॥ गावत गिरिधर रुचि उपजावत विवश भईं व्रजबाल ॥१॥ लाल गुलाल लिये ओलिन में बहुविध केसर घोरि ॥ मोहन हाथ कनक पिचकाई क्रीडत व्रज की खोरि ॥२॥ मधु मंगल श्रीदामा तुमहुं होहु त्रियन की ओर ॥ जाके खेलत सुख उपजत हे यों कह्यो नंदकिशोर ॥३॥ गारी देंहि जसोदा कों सब प्रेम प्रीति रससान ॥ यह छबि फवीजु कहां लगि वरनें बुधि थकित अनुमान ॥४॥ गोरे नंद जसोदा गोरी कान्हर कोन गुन स्याम ॥ प्रथमही न्हाय जसोदा बैठी देखे हें वृषभान ॥५॥ हलधर कह्यो भुजा ऊंची कर कारे जो वृषभान ॥ कीरति कहो कोन सों जाई राधा रूप निधान ॥६॥ वहोरच्यो सिमिटि सकल व्रज सुंदरि वेनी गुही बनाय ॥ मांग संवार त्रिया से कीने पचरंग पाग छिनाय ॥७॥ श्रीराधा चोली पहराई ललिता लहेंगा सारी ॥ आभूषण सब अंग बनाये निरिख थकी व्रजनारी ॥८॥ राधे बोलि कह्यो सखियन सों रही रूप

रसपाग ॥ जो पुरुषारथ देहि विधाता ऐसी कामिनि लाग ॥९॥ कान पकर गुलचे चंद्रावलि सखियन पहोंची जाय ॥ राधा मगन भई विहरत ही सकुचि रही सिरनाय ॥१० ॥ उपरना पचरंगी पगिया सिर बांध चली एक नारि ॥ निकट गई मोहन के घोखें हलधर गहे हें संभारि ॥११॥ कोऊ नीलांबर ले भागी कोऊ बेन बखासतनाम ॥ काहू दई कपट की बीरी लीजेजू बलिराम ॥१२॥ सारी सुरंग चूनरी हमकों आभूषण बहु मोल ॥ इतनो फगुवा दे छूटोगे देहु श्रीदामा ओल ॥१३॥ तब हलधर युवती सनमानी मेवा दियो मंगाय ॥ कंचन थार भरही रामाणिक सूरदास बलिजाय ॥१४॥

१६ राग काफी या व्रज में होरी रंग बढ्यो ॥ हो हो सबहिन हिये हुलास ॥ ध्रु० ॥ खेलत मोहन लाडिलो हो नंदराय की पोरि ॥ हलधर सुबल सुबाहु श्रीदामा सब लरिकन संग जोरी ॥१॥ विविध भांत के भेष बनाये नाचत अतिहि सुधंग ॥ गावत गारी तारी दे दे किलकत अपने रंग ॥२॥ ढोलकी ढाल पखावज वीना झांझ संख डफ ताल ॥ भेरि दुंदुभी अगणित वाजे विच विच वेणु रसाल ॥३॥ कोलाहल सुनि सब व्रजसुंदरि सकल सिंगार संवारि ॥ झुंडन मिल गावति आई अतिही सरस सुरगारि ॥४॥ दुहुंदिशतें छूटी पिचकारी घुमड्यो अबीर गुलाल ॥ रपटत झपटत तनले धावत टूटत उर वनमाल ॥५॥ तिहिं छिन चपल चतुर चंद्रावलि हलधर पकरे दोर ॥ आंखि आंजि मुख मांडि कुंकुमा छोडे रंगनवोर ॥६॥ पोंछत नयनन खोरनीलपट तन नवहीं वसन संभार ॥ हो हो हो करि ग्वाल हसतहें वाढ्यो रंग अपार ॥७॥ तब नंदन नंदन फगुवादेनमिस प्यारी सन्मुख आय ॥ मृगमद केसर ओर अरगजा भीजे उर लपटाय ॥८॥ तब सकुची गोपी सब कोपी कनक लकुट ले हाथ ॥ पकरन धांई छबीले लाल कों खसत झीने पट माथ ॥९॥ भागे सकल सखा संग के तब मोहन लीने घेर ॥ अछन उठाय गई ले पियकों फिर चितवत मुख फेर ॥१० ॥ प्यारी धाय गहे भुज बंधन अति आतुर अकुलाय ॥ करत मनोरथ सब ही जियके रस वस रहे अरुझाय ॥११॥ एक सखी सोंधो लपटावत नावत केसर नीर पीतांबरसों गूंथि बनावत गहि राधाजू को चीर ॥१२॥ एक कहत बलबल जोरीकी

त्रिभुवन नहीं समतूल ॥ वदन निहारें ज्यों चंद चकोरी अंग समातन फूल ॥१३॥ एक कपोल परसि लपटावत केसर कुंकुम घोर ॥ एक भालरचि बेंदी बनावत हंसत सबे मुखमोर ॥१४॥ एक कहे भली बनीहें सहचरी राधाजू की जोरि ॥ यह सुनिमुसकि हँसत पियप्यारी चितवत नयनन मोरि ॥१५॥ या छबि ऊपर तन मन वारत राई लोन उतारि ॥ चिरजीयो युगयुग यह जोरी कहति यों अचरा पसारि ॥१६॥ हरि संग करत विहार विविध रस केसें बरन्यों जाय ॥ सुरनर मुनि विथकित भयेहें रति पति रहे सिरनाय ॥१७॥ फगुवा मन मान्यों दियो सब पूजी मन की आस ॥ श्रीविठ्ठल पदरज प्रतापतें गावत यह यशदास ॥१८॥

१७ राग काफी तुम चलो सबे मिलि जांय खेलन होरियां ॥ अपनी अपनी सुरंग चूनरी मोतिन मांग भरोरियां ॥१॥ थरहरात अधरन पर मोती अंगिया केसर बोरियां ॥ चोवाचंदन अगर कुंकुमा भरि भरि देत कमोरियां ॥२॥ अंग सों अंग गुलाल बिराजत भली बनी यह जोरियां ॥ केहरि लंक नितंब विराजत गज गति चाल चलोरियां ॥३॥ पिचकाई मोहन पर डारत बिहसी घूंघट खोलियां ॥ वाजत ताल मृदंग ओर डफ पढि पढि बोलत बोलियां ॥४॥ नयन आंज मुख मांडिं स्याम को सबमिलि करत कलोरियां ॥ सुरदास प्रभु सब सुख क्रीडत बिहरत व्रज की खोरियां ॥५॥

१८ राग काफी निकस कुंवर खेलन चले ॥ रंग हो हो होरी ॥ मोहन नंद के लाल ॥ रंगन रंग हो होरी ॥ संग लीने रंग भीने ग्वाल बाल ॥ वेगुन रूप रसाल ॥१॥ कंचन माट भराय ॥ सोंधे भरी हे कमोरी ॥ रत्न जटित पिचकाई करन ॥ अबीर भरें भर झोरी ॥२॥ सुरमंडल डफ झांझ ताल ॥ बाजत मधुर मृदंग ॥ तिनमें परम सुहावनी ॥ महुबरि बांसुरी चंग ॥३॥ खेलत खेलत जब रंगीलो लाल ॥ गये वृषभान की पोरि ॥ जेहुती नवल किंसोरी भोरी ॥ ते आंई आगें दोरि ॥४॥ सुनि निकसी नव लाडिली ॥ श्रीराधा राज किशोरी ॥ ओलिन पोहोप पराग भरे ॥ रूप अनुपम गोरी ॥५॥ संग अली रंगली सोहें ॥ करन कनक पिचकारी ॥ मोहन मनकी मोहनी ॥ देति रंगीली गारी ॥६॥ तिनकों छिरकत छबीलो लाल ॥ राजत

रूप गहेली ॥ मानो चंद सींचत सुधा ॥ अपने प्रेमकी वेली ॥७॥ नवल वधुन के रंगीले बदन ॥ अबीर घुमडमें डालें ॥ छुटह निसंक अरुन घनमें ॥ हिम करनिकर कलोलें ॥८॥ इतने मांझ छिपि छबीली कुबरि ॥ पकरेहें मोहन आन ॥ छबिसों परस्पर झक झोरत ॥ कापे परति बखान ॥९॥ गुप्त प्रीति प्रगटित भई ॥ लाज तनकसी तोरी ॥ ज्यों मदमाते चोर मोर ॥ भलकत निकसी चोरी ॥१० ॥ सखियन सुख देखन के काज ॥ गांठ दुहुन की जोरी ॥ निरख वलैयां ले सबें ॥ छबिन बढी कछू थोरी ॥११॥ कोऊ छेल छकि छबिले लाले ॥ छिरकत रंग अमोल ॥ कोऊ कमल करले पराग ॥ परसत रुचिर कपोल ॥१२॥ बने हे पियाके कमल लोचन ॥ जब गहि आंजे अंजन ॥ जनु अकुलात कमल मंडल में ॥ फंदन फंदे युग खंजन ॥१३॥ देखि बिबस वृषभान घरनि ॥ हँसत हँसत तहां आई ॥ वरजीआन नवल वधू ॥ भुज भरि लिये कन्हाई ॥१४॥ पोछत मुख अपने अंचल ॥ पुनि पुनि लेत बलाय ॥ मुसकि मुसकि छोरत सु गांठ ॥ छबि बरनी नहीं जाय ॥१५॥ छोडन न देंही नवल वधू ॥ मांगें कुंवर पें फाग ॥ जोपें फगुवा दियो न जाय ॥ प्यारी राधा के पायलाग ॥१६॥ ओर कहां लगि वरनिये ॥ बढ्यो सुख सिंधु अपार ॥ प्रेम कलोल हलोलन में ॥ किनहूं रहिन संभार ॥१७॥ रंग रंगीली व्रजवधू ॥ रंगाले गिरिधर पीय ॥ यह रंग भीने नित बसो ॥ नंददास के हीय ॥१८॥

१९ राग काफी मिल खेलें फाग वनमें श्रीवल्लभ बाला ॥ संग खरे रसरंग भरे नवरंग तृभंगी लाल ॥१॥ बाजत बांसुरी चंग उपंग पखावज आवज ताला ॥ गावत गारी दे दे व्रजनारी मनोहर गीत रसाला ॥२॥ कंचन बेलि करे जानों केलि परे बिच स्याम तमाला ॥ धाइ धरें हसि अंक भरें छूटे केस टूटी उर माला ॥३॥ सींचत अंगन रंग भरे बाढ्यो प्रेम प्रवाह रसाला ॥ मेन सेन खुर रेणु उडी नभ छायो अबीर गुलाला ॥४॥ देखि थकी भवरी सबरी मृगी मोरी चकोरी नजाला ॥ राधा कृष्ण बिलास सरोज गदाधरमन्न मराला ॥५॥

२० राग काफी अरी तेरे नैन सलोने मनमोहन रिझवार ॥ तूजो

नई दुलही नव जोबन अबही आई गोने ॥१॥ खेलत नाहि फाग गिरिधरसों यह जुदई सिख कोने ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभूसों खेलत नाहि अघोने ॥२॥

२१ राग काफी वालिमतोहों खेलोंगी होरी ॥ मेरी आंखिन भरोन गुलाल ॥ध्रु० ॥ कहा कह्यो हो तब मोसों खेलत यमुना तीर ॥ तन मन सुधि भूली अब काहे धाय गहत मेरो चीर ॥१॥ सखी बुलाय कह्यो प्यारे प्यारीसों कहि समुझाय ॥ अब ज्यों ज्यों कहिहो तुम त्यों त्यों खेलेंगे हम आय ॥२॥ यह सुन उत खेलन कों प्यारी कीयो अपनों जोर ॥ इत हलधर नंद नंदन दोऊ ग्वालन में कीयो सोर ॥३॥ रत्नजटित पिचकारि भरिलिनो केसर नीर ॥ ताक ताक युवती गण ऊपर छिरक कीयो हियोसीर ॥४॥ तब प्यारी सखियन ले धाई वंसन लीने हाथ ॥ सुरंग गुलाल उडाय दुहुं दिस धाय गहे व्रजनाथ ॥५॥ चोवा मेद जवाद साख गोरा मृगमद घन सार ॥ सरस फुलेल अरगजा ले ले पहरावत उरहार ॥६॥ झांझ भेरि किन्नरि रबाब बीना महवर सहनाइ ॥ वीच वीच मरलीहि बजावत ओरवाजे बजवाई

...॥८॥

दमाती डोले बिना बुलाई बोले ॥ चोवा डोले ॥१॥ तूजो जोवन ठीटरी ग्वालिन की गांठ धीरज प्रभु भरुवा होय सो

हो होरी खेलें लाल संग ग्वाल इकदिस र वीना श्रीमंडल अमृत कुंडली आवज सुमन कलस नवतमाल उडवत अवीर छतियां लाय चुंवन दे करत ख्याल ॥ ग कर रसाल राग रंग सहित गावत देहु गोकुल पाल मेवा पीतांवर गुंजहार

२२ राग काफी गुजरी म चंदन अगर कुमकुमा केसर भर भरि बसजु कीये बिन मोले ॥ गठजोरे खोले ॥२॥

२३ राग काफी हो हो हो लीने राधा नवसत साजें बाल ॥ सु अधवट उपंग बाजे मृदंग ताल ॥१॥ गुलाल ॥ झक झोरत दोरत गहि नयननसों नयन मिलवत बोलत ग्वालिनी गारी सुढाल ॥२॥ फगुवा

चलत एंडी गयंद चाल वहोरच्यों जल जमुना तीर छिरकत छींटें रसाल ॥ आरती वारत व्रज वनिता लीनें कंचन थाल जनहरि या प्रभु को मुख निरखत मिटे विरह जाल ॥३॥

२४ राग काफी आयो फागुन मास कहें सब होरी होरा ॥ एक ओर वृषभान नंदनी एक ओर हरि हलधर जोरा ॥१॥ व्रजनारी गारी देवेकों भजि भजि आवें तजि तजि कोरा ॥ जानन देहो पकरोरी स्यामकों सवे धरत जोवन को तोरा ॥२॥ रहि न सकत अपने घर कोऊ मानो काम को फिरच्यो ढंढोरा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभुसों होतहे झकझोरी झकझोरा ॥३॥

२५ राग काफी रंग हो हो होरियां ॥ इत बने नवल किशोर ललन पिय उत बनी नवल किशोरियां ॥१॥ ये नव नील जलद तन सुंदर वे कंचन तनगोरियां ॥ उनके अरुण वसन तन राजत इनके पीत पटोरियां ॥२॥ फेंटन सुरंग गुलाल विविध रंग अरगजा भरीहें कमोरियां छलबल करि दुरि मुख लपटावत चंदन वंदन रोरियां ॥३॥ राखीहें करन दुराय सबन मिल केसर कनक कमोरियां ॥ सन्मुख दृष्टि वचाय धाय जाय स्याम सीस तें ढोरियां ॥४॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ मधुर मुरली ध्वनि थोरियां ॥ नाचत गावत करत कुलाहल परम चतुर ओर भोरियां ॥५॥ एकन कर गेंदुक नवलासी ओर फूलन भरि झोरियां ॥ भाजत राजत भरत परस्पर परिरंभन झकझोरीयाँ ॥६॥ येहीरस निवहो निसवासर वंधीहें प्रेम की डोरियां ॥ माधुरी के हित सुख के कारन प्रगटीहे भूतल जोरियां ॥७॥

२६ राग काफी हो हो होरी बोलें ॥ध्रु० ॥ फगुवा मिस व्रज सुंदरि जसुमति गृह आई ॥ गावत गारि सुहावनी सबके मन भाई ॥१॥ तब व्रजरानी बोल कें रावर में लीनी ॥ मुसकि मुसकि कें कहत हें वतियां रंग भीनी ॥२॥ अहो जसोमति भोरही हम नोतें आई ॥ आज कछू वृषभानजू तुम वोलि पठाई ॥३॥ ओर तुमसों कछु कह्यो हे संदेसजु न्यारो ॥ कन्या हमारी राधिका हरि पूत तिहारो ॥४॥ मन वच क्रम करि कहत हें हम सोंह

तिहारी ॥ तुम लागत हमकों सदा प्रानन ते प्यारी ॥५॥ भर होरी के दिन सबे बरसानें रहिये ॥ समझत हो तुमही सबे तुमसों कहा कहिये ॥६॥ जो तुमसों कछू कहतहें बिनती कर मानो ॥ बरसानों नंदगामकों एकही कर जानो ॥७॥ ब्रजवासिन विनती करी सोहू सुन लीजे तुम सुखदाई सबनकी हमहूं सुख दीजे ॥८॥ तब जसुमति मुसिक्याकें बोली मृदुबानी जो कछु हमसों कहत हो हम सो सब जानी ॥९॥ एक संदेसो जायकें कीरतिसों कहियो ॥ नंदराय ढिंग आयकें केऊदिन रहियो ॥१० ॥ हसी सकल व्रजवासिनी नाचत दे तारी ॥ समझ समझ मुसकें कछू ठाडे गिरिधारी ॥११॥ केसर कलश भरायकें सब पर बरखायें ॥ मृगमद केसर घोरकें मुख पर लपटायें ॥१२॥ मन भायो फगुवा लियो तन सुख की सारी ॥ अंकमाल सब के हिये दीनी दुति न्यारी ॥१३॥ खेल बढ्यो अति चोगुनों आनंद भयो भारी ॥ फागुन कियो सुहावनों हरिसों ब्रजनारी ॥१४॥ अरस परस रसजो वढ्यो कछु कहत न आवे ॥ दिन दिन या सुख माधुरी निरखे ओर गावे ॥१५॥

२७ राग काफी बोलें सब हो हो होरी ॥ खेलें श्रीराधा गोरी ॥१॥ सहेली संग सुहांई ॥ बनी सब एकई दांई ॥२॥ भरेकेसर कमोरी ॥ लालनके सीसतें ढोरी ॥३॥ सोंधो बहुत मंगायो ॥ प्यारीजू के अंग लगायो ॥४॥ बाजे डफ ताल मृदंगा ॥ वीणा मुख चंग उपंगा ॥५॥ भरे फेंटन गुलाला ॥ आये उत नंदके लाला ॥६॥ सबे मिलि घात सों आई ॥ लालनकों घेरकें लाई ॥७॥ भरी रस दृष्टि निहारें ॥ जुरी अनुरागकी धारें ॥८॥ गारीरस भेदकी गावें ॥ तारी दे लाल नचावें ॥९॥ सहेली को भेष बनायो ॥ माधुरी के मन को भायो ॥१०॥

२८ राग काफी मेरे अंग संग लाग्यो सांवरो मोहे रंगमें डारत बोररी ॥ मोरमुकुट वैजयंतीमाला वाके माथे चंदनखोररी ॥१॥ व्रजकीवधू सब खेलन आंई सबनमें पडी होडा होडी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुसों बहुतभई झकझोरा झोरी ॥२॥

२९ राग काफी ओरन सों खेले धमार लालमोसों मुखहू न बोले ॥ नंदमहरको लाडिलो मोसोंअेंड्योही डोले ॥१॥ राधाजू पनियां निकसी वाको घूंघट खोले ॥ सूरदास प्रभु सांवरो हियरा विच डोले ॥२॥

३० राग काफी न नदीया होरी खेलनदे जोई मांगेगी सोई देऊंगी फागुन में जसले ॥१॥ आनगिरारें फाग मच्योहै रह्यो न परे मोपे ॥ आनंदघन सों उघर मिलोंगी यह मेरो प्रनहै ॥२॥

३१ राग काफी वाई दिन वारीं आईहें वृजनारी ॥ रंग मचावत घोर झीलसों गांय गंवारी गारी ॥१॥ बूढी महरि लथेर कीचसों एक कहत बलहारी ॥ नंदबवातन सेनमारकें मचक-मचक देहें गारी ॥२॥ आओ ग्वालबाल सब बोलकें घेरो पकरें दारी ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभुसों जेहें कहां बिचारी ॥३॥

३२ राग काफी श्रीवल्लभ मेरे मनबसे हो ललना ओर न कछू सुहाय ॥ध्रु०॥ नवजोबन व्रजभामिनी नवसत साज सिंगार ॥ प्रीतम सों खेलन चलीहो प्रेम मगन न संभार ॥१॥ बहुविध साज संवारकें अंजनली ने संग ॥ वसन विचित्र बनायकें पहरावत पिय अंग ॥२॥ चंदन वंदन अरगजा मुदित खिलावत फाग ॥ अबीर गुलाल उडावत चहुंदिश छाय रह्यो अनुराग ॥३॥ केसर तिलक बनायकें ओर कुसुमनके हार ॥ आरती करें मनमोदसों लेत तंबोल उगार ॥४॥ वदन कमल ढिंग शोभहीं केशसचिक्कन स्याम ॥ चितवन चंचल नयनकी मोहत कोटिक काम ॥५॥ बेण मुरज डफ बांसुरी

[illegible]

[illegible]

॥७॥ यह लीला अवलोकिकें पल कलगें नहि चेन ॥ शोभा
पीजिये भरभर नयन ॥८॥

श्री वल्लभरायकी

३३ राग काफी चलोरी होरी खेलें नंदके ला
छेल छबीले मोहन मदनगोपाल सों ॥१॥ मृगमद अबी
फेंट जुभरीहे गुलालसों ॥ रुंज मुरज आबज बाजें रंगरह्यो

लसों ॥ रंगरंगीले
र अरगजा केंसर
करतालसों ॥२॥

छिरकत भरत परस्पर सब मिल लाल हंसत व्रजबालसों ।। चंद्रावलि बलिराम मुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ।।३।। राधाजू अचानक आयगहे हरि बेंदी लागी भालसों ।। विप्र गदाधर प्रभु मुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों ।।४।।

३४ राग काफी एसें होरी खेले सांवरो संग लियें व्रजबाल ।। पहेलेंहीं आपुन बने ओंर तापाछें सब ग्वाल ।।१।। यमुनाकूल सुभाय आपने मानोहो मंडली मराल ।। सुनकें धाई सब व्रज नागरि चलत हें गजगति चाल ।।२।। नखसिखते बनिकें व्रज बनिता गावत आंई गारि ।। एकत स्याम सखा भये ठाडे एक लीने राधे संग नारि ।।३।। वीना वेणु उपंग बांसुरी बाजत ताल मृदंग ।। पटह निसान बाजत चहुंदिशतें होत परस्पर रंग ।।४।। तारी देदे ग्वाल हंसतहें अंचल अंचल जोरि ।। अबीर गुलाल अरुन भयो अंबर भरत अंक झकझोरि ।।५।। चोलीतरकि हसी अरु चितवनि उपजत अंग सुभाय ।। एकले सोंधो भरत स्याम कों एकन मुरली छिनाय ।।६।। केसरके रंग कुंकुम वंदन भुजगहि भरहि अपार ।। गावत फागके गीत सबे मिल घुमड रह्यो नंदद्वार ।।७।। चतुरसखी नयनन की सेनन मिल मन मतो उपाय ।। कर गहि वंस गोपी ले धाई लेत निसान पलाय ।।८।। स्यामा सोंह दई ललिताकों हलधर पकरे अेन आविन मांडि वेनी गुही माथें अंजन लावे नयन ।।९।। नारिन में वृषभान नंदिनी ज्यों उडुगनमें चंद ।। ताको रूप नयन निरखतही मगन भये नंदनंद ।।१०।। नारि गारि ऐसी गावत मानो कोकिल बोले अंब ।। भीजे वसनअंग ऐसे लागत मानो कनक के खंब ।।११।। फगुवा दीनो नंदजसोदा मेवा बहुत पकवान ।। गावत सबे मिल व्रजवासी चलेहें यमुना जल न्हान ।।१२।। पोहोपन की वरषा सब सुरकरें इकटक ध्यान लगाय ।। हरिको फाग परम रसलीला जनहरिया मुख गाय ।।१३।।

३५ राग काफी खेलत गोकुल ग्वालिनीहो सकल सहज सिंगार ।।ध्रु०।। उतते आये स्यामघन सुंदर इतते आंईं व्रजनार ।। भीर भई गोकुल गलियनमें रंग मच्यो सिंघ द्वार ।।१।। बाजे बहुविध वाजही रुंजमुर डफ ताल ।। दुंदुभी आवज झालरी अरुमुख चंग करताल ।।२।। कुंकुम केसर

जोरकें घट भरभर लीने संग ॥ पिचकाई भर छिडकहीं शोभित सांवरे अंग ॥३॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा सोंधे अगणित एन ॥ उडत गुलाल छायो जुगगनमें द्योसते लागत रेन ॥४॥ सब सखियन मिल मतो मत्योहे मोहन लीने घेर ॥ आयअचानक प्यारीराधिका रही वदन तन हेर ॥५॥ प्रीति बढी राधा मोहनसों निरख नयन सिराय ॥ युगल कुंवरकी छबि ऊपर मोहन सुबन बलजाय ॥६॥

३६ राग काफी वृंदावन चंद लाल रंग भरेहो व्रजजन नयन चकोर ॥ नंदलालकी नवजोबनता लियो सबको चितचोर ॥१॥ वांकी पाग वदन अतिसुंदर स्याम मनोहरगात ॥ ऋतु वसंतके वसन पहेर पिय आंखिन मांझ समात ॥२॥ कमल नयन करलई पिचकाई फेंटन पोहोप पराग ॥ अतिशोभित संगत्रिय मंडली खेलत डोलत फाग ॥३॥ किंकर बने लियें कंचनघट भर बहुरंग सुगंध ॥ इंद्रमनो देखन के लालच भर कावर लिये कंध ॥४॥ जेनवड-गरबनी उझकें देखे पिय गोविंद ॥ तिनहि छिरक छबि देख वदन की कहांते ऊग्यो अबचंद ॥५॥ हरि मन मोहें रंग रंग सोहें खेल मच्यो व्रज मांहि ॥ बड भागिनि गोकुल की ललना जेहरि देखन जांहि ॥६॥ वाजेबहु वाजत हें अगणित सुख समूह की गाज ॥ सुन अकुलाय चलीं व्रजसुंदरी छूटि गई सबलाज ॥७॥ बन निकसी वृषभान नंदिनी संग लिये प्रेम समाज ॥ उतवने सकल कुंवर गोकुल के मध्य सांवरो सिरताज ॥८॥ कुसुम गेंदकरलीने नवलासी मार करत व्रजबाल ॥ ग्वालन की किलकन भई भाजत हसत हें मदन गोपाल ॥९॥ घातवनी गुलाल धूंधरमें अछन अछन आई भाम ॥ निकट जाय दौरी दामिनि ज्यों घेर लिये घनस्याम ॥१०॥ कोऊ एक चिबुक देख्यो चाहे इतचितवो नंदलाल ॥ कोऊ एक लालन गहिपायेहें कर लपटटी वनमाल ॥११॥ कोऊ एक गिरिधर की सुंदरता छकी निहार निहार ॥ कोऊ एक पकरन मिसभुजभरकें वारत प्रान अधार ॥१२॥ भाग भरे अनुराग भरे तन चितवत आनंद कंद ॥ बनिता वदन सरोज भ्रमर हरि पीवत रूप मकरंद ॥१३॥ बहु भांतन छिरक्यो प्यारी राधा अपने चितको चेन ॥ नटबर वपुसोंभीजिलगेपट लपटे पियाके नयन ॥१४॥ अति

रस भीने मन हरिलीने सुंदर स्याम सुजान ॥ राम राय प्रभु गिरिधर छबि पर बलकीनो भगवान ॥१५॥

३७ राग काफी बन्यों खेलत फाग सुंदर नंदको लाला ॥ बने संग गोपकुमार उदार सनेरंग गयन बिशाला ॥१॥ वाजत रंग भरे डफ झांझ मिल्यो मृदु वेणु रसाला ॥ गावत गीत भरी रसरीति खरी नवल व्रजबाला ॥२॥ लाल करी हे रंगीले सगरी सुडारी अबीर गुलाला ॥ वाढ्यो हे रंग अनंग लज्यो हे कृष्णदास रस ख्याला ॥३॥

३८ राग काफी होरी खेलें स्याम संग नवल वाम वृषभान वाम धनननननन ॥ संग लिये ग्वाल बाल वाजत डफताल उडत गुलाल फनननननन ॥१॥ उतबनी युवलाज दिये बेंदी आड भाल गावे मुख गारी एक मनननननन ॥ जुरी हें सकल नारी पकरे मुरारी लीने पटउतारी आंजे दृगनननननन ॥२॥ भरे रंग माट अति विविध भांत घट मारत सांट सनननननन ॥ भीजे हे रंग चीर रहेसरीर त्रियदेहो दरस लागे लाज नयननननननन ॥३॥ फगुवा मंगाय दियो मन मनाय लीयो कुंवर कुंवरि एक मनननननन ॥ सूरदास प्रभु निरख दंपति सुख वारवारबल चरनननननन ॥४॥

३९ राग काफी निर्तत दोऊ गति लिये हो ललना वृषभान नंदिनी नंदलाल ॥ध्रु०॥ नबसत साज सिंगार किये अंग मोपें बरनीन जाय ॥ राधे आधे कोरे चितवत हरि चित लियो चुराय ॥१॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल घूंघर वारे बार ॥ मृगमद तिलक बन्यों भृकुटी विच व्रज युवतिन फंदवार ॥२॥ अधर कपोल नासिका मोती दृग चंचल मनमीन ॥ देख मुखार विंदकी शोभा राधा जू भये आधीन ॥३॥ यूथनियूथ चली व्रजवनिता ले भरि मोद अबीर ॥ जाय मिली वृखभान नंदिनी नदी यमुना के तीर ॥४॥ गोप ग्वाल मिल चले घोखतें नाना स्वांग बनाय ॥ गावत हंसत करत कौतूहल मिले हें स्यामपें जाय ॥५॥ उत हलधर व्रजबासी लीये संग इत सब व्रजकी नारि ॥ दोऊ मिलि रस रंग बढावत गावत फाग धमार ॥६॥ ताल मृदंग झांझ डफ बाजत विच मुरली की घोर ॥ पून्यों चंदवदन मोहनको राधा

जू नयन चकोर ॥७॥ लीनी हाथ कनक पिचकाई गोकुल के नरनार ॥ खेल मच्यो वृषभान पोरिमें कोऊन मानतहार ॥८॥ उडत गुलाल अबीर कुंकुमा रह्यो दसोंदिस छाय ॥ प्रेम मगन भई फिरत ग्वालिनी आनंद उरन समाय ॥९॥ नील कमल लीने गोपिनकर ग्वालन दीये मार ॥ हो हो हो करि होरी खेलत देत परस्पर गार ॥१०॥ कोऊ हलधरकों कोऊ स्याम कों करो कछू भेद उपाय ॥ सावधान व्है फिरत ग्वाल सब दृष्टि न इतउत जाय ॥११॥ सात पांच मिल गोप भेषधर हलधर पकरे जाय ॥ फेंट पकर वसकिये आपने छूटोगे आंखि अंजाय ॥१२॥ तब मोहन कीयों भेख सखी को ओरों सखी बनाय ॥ जाय गहे वृषभान नंदिनी दाऊ लिये छिडाय ॥१३॥ जित तितते सबधाई ग्वालिनि मोहन घेरेजाय ॥ राधा कहे जान नहीं पावें मुरली लई हे छिनाय ॥१४॥ श्रीराधा जाय गहे मनमोहन अंचललियो छिडाय ॥ केनाचो केरहो हारतुम फगुवा देहो मंगाय ॥१५॥ मोहन सखा बुलाय आपनो मेवा बहुत मंगाय ॥ आपुन चाखि चखावत ग्वालन गोपिन अंगुरी दिखाय ॥१६॥ तव प्यारी उठिधाय सखिनले मेवालियो छिडाय ॥ आपुन खाय खवावत गोपिन ग्वाल रहे डहकाय ॥१७॥ मोहन हसिवस करी ग्वालिनी लीने सबे मनाय ॥ राधा माधो केलि करो दोऊ रति पति अति सुख पाय ॥१८॥ सिवविरंचि सुरपति सुधि विसरी चकृत रह्यो रथभान ॥ वरखत सुमन सुरेसत्रिया सब वारत तनमन प्रान ॥१९॥ युगल किशोर सदा मन मेरे रहो रस रूप समाय ॥ सूर स्यामस्यामा प्यारी छवि निरखत दृगन अघाय ॥२०॥

४० राग काफी आज हरि ब्रजयुवतिन पकरे ॥ पहली रिस होरी के मिस मनभायो सोजुकरे ॥१॥ मोर मुकुट पीतांबर मुरली ये सब साज हरे ॥ पहराई चूरी चूनरि बेंदीदे दृगकजरे ॥२॥ चरन घूंघरा कर कंकन बाजूबंद वांह धरे ॥ सीसफूलना सावेसरिहरि मोतिन मांग भरे ॥३॥ तृणावर्त ऊपरते डारयो तब नहींनेंक डरे ॥ सो हरिपरे ब्रज युवतिन के वस हाहा खात खरे ॥४॥ करन काम कह नंद जसोदा कीये से व्हेनि दरे ॥ सूरदास प्रभु छलते न छूटे छूटे जब पांय परे ॥५॥

४१ राग काफी मेरो प्यारो रंग रंगीलो ॥ खेले यह छेल छबीलो ॥१॥ सब मिलि खेलन आंई ॥ वल्लभ के संग सुहाई ॥२॥ बाजे बहुभांत बजावें ॥ जेसे लालन के भावें ॥३॥ केसर भरी कटोरी ॥ प्यारीनें पिय सिरढोरी ॥४॥ उडावे गुलाल ले झोरी ॥ भई निस सूझे नहीं कोरी ॥५॥ कियो तवमन को भायो ॥ प्यारे कों कंठ लगायो ॥६॥ मानो निधि रंकन पाई ॥ गोवर्धन पीय रिझाई ॥७॥

४२ राग काफी मेरो प्यारो रंगन भीनों ॥ खेले यह खेल नवीनों ॥१॥ संग समाज सुहावे ॥ बहुविध वाजे बजावे ॥२॥ खेले गोकुल की गली ॥ त्रिया देखन कों चली ॥३॥ पीतरंग केसर लाई ॥ छिरकत नेह सुहाई ॥४॥ सोंधो अनुराग लगावें ॥ लालन के संग सुहावें ॥५॥ प्यारीकों कंठ लगाई ॥ फूलीजो माल सुहाई ॥६॥ परस्पर रीझि रिझाये ॥ जो जेसे मन भाये ॥७॥

४३ राग काफी रस होरी खेले सांवरो रंग भीने नंदलाल बाल ॥ संग गारी निपट उघारी गावत कोन टेव पकरी गोपाल ॥१॥ चोवा चंदन ओर अरगजा मुख मंडन धाई ले गुलाल ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे संग सखा लियें ग्वाल ॥२॥

४४ राग काफी तुमें ब्रजराज दुहाई ॥ जिन गुलाल आंखिन में डारो ॥ पलक ओट में जुग सम वीते यह कहा नेंक निकाई ॥१॥ मुख मकरंद लुब्ध मधुकर दृग ओरन कछू सुहाई ॥ अनुरागे एते ही रससों चाख रूप चिकनाई ॥२॥ सुनि सोंधे भीने गिरिधर मनगति अधिकाई ॥ मुकुट लटक कुंडल चटकन पर कृष्णदास बलजाई ॥३॥

४५ राग काफी माई नये खिलर आज में देखे चंचल चपल चवाई ॥ हसि मुसिकाय नयन सेनदे मोकूं पकर नचाई ॥१॥ कोऊ गुलचे कोऊ करमुख मांडे गोपी करें हँसाई ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु की मुरली लेहु छिनाई ॥२॥

४६ राग काफी माई नंद के नंदन मोहि ओचका दीनी हेगारी ॥ ढीठ लंगर वरज्यो नहीं मानत कान्ह बडो वटपारी ॥१॥ हों दधि वेचन जात गोकुलमें ठाडो कृष्ण मुरार ॥ बइयां पकर झकझोरी ललना तोरचो मोतिन हार ॥२॥ अब केसें घर जाऊं सखीरी करियेकहा विचार ॥ सूर प्रभुसों हिलमिल रहिये दीजे सर्वसवार ॥३॥

४७ राग काफी लालन खेलत हें हो होरी ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा अवीर भरें भरि झोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ ओर मुरली धुनि थोरी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसंग खेलत राधा गोरी ॥२॥

४८ राग काफी होरी खेलें नवल लाल चितवत लोचन विशाल ॥ करत हें रति रंग ख्याल लिये संग व्रजबाल ॥ चोवा चंदन कपूर बूका वंदन चूर कुंकुम पिचकारी भरि उडवत अबीर गुलाल ॥१॥ सोंधो केसर लाय प्यारी पीय उरमिलाय आलिंगन परिरंभण अंजन दृग चुंबन गाल ॥ खेलत रस रंगरेल यमुना चले विविध केलि वल्लभ पिय निरखत छबि वारतले कंचन माल ॥२॥

४९ राग काफी नंद गामते बन ठन कें चले बरसाने खेलन होरी ॥ वसन बिचित्र सबे रंग भीने रसिक मंडली संग सब जोरी ॥१॥ विविध भांत पाग सिर शोभित कटि पट पीत पिछोरी ॥ हाथन कंचन जेरी विराजत करत कौतूहल किलक कलोरी ॥२॥ फूलन की माला झोरा झुकि काहू फूलन भरि झोरी ॥ कोऊ अबीर गुलाल उडाबत चंदन वंदन रोरी ॥३॥ कोऊ ताल मृदंग बजावत कोऊ आवज डफ जोरी ॥ कोउ भेरि दमामा बजावत दुंदुभी सेहनाई की सोरी ॥४॥ कोउ चंदमुखि चंग बजावत संख शृंग मुरली घनघोरी ॥ एक रबाब किन्नरी बजावत एक मंजीर झांझ झनकोरी ॥५॥ एक सारंगी अधोटी बजावत जल तरंग रस रंग रह्योरी ॥ एक प्रवीन जो वीनबजावत श्रीमंडल बाजत मधुरोरी ॥६॥ एकन अमृत कुंडली राजत नवसत रंगखजोरी ॥ कटतारन चुटकी जो बजावत गावत हो हो होरी ॥७॥ ले समाज सबजाय जुरे वरसानें चोहटेपोरी ॥ उतते सब ब्रज युवती यूथजुर

आय भई इकठोरी ॥८॥ लहेंगा लालचूनरी बहुरंग कंचुकी ललित कुचनपे होरी ॥ मेन मुनीसी ठाडी मानों चंचल नयन चकोरी ॥९॥ हाथन लिये कनक पिचकाई फूल छरी गेंदुक सोहे गोरी ॥ घूंघट माझ निहारत पियतन सबसे सयानी हें अतिभोरी ॥१०॥ केसर चोवा छिरकत बहुरंग वैयां पकर झक झोरी ॥ नयनन काजर आंजि गुलचावत सबही धरत जोबन की तोरी ॥११॥ एक जो सन्मुख पढत दोहरा तापाछे एक सखी जो दौरी ॥ एक दौरतदसवीस कदौरी सब ही भजाय करीमतिबोरी ॥१२॥ मार परी कोऊ आय सकत नहीं प्रीतम भुज भरि लेमेटोरी ॥ आलिंगन दे अधरामृत पीवत यह रस सदा एक पलनघटोरी ॥१३॥ खेलि फाग रस सिंधु अधिक वढ्यो उमगि चल्यो जानो हदतोरी ॥ सुर वनिताजो निरख थकित भई ये बड भागि व्रज युवतिन कोरी ॥१४॥ जो जाके मन हुती कामना सो सबहिन पूरन जो भयोरी ॥ फगुवादेन कह्यो सबहिन कों वल्लभ पिय सुख प्रेम हियोरी ॥१५॥

५० राग काफी अरी वह नंदमहर को छोहरा वरज्यो नहीं मानें प्रेम लपेटे अटपटे ओर मोहि सुनावे दोहरा ॥१॥ केसें के जाऊँ दुहावन गैया आये अघोरे गोंहरा ॥ नखसिख रंग बोरे ओर तोरे मेरे गरेको डोहरा ॥२॥ गारी देदे भाव जनावे ओर उपजावे मोहरा ॥ गोविंद प्रभु बलवीर विहारी प्यारी राधा को मीत मनोहरा ॥३॥

५१ राग काफी गोपकुमार लिये संग हो हो होरी खेलें व्रजनायक ॥ इत व्रज युवती यूथ मधिनायक श्रीवृषभान किशोरी ॥१॥ मोहन संग डफ दुंदुभी सहनाई सरस धुनिराजें ॥ वीचवीच युवती मनमोहन महुवर मुरलीबाजें ॥२॥ स्याम संग मृदंग झांझ आवज आनभांत बजावें ॥ किन्नरी वीन आदि वाजे साजे गनतन आवें ॥३॥ इतव्रज कुंवर करनि कर राजत रत्नखचित पिचकाई ॥ उनकर कमल कुसुम नवलासी गावत गारि सुहाई ॥४॥ तब मनमोहन युवती यूथपर विविध रंग वरखाये ॥ अति सुख फाग सोंझ लीने उनये मानो नवघन आये ॥५॥ तव ललिता चंद्रावली मतोकर सुबल सेनदे लीनों ॥ छलबल कर गिरिधर गहिवेकों यह मतोमन कीनों ॥६॥ सखा

भेद गिरिधर गहिपाए भयो युवतिन मन भायो ॥ आंखि आंजि गूंथी वेनी मृगनयनी भेष बनायो ॥७॥ फगुवा के गहने मोहन मोतिन माल उतारी ॥ वंसी झटकि लई झुकि प्यारी अधरन की विलसनहारी ॥८॥ दीने छांडि आप भायोकर स्याम सखन में आये ॥ तब मोहन समसर करवें कों बलदाऊ पकराये ॥९॥ जब हलधर वसपरे युवतिनके केसर कलश नवाये ॥ जोई जोई बिध उपजी जाके जिय तिहिं तिहिं भांतन चाये ॥१०॥ कीनो वीच सुवल श्रीदामा दाऊ आनि छुडाये ॥ फगुवा देन कह्यो मन भायो व्रजपति टेर सुनाये ॥११॥ तब व्रजराज वसन भूषणले युवती यूथढिंग आये ॥ अति आनंद वदन प्रफुल्लित दिये सबन मन भाये ॥१२॥ देत असीस सकल व्रजवनिता रसना नहीं लखे कोरी ॥ चिरजीयो मदन मोहन पिय स्यामा गौर स्याम समजोरी ॥१३॥

५२ राग काफी विलोको नागरि राधा प्यारीहो ॥ सखीरी छबि गुण रूप निधान ॥ध्रु०॥ सारी नील मोल मेंहेंगेकी गोरेगात छबि होत ॥ मानो नीलमणि मंडप मधि बरत निरंतर जोत ॥१॥ चोटी चारुतीन सरमानो कहूंकेतु अरुराह ॥ चढि हिल मिल एक संग हेम गिरि शशि मुख कीनो ग्राह ॥२॥ मंजुल मांग मोती लर लटकत मटकत उपमा देत ॥ मानो उडुगण सिमटि एकव्हे वीच करत शशिहेत ॥३॥ सुंदर बाल भाल शशि मानो रचित ललित रजबिंदु ॥ मानो वंदू कुसुमन आन्यों एक मनसिज जीत्यो इंदु ॥४॥ जूआआड ताटंक चक्रयुग भ्रूसंकेत मृगनेन ॥ मानो तिलक बिबगहि बेठ्यो शशि रथ सारथी मेन ॥५॥ पीन कपोल चारु चिक्कण अति उपमा देत संकात ॥ मानो संख करत शशि सोंमतो मान अनुजको नात ॥६॥ नासा सुभग मोती वेसरको वरनत होत संकोच ॥ मानो कीरदारच्यो फलफोरच्यो वीज लागि रह्योचोंच ॥७॥ रच्यो अधर विच दसन सुधारस यह उपमा को अंत ॥ मानो मुकुलित सीप रूपनिधि मोती दमकत दंत ॥८॥ ठोडी ठकुराइनकी नीकी नीलो बिंदु मझार ॥ शालिग्राम कनक संपुटमें रहगयो नेंक उघार ॥९॥ कपोती कंठराजे कंठसरी संख किये अवरन कांति॥ मानो कनक मूरत गंगातट निकट दिपतदीप पांति ॥१०॥ पोहोप पाणि वांह बाजूवंद

फवित फोंदना रूर ॥ मानों काम अंकुर हीगहके झूलत बाल मयूर ॥११॥ छबि हरनी छाती परराजे सेतसीपजको हार ॥ मानो महेसपरसि मंदाकिनी धसिधरनी युगधार ॥१२॥ चुनीन मध्य चोकी नग उदित यह उपमा जियहेर ॥ मानो कुब्ज उपज्यो अवनी पर इंद्रवधुन लीनोघेर ॥१३॥ चोली चारु छींटकी छाजत कविजिय करत अठोट ॥ मानो महेश मनसिज भयते दुर बैठे छलओट ॥१४॥ रोमरेख उर्ध्वधनुषकृत नाभि वसत रतिरोन ॥ मानो साधि सूधो करबैठ्यो ढेमेंमारूं कोन ॥१५॥ नीवी बनी बोरि केसररसों कसी विनोदे वाम ॥ मानो सीससदवरगवांधकें वेढ्यो सदन चढकाम ॥१६॥ चंपकली अनुहार छुद्रावलि कटिके हरिसी छीन ॥ युगनितंब मानोतुवपर सीरस समर ढूंढत सरवीन ॥१७॥ युगल जंघविपरीत रमतमानो लेहेंगा ललित सुहाय ॥ मानो मदन गढमेंडऐंडकें उमगि चल्यो गजराय ॥१८॥ अंबुज चरण पांयटेफोंदा यह उपमा कोठोर ॥ मधुरनाद गुंजार करतहें उडउड बेठत भोंर ॥१९॥ कहे सहचरी बडे दुःख लाई प्रभु तेरे सुख लाग ॥ अवरस परस विलस वृंदावन उभय सकुच जिय त्याग ॥२०॥ जोरी बनी विचित्र सूरप्रभु बढ्यो रतीरस संग ॥ ठकुरायण राधाजू मेरी ठाकुर नवल त्रिभंग ॥२१॥

५३ राग काफी रंग भीनी जोरी होरी खेलें हो ॥ कबहुंक दोऊ लटपटाय तन अंस भुजावर मेलेंहो ॥१॥ अरस परस छिरकत छिरकावत कर कर नयनन कोरें ॥ ले गुलाल मुख लावत प्यारी प्रीतम को चितचोरें ॥२॥ कुंकुम ले मोहन प्यारी पर डारत हें वडभाग ॥ अरुन कमल पर वरखत मानों नील सरोज पराग ॥३॥ निरख निरख ललितादिक बिबछबि तृनतोरत बलिजाय ॥ श्रीवल्लभ हित यह सुख निरखत उर आनंदन समाय ॥४॥

५४ राग काफी मोहन परयोरी मेरे गोंहन परचोनंदको छोना मेरे गोहनपरचो ॥ध्रु०॥ साँवरे कमलनयन आगेंढूकें आय ॥ लाजन के मारे कहूं गयोहू न जाय ॥१॥ याकी घाली मेरी आली कहो कित जाऊं ॥ बासुरी में गावे गीत तामें मेरो नाऊं ॥२॥ अंगना में ठाडी भई अटाचढि आवे ॥

मुकुटकी छैयां मेरे पायन छुवावे ॥३॥ जबहूं चितऊं आडोदे चीर ॥ सेनन में कहें चलि कुंज कुटीर ॥४॥ हित घनस्याम अब होय सोहोहु ॥ कृष्ण चरण प्रभुसों बाढ्यो अतिमोह ॥५॥

५५ राग काफी श्रीवृंदावन चंद खेलें होरी हो ॥ध्रु०॥ इत मोहन संग सब ब्रज बालक बन बन आये टोल ॥ उतब्रज युवतिन वसन साजे पहरे चीर अमोल ॥१॥ तिनमें मुख्य वृषभान नंदनी शोभा वरनीन जाय ॥ गौर स्याम जोरी बनीहें उरआनंद न समाय ॥२॥ कनक कलश केशर के रंगसों भरलीने दोऊओर ॥ पिचकाई परस्पर छिरकत तक तक नवलकिशोर ॥३॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ सुर मंडल कठताल ॥ वीना वेनरबाब किन्नरी बाजत वेणु रसाल ॥४॥ चोवा चंदन ओर अरगजा भरिलीने कनक कचोल ॥ युवति यूथ सब मिलिकें धांई दियोहे स्याम सिरढोल ॥५॥ तब बलभद्र सखा सब उमडे उडत अबीर गुलाल ॥ हो हो हो कहि बोल न लागे नाचत गोपी ग्वाल ॥६॥ सेनावेनी सब सखियन मिल गिरिधर लीनेघर ॥ नयन आंजि मुख मांडरोरी हसत वदन तनहेर ॥७॥ बहोरच्यों मिलदसपांच सुंदरी बलदाऊ पकरे धाय ॥ मोहन की गति उनकी कीनी नीलांबर लिये छुडाय ॥८॥ दोउन लीनों फगुवा आभूषन ओर पटकूल ॥ अति रस प्रेमबढ्यो गोकुल में सुरपति वरखत फूल ॥९॥ यह विध खेलत ब्रजजन सबमिल चले श्रीयमुनान्हान ॥ अति प्रफुल्लित नंदजू पहराये बिमल वसन परिधान ॥१०॥ तब नंदरानी नयन सिरानी भर मुक्ता फलथार ॥ आरती वारत प्रान पियापर त्रिभुवन जयजयकार ॥११॥ युग युगराज करो ब्रज अबचल भक्तन देहु आनंद ॥ श्रीवल्लभ पदकमल मधुप मन हरिजन पीवें मकरंद ॥१२॥

५६ राग काफी बरसाने कीसीम खेलत रंग रह्योहे ॥ छल बल वानिकवान ललिता नें लाल गह्योहे ॥१॥ सखा श्रीदामा आदि हलधर भाज गयेहें ॥ गही पिचकारी हाथ जुरि चहुंकोद भयेहें ॥२॥ कोऊन आवेपास उतबल बहुत भयोहे ॥ अधिक भई अंधियारी गगन गुलाल छयोहे ॥३॥ तामधिदमकत अंग ब्रजजन रूप छटारी ॥ सारी भरी सुरंग सोहेकनक

किनारी ॥४॥ जोरी वंदनधूर अबीरमिलाय लियोहे ॥ छिरक छिरक घनस्याम सबे एक रंग कियोहे ॥५॥ लपटपरी विहवाल तरुनतमाले हेली ॥ पोहोप लता सिरताज कोंधत ऊपर वेली ॥६॥ करत मनोरथ घेर गिरिधर सुघर सलोनों ॥ लग्यो अरगजा गाल श्रीमुख लसत रिझोनों ॥७॥ पाग उतारत आप श्रीवृषभान कुमारी ॥ केसखोल निरवार बेनी सरससंवारी ॥८॥ झबीजराउजोर अग्रनिग्रंथ संवारी ॥ मांग भरी मोतिनकी पटियन ही लेपारी ॥९॥ सीस फूल सीमंत किशोरी आपुन दीनों ॥ समझवार समझावत नयनन अंजन कीनों ॥१०॥ मृगमद आड सुदेस करी चंद्रावलि नीकी ॥ चंद्रभगा लेवी चल गावत पिय कोंटीकी ॥११॥ पहरावत झकझोर वेसर निरमोली हे ॥ चारु छपेरी साज पचरंग उरचोली हे ॥१२॥ जेहर तेहर पाय विछुवन छनिउप जायल ॥ अनवट नूपुर चूरा रत्न खचित हें पायल ॥१३॥ नखसिखलों यह भात अभरन भीर भईहे ॥ निरख निरख यह कांति व्रज आनंदमईहे ॥१४॥ वाजन लागे ढोल ओर डफ ताल मृदंगा ॥ गोमुख किन्नरि झांझ वीचबिच मधुर उपंगा ॥१५॥ सहचरी भई आनंद गावद गारि सुहाई ॥ दिसदिस मोहन ओर चलत निकर पिचकाई ॥१६॥ एक सखी बीचआई अरगजा डारगई हे ॥ देख पलक पररेल पियजूगारी देई हे ॥१७॥ लेले अंचल आप पोंछत अंगुरिन दलसों ॥ मुठियन चलत गुलाल आगें पाछें छलसों ॥१८॥ तेई घातन मधुपाय प्रान पियाकों पोखत ॥ प्रेम विवशता हरि भर अंकवारी झोखत ॥१९॥ हो हो होरी बोलत ललिता आंगन नाचत ॥ करे प्रेमकी टोक चोख एको नहीं वांचत ॥२०॥ नंददास खिलवार खिलारी खेलन हारो ॥ भयो ने हमदमाद टोल दुहुंदिस मतवारो ॥२१॥

५७ (श्री राग काफी श्री) होरी खेलै लाल, ढफ बाजैं ताल, झांझ झननननननन ॥ध्रु०॥ चोवा, फूलेल, अबीर, अरगजा, भँवर उड़ति भननननन ॥ निकसे कुँवर झूमकि खेलनि कों हँसति चलति ठननननननन ॥१॥ घर घर तैं बनिता बनि आँईं भनक परे स्रबनननननन ॥ कंचन की पिचकाई कर गहैं छिरकि स्याम तननननननन ॥२॥ केसरि कीच मची हरि आँगन उमड़ि घुमड़ि आँईं घननननननन ॥ उड़ति गुलाल अरुन भयौ अंबर लखि न जात रैंनि

दिननननननन ॥३॥ एकु नाँचति, एकु गहि झक झोरति गावैं तान तननननननन ॥ 'सूर स्याम' प्रभु किसोरी रवन सँग धुरि गोकुल ब्रज गगननननननन ॥४॥

५८ राग काफी अहो वृषभानु सुता नंदलाल जुगल जस गाइए हो ॥ धनि धनि गाँम सखी बरसानौ जहँ प्रगटी सुकुमार ॥ मोहन की कहा कहौं माधुरी, गोकुल उदित उदार ॥१॥ माँनौं कंचन-बेलि सखी री कहा बरनैं कवि रूप ॥ नब-घनस्याम-तमाल लाड़िलौ नख सिख रूप अनूप ॥२॥ बदन बधू बिधू मथित बिधिनि चाई अमृत सीचों इही ठौर ॥ सरस कुमार मथित तपैया छबि नहि सुधा बिनु और ॥३॥ षटदस साजि सिंगार सखी री मुख तमोल जैसैं लाल ॥ कंचन दंड सुखंड खंड द्वै अधरन मुरली रसाल ॥४॥ स्यामा बृंद सखीन में राजति ज्यौं उडगन में चंद ॥ मोहन ग्वाल बाल संग डोलैं मांनौं मत्त गयंद ॥५॥ ताल मृदंग इत उत तैं बाजत ढफ सहनाई ढोल ॥ अति मीठे मृदु परम भाँवतें गोपिन कोकिल बोल ॥६॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा और सुरंग अबीर ॥ उडति गुलाल अरुन नभ ढाँप्यौ बदरन माँनों बिनु नीर ॥७॥ सुंदरि पाँच अगमनै पठाईं जान पीया कौ हेत ॥ फाग समें बड़भागि हमारौ खेलिये आजु संकेत ॥८॥ घेरि आँई सब मिलि मोहन कौं कीनौ जुबतिन भेष ॥ आजि भलैं नंदलाल बिराजति अधरन अंजन रेष ॥९॥ स्यामा स्याम कीए ढिंग ठाड़े बनी अनूपम जोरी ॥ सकुच दुराई अंक कौ प्यारी नैंकु हँसीं मुख मोरी ॥१०॥ मुरली छिंड़ाई कह्यौ ललिता यौं फगुवा देऊ मँगाई ॥ कै तुम अनुचर होऊ हमारे परसौं दुलहिन पाँई ॥११॥ सुर सिब बिरंचि सेस नारद, चढ़ि बिमान सब आए ॥ कौतुक देखि देखि ब्रजपति कौ, मुदित कुसुम बरखाए ॥१२॥ परम भाँमती जसुमति रानी कौंन पुन्य तै कीन ॥ कुंवरि कुंवर ग्रह बिहरति जाके, त्रिभुबन होति अधीन ॥१३॥ गोप ग्वाल पहिरै पट भूषन पहिरें अंग न मात ॥ 'रामदास' प्रभु गिरिधर नागर, नागरि पकरि नाचत ॥१४॥

५९ राग काफी अहो मेरी बौरी बीर गई है ॥ बीर गई है तन पीर भई है ॥१॥ कहा कहौं कछु कहत न बनि आवे कृष्ण सांवरे छिनाई लई है ॥ चोवा चंदन और अरगजा पिचकाइन झर लागि रही है ॥२॥

सब सखियन मिलि धुनि मचि है सांवरी सलोनी गोरी भोरी आई खरी है ॥ 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे हँसि चरने चित लागि गई है ॥३॥

६० राग काफी ए रंगीला रंग डारि कै कित जादां ॥ ध्रु०॥ दुरि-आंदाँ तनक छिपजादां तब तो चोर कहादां ॥ जब जानौं जसुमति के ढोटा सनमुख दरस दिखादां ॥१॥ गारी गादां घेरि मिलांदाँ लरिकन कौं सिखलांदाँ ॥ भले भए तुम सुधर सयाने ब्रज में लोग हँसादां ॥२॥ पकरंगा तेरी पगिया रंग हो तब तो कौंन छुड़ादाँ ॥ निरलज निपट लाल लंगरवा सौ सौ सोगंद खादाँ ॥३॥ चोवा चंदन औरु अरगजा रोरी रंग मिलादां ॥ आजु सखी 'हरिदास' के ठाकुर इह बिधि धूम मचांदां ॥४॥

६१ राग काफी कान्ह कुंवर खेलनि चले रंग भीने हो ॥ संग सखा बलराम लाल रंग भीने हो ॥ भूषन बसन बनाई कैं रंग भीने हो ॥ सोभा सुख के धाम ॥ लाल रंग भीने हो ॥१॥ बनि ठनि निकसे अति बने रंग, ठाड़े सिंघ दुवार ॥ लाल रंग भीने हो ॥ स्याम सुभग अति राज ही ॥ रंग भीने हो ॥ पूरन चंद उदार ॥ लाल रंग भीने हो ॥२॥ बाजे बहु बिधि वाजहि ॥ ताल मृदंग ढफ चंग ॥ बिच बिच मुरली सुर लिये हुलसत सब के अंग ॥३॥ सुनि कैं दौरि ब्रज बधू आईनंद जू की पौरी ॥ तिन में तरुनी सिरोमनी राजति नबल किसोरी ॥४॥ सनमुख ठाड़ी लाल कैं, गावति मीठी गारि ॥ मुख पर अंचल दै हंसी, हासि चितवत नर नारि ॥५॥ मोहन के चित रति बढ़ी, खेलि मच्यौं अति जोरि ॥ भरि लीये सुरंग गुलाल सौं, फैंटन के दोऊ ओरि ॥६॥ मृगमद कुँमकुम घोरि कैं, भरति कनक पिचकाई ॥ छिरकति तकि तकि प्यारी कौं, चितवति चितहि चुराई ॥७॥ मुख पर चंदन डारि कैं, औहट फिरति हँसि लाल ॥ कोलाहल सब करत हैं हो हो बोलत ग्वाल ॥८॥ ये उनकें वे उनही कैं, मह्यो चाहत पिय प्यारी ॥ छल बल सौं सबन सब तकि के पगन परत नर नारि ॥९॥ तब ललितादिक दौरि हे गहे अचानक कान्ह ॥ सबे मिली है सुंदरी पाए हैं जीवन प्रान ॥१०॥ निरखि हँसी मुख मुसकि कैं परसत बैन अघाई ॥ मोहन सौं ललिता कहे छाँडौ करि मन भाई ॥११॥ बैनी गूंथी माँग सौं भूषन

सबैं सिंगारि ॥ पहिरावे पट कंचुकि अंजन दीये सँवारि ॥१२॥ नील नलिन खंजन मृगी डारे उन पै वार ॥ अति अनूप नव नागरी भूले भवन नर नार ॥१३॥ चोवा मृगमद अरगजा छिरकति केसर घोरि ॥ छाये गगन गुलाल सौं अरून घटा घन घोर ॥१४॥ बरखति अति अनुराग सौं स्यामा स्याम किसोरि ॥ पिय प्यारी मुख चंद के पीवत नैन चकोरि ॥१५॥ छांडे मन जु मनाई कैं पकरे फिरि बल घेरि ॥ जुबति भेष बनाई कै पहिरावे षट फेरि ॥१६॥ नैंननि अँजन दे हँसी भले बने बलदाऊ ॥ छिरकति केसर घोरि कैं कहो कुंवरि कौं नांऊ ॥१७॥ इहि बिधि होरी खेलि ही बाढ्यो अति अनुराग ॥ सुधि कछू न समार ही प्रमुदित ब्रज बडभाग ॥१८॥ नवल लाल रसिक मनी गिरिधर प्रान आधार ॥ नैंननि कौ फल यह सखी निरखे नंदकुमार ॥१९॥

६२ राग काफी गिरिधरलाल लडाइये हो जाको भक्त वत्सल हरि नाम ॥ गोकुल गांव सुहावनो हो नंदमहर कौ राज ॥ कान्ह कुमर को खेलनो हो सब गोपिन सिरताज ॥१॥ हाथन डफ पिचकाई लीने हो फैंटन भरी अबीर ॥ इत राधा चंद्रावली हो उत हलधर दोऊ बीर ॥२॥ मोहन स्यामा भेख धरे हो स्यामा भेटी जाय ॥ छल बल भुजा छुड़ाय कै हो चिते चलि मुस्काय ॥३॥ ललिता एक मतो कियो है मोहन पकरे जाय ॥ आँखि आंजि मुख मोड़ि के हो नेक लीने ताल बजाय ॥४॥ लीला गिरधर लाल की हो गावे सब संसार ॥ " दास नारायण " यों कहें हो तुम खेलो फाग धमार ॥५॥

६३ राग टोडी ग्वाल हँसे मुख हेरिकैं, अति बने कन्हाई ॥ हलधर कौं लिय टेरि, आजु अति बने कन्हाई ॥ हो हो करि करि कहत हैं, अति बने कन्हाई ॥ रहे चहूंधा घेरि, आजु अति बने कन्हाई ॥ ऐसेहिं चलियै नंद पै, अति बने कन्हाई ॥ बल की सौंह दिवाई, आजु अति बने कन्हाई ॥ भुजा गहे तहँ लै गए, अति बने कन्हाई ॥ वह छबि बरनि न जाई, आजु अति बने कन्हाई ॥ इत जुवती मन हरत है, अति बने कन्हाई ॥ उतहि चले हैं भोर आजु अति बने कन्हाई ॥ और सखी आईं तहाँ, अति

बने कन्हाई ॥ करि-करि नैंन चकोर, आजु अति बने कन्हाई ॥ महर हंसे छबि देखि कैं, अति बने कन्हाई ॥ सुनि जननी तहँ आई, आजु अति बने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हौ उर लाइकै, अति बने कन्हाई ॥ आनंद उर न समाई, आजु अति बने कन्हाई ॥ कछुक खीझि कछु हँसि कह्यो अति बने कन्हाई ॥ किन यह किन्हौं हाल आजु अति बने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हाई ॥ ये ऐसिय ब्रजबाल, आजु अति बने कन्हाई ॥ रंग-रंग पहिरावनि दई, अति बने कन्हाई ॥ जुवतिनि महर बुलाई, आज अति बने कन्हाई ॥ यह सुख प्रभु कौ देखिकै, अति बने कन्हाई ॥ सूरदास, बलि जाई, आजु अति बने कन्हाई ॥

६४ राग काफी जमुना के तट खेलति हरि-संग, राधा लै सब गोपी ॥ नंदलाल गोवरधन धारी, तिन कै नेहनि ओपी ॥१॥ चलहु सखी ! चली तहाँ जाइयै, छिनु जियरा न रहाई ॥ बेनु-सब्द करि मन हरि लीन्हौ, नाना राग बजाई ॥२॥ सजल-जलद-तन पीतांबर छबि, कर मुख मुरली धारी ॥ लटपट पाग बने मन-मोहन ललना रहीं निहारी ॥३॥ नैंन नैंनसौं मिलि, कर सौं कर, भुजा ठए हरि ग्रीवा ॥ मधि नायक गोपाल बिराजत सुंदरता की सींवा ॥४॥ करत केलि-कौतूहल माधौ, मधुरी बानी गावै ॥ पूरन चंद सरद की रजनी, संतन सुख उपजावै ॥५॥ सकल सिंगार कियौ ब्रज-बनिता, नख-सिख-लौं भल ठानी ॥ लोक-बेद-कुल-धर्म काहु की, नैंकु न मानति कानी ॥६॥ बलि-बलि बल के बीर त्रिभंगी, गोपिनि के सुखदाई ॥ सकल बिथा जु हरी या तन की हरि हँसि कंठ लगाई ॥७॥ माधव नारि, नारि माधव कौं, छिरकत चोवा-चंदन ॥ ऐसौ खेल मच्यौ उपरापरि, नंद-नंदन जग-बंदन ॥८॥ ब्रह्मा, इन्द्र, देव-गन गंध्रव, सुमन एक रस बरषैं ॥ सूरदास, गोपी बड़भागिनि, हरि-क्रीड़ासुख करषैं ॥९॥

६५ राग काफी जमुना तट ठाढ़ौ सांवरो हो हो सखी री नख-सिख भेख बनाय ॥ध्रु०॥ तन तनसुख को झगा सुरंगी सीस केसरी पाग ॥ कहुँ-कहुँ कृष्णागर की छींटै उपरेना रंजित राग ॥१॥ रतन खचित पिचकाई कर लिये सुरंग गुलाल अबीर ॥ रंग रंगीले सखा संग ले श्रीदामा

बलबीर ॥२॥ बेनु विषान झाँझ ढफ ढोलक गोमुख ताल मृदंग ॥ श्रीमंडल अरु अमृत कुड़ली आवज बीन उपंग ॥३॥ श्रवन सुनत जित तित दौरी करि-करि अपनौ ठाट ॥ कनक कलस केसर जल भरिके मृगमद मलयन माट ॥४॥ खेल मच्यौ वृन्दाबन अद्‌भुत इत गोविन्द उत नार ॥ छिरकत रंग महा मदमाते देत परसपर गार ॥५॥ मतौ मत्यौ ललितादिक सखियन लीनो सुबल बुलाय ॥ तेरे पाय लागत हौं छल करि मोहन को पकराय ॥६॥ तब मधुमंगल कह्यो सुबल सौं सुन हो सखा एक बात ॥ हरे-हरे निकसी छलबल सौं लालन पकरे जात ॥७॥ मुख मांड्यो नैननि अंजन करि स्वांग जु सबै नचाय ॥ फगुवा माँग लियो मनभायौ खेलौ हँसौ चित लाय ॥८॥ यह विधि फाग सुहाग भर्यौ मिलि खेलो श्री ब्रजनारी ॥"श्री गोपाल" रीझी देखत दृग सर्वसु देत है वारी ॥९॥

६६ राग काफी तेरे नैननि में है जु ठगोरी ॥ जो खेले ताही सौं खेलौ हौं न खेलौं पीय तुम संग होरी ॥१॥ काहे कौं फंद में डारति हो मोहि बड़ी बेस किसोरी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु नित प्रति आवो मेरी पौरी ॥२॥

६७ राग काफी नंद के नंदन आली ! मोहि कीन्हीं बावरी । कहा करौं क्यों हूँ, चित्त, रहत नाहिं ठाँई री ॥ बिहरत हरि जहाँ आलि ! तहाँ तु हूँ आई री ॥ बासर अरु निसिहुं आलि, मोहि यह चाई री ॥ जमुना तैं भरिबे जल, जान यहे दाँई री ॥ गुरु-जन अरु पुर-जन सौं, और नहिं उपाई री ॥ मुख गावै काफि राग, मुरलिका बजाई री । धुनि-सुनि मैं तनु भूली, अति ही सुखदाई री ॥ चंदन चूरी कपूर, फेंटनि सु भराई री ॥ सौंधे भरि पिचकारी , मारत सौ धाई री ॥ आतुर ह्वै चली, और जाई कि न जाई री ॥ चित न रहत कहूँ ठौर, और नहिं सुहाई री ॥ मिलिये प्रभु-सूरज-कौं, सकुच सब गँवाई री ॥ लाज डारि, गारि खाई, कुल ही बिसराई री ॥

६८ राग काफी नंद-नंदन वृषभानु-किसोरी, मोहन राधा खेलत होरी ॥ श्री ब्रिंदाबन अति हि उजागर, बरन-बरन नव दंपति भोरी ॥१॥

एकनि कर है अगरू कुँमकुमा, एकनि कर केसरि लै घोरी ।। एक अर्थ सौं भाव दिखावति नाचति तरुनि, बाल, बृध, भोरी ।।२।। स्यामा उतहिं सकल ब्रज-बनिता इतहिं स्याम रस-रूप लहो री ।। कंचन की पिचकारी छुटति, छिरकत ज्यौं सचु पावैं गोरी ।।३।। अति हिं ग्वाल दधि-गोरस माते, गारी देत, कहौ न, करो री ।। करत दुहाई नंदराई की, लै जु गयौ कल बल छल जोरी ।।४।। झुंडनि जोरि रही चंद्रावलि, गोकुल मैं कछु खेल मच्यो री ।। 'सूरदास-प्रभु' फगुवा दीजै, चिरजीवौ राधा-वर-जोरी ।।५।।

६९ राग काफी नव रंगी दुल्हे गाइए हो सखी री ।। आयो फागुन मास ।।ध्रु०।। सहज सिंगार पहिरि पट भूषन मिलि निकसी ब्रज बाल ।। गावत होरी खेलत होरी रोक्यौ नंद दरबार ।।१।। सुनति श्रीदामा ग्वाल बुलाए बोलि लए बल बीर ।। सब लै संग चले मनमोहन, खेलन जमुना तीर ।।२।। दै करि ओट जसोदा मैया, बैठी अटारी जाई ।। फगुवा दै छूटौगे मोहन नाहीं तो गावे नंद राई ।।३।। ऊँचे तान मिलावत अंगुरी गावत गीत रसाल ।। सुर ब्रह्मादिक पार न पावे धनि-धनि दीन दयाल ।।४।। खेलति बीच कीच मच्यौ अति उड़ावति अबीर गुलाल ।। चहुँ दिसि तैं छूटति पिचकारी, बीच बन्यौ नंदलाल ।।५।। ताल पखावज बैन चंग बाजैं बिच मुरली घनघोर ।। निरखति बदन सबै सुर मोहे नाँचे अंब पै मोर ।।६।। नवरंग खेलि मच्यौ अति नीकौ यह सुख बरन्यौं न जात ।। "मानदास" प्रभु नवरंग दूल्हो नाईक अपनो नाथ ।।७।।

७० राग काफी नंद के लाल नवल नागर अनुरागे हैं ।। खेलति होरी फागु प्रेम रस पागे हैं ।।१।। गोप कुमार सखा संग रंग रंगीले हैं ।। प्रेम छके छिरकैं पट छैल छबीले हैं ।।२।। ताल पखावज आवज महुवरि बाजे हैं ।। माँनो सरोज सभा में बसंत बिराजे हैं ।।३।। अनुरागे रस पागे गायन गावै हैं ।। कुँमकुम नीर अबीर गुलाल उड़ावै हैं ।।४।। गारि-गारि घनसार अरगजा घोरै हैं ।। केसरि रंग सुरंग में अंबर बोरैं हैं ।।५।। धाई-धाई पिचकारिन भरि-भरि छाँटैं हैं ।। महामंगल मन मोद सौं भरि-भरि

बाँटें हैं ॥६॥ कालिंदी के कूल कुलाहल भारी हैं ॥ 'रिषीकेस' के जीवनि-कुंज-बिहारी हैं ॥७॥

७१ राग काफी न भरौ रैन भरौ रे लंगरवा। हो हो मोहि जिन भरौ रे लंगरवा॥ सब सखियन मिलिं केसरि घोरयौं भरि-भरि लाई करबा ॥ भरि पिचकारी मेरे मुख पै डारि मेरी अँगियाँ भीजी बस करौ रे लंगरवा ॥१॥ बरजति हों बरज्यौ नहीं मानत तोरयौ उर कौ हारुवा ॥ फगुवा माँगति मो पै मोहन होई रहो होरी कौ भरुवा ॥२॥ सुनैगो नाँहिंन नाहक लरैगो औरु कुटम कौ डरवा ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे लेऊ बलैयाँ पाँई परिबा लंगरवा ॥३॥

७२ राग काफी नवरंगी केसर हम बोई हो ललनाँ कृष्णजीवन जू के काज ॥ध्रु०॥ केसर क्यारी हम बोई हो ललनाँ बीज आँन्यौ कसमीर ! अपने पीतम जू के कारनें सजनी सींचौंगी नैननि नीर ॥१॥ गिरि परबत पर केसर बोई मृग जू चरि-चरि जाई ॥ क्यों रे मृगा तू डरपति नाँहीं मारौंगी धनुष चढ़ाई ॥२॥ आसपास सब केसर बोई बिच बोयौ अबीर गुलाल ॥ जाकी रे बास सुबास आवे वाई को गुंथों नव सत हार ॥३॥ कनक कचोला केसर घोरी बिच डार्यो जमुना कौ नीर ॥ श्रीकृष्ण जीवन जू कौ बागौ चरच्यौ राधा जू कौ चीर ॥४॥ रंग रस रंग ब्रिंदाबन के बीच मोहन खेलैं फागुन मास ॥ 'सूरदास' प्रभु ब्रजई अखंडित होति है रंग बिलास ॥५॥

७३ राग काफी पकड़े ब्रजजन गिरिधारी ॥ उमंग भरी गोपी सब आई ॥ खेल मचायो भारी ॥ खेंचलेई पीतांबर मुरली ॥ हां हां करत मोरारी ॥ हँसी सब देकर तारी ॥१॥ जीही जपत मुनिवर ज्ञानी ॥ सकल वासना टारी ॥ शारद शेष पार नहिं पावत ॥ जीहीं जपे त्रिपुरारी ॥ ताकुं गोपी देत हैं गारी ॥२॥ काल को काल ईश को ईशन ॥ जीत लीयो सुकुमारी ॥ कर जोरी के पीतांबर मांगत ॥ द्यो द्यो मुरलीया प्यारी ॥ जाओ अब जी तुम्हारी ॥३॥ भक्त आधीन निगम नित गावत ॥ मुनिवर

कहेत बीचारी ॥ सूरदास के प्रभु रसीले ॥ बार-बार बलिहारी ॥ मगन कीनी ब्रजनारी ॥४॥

७४ राग काफी बरजो न माने आज री नंद महर कौ छोहरा ॥ प्रेम बढ़ावत अटपटे पेचन पढ़त फिरत है दोहरा ॥ वन-वन डोलत ग्वालन बोलत रोकत फिरत गौ गोहरा ॥ 'आस करन' प्रभु गिरधर मोहन राधा कौ मोती मनोहरा ॥२॥

७५ राग काफी ब्रजवासी सबै आनंद भरे हो हो मेरे ललनां रसिकराई सिर मौर ॥ध्रु०॥ खेलनि कौ उद्युति भए बल मोहन कियौ बिचार ॥ भवन भवन अपने सुनि गोपी लागी है करन सिंगार ॥१॥ मज्जन करि तन अंबर पहिरे तन बरन बरन बहु भांति ॥ आगै धरि दरपन मुख निरखति मंद मंद मुसिकाति ॥२॥ चिकुर सुगंध सगबगे सुंदर बैंनी गुही बनाई ॥ मांनौ बृष्टि श्री खंड खंभ पै रही उरगिनी लपटाई ॥३॥ सीसफूल सिर मांग संवारी मुकता वारि सुढार ॥ मांनौं इंदु बैठे करि मंडल उड़गन अमित अपार ॥४॥ करनफूल जुग अलक बदन बिधु अद्भुत है यह बात ॥ मानौं सुमेर कौ तिमिर हरन कौ उदै करत निस प्रात ॥५॥ भाल सुदेस तिलक मृगमद कौ कबि छबि करति बिसेष ॥ तिरलोकि जीतन कौं मांनौं करी है अनंग कर रेष ॥६॥ भ्रकुटी-बंक निसंक निरखि छबि किधौं मैंन सारंग ॥ आनन नवल कमल मधि मानौं है सखी सुधा तरंग ॥७॥ दै नैननि अंजन खंजन अलि, मौंनौं कुरंग कमोद ॥ बारबार पाँइन लागति है मौंनौं बढ़ावति है मोद ॥८॥ नासा पुट बेसरि केसरि कौ जैसौ सुवन सुरंग ॥ मांनौं उभै-जलज खेलति है, बधु राकेस उछंग ॥९॥ अधर-बिंब दार्यौं कन मांनौं दसनावलि छबि देति ॥ मधुर मधुर रसना पिक बोलति जुगल फलनि रस हेत ॥१०॥ साँवल बिन्दु बन्यौ सखी मधि ठाड़ी सहज सुभाई ॥ अतन-जतन करि कनक कंज दल खची नीलमनी आई ॥११॥ कंठ पोति पदक की रही फबि दुलरी चौंकी हार ॥ झवा सुघट पाट भरे रुरिकत उर पै बारंबार ॥१२॥ जगमगात भूषन जराई के लटकत भूज मखतूल ॥ मौंनौ

सखी प्रगट दोखियतु है रति-बेलि फल-फूल ॥१३॥ कटि किंकिनि सप्त सुर राजै जे हरि नूपुर, बिछिया बाज ॥ जहँ तहँ उठि चलि माँनो मराल मत्त गजराज ॥१४॥ कंचन कलस लिए केसरि भरि चोवा अबीर गुलाल ॥ उत तै राम कृष्ण बनि आए, संग रंगीले ग्वाल ॥१५॥ लाल पाग चन्द्रिका मनोहर कुंडल करन गरे बनमाल ॥ पीतांबर काछिनी पिचकाई छिरकति अंग ब्रजबाल ॥१६॥ नवनागरि धाई सनमुख सब मदन मोहन की चोरी ॥ छिरकि भरे किए बस अपने, नागर-नंद किसोरी ॥१७॥ छूटिलट बिगलित पट दंपति नहिं तन मन हिं संभार ॥ प्रेम-मत्त रस-रक्त रसिक वर, हिलि-मिलि करत बिहार ॥१८॥ ठौर-ठौर बाजे बाजति हैं पटह जु भेरी मृदंग ॥ बैनु रबाब किन्नरि महुवरि मुरली चंग उपंग ॥१९॥ वर किन्नर तूवर गंधरब मिलि बिमल कर हि करि गान ॥ "जुगल चंद" आनंद भरे हैं देति रतन मनि दान ॥२०॥ नंद कुंवर फगुवा जुबतिन कौं मेबा दियो मंगाई ॥ कर जोरै सनमुख सबहिन के पट भूषन पहिराई ॥२१॥ हरि नारायण प्रभु होरी खेलति फागु बढ्यौ अनुराग ॥ यह लीला जो सुनै सुनावे 'स्यामदास' बड़भाग ॥२२॥

७६ राग काफी बन्यौ खेलत फागु सुंदर नंद कौ लाला ॥ बने संग गोपकुमार उदार सने रंग नैंन बिसाला ॥१॥ बाजति रंग भरे ढफ झांझ मिल्यौं मृदु बैनु रसाला ॥ गावति गीत भरी रस रीति खरी नवल ब्रजबाला ॥२॥ लाल करी है रंगीली सगरी सुडारि अबीर गुलाला ॥ बाढ्यौ है रंग अनंग लज्यौ है 'कृष्णदास' रस ख्याला ॥३॥

७७ राग काफी बेसर कौ मोती जग मोह्यौ हो मेरे ललनाँ ब्रजजन सब सुख दैंन ॥ध्रु०॥ अंजन दै दृग खंजन बैठे बीरी दसन बनाई ॥ चंचल चपल देखि मनमोहन मनमथ रह्यो है लजाई ॥१॥ अँगिया अजब कसूँभी सारी लहँगा लाल गुलाल ॥ मुजरा लेति स्यामा जु के आगे निरखौंगी नंदलाल ॥२॥ ब्रिंदाबन में मुरली बाजे धुनि सुनि सही न जाई ॥ 'हरिदास' प्रभु बेगि मिलौ हो राखौंगी कंठ लगाई ॥३॥

७८ राग काफी बरसाने की नागरि इक नवल मतौ जुरि कीनौ जु ॥ फगुवा चाहे लाल पै होरी कौ खेलि संग लीनौं जु ॥१॥ एकनु केसर घोरि कैं हो एकु कनक पिचकाई जु ॥ एकनु बूका बंदन एकु अबीर कपुर मिलाई जु ॥२॥ एकनु चोवा मृगमद सुरँग गुलाल भरि झोरी जु ॥ एकु-एकु पै डारि हीं मधि सुन्दर राधा गोरी जु ॥३॥ बहु बिधि बाजे साजि के ढँफ दुंदुभि करताला जु ॥ नँद सदन सब आव ही सकल बयस ब्रजबाला जु ॥४॥ नंद रानी अरघ दे वारनैं श्री राधा सनमुख हेरे जु ॥ चमकि उठि चंद्रावलि सखी वृदं मुख फेरे जु ॥५॥ भीतर धसी गहे लाल कौं भुज भरि आने हो लाल जु ॥ श्री राधा की दिसि जाई कैं लाए लाल अमोला जु ॥६॥ केसर मुख ते नाइ के इक चोबा मुख लपटावे जु ॥ बंदन बूका डारि के होरी की गारि सुनावे जु ॥७॥ रँग अबीर उड़ाई कैं अरुन अँबर लौं आयो जु ॥ हो हो बोले रँग सौं मानौ गगन घोरी कैं धायो जु ॥८॥ घोष कुलाहल ह्वै रह्यौ मनौ निरधन धन पायौ जु ॥ भुज भरि भैटे लाड़िलो किही बिधि छुटि न जाए जु ॥९॥ ब्रज रानी बरजे सबै मनभायौ फगुवा लेओ जु ॥ पट भूषन बहु भाँति के नैंकु लालन छोरि देहो जु ॥१०॥ स्याम चिते नैंकु हेरि कैं सकल सुंदरी बस कीने जु ॥ मन बच क्रम करि वारने गिरिधरि सरबसु दीने जु ॥११॥ तब मतो जु कीनौं मोहना लीला अनौखी आनी जु ॥ सकल मनोरथ पुजे उत धाम काम ऋतु मानी जु ॥१२॥ बरसाने जे गोप हैं ते ते स्वरूप हरि लीने जु ॥ उन लच्छन वे कंठ मिलि वे भेख परसपर कीने जु ॥१३॥ अपुनी महतारीन सौ सबै बुझति हैं इक गाथा जु ॥ मैया तुम कौतुक सुनौ इक नंद कुंवर ब्रज नाथा जु ॥१४॥ आजु बेगि घर आव ही वे तिहारे सुत होई जु ॥ तुम हो भोरी बोरी चोरी जानत है सब कोई जु ॥१५॥ इक मैया तुम सौं कहो बात सबै जिय भावै जु ॥ मैरो रूप धरि आव हीं वे किही मिसि पेठ न पावे जु ॥१६॥ मोहन रूप है मोहना जग मोहन बस कीनौं जु ॥ जंत्र -मंत्र सब जान हीं इन बात सबैं बस कीनौं जु ॥१७॥ निसचै वे हम घर आव हि सुत नाम ले लै बोलै जु ॥ बहुत बल करैं आपुनौ क्यौं न दरबाजा खोले जु ॥१८॥ जब

वे घर दिसि आव ही हौ इंटन मारि भजावौं जु ॥ मीठी सी बात सुनाबहिं वे निज बिसबास न लाऔ जु ॥१९॥ सुनौ न चित दै कान तुम भोरी अजानी बारी जु ॥ निरदया ह्वै बैठियों मति निज ग्रह आई किवारी जु ॥२०॥ इतनो बोलि इत हरि घर-घर चढ़े अटारी जु ॥ सकल सुंदरी संग पोढि कैं रस रीति कला जन टारी जु ॥२१॥ आन फिराई राज की मनमथ तू जहँ राजै जु ॥ दृष्टि पोर वा ह्वै रहे भाव धरी ग्रह साँजे जु ॥२२॥ भूले सुरति के रंग में हो ताकि मारे दृग दीने जु ॥ नैन पुतरी लाज तजी हो आपु समान सीर कीने जु ॥२३॥ डंड कुचन पै डारि कै मन भायो सो कीनौ जु ॥ चुंब कपोल दे अंक ले मदन प्रसंसा भीनौ जु ॥२४॥ चित चोगान गहि लाई कैं कुटिल कटाच्छन मारे जु ॥ हाव-भाव के भारा में दंपति तहं बिकसति भारे जु ॥२५॥ बरसाने बरखा भई प्रेम नीर झरि आई जु ॥ रस बस भई गोपिका मानौं नौ निधि पाई जु ॥२६॥ उत की गति हौं कहा कहौं गोप सबै घर आए जु ॥ आपुनी आपुनी महतारीन को टेरि दीए दरसाए जु ॥२८॥ पकरे तोरी किवार के हो कोउ न बोलन पावै जु ॥ बहुत कीन गोप तबै उत तें इंट चलावै जु ॥२८॥ लागे जु वही अंग पै सब भाजत कुदल डोलै जु ॥ भार भरो रे चहुँ दिसि गोप कुलाहल बोलै जु ॥२९॥ निसा यह गति पाई कैं परी रहौ बाग बगीचा जु ॥ गोप सबै मन लाई के मति सोच करौ सुखीचा जु ॥३०॥ कुल के देव लगे मैया पै इहि विधि होरी भारी जु ॥ बलि जू सबेरे दीजिए सुख पावै नर नारी जु ॥३१॥ केते गुन बरनन करौं श्रीगिरिधर के गुनन्यारे जु ॥ रसना इक बरखाने के को विधि गीने गुन भारे जु ॥३२॥ मंद अजान जु है मेरी मति दृष्टि न परे जाई जू ॥ 'दास गदाधर' प्रभु की लीला सुमर-सुमर उर माँही जू ॥३३॥

७९ ❁ राग काफी ❁ मन हरि लीन्हो नंद-ढुटौना। चितवनि में वाके कछु टोना। निरखत सुंदर अंग सलोना। ऐसी छबि कहुँ भई न होना॥ काल्हि रहे जमुना तट जौना। देख्यौ खोरि सांकरी तौना॥ बोलत नाहिं रहत व मौना। खात रह्यौ दधि छीने दौना॥ घर-घर माखन चोरत जौना।

बाटनि घाटनि लेवै दौना ।। खेलत फागु ग्वाल-संग छौना । मुरलि बजाई बिसारे भौना ।। मो देखत अब ही किय गौना । नटवर अंग सुभ सजे सजौना ।। त्रिभुवन में बस कियौ न कौना । सूर, नंद-सुत मदन-लजौना ।।

८० राग काफी मोहन मूरति माई । सांवरौ, नंद नंदन जिहिं नाँवरौ । अबहि गये मेरे द्वारें ह्वै, कहत रहत ब्रज गांवरौ ।। मैं जमुना जल भरि घर आवति, मोहि करि लागौ ताँवरौ ।। ग्वाल-सखा संग लीन्हें डोलत, करत आपनौ भावरौ । जसुमति कौ सुत, महर-ढुटौना, खेलत फागु सुहावरौ । सूर, स्याम-मुरली-धुनि सुनि री । चित न रहत कहुं ठाँवरो ।।

८१ राग काफी महा मोहन ढोटा सांवरौ हो अरी मेरौ लीनौं है चितचोर ।। राजति आजु महारंग भीने ठाड़े हैं सांकरी खोर ।।१।। सोभित रतन जटित पिचकाई अबीर भरे भरि फैंट ।। संग खरे अनुराग भरे सो भई है अचानक भैंट ।।२।। ढुरि रहि ढीली पाग रंगीली कुंचित कच न समाई ।। चंचल नैन अरुन अनियारे छबि भरे मुरि-मुरि जाई ।।३।। जगमग रहे सबनन कुंडल गंडन लग्यौ है गुलाल ।। कान्ह कुंवर की मूरति देखें चलि न सकत तिहिं काल ।।४।। चितयौ काहू भांति सखियन करी हे मदन सर घात ।। पान भरे मुख हँसि मोसौं कही प्रेम लपेटी बात ।।५।। रूप ठगोरी किधौं अरगजा दियौ मोपै ढुरकाई ।। बूका मंत्र मनौं पढ़ि डार्यौ तन-मन लियौ अपनाई ।।६।। भूली लाज कानि की सब सुधि चित न अनत ठहराई ।। 'राम राई' कहै चित भगवानैं स्याम कौ संग सुहाई ।।७।।

८२ राग काफी मन हर्यौ री बिहारी की देखि लटक ।। मेरे मन में रही जाकी मूरति अटक ।।१।। जमुना तट पनघट के ऊपर ठाड़ौ त्रिभंगी लाल ठठकि ।। चटक-चटक मुख गारी गावैं मटकि-मटकि नाचै गति लै लटकि ।।२।। मोर मुकुट कटि पियरौ सौ पट, जाके देखति भजी जिय की भटक ।। ब्रज दूल्है की रूप माधुरी मेंटत मान मदन की खटक ।।३।।

८३ राग काफी मोहि होरी खेलन कौ चाव री बेरन जान दे ।।

ब्रज कि बीथनि में नंद कौं लँगरवा वाहि सौं खेल मचान दे ॥१॥ रंग भिजोई करौं आलिंगन तनकि तपति बुझान दे ॥ 'सरस रंग' नैंन में बस्यौ आलि काहे कों लोग हँसान दे ॥२॥

८४ राग काफी मोहन ! गए आजु ? तुम जावौ, दाँव आपनौ लेहिं ॥ लालन हमहिं बिहाल करै जो, सोई हम फल देहिं ॥ आजुहि दाव आपनौ लेतीं, भले गए हौं भागि ॥ हा हा करते, पाइंनि परते, लेत पितांबर मांगि ॥ बेनी छोरत, हँसत सखासौं, कहत, लेहु पट जाई ॥ सौंहैं करत हौं नंद बबाकी, अपनी अपति कराई ॥ जो मैं लेहुं पितंबर अबहीं, कहा देहुगे मोंहि ॥ इत उत जुबती चितवन लागीं, रहीं परसपर जोहि ॥ एक सखा हरि, तिया-रूप करि, पठै दियौ तिन पास ॥ गयौ तहाँ मिलि संग तियनि कें, हँसत देखि पट-बास ॥ मोहि देहु राखौं दुराइकैं, स्यामहिं जनि लै देहु ॥ लियौ दुराई गोद मैं राख्यौ, दाँव आपनौ लेहु ॥ पीताम्बर जनि देहु स्याम कौं, यह कहि चमक्यौ ग्वाल ॥ सूर, स्याम पट फेरत करसौ, चकित निरखि ब्रज-बाल ॥

८५ राग काफी या खेलौं रंग फागु री ॥ कनक कमोरी में केसरि घोरी, छिरकौं मैं पिय की पाग री ॥१॥ चोवा चंदन औरु अरगजा चोली पै डारुं दाग री ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' के प्रभु प्यारे खुले हमारे भाग री ॥२॥

८६ राग काफी राधा माधौ संग-खेली ॥ बार-बार लपटाति स्याम-तन कनक-बाहु पिय गल मेली ॥ चोवा-चंदन सरस कुँमकुमा बहुत सुगंध अबीर ॥ कुसुम माल राजति उर-अंतर प्रहसित जादौ-वीर ॥ मदन-महोच्छव फाग मनोहर रति-रस फागुन मास ॥ गोप-बधू गावति नाना रंग बलि 'परमानँददास' ॥

८७ राग काफी राधा-मोहन रंग भरे हैं, खेल मच्यौ ब्रज खोरि । नागरि संग नारिगन सो हैं, स्याम ग्वाल-संग जोरि ॥ हरि लिय हाथ कनक पिचकारी, सुरंग कुंकुमा घोरि । उतहिं माट कंचन रंग भरि-भरि, लै आई

तिय जोरि ॥ आतुर ह्वै धाईं उत नागरि, इत बिचले सब ग्वाल । घेरि लईं सब खोरि साँकरी, पकरे मदन गुपाल ।। गह्यौ धाई चंद्रावलि हँसिके, कह्यौ, भले हो लाल । जनि बल करौ, नैंकु रहु ठाढ़े, जुरि आईं ब्रज-बाल ॥ आईं हंसति कहति, हरि येइ, बहुत करत है गाल । क्यौं जू खबरि कहौ, यह कीन्हीं, करत परसपर ख्याल ॥ काहू तुरत आई मुख चूम्यौ, करसौं छुयौ कपोल । कोउ काजर, कोउ बंदन मौंड़ति, हरषहिं, करहिं कलोल ॥ कोउ मुरली लै लगी बजावन, मन-भावन मुख हेरि । किनहूं लियौ छोरि पट कटिते, वारत तन पै फेरि ॥ स्रवननि लागि कहति कोउ बातें बसन हरे तेइ आप । काल्हि कह्यौ करिहौ कह मेरौ, प्रगट भयो सोइ पाप ॥ कोउ नैननि सौं नैन जोरिकैं कहति, न मो-तन चाहु । अबहीं तुम अकुलात कहा हौ, जानहुगे मन लाहु ॥ घेरि रहीं सरघा की नाईं, करतिं सबै मन लाह । इक बूझति इक चिबुक उठावति, बस पाए हरि नाह ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं,जुबती-स्वांग बनाई ॥ देखत सखा दूरि भै ठाढ़े, निरखत स्याम लजाई ॥ नख-छत-छाप बनाई पठाए, जानि मानि गुन येहु । 'सूर स्याम' हमकौं जनि बिसरौ, चिन्ह यहै तुम लेहु ॥

८८ राग काफी रंग गुलाल के नैना राते ॥ गए जु अबधि करि मोसों प्यारे फिर अति मुसिकाते ॥१॥ होरी के दिनन में मोहि छांड़ि पिय अनत कहाँ तुम जाते ॥ को खेलै गोकुल पति तुम सौं, सौंह वृथा क्यौं खाते ॥२॥

८९ राग काफी रंग भींनीं होरी हो खेलौंगी स्याम सौं ॥ चोवा चंदन औरु अरगजा छिरकौंगी बिसराम सौं ॥१॥ हौं तौ पियारे कौ न्यारौ न करि हों राखौंगी आदर मान सौं ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' कें प्रभु सौं मेरो काम जु अपने राम सौं ॥२॥

९० राग काफी लालन! प्रगट भए गुन आजु, त्रिभंगी लालन ऐसे हौ । रोकत घाट बाट, गृह-बनहूं, निबहति कहिं कोउ नारि ॥ भली नहीं यह करत सांवरे, हम दैहैं सब गारि ॥ फागुन में तो लखत न कोऊ,

फबति अचगरी भारि ॥ दिन दस गए, दिना दस औरौं, लेहु साध सब सारि ॥ पिचकारी मोकौं जनि छिरकौ, झरकि उठी मुसुकाई ॥ सासु-ननद मोकौं घर बैरिनि, तिनहिं कहौं कह जाई ॥ हा हा करि, कहि नंद दुहाई, कहा परी यह बानि ॥ तासौं भिरहु तुमहिं जो लायक, इहिं हेरनि मुसुकानि ॥ अनलायक हम हैं, की तुम हौ, कहौ न बात उघारि ॥ तुमहूँ नवल, नवल हमहूँ हैं, बड़ी चतुर हौ ग्वारि ॥ यह कहि स्याम हँसे, बाला हँसि, मनही मन दोउ जानि ॥ 'सूरदास' प्रभु गुननि भरे हौ, भरन देहु अब पानि ॥

९१ राग काफी सांवरासुं में खेलुँ न होरी ॥ मैं निकसी घरते दधि बेचन ॥ मिल गयौ सांकरि खोरी ॥ आय अचानक पकरी मोकुं ॥ मही की मटुकी ढोरी ॥ लाल मेरी बैंया मरोरी ॥१॥ अबीर गुलाल आँखन में डार्यौ ॥ हँसत हँसत मुख मोरी ॥ घुंघट खोल दे गुलचा सिर ॥ केसर गागर ढोरी ॥ चुनरीया रंग में बोरी ॥२॥ गावत गारी दै-दैकर तारी, बैंया पकर झकझोरी ॥ कंचुकी खैंच दीयौ कर उपर ॥ मोतिन माला तोरी ॥ बोले मुख हो हो, होरी ॥३॥ कहा करुं कित जाउँ मोरी सजनी ॥ लाज न गई कछु थोरी ॥ मन भायौ सो कियौ मनमोहन ॥ सो मैं सबहि सह्यौरी ॥ एसी मैं तौ मन की भोरी ॥४॥ या ब्रज में कहो कैसे रहिये ॥ निर्लज नंदकिशोर ॥ गिरिधर प्रभु के नैंन रसीले ॥ चितवत लेत चितचोरी ॥ नहि या जुग में जोरी ॥५॥

९२ राग काफी सांवरे कौं मै रंग सौं भरौंगी ॥ आँखि आँजि मुख मांड़ि पीतम कौं अब काहु सौं मैं नांही डरौंगी ॥१॥ फगुवा लै पीतांबर देहु औरु बहुत भांति के नाम धरौंगी ॥ 'मानिक चंद' प्रभु मोहि सौंह तिहारी अब कौ फागु मैं सुफल करौंगी ॥२॥

९३ राग काफी होरि खेलति ब्रज कुंजन महिया ॥ नंद नंदन सौं अति रति बाढ़ी लाड़िली बिहरति कदंब की छैया ॥१॥ पौढ़न के समै के औसर और न कोऊ रह्यौ तिहिं सैया ॥ 'सरस रंग'-संतत यह जोरि पीतम प्यारी बिना कोऊ नहिया ॥२॥

९४ राग काफी हो मेरी आली री हो मेरी आली री, श्री यमुनाजी के तीर गुलाल की मार पड़ी ॥ तुम देखो राधे रंग भरी, हो मेरी आली री, हो मेरी आलीरी ॥ इत मोहन उत राधिका, बिच-बिच नाचे ग्वालन, राधे रंग भरी ॥१॥ हो मेरी आली री, हो मेरी आली री, मदन मोहन जू की बांसुरी ॥ तुम लीने राधा छीन, तुम फगुवा दियौ है मंगाई ॥२॥ हो मेरी आली री, हो मेरी आली री, 'सूरदास' प्रभु सांवरो सब सखियन को सिंगार ॥३॥

९५ राग काफी हम तुमसौं बिनती करैं, जनि, आँखिनि भरौ गुलाल । सह्यौ परत हम पै नहीं ये, निपट अनोखौ ख्याल ॥ दरसन तैं अंतर परे हो, करहु अबीर अबीर । तुमहि कहौ कैसे जियैं जहँ, मीन न पावैं नीर ॥ स्याम ! तुम्हारे रंग रंगी कछु, और न रंग सुहाइ । नितही होरी खेलियै हो, तुम संग जादवराई ॥ यह फगुवा हम पावहीं हो, चितवनि मृदु मुसुकान । सूर स्याम करौ जू, तुम हौ जीवन-प्रान ॥

९६ राग काफी होरी लाल खेलै मुख देखनिदा चाव ॥ उत तै आवै सो मन भावै संग लगाई मिलाव ॥१॥ सहरागी साहुरो सहरागी साहुरो सेज सुभाई ॥ देवर धोरानी अति दुःखदाई कीजै कहा उपाई ॥२॥ हो लग और सहा किन आवौ मो जिय यहे उछाह ॥ 'जन हरिया' प्रभु कौं मिलौंगी होंगी बे परवाह ॥३॥

९७ राग काफी हो हो होरी कहि कहि, नव दुलहिन कौननि में भवननि, मै दुरि-दुरि हो ॥ निपट सुसील झील की टेरनि, गावति हँसति दै तारी मुरि-मुरि हो ॥१॥ सब तैं सरस देखिये सुंदरि, निरखि स्वरूप, परति रतिपति झुरि-झुरि हो ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' के प्रभु आवति रंग भीने, अति दुरि-दुरि हो ॥२॥

९८ राग काफी ए दोऊ खेलति होरी हो ॥ होरी नहीं बरजोरी ॥ध्रु०॥ ब्रज की वधू अटा चढ़ि ठाड़ी झाँकति लै पिचकारी ॥ छूटी अलक कुंडल सौं उरझी उरझी पीत पिछौरी ॥ चलो सुर गावै गोरी ॥१॥ भुज

भरि भेटि सकुच गुरु जन की मिलि करि छिप्यों री ॥ 'परमानँद' रूप रस भीजे अबीर लिए भरि झोरी ॥ बोलें सब हो हो होरी ॥२॥

९९ राग काफी आजु रस खेलति फागु बीनी छुटति मुठि गुपाल लाल की मुरि मुरि जात अनी ॥ इत कौं ठाड़ी कुँबरि राधिका उत गोकुल कौं घनी ॥१॥ चोवा कौं डोवा करि ललनाँ केसरि कीच घनी ॥ तारी दे पिचकारीन छिरकति सारी जात सनी ॥२॥ तुम कहियतु गिरिवर के ठाकुर राखति मान मनी ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु सौं राधे फागु ढनीं ॥३॥

१०० राग काफी मनमोहन रिझवार री तेरे नैन सलोनें ॥ तू अलबेली आंन गाम की अब ही आई गोने ॥१॥ खेलति नांहि फागु गिरिधर सौं धरजु रही मुख मोंने ॥ मेरे बगर में अब ही होरी के केतिक कौतिक होने ॥२॥ नीची दृष्टि करे नहीं चितवत यहे सिखई कहो कोने ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु कौं देखत हीं न लजोनें ॥३॥

१०१ राग काफी या हिं तैं पीय तेरो नाम धर्यौ हैं ढीठ ॥ होरी आई है मन भाई पायो जतन करि नीठ ॥१॥ मोय देखि उपहास करत सब आईये मोहन मीत ॥ सुनौं स्याम समझाई कहेत हौं गुप्त राखीए पीति ॥२॥ कबहूं सैन दे भाजि जात हो यह जो करत अनीत ॥ जानति हौं पीय हो बहु नाईक परति नहीं परतीत ॥३॥ कबहूंक रवकि कंठ लपटावति कबहूंक चलति दे पीठ॥ 'श्री विठ्ठल गिरिधरन लाल' तुह्मे लगे न काहू की दीठि ॥४॥

१०२ राग सारंग रंगीली होरी खेलै रँग सौंरंग रँगीलौ लाल ॥ रँगीली ॥ रँग रँगीली श्री राधिका सँग रँगीली बाल ॥ रँगीली ॥१॥ भाजन भरि भरि रँग के केसु केसर नीर ॥ रँगीली ॥ चोवा चंदन अरगजा सँग गुलाल अबीर ॥२॥ सौंधे संगबगे तन सोहे बसन रँगमगे रँग ॥ स्यामा अपने जुथ सौं स्याम सखा लीयै सँग ॥३॥ पटह निसान महुवरि बाजति ताल मृदंग ॥ दुहुँ दिसि सुघर समाज सौं उपजति तान तरंग ॥४॥ जुरे टोल दोऊ आई कैं रहे उमँग रस पाग ॥ करन मनोरथ आपनौं ज्यौं मन

में अनुराग ॥५॥ जम्यौं रँग चाँचरि मच्यों कहा कहु सुर साँच ॥ अंग अनंग न लाय कें भ्रकुटी नैननि नाँच ॥६॥ उमँग्यों आनँद क्यौं रहे कापै रोक्यौ जाई ॥ औचक हो हो करि उठी दीने सब टहुकाई ॥७॥ सीमटि सखा सनमुख भयौ जल मंत्रन मार मचाई अबीर गुलाल उड़ाई कैं दिनमनि दीयौ छिपाई ॥८॥ मेघ घटा ज्यौं छाई कैं बरखन लागी आई ॥ तन सौं तन सुझति नहि चंद उज्यारी भाई ॥९॥ बंसन मार मचाई कें दीनें सखा भजाई ॥ हरि हलधर गहि पाई कैं दीये जीत कै बाजे बजाई ॥१०॥ घेरि रही चहुँ और तैं भाजन कौं नहि दाव ॥ अकबक से मन व्है रहै भुले सकल उपाव ॥११॥ हँसति सखी सब तारी दे दे आवे करि आवेस ॥ फाग में प्रभुता को गीनै कीयै है चोर कै भेष ॥१२॥ इक सखी ढिंग आई कैं बोली चिबुक उठाई ॥ कहति मौन गहि क्यौं रहें ठग केसैं लडुवा खाई ॥१३॥ नैन आँजि मुख माँडि कें हलधर दीने छौंड़ि ॥ ग्वाल सखन की लाज तैं लियौं है नीलांबर आडि ॥१४॥ दृग मुख पौंछति जब चले बहुत खिसानैं होई ॥ हँसति सखा बलराम सौं आए एक गऐ दोई ॥१५॥ कीलकि कीलकि हँसि यौं कहै धन्य तिहारौ खेलि ॥ भाजे जीव बचाई कैं निज भैया कौं मेलि ॥१६॥ संकरषन तब यौं कह्यौं तुम ही लावो जीति ॥ बड़े मिलनीयाँ मिलि गये भूले मन प्रतीति ॥१७॥ इत गोपी नँदराई कैं आई भवन मँझारि ॥ द्वार कपाट बनाई कैं लै घेरे दोऊ सार ॥१८॥ इत राधा नँदलाल कौं करि एकांत इक ठौरि झूमकि चेतब गाव हि जुरि जुथ सब पौरि ॥१९॥ व्हेकन रस बस व्है रही राखति बाजति ढोल ॥ जो चाहै सौं लीजियै नंद बदति यौं बोल ॥२०॥ राधा माधो बोलि कै लै आई पुन पास ॥ नंद जसुमति बोलिकैं पुजवाई जिय आस ॥२१॥ दोऊ रँगमगे रँग में मिल कीनौं एक बिचार ॥ इत गठजोरो जोरी कैं राधा नंदकुमार ॥२२॥ महरि घर आनँद बढ्यौ लीयै गोद बैठारि ॥ पाट पाटंबर लै दीये मनि कंचन नग वारि ॥२३॥ सब बिधि सब भाये भयै पुरई मन की आस ॥ या घर या सुख कारनैं भावति ब्रज कौं वास ॥२४॥ गोपीजन हित कारनैं गोप भेष अवतार ॥ ब्रिंदाबन बसति सदा जहाँ क्रीड़ा नित्त बिहार ॥२५॥ श्री विट्ठल पद रज

कृपा ऐसा हिय में ध्यान ॥ 'छीत स्वांमी' गिरिधरन कौं कीनौं सुजस बखान ॥२६॥

१०३ राग काफी रसिक फागु खेलै नवल नागरि सौं सरस बर ऋतुराज की ऋतु आँई ॥ पवन मंद अरबिंद औरु कुंद बिकसे विषद चंद पीय नंदसुत सुखदाँई ॥१॥ मधुप टोल मृदु बोल सँग सँग डोले पिकन बोल निरमोल सुति चारू गाई ॥ रचित रास सौं बिलास जमुना पुलिन में सघन ब्रिंदा बिपुन रही फूलि जाई ॥२॥ कनक अंग बरनी सुकिरनी बिराजे गिरिधर नब जुबराज गजराज राई ॥ जुबती हंसगामी मिले 'छीत स्वामी' क्वनित बैनु पद रैनु बडभाग पाई ॥३॥

१०४ राग काफी फागुन मास सुहायो ॥ रसिया होरी खेलनि आयो ॥ अबीर गुलाल भरे फेंटन में दौरि बदन लपटायो ॥ हो रसिया० ॥१॥ गारी गावे भाव बतावे रस भर रीझि रीझायो ॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु कौं नाना भाँति नचाँयो ॥ हो रसिया०॥२॥

१०५ राग काफी खेलन दे मोए होरी रसिया ॥ जाने न देउंगी गही राखुंगी ॥ मेरी काहेकुं बहीयां मरोरी ॥१॥ सखी सब मिलि होरी खेले ॥ में कहा कीनी चोरी ॥२॥ चोवा चंदन और अरगजा ॥ केसर गागर भरि ढोरी ॥३॥ 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु सौं ॥ फगुवा लीयो भरि भरि झोरी ॥४॥

धमार के पद - राग सारंग

१ राग सारंग स्याम छबीले मन हर्‍यो श्रीवृंदावन के चंद ॥ ललनां ॥ध्रु०॥ मोहन मेरे द्वार व्है उझक चले जबभोर ॥ ललनां ॥ झलकत श्रीमुख देखिये चितेलियो चितचोर ॥१॥ मस्तक पंख मयूरके गरें गुंजा के पुंज ॥ वेणु बजायो हो सखी नागर नवल निकुंज ॥२॥ सुंदर स्याम सुहावनो ओर सुंदर वन माल ॥ ओढें सुंदर पटपीयरो सुंदर नयन विशाल ॥३॥ हियपरी जोता लावेली सुन मुरली की घोर ॥ चल सखी देखन जाइये नागर नवल किशोर ॥४॥ माईरी मनन रहे क्यों राखिये राखत नहीं रहाय ॥

कोटि यत्नजो कीजिये जहां प्रीतम तहां जाय ॥५॥ केसेंराखों क्योंरहे केसें के बन जाय ॥ केसें के गिरिधर मिलें सोमिस कोन कराय ॥६॥ कसें संग मिल खेलिये सास ससुर की लाज ॥ लाज किये दुःख पाइये बिन मिले होय अकाज ॥७॥ ऊंचे जो गिरिधर वसें जो नीचें घर होय ॥ बिना बुलायें बोलिये नयन निरख सुखहोय ॥८॥ वन वपुरी हरनी भली अपने पतिन समेत ॥ निस दिन श्री मुख देख हीं नयनन को फललेत ॥९॥ लटकन लटकें फूलके घूंघर वारे केश ॥ गाय गोप के वृंदमें बलहारी यह वेश ॥१०॥ सांझ समेंघर आवही मुदित सकल व्रजबाल ॥ मदन मोहन के वारनें बल बल दास गोपाल ॥११॥

२ राग सारंग ललना तुम मेरे मन अतिवसो सुंदर चतुर सुजान ॥ ललनां ॥ करगहि मोंहन मुरलिका नीकें सुनावो तान ॥ ललनां ॥१॥ मोर मुकुट सोभाबनी सुंदर तिलक सुभाल ॥ मुख पर अलका वलि बिथुरी मनहुं कमल अलिमाल ॥२॥ अधर दशनबरनासिका ग्रीवा चिबुक कपोल ॥ पीतांबर क्षुद्र घंटिका लाल काछनी डोल ॥३॥ नखसिख अंग वरनों कहा अंगअंग रूप अतोल ॥ पटतर कों कोऊ नहीं अति मीठे मृदुबोल ॥४॥ एक दिनासेनन मिले नवल कुंवर व्रजराज ॥ ग्रहते आवन ना बन्यों भई बेरिन कुल लाज ॥५॥ ग्रहते गोरस मिस चली लाज छाड कुलऐन ॥ वे मुसिकनि हृदेवसी अति अनियारे नयन ॥६॥ कहा जानें तुम कहा कियो ग्रह अंगना न सुहाय ॥ विन देखें नागर प्यारो युग समान पलजाय ॥७॥ सकल लोक मोहि वरजही पचिहारे समझाय ॥ नहीं भावे मोहि कुलकथा मोहि तिहारी चाय ॥८॥ ग्वालिन पर गिरिधर रीझे लीला कही न जाय ॥ गोपालदास प्रभु लाल रंगीलो हंसलीनी उरलाय ॥९॥

३ राग सारंग तें मोहन को मन हर्यो और तो विन रह्यो न जायरी प्यारी ॥ध्रु०॥ कुंज महल बैठे पिया नव पल्लव तल्पसंवार ॥ वीच जुही विच सेवती विच विच नवल निवार ॥१॥ तुव पथ बैठ निहारही कुंज कुटी के द्वार ॥ लोचन भर भर लेतहें सुंदर व्रज राजकुमार ॥२॥ अपने कर नख गूथहिं विविध कुसुम की चोली ॥ तेरे उर पहरावहीं चलो वेग

उठबोली ॥३॥ कबहुंक नयनन मूदकें करत वदन तुवध्यान ॥ तनपुलकित भुजभेटही करत स्वकीय धरपान ॥४॥ चंददेख आनंद ही तुव मुख की अनुहार ॥ यह छबि वाहिन पूजही निरख कलंक विचार ॥५॥ यद्यपि सकल व्रज सुंदरी कबहूं न मन अरुझाय ॥ चातृक जलधर बूंद ज्यों भुवजल तृषा न जाय ॥६॥ पियको प्रेम सखी मुख सुन्यों तब ही चली उठधाय ॥ गोविंद प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ लपटाय ॥७॥

४ राग सारंग सुरंगी होरी खेले सांवरो व्रज वृंदावन मांझ ॥ सुंरगी ॥ व्रज की नवल जु नागरी घिर आई सब सांझ ॥ सुरंगी ॥१॥ सरस वसंत सुहाबनो ऋतु आई सुखदेन ॥ माते मधुपामधुपनी कोकिल कुलकल वेन ॥२॥ फूले कमल कलिंदजा केसू कुसुम सुरंग ॥ चंपक बकुल गुलाल के सोंधे सिंधु तरंग ॥३॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा पठये सखा पढाय ॥ वाजे साजे वनरंगी लीने मोल मढाय ॥४॥ झांझ मुरज डफ बांसुरी भेरिनकी भरपूर ॥ फूंकन फेरी फेरिकें ऊँची गई श्रुति दूर ॥५॥ व्रजको प्रेम कहा कहूं केसर सों घटपूर ॥ कंचन की पिचकाईयां मारत हें तकदूर ॥६॥ आंधी अधिक अबीर की चोवा की मची कीच ॥ फेली रेल फुलेल की चंदन वंदन बीच ॥७॥ व्रजकी नवल जु नागरी सुंदर सूर उदार ॥ खेलन आई सबें जुरी श्रीराधा के दरबार ॥८॥ फूल डंडा गहि हाथ सों मारत वांह उठाय ॥ चंचल अंचल फरहरे पेने नयन चलाय ॥९॥ श्रीराधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाय ॥ छलकर छेले छिरककें हंसि भाजी डहकाय ॥१०॥ नारी को भेष बनायकें पठयो सखा सिखाय ॥ अतिही अधिक कहावती ललिता भेटी जाय ॥११॥ गेंदुक कीनी फूलकी दीनी श्रीराधा हाथ ॥ आय अचानक ओचका तक मारी व्रजनाथ ॥१२॥ व्रज की वीथनि सांकरी उत यमुना को घाट ॥ बलदाउ कों बोलकें दीने गाढे कपाट ॥१३॥ हलधर हें जु महाबली सांचे हैं बलरास ॥ बलिको बलजो कहा भयो गहि बांधे भुज पास ॥१४॥ नयनन अंजन आंजिके सोंधो ऊपर डार ॥ पाय परि द्वारे पटदये रसकी रास विचार ॥१५॥ फिर भाजी सब दे दगा आनन दीने और ॥ मदन गोपाल बुलायकें गहिलाईं वरजोर ॥१६॥ गिरिधारचो

करवामसों खरमार्‍यो गहिपाय ॥ तिनको भार कहा भयो ललिता लेत उठाय ॥१७॥ घरमें घेर सबें चली श्रीराधा कों संगलेत ॥ दोऊ जनऐंच मिलायकें नयनन कों सुखदेत ॥१८॥ तब ललिता हँसियों कह्यो श्रीराधा कों सिरनाय ॥ नीलांबरसों ढांपकें मुख मूंद्यो मुसिकाय ॥१९॥ उतश्रीदामा अचगरो इतललिता अतिलोल ॥ बीच विसाखा साखिदे मुरली मांगत ओल ॥२०॥ व्रजवासी वृषभान को मदनसखा वाको नाम ॥ स्याम मतेकोमिलनियां वसकीनों सब गाम ॥२१॥ पठयो मदनवसीठही ढीठ महा मदलोल ॥ छिन ओरे छिन ओर व्हे छाक्यो छेलदुछोल ॥२२॥ मदनामदन गोपाल को हलधर कों लेआय ॥ श्रीराधा की दिसजायकें चांपतहें हँसिपाय ॥२३॥ श्रीदामा हँसियों कह्यो मेवा देहु मंगाय ॥ नेंक हमारे स्याम कों आनन को मधुप्याय ॥२४॥ भाग सुहाग सबें बढ्यो खेलत फाग विनोद ॥ राधा माधो बैठारे व्रजरानी की गोद ॥२५॥ भूषण देत यसोमति पोहोंची पान पछेल ॥ टीको टीकी टीकावली हीरा हार हमेल ॥२६॥ श्रीविट्ठल पद पद्म की पावन रेणु प्रताप ॥ छीत स्वामी गिरिधर मिले मेटे तन के ताप ॥२७॥

५ राग सारंग अहो पिय लाल लडेंती को झूमका सरस सुर गावत मिल व्रजबाल अहो कल कोकिल कंठ रसाल ॥ लाल बल झूमका हो ॥ध्रु०॥ नवजोबनी शरद शशि वदनी युवती यूथजुर आई ॥ नवसत साज सिंगार सुभग तन करन कनक पिचकाई ॥ एकन सुवन यूथ नवलासी दामिनि सी दरसाईं ॥ एक सुगंध संभार अरगजा भरन नवल कों आई ॥१॥ पहरें वसन विविध रंग रंगन अंग महारस भीनी ॥ अतरोटा अंगिया अमोलतन सुख सारी अति झीनी ॥ गजगति मंदमराल चाल झलकत किंकिणी कटिछीनी ॥ चोकी चमक उरोज युगल पर आन अधिक छबिदीनी ॥२॥ मृगमद आड ललाट श्रवण ताटंक तरणि द्युति हारी ॥ खंजन मान हरण अखियां अंजन रंजित अनियारी ॥ यह वानिक बन संग सखी लीनी वृषभान दुलारी ॥ एक टक दृष्टि चकोर चंद ज्यों चितये लाल विहारी ॥३॥ रुरकत हार सुढार जलज मणि पोत पुंज अति सोहें ॥ कंठसरी दुलरी दमकनि चोका चमकन मन मोहें ॥ वेंसर थरहरात गजमोती रतिभूली गति जोहे ॥

सीस फूल श्रीमंत जटत नग वरण करण कवि कोहें ॥४॥ नवल निकुंज महल रस पुंज भरे प्यारी पिय खेलें ॥ केसर ओर गुलाल कुसुम जल घोर परस्पर मेलें ॥ मधुकर यूथ निकट आवत झुक अति सुंगध कीरेलें ॥ पीतम श्रमित जान प्यारी तब लाल भुजा भर झेलें ॥५॥ बहुविध भोग विलास रास रस रसिक विहारण रानी ॥ नागर नृपति निकुंज विहारी संग सुरतरति मानी ॥ युगल किशोर भोर नहिं जानत यह सुख रेनविहानी ॥ प्रीतम प्राण प्रिया दोऊ विलसत ललितादिक गुणगानी ॥६॥

६ राग सारंग मोहन खेलत होरी ॥ध्रु०॥ बंसीवट यमुना तट कुंजन तर ठाडे बनवारी ॥ उतही सखिन को मंडल जोरें श्रीवृषभान दुलारी ॥ होडा होडी करत परस्पर देतहें आनंद गारी ॥ भरें गुलाल कुंकुमा केसर करन कनक पिचकारी ॥१॥ बाजत वेणु बांसुरी किन्नरि महुवर ओर मुख चंगा ॥ आवज अमृत कुंडली अघवट ताते सरस उपंगा ॥ ताल मृदंग झांझ डफ बाजत सुरके उठत तरंगा ॥ गावत नाचत करत कौतूहल छिरकरत केसर अंगा ॥२॥ तबही स्याम सब सखा बुलाये सबहिन मतो सुनायो ॥ अरे भैया तुम चौकस रहीयो मत कोऊपाय गहायो ॥ जो काहू कों पकर पायहें कर हें मन को भायो ॥ ताते सावधान व्है रहियो में तुमकों समुझायो ॥३॥ तबही किशोरी राधा गोरी मनमें मतो जुकीनों ॥ एक सखी तहां बोल आपनी बेष सुबल को दीनों ॥ ताको मिलन चले उठ मोहन सखान कोऊ चीनों ॥ नेंसिकवात लगाय लालकों पाछेते गहिलीनों ॥४॥ आई सिमट सकल व्रज सुंदरि मोहन पकरे जबही ॥ मांगत हुती यही विधिनापें दाव जो पायो अबही ॥ तब तुम वसन हरेजु हमारे हा हा खाई सबही ॥ अब हम वसन छीनि कें लेहें हा हा खेहो तुमही ॥५॥ एक कहे नेंक वदन उघारो हम हूं देखन पावें ॥ एक कहें मुखमांड स्यामको माथे बेंदालावे ॥ श्रीमुख कमल नयन मेरे मधुकर तिनकी तृषा बुझावें ॥ एक कहे नेंक इनहिं नचावो हमसब ताल बजावें ॥६॥ एक सखी मधुरे स्वर गावें मुखते गारी भाखें ॥ एकजु हँसत दूर भई ठाडी घूंघट पटमुख ढांकें ॥ एक सखी हरि को मुख चितवत तनकी दशा न ताकें ॥ श्री हरि चरित्र अंतको पावे सबहिन

की दिसताकें ॥७॥ एक जु सखी आय पाछेते मोर पक्ष गहिलीनो ॥ एक अचानक आय लालको पीतांबर गहिछीनो ॥ एकन आंख आंज मुख मांड्यो ऊपर गुलचादीनों ॥ मानत कोन फाग में प्रभुता मन मान्यों सो कीनों ॥८॥ एक कहे बोलो बलभैया तुमें ही आन छुडावे ॥ सखा एक पठवो तुम घरलों जसुमति कों लेआवे ॥ छल बल सों छूट्यो चाहतहो गहेन छूट न पावें ॥ श्रीराधाजू की करो वीनती सो तुम भले हि छुडावें ॥९॥ दूरही ते देखे बलआवत एक सखी उठधाई ॥ छल बल कर जेसें तेसें कर उनहूं कों गहिलाईं ॥ आन पकर इक ठोरे कीने हरिहलधर दोऊ भाई ॥ उनहूंकी आंख आंज मुख मांड्यो श्रीराधाजू सेन बताई ॥१०॥ करजोरें हरि हलधर ठाडे आज्ञा हम कों कीजे ॥ जो कछु इच्छ होय तुमारी फगुवा हमसों लीजे ॥ हँसहँस बात कहत मनमोहन बोवत सुख के बीजें करो विदा जांय अपनेघर पीतांबर मेरो दीजें ॥११॥ देख देख ब्रह्मा शिव नारद मनहींमन पछिताईं ॥ ये बड भाग्य सकल व्रज वनिता हम मुख कही न जाई ॥ ज्याकारण हम ध्यानरत हें ध्यानहूं आवत नाहीं ॥ सो देखो व्रज युवतिन आगें ठाडे जोरे बांही ॥१२॥ तब ही स्याम सब सखा बुलाये फगुवा बहुत मंगायो ॥ जो जाके जेसो मन मान्यों तेसो ताहि पहरायो ॥ श्रीजगन्नाथराय चिरजीयो सबको भलो मनायो ॥ वाढो वंश नंद बावा को माधोदास यश गायो ॥१३॥

७ राग सारंग ग्वालिनि सोंधे भीनी अंगिया सोहे केसर भीनी सारी ॥ लहेंगा छापेदार छबीलो छीन लंक छबि न्यारी ॥१॥ अधिक वार रिझवार फाग खिलवार चलत भुजडारी ॥ अतर लगाये चतुर नारि तब गावत होरी की गारी ॥२॥ बडी बडी वरुणी तरुणी करिणी रूप जोबन मतवारी ॥ छबि फुलेल अलकें झलकें ललकें लखछेल विहारी ॥३॥ हाव भाव के भवन केधों भ्रूंहन की उपमा भारी ॥ वसीकरन केधों जंत्रमंत्र मोहन मनकी फंदवारी ॥४॥ अंचलमे न समात बडी अखियां चंचल अनियारी ॥ जानों गांसी गजवेल कामकी श्रुति खरसान संवारी ॥५॥ वेसर के मोती की लटकन मटकन की बलहारी ॥ मानों मदन मोहन जूको मन अचवत अधर सुधारी ॥६॥ बीरी मुख मुसकान दशन चमकत चंचल चोकारी ॥

कोंधि जात मानों घनमें दामिनि छबि की पुंज छटारी ॥७॥ स्याम बिंदु गोरी ठोडी में उपमा चतुर विचारी ॥ जानों अर्विंद चुभ्यो न चले मचल्यो अलिको चिकुलारी ॥८॥ पोति जोति दुलरी तिलरी तरकुली श्रवण खुटिलारी ॥ खयनवने कंचन विजांयठे करन चूरी गजरारी ॥९॥ चंपकली चोकी गुंजा गजमोतिन की माला री ॥ करें चतुरचित की चोरी डोरी के जुगल झवारी ॥१०॥ पेने सुख देने कंचन कुच खुभी कंचुकी कारी ॥ काम कुटी करदीनीहे कीनी शिव सों फिर यारी ॥११॥ एडी लाल महावर जेहर तेहर बाजन वारी ॥ घायल किये पाय पायल कर सायल नंद ललारी ॥१२॥ जोर दीठसों दीठ ईठमंजीठ रंगनरंग भारी ॥ लगी लाल के पगी खगी चित चितवन की पिचकारी ॥१३॥ मोहन मदनगोपाल लालपर पढ गुलाल जब डारी ॥ संग लग्यो डोले रसीया वृंदावन में बनवारी ॥१४॥ छबि दौरन मोरन मरोर पिय जाय भरे अंकवारी ॥ प्रेम फंद पकरे जकरे गोरी नें गिरिवरधारी ॥१५॥ छीन लई मुरली करते पटुका पट पीत उतारी ॥ ग्वालिन अधर धरी बंसी वरषी रस सिंधु सुधारी ॥१६॥ जो भावे सो ले ललना कलना पलना मोहि प्यारी ॥ तोहिददाकी सोंहे ग्वालनी देबंसी हा हारी ॥१७॥ बाहनमें बाहें चाहें मुख चंद चकोर पियारी ॥ मोहन स्यामत माल बाल लपटानी हेम लतारी ॥१८॥ गांठ जोर गोविंद चंदसों दीनी सखिन संवारी ॥ तारी देदे गारी गावें ग्वाल देत किलकारी ॥१९॥ वशीकरण बतियन रस वरखत वरसाने की नारी ॥ प्रभु घनस्याम दियो मनमेवा फगुवा प्रानप्यारी ॥२०॥

८ राग सारंग एसो खेल होरी को जहां रहत नहीं कछुकान ॥ जहां कहियत परम वखान ॥ जहा मिलवे की अकुलान ॥ जहां बोलत जान अजान ॥ जहां खेलत में न अघान ॥ जहां परत नहीं पहेचान ॥ जहां रूप भेष उलटान ॥ जहां परमनिर्लज्जिताबान ॥ जहां खेलन की रहठान ॥ जहां अति आनंद वढान ॥ जहां रहत सबे ऋतुमान ॥ जहां खेललराई ठान ॥ जहां तन मन धन विसरान ॥ध्रु०॥ कर सिंगार घरनते निकसीं द्वारें ठाडी आय ॥ खेलन को नंद लालसों व्रज युवती सहज सुभाय ॥१॥ गावत गीत

सुहावने ऊंचे स्वर पियहिं सुनाय ॥ सुनत श्रवण ले सखनकों आये व्रजभूषण धाय ॥२॥ मोहन मन वसकरणकों व्रज युवतिन रच्यो उपाय ॥ नाचत गावत रसभरे अरुवाजे विविध बजाय ॥३॥ वदन विलाक्यो लालको हँस घुंघट पट सरकाय ॥ उरआनंद अतिही बाढ्यो मन भावन यह विधपाय ॥४॥ मोहन के सिंगार को सब लीनो साज मंगाय ॥ चोवा चंदन अरगजा ओर सुगंध गुलाल भराय ॥५॥ लये सेन देवातके मिस मोहन निकट बुलाय ॥ परस कपोलन प्रेमसों पियलीने अंग लगाय ॥६॥ वसननये ले आपने प्रीतम कों सब पहराय ॥ आभूषण बहुभांतके पहराये देख बताय ॥७॥ प्रथम कपोलन छिरककें ले चंदन बिंदु बनाय ॥ सुरंग गुलाल अबीरसों कर चित्ररहत मुसिक्याय ॥८॥ पगिया पेचन छिरककें वागोइ जार छिरकाय ॥ शोभा चित्र विचित्र की नयन नहीं परतल खाय ॥९॥ अधिक गुलाल उडायकें सब हिन की दृष्टि बचाय ॥ मन भायो पिय सों करें प्रति अंगन अंग मिलाय ॥१०॥ मंडल मध्य पियराखकें मिल नाचत अति सरसाय ॥ गावत अति आनंदसों पिय छिन छिन हृदो अघाय ॥११॥ खेल रच्यो व्रजलाडिले व्रजयुवतिन पाय सहाय ॥ दूरभये गुण गावही सब गोप शब्द उघटाय ॥१२॥ रस रसिकन मन अति बढ्यो हो तिहुंलोक रह्यो छाय ॥ श्रीवल्लभ पद कमल की जनरसिक सदा बलिजाय ॥१३॥

९ राग सारंग हों लाल तें प्यारी चित हरि लियो तो बिन कछु न सुहाय लाल ॥ तलफे जल बिन मीन ज्यों चन्द चकोर दिखाय लाल ॥१॥ लाल फिर-फिर बात व्है पूछे बूझ-बूझ पछताय लाल ॥ झुकि लई दुपति करि लाग्यो लग्यो मदनसर जाय लाल ॥२॥ लाल देखे ही सब जानि हो बैन न कछु कहाय लाल ॥ यह सुनि स्याम कुंज चले गडे पाछे आवे लाल ॥३॥ लाल सखान सहित प्यारी जहाँ सेन सबै समुझाय ॥ इत जुग हस्त अँखियाँ मींची पुनि मुरली मुख लाय लाल ॥४॥ लाल जब कह्यो यह को है हो जुगत चतुरभुजराय लाल ॥ यों कर रीझये लाडिली सन्मुख व्है हरखाय लाल ॥५॥ लाल छिरकत योवा चंदन अबीर गुलाल उडाय लाल ॥ प्रफुलित मन बातें करें आनंद उर न समाय लाल ॥६॥

लाल रीझ हार ललिता दियो प्यारी कछु मुसकाय लाल ॥ चरनकमल वंदन करे द्वारिकेश गुन गाय लाल ॥७॥

१० राग सारंग माई होरी खेले मोहना लियें गुलाल अबीर ॥ वनवन चली सकल व्रजवनिता पहरेंविविध पटचीर ॥१॥ अरगजवाद कुंकुमा केसर चरचे स्याम शरीर ॥ मृदु मुसिकाय परस्पर सुंदरि दशन झलक मुख हीर ॥२॥ प्रेम पतंग पिचकारी छूटत ओर यमुना को नीर ॥ सूरदास प्रभु रस वसकर लीने हरि हलधर के वीर ॥३॥

११ राग सारंग कान्ह रस भीनी ग्वालिनी ओए गोरस तज कुलकान ॥ नाघर में कलना अंगना वाको मन जो लाजके पान ॥१॥ जोबन रूप रिझोने नयननमें वाकी परीचितवन की वान ॥ डफ मुरली सुन गई कोरतज पानी कोउत्तर ठान ॥२॥ खेलत मोहन गहिका जरदे हँसी पीत पटतान ॥ जगन्नाथ कवि राय के प्रभुसों फाग खेल खिलरान ॥३॥

१२ राग सारंग हों क्यों जाऊंरी दधि वेचनमाई नंद लाल खेलत होरी ॥ विन होरी होरी सी खेलत अवतो होरी करपाई ॥१॥ गोरस की मटुकी ले सीसते दौर कहत तूमोकों लाई ॥ कृष्ण जीवन लछी राम के प्रभुसो पकर पाये हें तो करहें आप मन भाई ॥२॥

१३ राग सारंग होंसनायक खिलवार होरी की कर लियें डफ हिं बजावेंहो ॥ पान भरे मुख चमकत चौका ओर दिये बेंदी रोरी की ॥१॥ तनसुख सारी रातो लहेंगा कहा कहों छबि गोरी की ॥ नीवी गढ जु रही नाभीपर ओर कसगांठ दई डोरीकी ॥२॥ चोवाकी बेंदी तोयन पर ओर अचरा ढिंग थोरी की ॥ उसरत अंगिया कठन कुचन पर आय मनोरथ जोरी की ॥३॥ जोबन रूप बनी सुबनी मानों है वृषभान की ओरी की ॥ नंदलाल कों गारी देत हें ग्वालिन सों गठजोरी की ॥४॥ भरत न डरत आंखि आंजत हें करत दुहाई किशोरी की ॥ हो हो कहि सुघर राय प्रभु नयन सेन चित चोरी की ॥५॥

१४ राग सारंग छांडो छांडो हमारी वाट लंगर सांवरे ॥ जिन

फोरो ढोरो मेरी गागर भरन देहु यह घाट ॥१॥ जिन झगरो पकरो मेरो अचरा देख विचारो ठोर ॥ तुम होरी के रातेमाते बोलत ओर की ओर ॥२॥ लेहों घेर निवेर सबनपें कर हों न काहू की कान ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन लाल तुम जीते हो मुसिकान ॥३॥

१५ राग सारंग होरी खेले नंदलाल होरी नंद महर की पौरी ठाडो संगलिये व्रजबाल ॥१॥ वेणु बजाबे मधुरे गावे और उघटावे ताल हरें हरें युवति में धस कें चुंबनदे भजेगाल ॥ वदन उघारे बिंदुलीनि हारे तिलक बनावे भाल ॥ कबहुंक आलिंगनदे भाजे आय मिले ततकाल ॥३॥ कबहुंक ढिंग व्है अचरा खेंचे छुवावे नीरज नाल ॥ कबहू आय बलैयां लेले पहरावे वनमाल ॥४॥ कबहुंक नाचे भाव दिखावे कबहू बजावे ताल ॥ कबहुं अबीर अरगजा लेकें ओर उडावे गुलाल ॥५॥ कबहुंक हाथाजोरी नाचे मंडल मध्य प्रतिपाल ॥ श्रीवल्लभ पद कमल कृपातें गावें रसिक रसाल ॥६॥
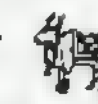
१६ राग सारंग अहो पिय मोसों हीं खेलो हों खेलों तुमसंग ॥ जो कोऊ ओर खेलिहे तुमसों करहों तामें भंग ॥१॥ हों हीं आंजों तुह्मारे नयना जानेन ओर गमार ॥ तुम मेरे मुख मृगमद मांडो हों भेटों अंकवार ॥२॥ तुम डफ लेहु आपनेहीकर हों गाऊंगी गार ॥ कुंकुम रंग जो छिरको भरभर रत्न जटित पिचकार ॥३॥ तुमसों कहें लेत फगुवा में हों आलिंगन लेहों ॥ व्रजपति आज आन वनिता को लागन लागन देहों ॥४॥

१७ राग सारंग हा हा अब कें मोसों खेलियें बहोरिन भरि हों आँख ॥ जो तुमारे परतीत नांहिजिय ललिता देहूसांख ॥१॥ जो अब कें न खिलायहो ये सबें हसेंगी मोहि ॥ बावा की सों पाय लागत हों यह विनवत हों तोहि ॥२॥ अपने निकट सबन के देखत बोललेवो एकवार ॥ कुंददाम श्रीकंठतें हस मुखते देहोउगार ॥३॥ बहुत गुलाल उडाय सांवरे दिनकर लीजे सांझ ॥ आलिंगन दे सांवरे कोऊ लखे न धूंधर मांझ ॥४॥ खेल फाग त्योहार मानिये आज हमारे धाम ॥ मदन मान मर्दन करो पिय व्रजपति पूरन काम ॥५॥

१८ राग सारंग लाल तुम वरसानें क्योंन आवो मोहन नागरहो ॥ यूथ यूथ युवतिन के देखो लोयनहियो सिरावोहो ॥१॥ शशिबदनी शावक मृगनयनी खेलन कुंजन आवें ॥ अतिविचित्र मधुर स्वरलीने गीत काम के गावें ॥२॥ एक वेस किशोर सबन की प्रीति रीति उपजावें एको पलजो देखन पावो तो तुम सुधि विसरावें ॥३॥ तिनमें श्रीराज किशोरी राधा श्रीवृषभान दुलारी ॥ कनक वेलि कमनीय गजगमनी कीरति प्रान पियारी ॥४॥ अष्ट सखी तिनके संग सोहें चंद्र भगा ललितारी ॥ जोबन संग सुगंध माधुरी सुंदर सब बारी ॥५॥ चले स्याम अभिराम धाम वृषभान नृपति के आये ॥ कोऊ न लीनों संगसखा बनकों सब फेर पठाये ॥६॥ सहचरी को धर भेष सकल सिंगार अद्भुत बनाये ॥ चंपकली भेद लालजू ललितानें लखपाये ॥७॥ कही कुवरी सों जाय बातएक भांत विचित्र बनाई ॥ सखी सांवरी आज कोऊ अद्भुत या भू ऊपर आई ॥८॥ एक जू तुम्हारी वेस विलास बाल शोभा नित सुंदर ताई ॥ तुम गोरी वे सांवरी मूरति मानों मेन बनाई ॥९॥ मधुऋतु फागुन मास आज हम तुम मिल खेलें होरी ॥ चोवा चंदन बूका बंदन फेंट भरे भरझोरी ॥१०॥ बिपिन विनोद परस्पर बाढ्यो झखझोरा झकझोरी ॥ व्रज भूषण हित दंपति संपति भूतल अविचल जोरी ॥११॥

१९ राग सारंग कांकरी कान्ह मोहि मारे ॥ टेढी चितवन मोतन चितवत लोट-पोट करडारे ॥१॥ हूं गुरुजन की लाज करत सखी निकसत निपट सवारे ॥ वरज्यो न मानें नंदको कोऊ कहि पचिहारे ॥२॥ कहा करूं कित जाऊं सखीरी को यह न्याव विचारे रसिक राय प्रीतम की बातें इतनी कोन सहारे ॥३॥

२० राग सारंग स्यामा नकवेंसर अति बनी छबि कविपें वरनी न जाय ॥ सोने सरस सुनार गढी हे हीरा लाल लगाय ॥१॥ आधे अधर विराजत मोती लाल रहे ललचाय ॥ ताकी शोभा अति बाढी हे भयोगुंज को सुभाय ॥२॥ तनसुख सारी रातो लहेंगा क्यों न स्याम मन भाय ॥ शोभाहित हरिवंस सांवरे चिते चली मुसिक्याय ॥३॥

२१ राग सारंग चलरी सिंघ पोरि चाचरमची जहां खेलत ढोटा दोय ।। जोन पत्याय सुनें किन श्रवणन हो हो हो हो होय ।।१।। अपनें नयन निरख हों आई कहत न बात बनाय ।। तोसों मोहन सेना देखकें मन धीरज धरयो न जाय ।।२।। एक न किये बनायतिलोना एक अरगजा भीनें ।। एक न करी खोर चंदन की चोवा बेंदी दीने ।।३।। तहां वाजत वीन रबाब किन्नरी अमृत कुंडली जंत्र ।। अधर सुधायुत बांसुरी हरि करत मोहनी मंत्र ।।४।। सुर मंडल पिनाक महुवर जल तरंग मन मोहे ।। मदन भेरि राय गिड गिर्डी सहनाई सुरसोहे ।।५।। कठतार तार करतारीदेदे बजत चुटकिन चुटकारें ।। झांझ झनक खंजीर बजें भई झालर की झनकारें ।।६।। एक शृंग संख ध्वनि पूर रही अधर धरें मुखचंगा कर ले डफ ही बजाव ही एक डिम डिम ढोल मृंदगा ।।७।। तहां घुरें निसान-नगारे की ध्वनि रह्यो घोरव सब गाज ।। दुंदुभी देव बजावहीं सब व्योम विमान न साज ।।८।। तहां बहुविध भर रंग सोंधे केसर कुंकुमनीर ।। मृगमद मेदलयो वेलाभर अरगजा अरक उसीर ।।९।। रत्न जटित पिचकारिन भरभर छिरकत सुंदर स्याम ।। ग्वालिन सुरंग अबीर गुलाल मुठीभर भर डालत बलराम ।।१०।। एक बूका वंदन कुंकुमजल घोर कलश भरलावे ।। अचकां आय पीठ पाछेते मोहन के सिरनावे ।।११।। फिर सुमन सुगंध फुलेल अरगजा लयो करन लपटाय ।। नेंक मोहनसों बतराय भजी बलदाऊ वदन लगाय ।।१२।। सब होरी के रंग राते माते डोलत करत कलोलें ।। रंग रंगीली गारी देदे हो हो होरी बोलें ।।१३।। सुख समूह कछु कहत न आवे निरख नयन सचुपैये ।। पूजे मन अभिलाष तबे व्रजपति सों खेलनजैये ।।१४।।

२२ राग सारंग तु कबकी खिलवारि होरी खेलनजानें ।। बरजति हों रहि ग्वालिन खेलें कीरति सकुमारि ।।१।। जब आवत कर कमल ना ललें थोरो सो घूंघट डार ।। चलत दृगं चल अंचल औझल मुर्ति मेन सरमार ।।२।। गरुवे वचन बोल हरुवेदे जाति सबन कों मार ।। कर पर कर धर चिबुक अंगुरिया इकटक रही निहार ।।३।। दक्षण चरण उठाय उलट धरणी जो अंगूठाधार ।। एक टक देख रहत ठाडीधर रूप तृभंगी नार ।।४।। कबहू

सकुचि घूंघट गहरो दे गाबत सरस धमार ॥ बहुत गुलाल उडाय गगन फिर देखत वदन उघार ॥५॥ तुलतनरति नखसिख एको अंग को कहि सके विचार ॥ मन हरणी व्रज तरुणी सबे ये मोहन मन फंदवार ॥६॥

२३ राग सारंग सुन चली सकल व्रजनार प्यारो मदनमोहन खेले होरी ॥ बगर बगर तें झुंडन निकसी नवसत साजि सिंगार ॥ध्रु०॥ तिनमें श्रीवृषभान कुवरिको मध्य झूमका सोहे ॥ कीर कुरंग कपोत कोकिला निज प्रतिनिधि ते मोहे ॥ छेल छबीली चरण धरन गति मत्त गयंद लजावे ॥ रंग रंगीली एडी महावर नवनूपुर परसावे ॥१॥ लहेंगा लाल नील कंचुकीतन तन सुख सारी नीकी ॥ माणिक जटित जुगल ताटंकन तरण किरण द्युति फीकी ॥ लसत कपोल लरें मोतिन की सेंदुर मांगभरी ॥ कंचन आड ललाट सुभगविच बेंदी जरायजरी ॥२॥ मृगमद खोर रुचिर नकवेसर अधर बिंबकी शोभा ॥ यह बानिक बनठन आई मनमोहन को मन लोभा ॥ सन्मुख स्याम हि हरख निरख मन ठठकि रही व्रजनारी ॥ अंजन युत खंजनसी चलवत चपल दृष्टि अनियारी ॥३॥ केसर भरी कनक पिचकाई अंचल ओट दुराई ॥ औझल व्हे तकतान हिये वर लगत स्याम के जाई ॥ मोहन सखा समूह संगले कुंकुम कलश भराई ॥ युवती यूथ में जाय अचानक दिये सीसतें नाई ॥४॥ ललिता चंद्र भगा आदिमिल गूढ मंत्र एक कीनों ॥ बूका बहुत उडाय गगन तन दिन रजनी करलीनों ॥ श्रीवृषभान लली को श्रीमुख राकापति ज्योंराजे ॥ हिमकर चांदनी जलद में ज्यों त्यों घुंघट छबिछाजे ॥५॥ तब ललिता धाय अचानक जाय गहे भुज बल हलधारी ॥ आई ले निजटोल सबे मुदित भई व्रजनारी ॥ नयन आंजि चोवा मृगमद के चित्र कपोलन काढे ॥ कुंकुम घोर पीठि थापेदे नीलवसनले छांडे ॥६॥ तब निरख सखा किलक मन महियां सबहिन मतो उपायो ॥ एक एक कर पकर सबन कों करत आप मन भायो ॥ सुनव्रज वधू दसक एकत्र व्हे विफरी खेलन आंई ॥ फुल छरीदे हाथ ग्वालके चाचर भली मचाई ॥७॥ मधुमंगल डफ लेले आवे वांके वेन सुनावे ॥ पाय पिछोंडे भाजे ही सन्मुख चुटकीदे चुटकावे ॥ एकजु चित्र लिखी सी ठाडी हरे हरे आवनदीनों ॥ फूलछरी दे मुखमें छलसों बल

कर गहिलीनों ॥८॥ तब छीन लियो डफ छोर पंचांगी मुख चोवा लपटायो ॥ कर चुटकी क्यों देत हु तोयों कहत चिबुक उचकायो ॥ एक फुलेलनरि सों चोवा सान चिकुर चिकटायो ॥ कह्यो सबन भरुवा भयो उनकर संकोच सिरनायो ॥९॥ तहां पिचकारिन की धारें छूटी दुहुं दिस होडा होडी ॥ सब मन खोलें मुखहो बोलें कुल मर्यादा तोरी ॥ हरें हरें सब निकट आई मागन फगुवा भई ठाडी ॥ पकर फेंट प्यारे प्रीतम की चीत चित्रज्यो काढी ॥१०॥ तब छीनिलई मुरली कटिते कोऊ लेजु भगी वनमाला ॥ तारी देहसु यों कहेंनेक नाचो मदन गोपाला ॥ भूषण वसन मंगाय अमोलक सबहिन कों पहराये ॥ मेवा गोदभराय सबन की अति आनंद बढाये ॥११॥ खेल फाग अनुराग सबे मिल टिके नंद की पौरी ॥ देव दुंदुभी बाजत राजत बलमोहन की जोरी ॥ देत असीस चलींव्रज भामिन अवचल रहो व्रजराई ॥ चिरजीयो हलधर व्रज नायक गोवरधन होय सहाई ॥१२॥

२४ राग सारंग खेलें चाचर नरनारि माई होरी रंग सुहावनों ॥ वाजत ताल मृदंग मुरज डफ वीना ओर सहनाई माई ॥१॥ उतखिल वार रसिक गिरिधर पिय इतराधिका खिलार ॥ उनसंग ग्वाल बाल सबराजत इन संग गोपकुमार ॥२॥ उनन लई भर फेंट गुलालन इनन लई पिचकारी ॥ अति अनुराग भरे मिल खेलत अंतर भाव उघारी ॥३॥ उतले नाम पढत हो लें मुख इतहि देत ये गारी ॥ एक जु युवती धाय गहिलाई भर पियकों अंकवारी ॥४॥ एकन लई झटक कर मुरली एकन लीये हार उतारी ॥ एक मुख मांड आंज दोऊ नयना एक हसत देतारी ॥५॥ एक आलिंगन देतलेत एक रही जो वदन निहार ॥ एक अधर रसपान करत एक सर्वस डारत वार ॥६॥ एक मगन रस भुज प्रीतमकी लेत आप उरधारी ॥ धन्य व्रजयुवती भाग्य पूरन ये यह रस विलसन हारी ॥७॥ मच रह्यो गहगड सिंघ द्वारपें सकतन कछू संभारी ॥ भीजे खेल रेल पेलन में श्रीविठ्ठल गिरिधारी ॥८॥

२५ राग सारंग कुंवर दोऊ राजत नवल किशोर अति आनंद भरे ॥ अहो व्रज युवतिन के चितचोर परम विचित्र खरे ॥ध्रु०॥ इत श्रीमदन गोपाल सखा भुज अंसन दीने ॥ उत राधिका प्रवीन मेल अपने संग लीने ॥

कुंवरि कुंवर सोंनेहहे बढ्यो अधिक अनुराग ।। निकसि गामके गोंयडें हरि खेलन लागे फाग ।।१।। वाजत डफ बांसुरी ताल मिल मधुर मृदंगे ।। गावत सारंग राग अधिक सुख उपजत अंगे ।। नरनारिनके नेहहें लाज रही नहीं गात ।। कछु वे कहत कछू ये कहें सबे स्याम रंग रात ।।२।। तब उन ग्वालन उमग लई हाथन पिचकारी ।। गोपिन के मुख भरत देत होरी की गारी ।। घात किये चितवत फिरें उतेंछेल के बाग ।। सावधान सब गोपिका देतन लागन लाग ।।३।। तब ही ग्वालिनी धाय गह्यो एक संग मिल पीकों ।। आंख आंज सुख मांड दियो सेंदुर को टीको ।। कान ऐंचि गुलच्यो सबे और दीनों मुकराय ।। चलत आपने मेल कों खिसल परत नहीं पाय ।।४।। तब ही नंद के लाल समझ कछु बात विचारी ।। धरच्यो त्रियाको रूप जाय भेटे व्रजनारी ।। पाछे ते सकुची सबे जब जान्यो यह भाव ।। तारी देहसकें चले हम लियो हे सखा को दाव ।।५।। तब ही सहचरी एक भेष हलधर को कीनो ।। गोकुल तन व्हे आय पहरनील पटझीनों ।। ताहि मिलन केशव चले कर अग्रज की कान ।। इत चितवत दुचिते भये उत गहे ग्वालिनी आन ।।६।। एक अली भुजगहे एक पटका झकझोरे ।। एक धरे हरिहसे एक मुखसों मुख जोरें ।। एक कहेरी छांडिये कहिये गरभदुभाय ।। एकन वात न लाय लालकी मुरली लई छिनाय ।।७।। छूटन पाओ तबे देयो फगुवा मन मान्यो ।। रंग रंग वसन मंगाय दियो जाहि जेसोही बान्यो ।। एक नयन की सेनदे एकनतन मुसिक्याय ।। एक आंकों भरले चले हरि सबको भलो मनाय ।।८।। नाना भोग विलास रास वृंदावन कीनों ।। हरखि बल्लवी नारि परम सुख सब कों दीनों ।। मदन लजानों देख कें कमल नयन की केलि ।। गिरिधर पिय आये घरें सब सुख सागर झेलि ।।९।।

२६ राग सारंग करतारी देदे नाचेंही बोलें सब होरी हो ।।ध्रु०।। संग लियें बहु सहचरी वृषभान दुलारी हो ।। गावत आवत साजसों उतते गिरिधारी हो ।।१।। दोऊ प्रेम आनंदसों उमगे अति भारी ।। चितवन भर अनुरागसों छूटी पिचकारी ।।२।। मृदंग ताल डफ वाजहीं उपजे गति न्यारी ।। झूमक चेतव गावहीं ये मीठी गारी ।।३।। लाल गुलाल उडावहीं सोंधे

सुखकारी ॥ प्यारी मुखहिलगावहीं प्यारो ललन विहारी ॥४॥ हरे हरे आंई दुरकरी अबीर अंधियारी ॥ घेरले गईं कुंवरकों भरकें अंक वारी ॥५॥ काहू गहिवेनी गुही रचि मांग संवारी ॥ काहू अंजनसों आज अरु अखियां अनियारी ॥६॥ कोऊ सोंधे सों सानकें पहरावत सारी ॥ करते मुरली हरि लई वृषभान दुलारी ॥७॥ तब ललिता मिल कें कछू एक बात विचारी ॥ प्रिया वसन पिय कों दये पियके दीये प्यारी ॥८॥ मृगमद केसर घोरकें नख सिखते ढारी ॥ सखियन गठजोरो कियो हँस मुसकाय निहारी ॥९॥ याही रस निवहो सदा यह केलि तिहारी ॥ निरख माधुरी सहचरी छबि पर बलहारी ॥१०॥

२७ राग सारंग खेलत ग्वालि गोपाल लालसों मुख मूदेंमन खोलें ॥ घुंघट ओट वदन राजतयों विधु बादर की ओलें ॥१॥ भ्रूहें कुटिल कुरंग चपल चखसे अरुण डोलें ॥ मानो तिलक पारधी दूंक्यो चांप चढायें सोलें ॥२॥ वेंसरको मोती राजतयों अति छबि देतअतोलें ॥ मानो रूप मंजुरी लेकें कीर करत है कोलें ॥३॥ चिकने चिहुर छूटे वेनीतें दुरेवसनमें डोलें ॥ मानो कुटुंब सहित कालिंदी काली करत कलोलें ॥४॥ बाणी सबे सरस सुर गावत अपने अपने टोलें ॥ मानों सुरभरत कपोत कोकिला वनहि विहंगम बोलें ॥५॥ वरखत हरखत मनमोहन पर सोंधो अधिक अमोलें ॥ फिरदे चली गमार गारी हो हो होरी बोलें ॥६॥

२८ राग सारंग चलरी होरी खेलें श्रीगिरिवरधर श्रीवल्लभ वर रच्यो विविध विध खेल माई ॥ डफ पुंजन की गुंज रही छबि कालिंदी के कूल ॥ध्रु०॥ यह सुनकें मिल सब ब्रज सुंदरि एक एक उठ धाईं ॥ खेलें फाग जाय प्रीतम संग सुफल घरी ये आईं ॥ येसोमतो कियो एकत्र व्हैं आनंद उर न समाई ॥ यह अवसर अब दियो विधाता करो सबे मन भाई ॥१॥ हीरा रत्न जटित मणि मुक्ता आभूषण सजलीने ॥ वसन विचित्र बनाय विविध अंग सारी सरस रंग भीने ॥ लहेंगा लाल लसतनितंबपर छीनलंकछविछीने ॥ कनकवरन कंचुकी स्यामतन आन अधिक छबि दीने ॥२॥ मृगमद आड ललाट सुभग अति बेनी सरस सुढारी ॥ सीसफूल श्रीमंत

जटितनग वरनन सकेक विहारी ॥ श्रीमुख कमल राजत पूरण शशि अलक सोहें घुंघरारी ॥ दशन दामिनी अधर पानकों झूमत पन्नगनारी ॥३॥ नयन विशाल श्रवण झलमले नक बेसर गजमोती ॥ पिकवेनीजो कपोत कंठअति सोहे जंगाली पोती ॥ चोकी जरायंहार रुरकत अति दूरकर तरविजोती ॥ बांह वरागजरा सोहत चूरीगज दंतीहोती ॥४॥ कटिटिंकिणी रुनझुनात अति पग नूपुर झनकारा ॥ पग पायल ढिंग एडी महावर विछुवन शब्द अपारा ॥ चलत हंस गति मोहिलेत चित उमडी रस की धारा ॥ यह बानिक वनि चली सखी निरखन कों प्रान अधारा ॥५॥ पोहोंची जाय निकट पीतम के बिपिन युवती समुदाई ॥ फुल बाग शोभा अति सुंदर फूल रही बनराई ॥ एकटक व्है चितवत चंचल अति दृष्टि भरी पिचकाई ॥ प्रीतम मन अनुराग बढ्यो अति आनंद उर न समाई ॥६॥ अबीर गुलाल उडाय गगन मध्य दिन रजनी कर लीनों ॥ राका पति ज्यों राजत गोकुल पति यह समेरंग भीनों ॥ मिली जोबाल गुलाल मध्य कोऊ काहू नहीं चीन्हों ॥ प्रीतम जाय धाय उरले भुज भर आलिंगन कीनों ॥७॥ अधर माधुरी पीवत पिवावत रंग बढ्यो रस भारी ॥ प्रीतम विवश होय प्यारी वश रहत न कछु संभारी ॥ ये अविचल व्रजरहो सदां अव नित नित केलि तिहारी ॥ वल्लभ पिय हिय सुख निसवासर चिरजीयो लाल विहारी ॥८॥

२९ राग सारंग माई मेरो मन मोह्यो सांवरे मोहि घर अंगना न सुहाय ॥ ज्यों ज्यों आंखिन देखियें मेरो त्यों त्यों जिय ललचाय ॥१॥ हेली मनमोहन अति सोहनो इत व्है निकस्यो आय ॥ मोहि देख ठाडो भयो वह चितयो मुरमुसकाय ॥२॥ रूप ठगोरी डारकें चल्यो अंग छबि छेल दिखाय ॥ नयन सेनदे सांवरो मन ले गयो संग लगाय ॥३॥ लोक लाज कुलकान की जिय कछून ठीक ठहराय ॥ कें ले चल मोहि स्यामपें कें स्यामहि आन मिलाय ॥४॥ प्राण प्रीति परवसपरे अब काहू की न वस्याय ॥ रसिक बाल नंदलालपें रसिक सदा बलजाय ॥५॥

३० राग सारंग उत सांवरो बहु रंगन रंगीलो इतगुण निधि राधा गोरी ॥ डफ पुंजन की गुंज गान सुन खगमृग मुदित मची होरी ॥१॥

अंबर चढ्यो गुलाल उडायो ललितादिक लियें भर भर झोरी ।। मानो दुहुंदिसनते सजनी उठी अनुराग घटा घोरी।।२।। कुंकुम की पिचकारी डारत चोंक चपलता करत किशोरी ।। लचक्यो लंकइते मुख फेरयो मानो कनक लता मोरी ।।३।। छिरक छींट उठत चोवा की लगी कपोल बाल के थोरी।। प्रगट करत दोऊ कर अपने गोकुलेश चित्त की चोरी ।।४।।

३१ राग सारंग खेलें पिय राधा गोरी ।। नंद नंदन वृषभान नंदिनी बोलत हो हो होरी ।।१।। कंचन की पिचकारी लीयें अबीर भरें भर झोरी ।। छुटत मुठी गुलाल लाल की भरत नयन की कोरी ।।२।। पकरे लाल भई झक झोरन प्रगटी प्रीति की चोरी।। आंख आंज कपोलन मीडत लाज तृणकसीतोरी।।३।। केसर अगर गुलाल अरगजा सोंधें भरी कमोरी।। हँसत लसत ओर भरत परस्पर गांठ दुहुंन की जोरी।।४।। विहस विहस सब लेत बलैया ।। अविचल भूतल जोरी ।। माधोदास प्रभु लाल लाडिले नवल किशोर किशोरी ।।५।।

३२ राग सारंग अहो खेलत होरी प्यारो लाल विहारी संग वृषभान दुलारी ।। यमुना पुलिन सुहावनों जहां फूल रहे द्रुम भारी ।।१।। गुंजत मधुप कीर पिक कूजत श्रवण सुनत सुखकारी ।। इतहिं गोप कुमार विराजत उत सब गोकुल नारी ।।२।। इतनायक बल मोहन दोऊ उतचंद्रावलि प्यारी ।। इनके करगेंदु फूलन की उतगुही माल संभारी ।।३।। पहरावत पीतम प्यारे कों देत दिवावत गारी ।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ तूरभेरि सहनारी ।।४।। ढोलक ढोल निसान महुवर विच मुरली मनहारी ।। इनन लई भर कनक कटोरी उनन लई पिचकारी ।।५।। अतिकसबांधे फेंट गुलालन मुठी अबीर उडारी ।। बूका बंदन उडत चहूंदिश दिननिशज्यो अंधियारी ।।६।। नयन सेनदे हँसत परस्पर धाय गहे गिरधारी ।। चोवा केसर मृगमद घोरी दियो सीसते ढारी ।।७।। रोरी हरद कपोलन मीडत आंख आंज अनियारी ।। एकन लियो झटक पीतांबर एक भरत अंकवारी ।।८।। श्रीराधाजी सोंकर गठजोरो नाचत देकरतारी ।। भीज्यो रस खेलत रंगन में रंगमगे भूषण सारी ।।९।। अधर माधुरी पीवत पिवावत मेटी मदन व्यथारी ।। क्रीडत देख

नंदनंदन सुरकरें कुसुम बरखारी ॥१०॥ रस बस खेल मच्योजु परस्पर वरने कवि कहारी ॥ अविचल रहो सदा यह जोरी कृष्णदास बलिहारी ॥११॥

३३ राग सारंग हो हो होरी खेलन जैये जाय खिलैये कुवर कन्हैये ॥ अपने संगते फूट परेछिन वाहि न्यारें न पत्यैये ॥१॥ बहुत गुलाल केसर रसले समाज खिलारतन धैये ॥ अपने रंग में एसें बोरिये स्याम रंग ढूंढ्यो नहिं पैये ॥२॥ एक तन एक मन होय सखीरी बांह पकर वाको सीस नवैये ॥ भाज चले तोतारी दे हँस सब व्रज मेरी वाहिलजैये ॥३॥ फगुवा के मिस फेंट पकरकें मृदु मुसिकाय वदन तन चहिये ॥ जगन्नाथ कविराय के प्रभुसों हिल मिल कें रस सिंधु बढैये ॥४॥

३४ राग सारंग राजत हें वृषभान किशोरी ॥ व्रज के आंगन में खेलत पियसों ऋतु वसंत के आगम होरी ॥१॥ ताल मृदंग वेणु चंग बाजे राजत सरस बांसुरी ध्वनि थोरी ॥ अगरजवाद कुंकुमा केसर छिरकत स्याम राधिका गोरी ॥२॥ जब हीरवक पीतपट पकरत यह रसरसिकन देत झकझोरी ॥ परमानंद चरण रजवंदित राधा स्याम बनी हें जोरी ॥३॥

३५ राग सारंग चंग मृदंग बांसुरी बाजत हो हो हो हो होरी ॥ मानो किल कार सेन दे बोली उमगि चली गृहगृहते दोरी ॥१॥ सारी सेत पीत रंग बोरी भूषण भूषित नवलकिशोरी ॥ नील कंचुकी उरपर राजत मानो शोभा भई इक ठोरी ॥२॥ रंगभीनी भामिनि गारी गावें कहें राधा माधो की जोरी ॥ गुरुजन वरजत नेकनमानत लोक लाज तिनुका ज्यों तोरी ॥३॥ काहू कर साखजबाद कुंकुमा काहूकर लीने केसर घोरी ॥ उमगे ग्वाल गोपिका दुहुंदिश मानो मघवा वरषत घनघोरी ॥४॥ फगुवा दिये जीय के रीझे लाल गोवर्धन धारी ॥ देत असीस चली व्रज वनिता दास कल्याण जाय बलिहारी ॥५॥

३६ राग सारंग तारी दे गारी गावहीं ॥ एकते एक बनी व्रज वनिता नाना रंग वरसावहीं ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मोहन वेणु बजावहीं ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा सुरंग गुलाल उडावहीं ॥२॥ इतमोहन

उत सखी समूह मिल खेलें हँसें हँसावहीं ॥ सूरदास प्रभु तुम बहु नायक फगुवा दे घर आवहीं ॥३॥

३७ राग सारंग नयनन में जिन डारो गुलाल तिहारे पांय परत नंदलाल ॥ होत हे अंतर पिय दरसन में विन दरसन बेहाल ॥१॥ कनक वेलि वृषभान नंदिनी प्रीतम स्याम तमाल ॥ ऋतु वसंत वृंदावन फूल्यो नाचत गोपी ग्वाल ॥२॥ व्रज के लोग सबे जुरआये करत कुलाहल ख्याल ॥ रामदास प्रभु गिरिधर नागर पीक रंग सोहें गाल ॥३॥

३८ राग सारंग दिये महावर गोरे पायन ॥ नगनजटित कंचन की जेहर सुमन बनी डोलत हें चायन ॥१॥ जंघ युगल कदली कटि के हरि रूप अनूप गुसायन ॥ भुज मृणाल श्रीफल कठोर कुच जानत रसके दायन ॥२॥ खमक बनी अंगिया जुखयन तैसीये भ्रूंह चढायन ॥ मानो मेन खराद खरादी वह पाई उपमायन ॥३॥ गुलाल भरचो तन एसो लागत मानो हेम काढ्यो हे तायन ॥ सुघर रायको प्रभु रीझ्यो वृषभान कुंवरि के भायन ॥४॥

३९ राग सारंग सखी नंदनंदन वृषभान कुंवरिसों बाढ्यो अधिक सनेह ॥ध्रु०॥ अबकितदुरत सांवरे ढोटा फगुवा हमारो देह ॥ जबतो गोहन नेंकनछांडत अबभज पकरचो ग्रेह ॥१॥ सवे सखी मिल चली नंदपें मोहन माँग्यो देह ॥ दिनाचार अवसर होरीको बहोर आपनों लेह ॥२॥ प्यारी मोहन मागेना मिलें घटेतो भरदेह तुम लाय तराजू तोल लेहु मोहन घटेतो दूनोलेह ॥३॥ अधिक वार खिलवार होरी की पिचकारिन बाढ्योनेह ॥ गौर स्याम मिलयों राजतहें ज्यों भादों को मेह ॥४॥ विव्हल भई तनमन नहीं सूझे सब हिन विसरचो गेह ॥ सूरदास मोहनजू के बदले जो चाहो सो लेह ॥५॥

४० राग सारंग चलो सखी बाग तमासें प्यारो मोहन खेलत होरी ॥ सगरी सखी मिल देखन निकसी पातरी पवारी गोरी भोरी ॥१॥ काहूपें गुलाल काहूपें केसर अबीर लियें भरभर झोरी ॥ कृष्ण जीवन लछी-

राम के प्रभु बने किशोर किशोरी ॥२॥

४१ राग सारंग सुंदरी हो हो होरी रंग भरी खेलें रसिक रसिक फाग ॥ सुंदरी एकते एक सुंदर बनी फूल्यो कुसुमन मानो बाग ॥१॥ बागो धराये श्रीअंग लटकत सीसें पाग ॥ केसर छिरके वल्लभ पिय प्रगट करत अनुराग ॥२॥ अरगजा भरभर पिचकाई चलावें परम पराग ॥ अबीर उडावें रंग भरे खिलावें महा बड भाग ॥३॥ सब मिल बाजे बजावहीं धमार गावें बहुराग ॥ खेलें गोकुल में समाजसों पूरे भाग्यन जाग ॥४॥ यह बिधि खेलें परस्पर पूरण प्रगट्यो सुहाग ॥ वल्लभदास सुख निरखेही चरण कमल चितलाग ॥५॥

४२ राग सारंग अहो पिय अबकें होरी अनत जान नहीं देहूंगी ॥ निशवासर इकठोर बैठकें तुम संगम रस लेहुंगी ॥१॥ विविध विपिन द्रुम-वेली फूली मधुप करत गुंजार ॥ मानो कामी जनदेख मत्तनर गावत करत विहार ॥२॥ केसू कुसुम विकास मास फागुन उपज्यो अनुराग ॥ मानो कामीजन मत्त फेरनकों प्रगटे अंकुश नाग ॥३॥ रुचि उपज तलपटी देखियत माधविका जाई रसाल ॥ मानो पथग गहत फगुवा कों गह्यो युवतिन ततकाल ॥४॥ वहत वायु सुखदाई सबन कों उडत सुगंध पराग ॥ मानो गुप्त विहार करन कों मेन रुपायो बाग ॥५॥ फूले कुसुम गुलाब अचल ता मध्य्य बैठे अलिआय ॥ मानो जगे नयन युवतिनके इकटक देखन जाय ॥६॥ कुंद कुसुम प्रफुल्लित अति सौरभ वरणिसकेको कांति ॥ मानो निवड हँसत युवतिन के प्रगट भई द्विज पांति ॥७॥ बोलत शुक कूजित कोकिल कुल भयो विपिन में सोर ॥ मानो वरन करत रति पतिसों होत स्वरन रसघोर ॥८॥ जेहो कहां समें ऐसेमें रहो हमारे गेह ॥ सुनो स्याम रसरीत लायचित करो सुफल चित नेह ॥९॥ चोवा चंदन बूका वंदन नंद नंदन सुरंग गुलाल ॥ विविध भांत छिरको गोपिन कों विलसो परम रसाल ॥१०॥ सुन प्यारी मुख बचन प्राणपति भये परम आधीन ॥ रहिन सकत छिनहूं बिन देखें ज्यों जल बाहिर मीन ॥११॥ यह सुमरति रसिकन के मनमें होत आनंद अपार ॥ श्रीवल्लभ पदरज वल्लभ हरि गुण गावत सुखसार ॥१२॥

४३ राग सारंग आज हरि खेलन फागबनी ॥ इतगोरी रोरी भरभोरी उतगोकुल कोधनी ॥१॥ चोवा कोढो वाकर राख्यो केसर कीच घनी ॥ अबीर गुलाल उडावत गावत सारी जातसनी ॥२॥ हाथन बनी कनक पिचकाई ग्वालन छूटतनी ॥ नंददास प्रभु संग होरी खेलत मुरमुर जाल अनी ॥३॥

४४ राग सारंग अहो रस मोरन मोरे लाल स्याम तमाल होरी खेलहीं ॥ कनकलता संकुलित सघनपर आनंदमय रस फैलहीं ॥ध्रु०॥ गृहगृहते नवला चपलासी जुरजुर झुंडन आईं ॥ लहेंगा पीतहरे ओर राते सारीश्वेत सुहाई ॥ अतिझीनी झलकत नवसत तन करन जटित पिचकाई ॥ कंचुकी कनक कपिश सब पहरें तहां उरजन की झांई ॥१॥ कहां लोक हों सकल शोभा युत ए गोकुल की नारी ॥ अंगअंग गिरिधर गुणालंकृत विधन जात विस्तारी ॥ प्रफुल्लित वदन तंबोल भरे मुख गावत मीठी गारी ॥ ध्वनि सुन श्रवण निकसे सिंघपौरी मोहन लाल निहारी ॥२॥ उतते श्रीवृषभान दुलारी आवत रूप छटारी ॥ छापेरी झूमक अंग साजे चहुंदिश लगी किनारी ॥ बेनी चंपक बकुलन ग्रंथित रुचिर सखिन संवारी ॥ मोतिन मांग ओरसीस फूल मध्य रत्न जटित फुलकारी ॥३॥ श्रवणन कुसुमजराऊराजे लरे द्वेद्वे दुहुं ओरें ॥ पटियनपे जुलसत दमकन में छबि की उठत झकोरें ॥ चलदल पत्र प्रवाल वज्रसो कोंधत पंकति जोरें ॥ भाल दिपत आड मृगमद में बक्रभ्रोंह जुगमोरें ॥४॥ अखियां सुखी सुखेन बडेरी कहा कहों लोनाई ॥ सेत अरुण ऊपर मधुराई तामें कछु चिकनाई ॥ वसीकरण रससों मिल रचपच अंजन रेख बनाई ॥ रस वस ललकें ऊपर झलकें परमावधि चपलाई ॥५॥ नासा सौभग निपट सुढारी वेसर सिखी आकारी ॥ पन्ना करच चूनी बहुवरणी छांह सिखर परकारी ॥ सलिल कुंवर सातो जुग ऊपर अधर अरुणता भारी ॥ गमन करत जब हंस लजावत अरक थरक द्युति न्यारी ॥६॥ दशनावली घन संपति लीये दरशत जब मुसिकानी ॥ चिबुक मध्य सामल बिंदुराजें मुख सुख सदन सयानी ॥ ग्रीवा लटक अटक नागरिकी बोलत अमृत बानी ॥ चोली मुलकटहेमगुननका कवच सुभटता ठानी ॥७॥

चौकी चंपकली कौस्तुभ मणि वृंदावन में लीनी ।। कहतन बने रहस्य में रीझे मदन गोपाले दीनी ।। चंद हार पचलरीछरा परसत किंकिणी कटिछीनी ।। उरपर भेद भीर भूषण की अद्भुत रचना कीनी ।।८।। बाजूबंद ताऊ ढिंग सोहत नगबहुमोली लागे ।। तेसी तू इतडितकी न्याई ऐसीनोरंग पागें ।। नवग्रह गजरा जगमग नव पोहोंची चुरियन आंगें ।। अचल सुहाग भाग्य की लहरें हस्तहें मेंदी दागें ।।९।। पांच चवर पटियन पें गूंथी डोर चुनाव पेंडूले ।। झूलत झवि फवि सुंदरता फुंदना जहां समतूलें ।। लहेंगा लाल गुलाल रंग सम पुरटउदक सो झूलें ।। झंकृति कोकिल रवमर्दनकर नूपुर विछिया बोलें ।।१०।। दर्पन नृपति मुदरिया धरणी तेज पुंजकी नगरी ।। दश शशि के अनुमान प्रमाणन चमक जनावत सगरी ।।हथसांकर रवनी वांधेगी कृष्ण सार के पगरी ।। मिलकर वृंदआय विपिनमें जब तब यों झगरी ।।११।। जे हरते हरपायन सो अनवट कुंदन हीरा वलिता ।। पीन पिंडुरिया तेसोई चरनन जावक दीनी ललिता ।। यह विध राधा रानी गाई नांहि सावरे सरिता ।। जोजो रसिक गाई हें ऐसें प्रेम पुंज फल फलिता ।।१२।। सब समाज भामिनि ले दामिनि वृंदन वृंदन हेली ।। कंज पराग अरगजा गोरा सज सजलये सहेली ।। लटकत आवत भांतन कंठन बांह परस्पर मेली ।। उनमद कोऊ वदतन काहू स्याम समरबनवेली ।।१३।। बाजत ताल मृदंग ढोल डफ झांझन झमक लगाये ।। करत टोक प्यारे प्रीतमसों मुरदुर नयनन चाये ।। मुरली स्वरफेरत घोषनमें टेर टेर दरसाये ।। चल्यो सुगंध सहस्र चारलों कोउ वियार केवाये ।।१४।। बगर बगरते सखा श्रवण सुन यूथन यूथन धाये ।। अपनी भीर सहित संकरषण ले श्रीदामा आये ।। कुंकुम केसर माट अरुमथना तेल फुलेल मिलाये ।। तोलोंतोक सुबल उन सन्मुख आगें लेन पठाये ।।१५।। इतहुबाजे लागे वाजन दुंदुभी धोंसा गाजे ।। रुंजन मुरज आवज सारंगी यंत्र किन्नरी साजें ।। इन मध्य मुकुट धरें नंदनंदन नटवर भेषनराजें ।। यह शृंगार नंदराय हस्त को कोटिक मन्मथलाजें ।।१६।। नख सिखते अभरण की जोतें जग मगाय मेरी माई ।। खुले बंद सब देह उघारी काछ जाल समुदाई ।। खोल भुवन भूषणदे बावा होरी भलें मनाई ।। खातहें बीरा उमग अलोलन रोमरोम छबि छाई ।।१७।। सुनले ललिता आज खेल

यह मचे खिरक में माई ।। मानत नहीं जब वचन अटपटे उतते अंगुरी फिराई ।। चली हे निसंक निरंकुश करिणी एक ठोर तहां आई ।। सुबल तोक दोऊ गहिलोने जान कहूं नहिं पाई ।।१८।। राखे हें ओल कहत व्रज सुंदरि तुमें कहां लों पैये ।। दगा कियो किधों सांच कहत हो कहो किहिंवात पत्यैये ।। जो कूटक तो बांध बांध कें सांटिन नृत्य नचैये ।। जो सांचे होइन बातनतें देहें छांडपुतनैये ।।१९।। बडी वेर भई सुध जब लीने राखे हें दोउ घेरे ।। कहत हें अवदूर भज स्याम घन पीतांबर को फेरें ।। जानसौ दृढ पकरे नहीं छूटें दौरे दिये दरेरे ।। खरिका खेंचि दईले सांकर तरुणी रहगईं हेरें ।।२०।। चढचढ अटा चतुर्दिश वरषत भरभर कनक कमोरी ।। नांहिदाव बदलो लेवे को सहचरी रंग रंग बोरी ।। छूटतहे जल जंत्रन चहुंदिश बोलत हो हो होरी ।। सुबल भली विध पहोच्यो मिल मिल यह सिख दीनी गोरी ।।२१।। भई मारगो वरकीनीके ललिता सेन जनाई ।। दुहि पकरी तुम अबमोहि मेलो सोंहलाल की खाई ।। तब जोजीभ दाबि छिटकायो समझे न भेद कन्हाई ।। द्वार कपाट उघार भजेहू फिर मोहि सिढी बताई ।।२२।। उतसामनहीं भये संपूरण इतहि सब विध पूरी ।। गहहि ऊपर गनीन जातही मेंन मुनैया चूरी ।। विद्रम दाब दशन सोंकोपी चंद्रावलियुधपूरी ।। कीनी मार उलेंडी गागर आंधी बंदन धूरी ।।२३।। कृष्णागर ओर अबीर सानिकें गेंदुक सरस संवारी ।। श्रीदामा दिस खाजे कहियत तिनकें तकतकमारी ।। कूदतजि ततितलगेगातपर हलधर बाह पसारी ।। लगेहें अति सुकुमार लाल कों कहां गई प्रीति तुम्हारी ।।२४।। हम एसो नहीं खेल खेलिहें जो लागे या तन कों ।। देहेंभजाई यह सेन तिहारी गहेहें दोऊ जनकों ।। तुम तो कहत ललित यह मूरति जीवन हम व्रजजन को ।। एकेले आई मिलोकिन अग्रज पूछि आपने मनको ।।२५।। जेरी निसंक लइठालेकर पकर लीये भरकोरी ।। जागि उठे व्रजराज सदन में सब ऐसी भांतिन दोरी ।। मुख मांडत सुमन नपंकनसों उर चोवा सों बोरी ।। उल्हर रहवादर रंग रंगन ऐसी होत हे होरी ।।२६।। उतरी कर मनोरथ वांके देख यशोमति लाजी ।। जीती हें रसरीति कटक वर सुरन छबीली छाजी ।। परमानंद दुंदुभी आई बगर में बाजी ।। देदेकूक व्रजेश प्रभृति तब सभा अथांई भाजी ।।२७।।

४५ राग सारंग अहो खेलति बसंत पिय प्यारी ॥ लाल सौंधे भरि लई पिचकारी ॥१॥ पचरंग लिये गुलाल लाड़िलो ऊपर डारी ॥ केसर साख जबाद कुंमकुमा भीज रही रंग सारी ॥२॥ गाबति खेलति मिलति परसपर देति दिबाबति गारी ॥ छीन लई मुरली पीतांबर रंग रह्यों अति भारी ॥३॥ देति नहीं डहकावति सुंदरि हँसि हँसि जात सुकुमारी ॥ फगुवा लेहु देहु पीताबंर करति कुंवर मनुहारी ॥४॥ बरनौं कहा कहति नहिं आवें सोभा सिंधु अपारी ॥ 'इत हरिबंस' लेहु बलि मुरली तुम जीते हम हारी ॥५॥

४६ राग सारंग केसरि की खौर किए, जोबन मद पिए, निडर छैल डोलत है नंद को मोहन स्याम ॥ हाथ में गुलाल लीए और कछु छल हीयें ॥ काहू पै दाईं से दीएँ यहीं बिच मंडरात कौन धों काम ॥१॥ जमुना जल को कब की अरबरात, कबलों धसेई रहिए धाम ॥ 'आनंद घन' धूमि योंही देखत उधम गोकुल ही आठों जाम ॥२॥

४७ राग सारंग खेलति बल मनमोहना ॥ ए तरेह ॥ नख-सिख भेख कीयौ मनमोहन अंग अंग सोभा बरनी न जाई ॥ जाई मिले वृषभानु कुंवरि सौं मन में स्याम बहुत सुख पाई ॥१॥ अबीर की चोली फबि बहु मोली निरखति मनमथ गयो लजाई ॥ 'छीत स्वामी' गिरिधरन श्री विठ्ठल अद्भुत छबि कौन पै कही जाई ॥२॥

४८ राग सारंग चलौ सुख देखियै हो अहो जहाँ खेलति श्री व्रजराज ॥ध्रु०॥ आयो जान्यौं फागु भागु सबहिन करि मांन्यौ ॥ गये गाम के खेंडे केलि सुख सागर ठान्यौं ॥ एक ओर सब व्रज वधू स्यामा जू के संग ॥ एकु ओर व्रजराज लाड़िलो हो सखन सहित भरि रंग ॥१॥ भूषन बसन अनूप रूप कछू कहति न आवैं ॥ रति नाहिंन अनुहारि नारि उपमा कों पावें ॥ तामें मृगनैनी नवल, राधा जू सुकुमारि ॥ ज्यों उड़गन में चंद्रमा हो कोटिक दीजें बारि ॥२॥ चहुँदिसि बाजे बजे ढोल ढफ भेरि नगारे ॥ ताल मृदंग उपंग और बरनन को पारे ॥ तामें मोहन मोहनी हो

मुरली देति बजाई ॥ तान सुनति तिहुं लोक में हो रह्यौ दसौं दिसि छाई ॥३॥ भरे कनक के माट अगर-सत, केसर घोरी ॥ भरि-भरि पिचकाई लैंहि फैंट गुलाल की झोरी ॥ गोपिन ही के छिरकै बदन हो मदन बिराजत गात ॥ खेलि परसपर अति बढ्यों हो आनंद उर न समात ॥४॥ गारि गावैं ग्वाल फागु की परम-सुहाई ॥ श्रबनन सुनति सुख होति स्याम-सुंदर सुखदाई ॥ इत तैं मोहन बिहंसि कैं हो बीरी देति पठाई ॥ उत ग्वालन कौं मान बढ्यौ हो चितै चोगुनौं चाई ॥५॥ सबै सखी मिलि सिमटिं गहन एकु सखा बिचारचौ ॥ गह्यौ अचानक जाई कौरि भरि प्रीतम प्यारौ ॥ ताहि देखि बिह्वल भए हो सखा सकल इहिं ओर ॥ उन दृढ़ कैं ऐसें गह्यों मानौं पायौ पलान्यों चोर ॥६॥ बैंनी सीस सँवारि सेत-सारी पहिराई ॥ सैंदुर दीनौं भाल तनक मसि गाल लगाई ॥ कह्यौ तुम जाउ सबै हो जहाँ तिहारे भाई ॥ पाछें तैं तारी दई हो बीच रहे खिसि आई ॥७॥ देखि सरखि कौं रूप स्याम कौं सकुचि जनाई ॥ तब उन दुचितें लखे घेरि के गहे कन्हाई ॥ लैं आँई गहि झुंड में हो देखैं रूप निहारी ॥ त्रिपत न मानें नेंक हुँ हो नैन निमेष बिसारि ॥८॥ गह्यौ पीतांबर आँनि काँनि कछूबै नहिं कींनी ॥ परसे पानि कपोल मानि सबहिन रति लींनीं ॥ कह्यौ बिहंसि कैं बेगि अहो पिय फगुवा देहु मँगाई ॥ कै बाबा वृषभानु कौं हो देऊ जसोदा माई ॥९॥ तब हँसि नंद कुमार बसन बहु भांति मंगाये ॥ पहिराये सबनि जैसे जाके मन भाये ॥ नख सिख लौं भूषन दिये हो मनिमय जटित जराई ॥ तापै चितयौ प्रेम सौं हो सो सुख कहाँ समाई ॥१०॥ लागी दैनि असीस प्रेम सौं गदगद बानी ॥ सबहिन के दृग माँझ एकु छबि स्याम समानी ॥ देखि-देखि सुर हरखि कैं हो बरखत सुमन अपार ॥ मदन मोहन जू के चरन रेनु पै हो 'कृष्ण दास' बलिहार ॥११॥

४९ राग सारंग जानि ऋतुराज सब सुख करन काज व्रजराज के लाल कौं रुचि नवीनी ॥ उपजी अंग-अंग मानु प्रफुल रंग-रंग सब सखन लिये संग करमनी प्रबीनी ॥१॥ साजि दल जोरि सब लै चले कुंज कों सखिन के संग प्यारी रंग भीनीं ॥ खेलि होरी करैं बिबिधि बानिक

धरैं रंग गोटन भरैं करन लींनी ॥२॥ लाल गुलाल बूका लयैं फैंट में नीर कलसन भरि संग लींनें ॥ साजि दल भेख सब सुभट से ह्वै रहें रंग बहू घुमडि आकास छीनें ॥३॥ लाल दल पेल ब्रज जुबती कैं जूथ पर मदन दल ठेल संग्राम छाये ॥ ऐकु एकनि धरैं मुख हि मंडित करैं सीस पै रंग कैं कलस नाये ॥४॥ बाहु अंसन धरैं निरत मानौं नट करें कला संगीत पूरन सुहाये ॥ घोष दुंदुभि बजै झालरी किन्नरी चंग मौहचंग बहु पुर छाये ॥५॥ भाँति भाँतिनि खचित रंग में चूर भये सुर से कुंज तैं पुलिन आये ॥ सुनति ब्रजराज के कुंवर की केलि कौं चढ़ि बिमान सब देव धाये ॥६॥ लोक तिहूं पुरन में रंग बरखन लग्यौ देव वधू सुनति सब दौरी आई ॥ काम अंग-अंग के बिमल भई चित्रन कैं समन परि पूरन लजित दिखाई ॥७॥ दिवस चालीस ब्रजराज सुत याहि बिध रंग होरी दोऊ झुंड कीयो ॥ तियन रंग रस रह्यौ आप सुख लयो कुसम खेल मकरंद पीओ ॥८॥ नित लीला ललित रसिकवर पिय की भाग को पूँज जिहि दृगन छौंई ॥ कौंन कवि गणना कर सके तिहूं लोक में 'सरस रंगन' लसन रसन भाई ॥९॥

५० राग सारंग तैं प्यारी चित हर लियौ हो तो बिनु कछु न सुहाई लाल ॥ तलफत जल बिनु मीन ज्यौं हो चंद चकोर दिखाई लाल ॥१॥ फिर-फिर बात वेई बूझे बूझि-बूझि पछिताई लाल ॥ कोकिल इंदु तपत करै लग्यौ मदन सरजाई लाल ॥२॥ देखैं ही सब जानि हौं हो बैंनन कछु न कहाई हो लाल ॥ यह सुनि स्याम कुंज चलि ठाड़े, पाछैं आई री लाल ॥३॥ सखन सहित प्यारे जहाँ सैंनन सबै समुझाई लाल ॥ जुगल हस्त अखियाँ मिचीं पुनि मुरली उर लाई हो लाल ॥४॥ जब तैं कह्यौ यह को है री जुगत चतुर्भुज राई लाल ॥ यौं कहि रीझई लाड़िली सनमुख ह्वै हरखाई लाल ॥५॥ छिरकति चोवा, चंदना, अबीर, गुलाल उड़ाई लाल ॥ प्रफुलित मन तब तैं करे, उस आनँद न समाई लाल ॥६॥ रीतिहार ललिता दयौ प्यारी कछूक मुसिकाई हो लाल ॥ चरन कमल बंदन करै 'द्वारिकेस' बलि जाई हो लाल ॥७॥

५१ राग सारंग प्यारी नवल निकुंज महल बैठे पिय नव कुसुमन

सेज संवारी हो प्यारी ॥ नवल-नवल बनी नागरी नवल बने गिरिधारी हो प्यारी ॥१॥ नव केसर को चोलना नवरंग पाग संवारी हो प्यारी ॥ नील पीत पट ओढ़नी नवसत रसिक कुँवरी हो प्यारी ॥२॥ नवल-नवल रितुराज को खटरि तु संग सुहाई हो प्यारी ॥ नव पल्लव अंग ओपतें रतिपति को मन हारि हो प्यारी ॥३॥ सप्त सुरन धुनि बाजही तान मान बंधान री ॥ तौ बिनु पिय न भाव ही लागत जेसे रान री ॥४॥ तें मोहन को मन हर्यौ तुहि-तुहि जपे माल री ॥ छिनु उठत छिनु बैठही छिन में होत दुसाध री ॥५॥ पिय को विरह मन जान्यौ विविध धरे सिंगार री ॥ नवसत अंग संवारि के नव कुसुम धरे दल भार री ॥६॥ कुंज सदन बैठे पिया कुंज निकुंज के द्वार री ॥ आई मिलि नव नागरी देखि सबै मुसकाई री ॥७॥ अधर अमृत रस घुंट ही छिरके मुख तंबोल री ॥ झुंडन आई झुमिके झुंड मन्यौ दे बोल री ॥८॥ कनक बेलि अंग सोहनी जैसे स्याम तमाल री ॥ तेसे पिय अंग सोहनी कंचन की मनि माल री ॥९॥ मृदु मुसिकाई के हँसि बोलत हैं मृदु बोल री ॥ कोककला गति ठान ही उपजत रंग कलोल री ॥१०॥ अरस परस सुख उपज्यौ बाढ्यौ रंग प्रमोद री ॥ 'गोविन्द' के मन ये बसो बढ़ावन नेह री ॥११॥

५२ राग सारंग बनी रूप-रंग राधे, तातैं अधिक बने ब्रजनाथ ॥ ललिता अरु चंद्रावली मिलि, बन्यौ छबीलौं साथ ॥ ताल पखावज बाजहीं संग, डफ मुरली को घोर ॥ नंद-द्वार औसर रच्यौ दोऊ, राजत नवल किसोर ॥ एक कोद ब्रज-सुंदरी, इक कोद गुवाल गुबिंद ॥ सरस परसपर गावहीं, दे गारि नारि बहु-बृन्द ॥ आवहु री ! हम दुरि रहैं बल-भद्र कृष्ण गहि देहि ॥ लोचन उनके आजही अरु, अधरनिकौ रस लेहिं ॥ सीला नाम गुवालिनी, तिहिं गहे कृष्ण धपि धाई ॥ उपरैना मुरली लई, मुखनिरखि हरषि मुसुकाई ॥ गहे अचानक राधिका, तब रही कंठ भुज लाई ॥ मन के सब सुख भोगये, जब परसे जादव-राई ॥ कोटि कलस भरि बारुनी, दई बहुत मिठाई पान ॥ राधा-माधौ सु रस रह्यौ, सब चले जमुन जल न्हान ॥ द्वितिया सकल समाज सौं, पट बैठे आनंद कंद ॥ दान देत ब्रज

सुंदरी, नग-भूषण नव निधि नंद ॥ बन-बीथिनि भरि पुर गलिनि में, उमंग्यौं रंग अपार ॥ सूर, सु नभ सुर थकित रहे सब, निरखत प्रान-अधार ॥

५३ राग सारंग मोहन नागर हो लाल तुम बरसाने किन आवो ॥ जूथ-जूथ जुबतिन के देखो लोयन हियो सिरावो ॥१॥ ससिवदनी सावक मृगनैनी खेल निकुंजनि आवे ॥ अति बिचित्र मधुर सुर लीने गीत काम के गावे ॥२॥ एकही बेस किसोरी गोरी प्रीतिरीति उपजावे ॥ एको पल जो देख न पावे तुमारी सुधि बिसरावे ॥३॥ तिन में राजे किसोरी श्री राधा श्री वृषभानु दुलारी ॥ कनकवेल कवनी गजगवनी कीरति प्रानपियारी ॥४॥ अष्ट सखी ताके संग सोहे चंद्र भगा ललिता री ॥ जोबन अंग सुगंध माधुरी सुंदरता सब बारी ॥५॥ चले स्याम अभिराम गाँव वृषभान नृपति के आये ॥ एको न लीनो संग सखा बनकौ सब फिर पठाये ॥६॥ सहचरी कौ धरि भेष सकल सिंगार अद्भुत बनाये ॥ चंपकली के भेद लाल ललिता लखि कें तब ही पाये ॥७॥ कहीं कुंवरि सों बात जाई एक भाँति विचित्र बनाई ॥ सखी सांवरी आज कोऊ अद्भुत या भुव पर आई ॥८॥ तुमारी गोरी वे स्याम वदन सोभानिधि सुंदरताई ॥ तुम गोरी वे स्याम मूरति मानो मैन बनाई ॥९॥ मधु रितु फागुन मास आज हम तुम मिल खेलैं होरी ॥ चौबा चंदन बुका बंदन भेट भरि-भरि झोरी ॥१०॥ विपिन बिनोद परस्पर बाढ्यो झकझोरा झकझोरी ॥ 'ब्रजभूषण' हित दंपति संपति भूतल अबिचल जोरी ॥११॥

५४ राग सारंग या हिं तैं पीय तेरो नाम धर्यौ है ढीठ ॥ होरी आई है मन भाई पायौ जतन करि नीठ ॥१॥ मोय देखि उपहास करत सब आईये मोहन मीत ॥ सुनौं स्याम समझाई कहत हौं गुप्त राखीए पीति ॥२॥ कबहूं सैन दै भाजि जात हो यह जो करत अनीत ॥ जानति हौं पीय हो बहु नाइक परति नहीं परतीत ॥३॥ कबहूँक र'बकि कंठ लपटावति कबहूंक चलति दै पीठ ॥ 'श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल' तुम्है लगे न काहू की दीठि ॥४॥

५५ राग सारंग रंगीली होरी खेलैं रंग सौं रंग रंगीलौ

लाल ॥ रंगीली ॥ रंग रंगीली श्री राधिका संग रंगीली बाल ॥ रंगीली ॥१॥ भाजन भरि-भरि रंग के केसु केसर नीर ॥ रंगीली ॥ चोवा चंदन अरगजा संग गुलाल अबीर ॥२॥ सौंधे सगबगे तन सोहें सबन रगमगे रंग ॥ स्यामा अपने जुथ 'सौं स्याम सखा लीये संग ॥३॥ पटह निसान महुवरि बाजति ताल मृदंग ॥ दुहुं दिसि सुघर समाज सौं उपजति तान तरंग ॥४॥ जुरे टोल दोऊ आई कैं रहे उमंग रस पाग ॥ करन मनोरथ आपनौं ज्यौं मन में अनुराग ॥५॥ जम्यौं रंग चाँचरि मच्यौ कहा कहु सुर सांच ॥ अंग अनंग न लाय के भ्रकुटी नैननि नांच ॥६॥ उमंग्यौ आनंद क्यौं रहे कापे रोक्यो जाई ॥ औचक हो हो करि उठी दीने सब टहुकाई ॥७॥ सिमटि सखा सनमुख भयौ जल जंत्रन मार मचाई ॥ अबीर गुलाल उड़ाई कैं दिनमनि दीयौ छिपाई ॥८॥ मेघ घटा ज्यौं छाई कैं बरखन लागी आई ॥ तन सौं तन सुझति नहि चंद उज्यारी भाई ॥९॥ बसन मार नचाई कें दीनैं सखा भजाई ॥ हरि हलधर गहि पाइ कैं दीये जीत के बाजे बजाई ॥१०॥ घेरि रही चहुं और तैं भाजन कौं निहं दाव ॥ अकबक से मन ह्वै रहे भुले सकल उपाव ॥११॥ हँसति सखी सब तारी दे-दे आवे करि आवेस ॥ फाग में प्रभुता को गिने कीये है चोर के भेष ॥१२॥ इक सखी ढिंग आई कैं बोली चिबुक उठाई ॥ कहति मौन गहि क्यौं रहें ठग के से लड़ुवा खाई ॥१३॥ नैन आंजि मुख मांडि कें हलधर दीने छांड़ि ॥ ग्वाल सखन की लाज तैं लियौ है नीलांबर आडि ॥१४॥ दृग मुख पोंछति जब चले बहुत खिसानैं होई ॥ हँसति सखा बलराम सौं आए एक गये दोई ॥१५॥ किलकि-किलकि हँसि यौं कहै धन्य तिहारो खेलि ॥ भाजे जीव बचाई कैं निज भैया कौं मेलि ॥१६॥ संकरषन तब यौं कह्यौं तुम ही लावो जीति ॥ बड़े मिलनीयाँ मिलि गये भूले मन प्रतीति ॥१७॥ इत गोपी नंदराई कैं आई भवन मंझारि ॥ द्वार कपाट बनाई कैं लै घेरे दोऊ सारि ॥१८॥ इत राधा नंदलाल कौं करि एकांत इक ठौरि ॥ झूमकि चेतब गाव हि जुरि जूथ सब पौरि ॥१९॥ ल्हेकन रस बस ह्वै रही राखति बाजति ढोल ॥ जो चाहै सौं लीजिये नंद वदति यौं बोल ॥२०॥ राधा माधौ बोलि कै लै आई पुन पास ॥ नंद जसुमति

बोलिकैं पुजवाई जिय आस ॥२१॥ दोऊ रंगमगे रंग में मिल कीनौं एक बिचार ॥ इत गठजोरो जोरी कैं राधा नंदकुमार ॥२२॥ महरि घर आनंद बढ्यौ लीयै गोद बैठारि ॥ पाट पाटंबर लै दीयै मनि कंचन नग वारि ॥२३॥ सब विधि सब भाये भये पुरइ मन की आस ॥ या घर या सुख कारनैं भावति व्रज कौ बास ॥२४॥ गोपीजन हित कारनैं गोप भेष अवतार ॥ ब्रिंदाबन बसति सदां जहां क्रीड़ा नित बिहार ॥२५॥ श्री विट्ठल पद रज कृपा ऐसो हिय में ध्यान ॥ 'छीत स्वामी' गिरिधरन कौ कीनौं सुजस बखान ॥२६॥

५६ राग सारंग ललनाँ नव किसोर नागर हरि धरयौ जु नटवर भेख हो ॥ ब्रिंदाबन बिहरति चले आनंद बढ्यो बिसेष हो ॥१॥ श्री स्यामा सखि बोलि लई, गिरिधर पिय के संग हो ॥ ऋतु बसंत मन मोद सौं बन पुहुपित नव रंग हो ॥२॥ सेत डँडिया सुरंग बन्यौ अति लैहिंगा पचरंग बाँनि हो ॥ तोई अरुन, पियरे पलैं, केसर छींट सुहांनि हो ॥३॥ मृगमद-तिलक अंजन दियो अधरनि रंग तंबोर हो ॥ चिबुक चारु नैंकु चुनगीया चौकी रवि सम हो रहो ॥४॥ स्रवन खुभी दुलरी गरैं, कंचन वलय अमोल हो ॥ चूरी चारु द्वै भुज बनी, कबरी कुसुम झकझोल हो ॥५॥ नीवी बंध फौंदा बन्यौं नाभि जलज के तीर हो ॥ कटि रसना पद बीछीया, तापै क्वनित मंजीर हो ॥६॥ सुखद सिरोमनि साँवरों लटकि पीत सिर पाग हो । चारु टकौंचा खासा कौ सौंधे भींजति लाग हो ॥७॥ कनक हि बरन तिलक बन्यौ कौस्तुभ राजत कंठ हो ॥ उपरैनी आछी बनी कटि किंकिनि फैंटा गंठ हो ॥८॥ लाल इजार नूपुर बने कूंजत मृदु कल-बंस हो ॥ मान सरोवर में मानौं क्रीड़ति दंपति हंस हो ॥९॥ फूलछरी कर पिचकारी कुच पै मेलैं कच सीस हो ॥ घूंघट पट दंतिनि गह्यौ दै भृकुटि कमानक सीस हो ॥१०॥ कुंमकुम चंदन अरगजा मिस्रित माँझ कपूर हो ॥ कनक कचौरा कर धरैं तकि तकि मारत दूर हो ॥११॥ बूका थैली हरि गही, दै मूठी मुख माँझी हो ॥ घेर अंबर, लखियतु नहीं भ्रमि गुलाल भई साँझि हो ॥१२॥ मुरज, पखावज, बांसुरी, आबज, दुंदुभि ढ़ोल हो ॥ ताल मृदंग, चंग, कठतोरी,

बिच मुख चंग सुबोल हो ॥१३॥ गोमुख, डंडा, सुर-तुरी जंत्र, रबाब अनूप हो ॥ गारी परसपर गाव हीं सांवल गौर सरूप हो ॥१४॥ इत सौं उन तट खेल हीं कौतुक कह्यौ न जाई हो ॥ रिझवतिं ललनां लाल कौं सुंदर सारंग हो ॥१५॥ मुख देखति अति सुख भयो कूजति सुक, पिक, मोर हो ॥ अनंग मुरझि धरनि परचौं सखि डारति हो तिन तोरी हो ॥१६॥ चांचरि चैत सुहावनौं गावति फागु धमार हो ॥ 'बिस्नु दास' सुरनर मुनि पद रज, बंदित सार हो ॥१७॥

५७ राग सारंग सुंदरी हो हो होरी रंगभरी खेलै रसिक रसिकनी फाग ॥ सुंदरी एकु तें एकु सुंदर बनीं फूल्यौ कुसुमन मानौं बाग ॥१॥ बागो धराये श्री अंग लटकति सीसैं पाग ॥ केसर छिरकै वल्लभ पिय प्रगट करति अनुराग ॥२॥ अरगजा भरि-भरि पिचकाई चलावैं परम पराग ॥ अबीर उड़ावे रंग भरे खिलावैं महा बड़भाग ॥३॥ सब मिलि बाजे बजाव हीं धमार गावैं बहु राग ॥ खेलैं गोकुल में समाज सौं पूरे भागन जाग ॥४॥ यह बिधि खेलैं परसपर पूरन प्रगट्यौ सुहाग ॥ 'वल्लभ दास' सुख निरखैं ही चरन कमल चित लाग ॥५॥

५८ राग सारंग स्याम ढुठौंना कौन कौं जाके घूँघरवारे बार सखी री ॥ध्रु०॥ सखी री मोर मुकुट माथैं धरे अरु मृगमद-तिलक सुचारु ॥ करनफूल कानन बनें उर गज-मुक्ता हार सखी री ॥१॥ मोर मुकुट कर बांसुरी, अरु पीतांबर करि फैंट ॥ गोरस बेचनि जाति ही मोसौं भई अचानक भेंटि ॥२॥ सखी री भोर भवन तैं उठि चली नंद-महर की पौरी ॥ छैल छबीलौ छोहरा छीन लीयौ चित चोरी ॥३॥ सखी री कहा करौं कैसैं मिलैं किहि मिसि देखनि जाऊँ ॥ सखी री चितवत ही चोरी लगे इह ब्रज एसौं गाँऊँ ॥४॥ बिन देखें तन तरसैं ही अरु रुचै न भोजन पान ॥ मों मन जैसी बीत हीं सो जानति 'जन भगवान' ॥५॥

५९ राग सारंग सुंदर, सुभग, तरनि-तनया-तट, खेलति हैं हरि होरी हो ॥ कौंवरि भरि-भरि कुँमकुमा रंग साख अरगजा घोरी हो ॥१॥

बाजत ताल, मृदंग, झाँझि, ढ़फ, मधि मुरली-धुनि थोरी हो ।। सुर बीना किन्नरि अजे आदि दै बरनि सकै कबि कोरी हो ।।२।। सब जुबतिन कर मतौ परसपर पकरनि स्याम हि दौरी हो ।। पकरि स्याम कौं करत मन भायौ, मुख मंडित रंग रोरी हो ।।३।। आंखिन अंजन आंजि बिंदुली दै एक पीत-पट झकझोरी हो ।। एकु गैर सब सखा बिडारे, गहि बांधे पट डोरी हो ।।४।। गहि राधिका स्याम संग आगें, ढुंढ़त दुलहिनि गोरी हो ।। पूछौ कान्ह जिनि सुभग लगन हैं दिन थोरी मति-भोरी हो ।।५।। नंद जसोमति जानि हरखि जिय गाय दई भरि खोरी हो ।। मेवा बहुत मंगाई स्याम सखा सहित सब छोरी हो ।।६।। बौहोरी निसंक सब खेलन लागे सब करै जोबन तोरी हो ।। प्रमुदित मन हुलसति सब ब्रज जन करत स्याम सिर होरी हो ।।७।। नांचति गावति करति कुतूहल सबन लगी है ठोरी हो ।। अबीर गुलाल उड़ाई घूँघरि करि करत फैंट टक टोरी हो ।।८।। तैसैं किसोर बने बरस षोडस के तैसीये सुघर-किसोरी हो ।। राधा मोहन हाट करषत मिलि घन-दामिनी छबि चोरी हो ।।९।। कुँमकुम अरगजा कीच में पग थके चलि चहुँ दिस मोरी हो ।। बिथुरी अलग तिलक छबि राजै, ज्यों दामिनी घन घोरी हो ।।१०।। मोहन पै पीत रंग के रंग रँगी है सारी घोरी हो ।। आनँद मगन होत पन छूटत, देति गगरिया फोरी हो ।।११।। ब्योम विमान सुरपति गति थकित कहत हतो सुपोरी हो ।। कंचन-छत्र-चँवर धरि सब जुरे, आये पीय सिंघ पौरी हो ।।१२।। स्यामा स्याम समित आतुर ह्वै सिंघासन बैठे इक ठौरी हो ।। बलि-बलि जाई श्री 'गोविंद' इन पै बीरी खवावै कहे चिरजीवौ यह जोरी हो ।।१३।।

६० ❁ राग सारंग ❁ हो प्यारी होरी खेले रस भरे ब्रज जुबतिन के संग री प्यारी ।। एकत आईं सबै जुरीं सौधे भीने अंग री प्यारी ।।१।। केसर कलस लिये धरें कटि गुलाल सुरंग री ।। पिचकाई नगन जराय जरी खेलत होत अनंग री ।।२।। कोऊ कंचन सों धरे छोरत देखि सुकंठ री ।। केसर आड लिलाट करे कोउ लेत उछंग री ।।३।। कोऊ बजावत किन्नरी कोउ उठाई मृदंग री ।। कोऊ ओचका हँसि परी तोरत तान तरंग

री ॥४॥ लायक नारी बनाय के झूठो नाम कराय री ॥ घूँघट अधिक तनाय कें नारीन में ले जाय री ॥५॥ कोउ कुल वधु जनायकें कहत बात मुरझाय री ॥ नैसँकु लाये मनाय के नीके खेल खिलाय री ॥६॥ जब ही चरन गनाय के धरत चोंप चित लाय री ॥ पाछे तें सिर नायके हँसत कंठ लपटाय री ॥७॥ कोऊ झुमत नायके देत अबीर उड़ाय री ॥ अरगजा अधिक सनाय के वदन पानि परसाय री ॥८॥ मिलि आई सब भामिनी पकरि लिए चहुं ओर री ॥ उलटि लगी मानो दामिनी रह्यो बीच घनघोर री ॥९॥ एक कहे ए कामिनी लेहो अप अपनी कोर री ॥ बिसवासी गजगामिनी बाँधि छोरे सो छोर री ॥१०॥ तब धाई सुखधामिनी राजत रूप मरोर री ॥ ज्यों उजियारी यामिनी एक एकते जोर री ॥११ ॥ आई हैं अभिरामिनी झटकि लयो कर जोर री ॥ हैं तुमारो एक स्वामिनी सोच करो किन ओर री ॥१२॥ हँसि ग्रीवा भुज मेल ही कोऊ उठत अति गाज री ॥ अंस बांह धरि पेलही कोऊ जात गहि भाज री ॥१३॥ केतेक रूप नवेलही सोहत खरी विराज री ॥ केतेक बेस नवेल ही निरखी रहत काम लाज री ॥१४॥ इहि बिधि होरी खेल ही मनमथ सेना साज री ॥ तेरे तो अलबेली ही कहा रही जिय लाज री ॥१५ ॥ मदन मोहन पिय के लही रस सागर की राज री ॥ यह सुनि चली अकेली हेली धाय कंठ मधि राज री ॥१६॥ श्री विठ्ठल पद पद्म की जैए बलि बलिहार री ॥ 'गोकुल पति' सुख सदन की गावत सरस धमार री ॥१७॥

६१ (श्री राग सारंग) होरी खेलत जमुना कैं तट, कुंजनि-तर बनवारी ॥ इत सखियन कौ मंडल जोरे श्री वृषभानु-दुलारी ॥ होड़ा-होड़ी होती परसपर, देवैं आनंद गारी । भरे गुलाल, कुँमकुमा, केसरि कर कंचन-पिचकारी ॥ बाजत बीन, बाँसुरी, महुवरि, किन्नरि और मुहचंगा ॥ अमृतकुंडली और सुर मंडल, आउझ, सरस उपंगा ॥ ताल, मृदंग, झांझ, डफ बाजै, सुर की उठति तरंगा ॥ हँसत-हँसावत करत कुतूहल, छिरकति केसर रंगा ॥ तब मोहन सब सखा बुलाये, मिलिकै मतौ बतायौ । रे भैया! तुम चौकस रहियो, जिनि कोउ होउ गहायौ ॥ जौ काहूकौं पकरि पाइहें, करिहें

मन-कौ भायौ । तातैं सावधान ह्वै रहियो, मैं तुमकौ समुझायौ ।। राधा गोरी नवल किसोरी, इनहुँ मतौ जौ कीन्हो । सखि इक बोलि लई अपनै ढिंग, भेष जु बलकौ कीन्हौ ।। ताकौं मिलन चले उठि मोहन काहू सखा न चीन्हौ । नैंसुक बात लगाई साँवरे, पाछे तैं गहि लीन्हौ ।। आईं सिमिट सकल व्रज-सुंदरि, मोहन पकरे जबहीं । हम माँगति हीं कह विधिनापै, दांव पाई हैं कब हीं ।। तब तुम चीर हरे जु हमारे, हा हा खाई सबहीं । अब हम बसन छीनि करि लै हैं, हा हा करिहौ अबहीं ।। एक सखी कह, बदन उठावहु, हमहूँ देखन पावैं। श्री मुख-कमल नैन मम मधुकर, तन की तृषा बुझावैं ।। एक सखि कह आँखि आँज कै माथे बेंदी लावै । एक सखी कह इनहिं नचावहु, हम सब ताल बजावैं । एक सखी आई पाछे तैं मोरपच्छ गहि लीन्यौ । एक सखी त्यौं आई अचानक, पीतांबर धरि छीन्यौ ।। एकै आँखि आँजि, मुख माँड्यौ, ऊपर गुलचा दीन्यौ । मानत कौन फाग मैं प्रभुता, मन भायौ सो कीन्यौ ।। एक कहे, बोलौ बल भैया तुमकौं आई छुड़ावैं । सखा एक पठवौ कोऊ घर कौं, जसुमति कौं लै आवैं ।। जानत हौ कल-बल के छूटैं, सो नहिं छूटन पावैं । राधाजूसौं करौ बीनती, वै बलि तुमहिं छुड़ावैं । दूरिहि ते देख्यौ बल आवत, सखी बहुत उठि धाईं । कल-बल-छल जैसें तैसें करि, उनहूं कौं गहि ल्याईं ।। किये आनि ठाढ़े इक ठौरहिं, बल-मोहन दोऊ भाई । उनहुंकि आँखि आँजि मुख माँड्यौ, राधा सैन बुझाई ।। देखि-देखि ब्रह्मा, सिव नारद, मन ही मन पछिता हीं । बड़े भाग हैं श्री गोकुल के, हम मुख कहे न जाही ।। जाके काज ध्यान धरि देख्यौ, ध्यानहु आवत नाहीं । वे अब देखे बनितनि-आगैं, ठाढ़े जोरे बाहीं ।। हँसि-हँसि कहत सु मोहन प्रीतम, मन मानौं सुख कीजे । छाँड़ि देहु, गृह जाउँ आपनैं, पीतांबर मोहिं दीजे ।। कर जोरे गिरिवर-धर ठाढ़े, आणा हमकौं दीजै। जौ कछु इच्छा होई तिहारी, सो सब फगुवा लीजे ।। तब गिरिवर-धर सखा बुलाये, फगुवा बहुत मँगायौ । जोई-जोई बसन जाहि मन मान्यौ, सोई-सोई तिहिं पहिरायौ ।। राधा-मोहन जुग-जुग-जीवौ, सब कोऊ भलौ मनायौ ।। बाढ़ौ बंस नंद बाबा कौं, सूरदास जस गायो ।

६२ राग सारंग होरी खेलन जैऐ अरी जहां खेलत नंद ढोटना । सखा-बृंद उत जुरे हौंहिंगे तुमहूं नारा जोटना ॥१॥ अरी जहाँ सूर सुता के तीर बिराजत द्रुम कें बिबिधि तरोना । अबीर गुलाल भरौं फैंटन में केसरि कलस भरोना ॥२॥ अरी जहाँ अपने संग की दुरि मुरि देखति वदन लाल कौ लोना । चल किन दौरि हमहूँ जो पेखैं बिनु देखैं न रहोना ॥३॥ अरि जहाँ चोवा कुँमकुम कीच मचैगी रंग होरी घोरना ॥ पिचकारी जु छुड़ाई करन की मोहन पकरि भरोना ॥४॥ एकु सखी गहि बाँह मरोरै एकु रहि धरि मोना । एकु कहें चलि बाँहि बनायौ खेलति होहिगो जना ॥५॥ अरि जहाँ एकु कहें चलौ उतहू खेलिए घर कुल जन के खोना । तौ लौं एकु आई रंगी भाजी चक्रित हौं हिं सब छोना ॥६॥ अरी जहाँ अद्‌भुत रंग परसपर लखियतु भूलि जाई ग्रह गोना । गिरिधर राधा कंठ लेत हैं जुवती नैन रे टोना ॥७॥ श्रीवल्लभ पद कमल पराग राग ही रे जित होना । तौ यह लीला देखे बिनु भूतल जनम धरोना ॥८॥

६३ राग सारंग हौं हरि संग होरी खेलौंगी । चोवा, चंदन और अरगजा पिचकारिन रँग मेलौंगी ॥१॥ लोकलाज कुल कानि सबैं तजि पतिवृत पाँइन पेलौंगी । 'सूरदास' स्वामी की बाँहन पकरि पकरि कैं झेलोंगी ॥२॥

६४ राग सारंग होरी खेलति मदन गुपाला । सँग लये गोकुल के लरिका करति कुलाहल ग्वाला ॥१॥ लाल गुलाल अपनें कर लीनै छिरकति व्रज बाला । सीस दुमालो अति छबि राजति पीतांबर बनमाला ॥२॥ ताल परखावज आवज बीना मुरली सबद रसाला । अति झीने मधुरे सुर गावति 'श्रीविट्ठल' गिरिधर लाला ॥३॥

६५ राग सारंग हो हो होरी हो हो होरी हो हो होरी खेले गिरधर लाल । नंद महरि कौ कुँवर लाडिलौ संग सोभित व्रज की बाल, होरी ॥ केसरि भरें कनिक पिचकाई छूटत बूँद रसाल, होरी । किलकि किलकि कें सन्मुख धावत डारत मुठी गुलाल, होरी ॥ नैन नचावत मधुरे गावत

चटक मटक गति ख्याल, होरी ।। चोवा चंदन मुख लपटावत हँसत दै दै कर ताल, होरी ।। एक ब्रज नागरि गुन की आगरि लपटि स्याम तमाल, होरी ।। नैना आंजि और मुख मांडे बेंदी दिनी भाल, होरी ।। रस में मगन भये मिलि खेलत तन की कछु न संभार, होरी । चतुर्भुज प्रभु सिर मुकुट बिराजत और वैजयन्ती माल, होरी ।।

६६ राग सारंग होरी खेलत नंदनँदन श्री वृषभान किसोरी ।। इत सखियन के वृन्द जुरे हैं उत सखा मंडली जोरी ।।१।। आये एकत ह्वै सब कोउ नंदमहर की पोरी ।। मन्मथ मदमाते नरनारी लाज पास गई तोरी ।।२।। खेल मच्यौ भारो होरी को अबीर गुलाल उड़ावे । मृगमद चोवा चंदन छिरकत सीस अरगजा नावे ।।३।। प्यारे लाल भामिनी ऊपर करिके गुलाल अंध्यारी । केसर कुमकुम की मुख ऊपर छूटत है पिचकारी ।।४।। अद्भुत छबि बाढ़ी तिहि औसर सोभा बरनि न जाई । अरुन घटा मानो कामनि ऊपर अमृत बरखन आई ।।५।। तब जुरि मिलि आई सब वनिता मन में अति सुख पाई । भरि-भरि पिचकाई ले दोरी लागत खरी सुहाई ।।६।। गावति गारी मीठी-मीठी जेसी ए मन भावे ।। अमृत पगे से अक्षर बोले कोकिल कंठ लजावे ।।७।। तब प्यारी राधा प्यारे को छिरक्यो रुचिसों गुलाल। मदनमंत्र मानो डारिबे गोरी मोहे मोहन लाल ।।८।। तब ललिता लालन को ओचका पकरि लिये भर कोरी । सजल जलद संयुत दामिनी छबि तिहि ओसर चोरी ।।९।। मांड्यो मुख नेननि आँज करिले दर्पण दरसावे । एक हंसत है तारी देके एक वदन निरखि सुख पावे ।।१०।। तब राधा जू फगुवा माँग्यो दीजे मोहन लाल । मन भायो श्री प्रिया कौ दियो पंकज नैन बिसाल ।।११।। श्री वल्लभ पद पदम प्रताप ते कछुक गान गुन पायौ अति 'विचित्र' गिरिधरन लाल कौ ख्याल होरी कौ गायौ ।।१२।।

६७ राग सारंग हो प्यारी होरी खेले रसभरे व्रज युवतिनके संग री प्यारी ।। एकत आय सबै जुरी सोंधेभीने अंग री प्यारी ।।१।। केसर कलस जु लिये धरे कटि गुलाल सुरंग री प्यारी ।। पिचकाई नगन जराय जरी खेलत होरी अनंग री प्यारी ।।२।। कोऊ कंचनसों धारें छोरत देख

सुकंठ री प्यारी ।। केसर आड लिलाट करे कोऊ लेत उछंग री प्यारी ।।३।। कोऊ बजावत किन्नरी कोऊ उठाय मृदंग री प्यारी ।। कोऊ ओंचका हँस परी तोरत तान तरंग री प्यारी ।।४।। लायक नारी बनायके झूठो नाम कराय री प्यारी ।। घूंघट अधिक तनायके नारिन में ले जाय री प्यारी ।।५।। कोऊ कुलवधु जनायके कहत बात मुरझाय री प्यारी ।। नेंसकु लाय मनायके नीके खेल खिलाय री प्यारी ।।६।। जबही चरन गनायके धरत चोंप चित लाय री प्यारी ।। पोछे तें सिर नायके हँसत कंठ लपटाय री प्यारी ।।७।। कोऊ झूमत नायके देत अबीर उठाय री प्यारी ।। अरगजा अधिक सनायके वदन पानि परसाय री प्यारी ।।८।। मिलि आईं सब भामिनी पकरी लिये चहुँ ओर री प्यारी ।। उलट लगी मानो दामिनी रह्यो बीच घनघोर री प्यारी ।।९।। एक कहे ये कामिनी लेहो अपनी कोर री प्यारी ।। विसवासी गजगामिनी बाँध छोरे सो छोर री प्यारी ।।१०।। तब धाई सुख धामिनी राजत रूप मरोर री प्यारी ।। ज्यों उजियारी यामिनी एक एकतें जोर री प्यारी ।।११।। आई हैं अभिरामिनी झटक लयो कर जोर री प्यारी ।। है तुम्हरो ये स्वामिन सोच करो किन और री प्यारी ।।१२।। हंस ग्रीवा भुज भेलही कोऊ उठत अति गाज री प्यारी ।। अंस बाँह धरि पेलही कोऊ जात गहि भाज री प्यारी ।।१३।। केतेक रूप नवेलही सोहत खरी बिराज री प्यारी ।। केतेक वेस नवेलही निरख रहत कामलाज री प्यारी ।।१४।। इहि विधि होरी खेलही मनमथ सेना साज री प्यारी ।। तेरे तो अलबेली ही कहा रही जिय लाज री प्यारी ।।१५।। मदनमोहन पियके लही रससागरकी राज रीं प्यारी ।। यह सुन चली अकेली हेली धाय कंठ मधि राजरी प्यारी ।।१६।। श्रीविट्ठलपदपद्म की जैये बलि बलिहार री प्यारी ।। गोकुलपति सुखसदनकी गावत सरस धमार री प्यारी ।।१७।।

६८ राग सारंग खेलनि आई नंद दरबार, सकल ब्रज ग्वालिनी हो ।।ध्रु०।। एक समैं श्री राधा बैठीं सिंगार बनाई ।। उमँगि आँईं सब गोप-सुंदरी चलौ जसुमति पै जाई ।।१।। अपनौं अपनौं मेलि अरगजा लींनें कलस भराई ।। फगुवा के मिस मोह्न के हित आँनद उर न समाई ।।२।। आप

जुवती जूथ मैं ठाड़ी आगे पठईं द्वै चार ॥ नँदरानी सौं यों जाई कहीयो, सब सखियन बिस्तार ॥३॥ मुदित भई सुनि स्रवन जसोदा, लींनें सकल बुलाई ॥ आसन मानि, मनोहर बीरी, दींनी रुचिर बनाई ॥४॥ तेल, फुलेल सुगंध अरगजा उड़वति अबीर गुलाल ॥ माँनौं सामन घन बरखावत बहु बिधि बूंद रसाल ॥५॥ देखति नैननि परी ठगोरी, पट भूषन गए छूटि ॥ कनक-लता मुकता निधि तामैं पायौ रंक मनौं लूटि ॥६॥ मोहन जाई अटारी ठाड़े दृष्टि परी अली नैन ॥ वर भामिनी गहि लाई भुजाबल, जोबन सब सुख दैंन ॥७॥ ताल रबाब बाँसुरी बैंनु कटिकट सबद मृदंग ॥ मानौं रास भयौ फिर गोकुल, पायौ है दन रति रंग ॥८॥ चंदन बंदन केसरि भरि भरि झकझोरि कीयौ व्रज राज ॥ उभै अँक मुख पान परम मद मैंटी सब कुल-लाज ॥९॥ चिरजीवौ जुग जुग ये जोरी असिस सब मिलि देति ॥ तन मन धन गिरधर पै वारौं 'रामदास' समेत ॥१०॥

६९ राग सारंग खेलति कुँवर रसिक गिरिवरधर, हो हो होरी बोलत डोलत ॥ सुबल, सुबाहू, श्रीदामा, हलधर, लै लै नाम टेरि सब बोलत ॥१॥ ताल, मृदंग, उपंग, मुरज, ढ़फ, बीना, बैंनु किन्नरी बाजति ॥ ढोल, ढुलक निसान, झालरी भेरिन सौं गोकुल सब गाजति ॥२॥ सुनि सब व्रज जुवति जुरि आँईं गावति गारि सुहाई झुंडन ॥ अबीर गुलाल भरे भरि झोरि केसर घोरि भरे घट कुंडन ॥३॥ मच्यो खेलि दुहुँ दिस नर नारिनु, पिचकाई छूटति सनमुख भरि ॥ सखनु संग मोहन उठि धाए, करि गुलाल अँधियारी धूँधरि ॥४॥ प्यारी सनमुख जाई अचानक मुख लपटाई भजे सौंधौ करि ॥ ललिता कोपि धाई भाजति ही मोहन गाढे गहें अँकवा धरि ॥५॥

७० राग सारंग खेलति नंद महरि कौ ढोटा ठाड़ो सिंह दुवारि होरी ॥ बालक सँग बुलाई घोष के कीन्हे विविधि सिंगारि होरी ॥१॥ सूथन लाल वागो सेत पगिया केसर रँग बोर होरी ॥ फैंटनि पटका तार जरकसी, सीस चंद्रिका-मोर होरी ॥२॥ केसर रंग निचोई भरे घट मृगमद अतर फुलेल ॥ करन कनक-पिचकाई छिरकति कीच मचीं सब गेल होरी ॥३॥

दुंदुभि ढोल भेरि सहनाई बाजति मधुर-मृदंग होरी ॥ झाँझि ताल महुवरि किन्नरी ढ़फ सुर मधुरे मुख चँग होरी ॥४॥ धुनि सुनि कै घर घर तैं निकसी व्रजनारी सिंगार बनाई होरी ॥ तिन मधि कुँवरि राधिका राजति पिय-चित लेति चुराई होरी ॥५॥ प्रमुदित मन खेलन कौं आवति गावति सरस धमार होरी ॥ सैंननि सैंन मिलाई लाल सौं देति भाँवती गारि होरी ॥६॥ छूटन अब न पाओगे मोहन बलदाऊ लेऊ बुलाय होरी ॥ फगुवा के मिस धाई गहे हरि मुरली लई छिनाई होरी ॥७॥ चन्द्रावलि चोवा चंदन लै छिरकति मदन गुपाल होरी ॥ करत मनोरथ मन के भाए विविधि भाँति के ख्याल होरी ॥८॥ तब हलधर सखन लै धाई घेरीं सब व्रजबाल होरी ॥ केसर कलस नवाई सीस तैं डारति सुरँग गुलाल होरी ॥९॥ तब नँदरानी बहु विधि भूषन मेवा दयौ मँगाई होरी ॥ चिर जीयौ व्रजराज लाड़िले कहें असीस सुनाई होरी ॥१०॥ दोउ हाथ मुख परसि स्याम कौ, पुनि पुनि लेति बलाई होरी ॥ रस बस मगन भई व्रज सुंदरि, चली सँकेत बताई होरी ॥११॥ या विधि राज करौं दंपति नित-प्रति रास बिलास होरी ॥ श्री विट्ठल पद रज प्रताप तैं गावत यह जसु 'दास' होरी ॥१२॥

७१ राग सारंग होरी खेलति मोहन, उड़ति गुलाल अबीर ॥ बनि बनि चलीं सकल व्रज-वनिता पैहेरि विविधि पट चीर ॥१॥ अगर जबाद कुँमकुमा केसर चरचैं स्याम सरीर ॥ मृदु मुसिकानि परसपर सुंदरि दसन झलक मुख हीर ॥२॥ प्रैंम-पतंग पिचकाई छूटत, औ जमुना कौ नीर ॥ 'सूरदास' प्रभु सरबसु वारौं हरि हलधर के बीर ॥३॥

७२ राग सारंग आजु माई खेलति फागु हरी ॥ सब सखियन सिंगार कीयो मिलि सेंदूर माँग भरी ॥१॥ गुलाल की चोली अबीर की झोरी चहुँ दिस लागी झरी ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' के प्रभु राधा कों अंक भरी ॥२॥

७३ राग सारंग राधा माधौ खेलैं होरी ॥ इत ब्रजराज लाड़िलो राजत, उत वृषभानु किसोरी ॥१॥ एकन के कर अगर, कुँमकुमा, एकन

केसर घोरी ॥ छिरकति रतन-जटित-पिचकाई, पिय मुख पौंछत खेलत गोरी ॥२॥ इक गावै, इक मृदंग बजावैं, एकु रबाब झाँझन की जोरी ॥ सुख सागर, आगर, ब्रिंदाबन, बरन वनस्पति मोरी ॥३॥ जित तित तैं ग्वालनि उठि धाँई, मुख माँडत लै रोरी ॥ 'कृष्ण जीबन लछीराम' के प्रभु प्यारे चिरजीयौ भूतल यह जोरी ॥४॥

राग गौड सारंग

१ राग गौड सारंग माई नये खिलार आजु में देखे चंचल चपल चवाई ॥ हँसि मुसिकाइ नैन सैन दे मोकूं पकरि नँचाई ॥१॥ कोउ गुलचे कोउ कर मुख माँडे गोपी करें हँसाई ॥ 'कृष्ण जीबन लछी राम' के प्रभु की मुरली लई छिनाई ॥२॥

धमार के पद - राग नट

१ राग नट खेलत गिरिधरनलाल परममुदित ग्वाल बाल उतबनी व्रजजन वलनारि होरी बोलना ॥ गावत नटनारायण राग युवतीजन खेलें फाग गारीदेत गोपकुंवर कर कलोलना ॥१॥ वीना बेणु तान तरंग बाजत मधुरे मृदंग भेरी महुवर डफ झांझ ढोलना ॥ वीना बेणु तान तरंग पिचकाई भरत रंग व्रजजुवतिन छिरकत मिल वंदन डोलना ॥२॥ मोहनकों पकर लेहु फगुवामिसफेंट गहें मांडत मुख रोरी घोर कर कपोलना ॥ चतुर्भुज प्रभु फगुवादीयो राधाजूको भायो कीयो पीतांबर खेंचलियो कर झंझोलना ॥३॥

२ राग नट युवतीयूथ संग फाग खेलत नंदलाल कुंवर होहो होरी बोलना ॥ गावत नटनारायण राग मुदित देत चेतफाग चहुंदिस जुर गोपबाल वृंदलोलना ॥१॥ बाजत आवज उपंग बांसुरी सुरबीन चंग शंख बंस झांझ डफ मृदंग ढोलना ॥ चलत सुर अनेकताल सुघरराय श्रीगोपाल वेणु मध्यगान करत होरी होलना ॥२॥ पहरें तन भांत भांत शोभा कछु कहीनजात भूषण आभरण विविध पट अमोलना ॥ कुंकुमा सुरंग छिरकत पिचकाई भरभर परस्पर देत कूक व्रजकी गोरी खोरी डोलना ॥३॥ काहूको चिबुक चारु परस काहुकी वेसर खूभी काहूके करत कंचुकीके बंद खोलना ॥

काहूको गहत हारतोर काहूकीगहत भुज मरोर काहूकों पकर छांड देत कर झंझोलना ॥४॥ गोकुलविचकीचमची सौरभ चहुंओर बढ्यो सब तन अनुराग उमग, रसअतोलना ॥ कुमनदास प्रभु गिरिधर प्रेम सिंधु प्रगट भयो सुरविमान विथकित देख व्रज कलोलना ॥५॥

३ राग नट होरी कोहे अवसर जिन कोऊ रिसमानें ॥ काहूको हारतोर काहूकी चुरी मोर काहूकी खुभी ले भाजे अचानक काहुके पिचकाई नयनन तकताने ॥१॥ काहूकी नकवेसर पकरे काहूकी वेनीगहे कंठसरी झटक आनें ॥ कुमनदास प्रभु यह विध खेलत गिरिधर पिय सब रंग जानें ॥२॥

४ राग नट होरी हो हरि खेलति आवति ॥ गोपिन कैं मन मोद बढ़ावति ॥१॥ ब्रज जुवतिन लै प्यारी आँईं ॥ उत तैं नंद कौं कुँवर कन्हाई ॥२॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावति ॥ केसरि नीर जुवतिन सीस तैं नावती ॥३॥ बीन रबाब किन्नरी बाजति ॥ ताल मृदंग चंग सुर गाजति ॥४॥ बंसरि लै तरुनी-गन धाँईं ॥ गोपन लै कनक पिचकाई ॥५॥ फगुवा लैंन नँद-गृह आँईं ॥ भूषन बसन सबैं पहिराई ॥६॥ देति असीस चली ब्रजनारी ॥ इहि बिधि क्रीड़ति कुंज-बिहारी ॥७॥ सो छबि देखि देव सचु पावति ॥ फूलन की बरखा बरखाति ॥८॥ जमुना न्हाँन चले जदुराई ॥ यह सोभा मोपै बरनि न जाई ॥९॥ राधा गिरिधिर अविचल जोरी ॥ प्राननाथ जन नवल किसोरी ॥१०॥

५ राग नट खेलत स्याम ग्वालिनि संग ॥ एक गावत, एक नाचत, इक करत बहु रंग ॥ मुरज, बीन, उपंग, मुरली, झाँझ, झालरि, ताल ॥ पढ़त होरी, बोलि गारी, निरखिकैं ब्रज-बाल ॥ कनक-कलसनि घोरि केसरि कर लिये ब्रज-नारि ॥ जबहिं आवत देखि तरुनी, भजत दै किलकारि ॥ दुरि रही इक खोरि ललिता, जितहिं आवत स्याम ॥ धरे भरि अँकवारि औचक, धाई आईं बाम ॥ बहुत ढीठो दै रहे हो, जानबी अब आज ॥ राधिका दुरि हँसति ठाढ़ी, निरखि पिय मुख लाज ॥ लियौ काहू मुरलि करतैं, कोऊ गह्यौ पटपीत ॥ सीस बेनी गूंथि, लोचन करी आँजि अनीत ॥ गए करतैं छुटकि मोहन, नारि सब पछितातिं सीस धुनि,

कर मींजि बोलति, भली लै गे भाँतिं ॥ दाऊँ हम नहिं लैन पायौ, बसन लेतीं लाल ॥ सूर-प्रभु ! कहँ जाहुंगे अब, हम परीं इहिं ख्याल ॥

६ राग नट प्रगट्यो ऋतुराज, लाज छाँड़ि सकल साज समाज गोपिका गोविंद सँग खेलति ब्रज होरी ॥ वे गुन सब एकु सारि नौंतन कीनि सिंगारि मधि गौर स्याम सुभग सरस बनी जोरी ॥१॥ बाजत बीना उपंग बाँसुरी सुर बीन चंग मिलवत-धुनि संग-संग मुरली धुनि थोरी ॥ लेति उरप तिरप मान, सुलफ सुगति सौं बंधान, निरतति पिय सँग सुजान, गुन निधान गोरी ॥२॥ गावति अति सरस गान, राग रागिनी सुतान, मोहन नागर सौं मिलि मुदित मन किसोरी ॥ आलिंगन चुंबन हँसि, झकझोरति दोऊ बिबसि, निरखति सुख सखी सकल, प्रेम-सरस बोरी ॥३॥ छिरकत कुँमकुमा रंग, चोवा चंदन सु अंग, डारत बंदन अबीर गुलालन भरि झोरी ॥ भए घोस अति सुगंध मधुप गुंज प्रेम पुंज लंपट रस प्रेम लुब्ध भ्रमति गोकुल की खोरी ॥४॥ बाढ़्यौ अनुराग फाग, खेलति सब ब्रज सुहाग, उमड्यौ सुख-सागर पथ आरज महि थोरी ॥ लीला रस मगन झेलि, अखिल केलि रंग रेलि, वर विलास 'नंददास' हिय मैं रहो री ॥५॥

७ राग नट प्रफुलित रुचिर तरनि-तनया तट होरी खेलति मदन गुपाल ॥ बलदाऊ संग सखा सहित सब अद्‌भुत रूप-रसाल ॥१॥ पहरे विसद सुभग तन वागौ अंबुज नैन बिलास ॥ आसव प्रेम पिएँ मदमाते चलत अटपटी चाल ॥२॥ दुलरी कंठ बिमल मुक्ताफल मृगमद तिलक सुभाल ॥ मकराकृत कुंडल जुग सबनन सोहत उर वनमाल ॥३॥ गावत राग सरस सुर सौं नट बिबिध बनावत ख्याल ॥ बाजत बैंनु, मुरज, बीना, ढ़फ, श्रीमंडल मधु ताल ॥४॥ चोवा मेदि जवादि अरगजा लाए घट भरि ग्वाल ॥ हाथ रतन-पिचकाई रस सौं छिरकत केसर लाल ॥५॥ बिबिधि बिधि ऊड़ौ अति बूका हो उड़त बढ्यौ तम-जाल ॥ प्रगट करत अनुराग ह्रदै कौ डारत मुठी गुलाल ॥६॥ रति संग्राम लरन कौ गारी, गावत जुरि ब्रज बाल ॥ गिरिधर सनमुख राधा दौरी ओट दयै कुच-ढाल ॥७॥ फगुवा माँगति ब्रज की ललनाँ काजर लावत गाल ॥ लीला निरखि थकित महिला

जन चितवत भई बिहाल ॥८॥ दरस करन आयौ कुसुमाकार, कुसमित नव द्रुम डाल ॥ सुक पिक मोर मधुप मधुरी धुनि प्रगट करी तिहिं काल ॥९॥ क्रीड़ा जलधि कहन कौं को कवि सबै भई मति ग्वाल ॥ 'गोकुलचंद' रूप अवलोकति मिटे सकल जंजाल ॥१०॥

८ राग नट खेलत गिरिधर पिय सँग होरी ॥ हंस-सुता तट सघन कुंज मधि, मिलि आँई ब्रज गोरी ॥१॥ राजत नव ब्रजराज कुंवर वर, सँग नव वृषभानु किसोरी ॥ आलस बलित कटाच्छन चितवत, सकुचि हँसत मुख मोरी ॥२॥ सहचरि गुन गावत प्रफुलित मन, निरखि निरखि छबि ओरी ॥ कबहुँक विहँसि सबै मिलि बोलत, हो हो हो हो होरी ॥३॥ ताल मृदंग मुख चंग बजावत, औ बीना धुनि थोरी ॥ उपजत रंग कहत नहिं आवत, नाँचति उमँगि किसोरी ॥४॥ केसर मृग-मद, मलय, अरगजा घसि भाजन भरि घोरी ॥ अबीर गुलाल बंदन औ बूका साजि धरो तिंहिं ठोरी ॥५॥ प्यारी अपने कर सौंधौ लै पिय अँग लावत बौरी ॥ अरगजा, बागो, छिरकि सँवारति, सिथिल पाग ढरकौंरी ॥६॥ केसर रंग चित्रता उपर, सहित गुलाल करच्योरी ॥ चित्र कपोलन करि हँसि बीरी देति लेति मुख जोरी ॥७॥ बूका, बंदन आई सन्मुख व्है उड़वति भरि भरि झोरी ॥ ता धुंधरि मधि पिय लखि औसर भाँमिनि लई भरि कौरी ॥८॥ रीझि परसपर श्रीमुख विकसत, अंतर भाव बढ्यौंरी ॥ सखी वृंद रस जुगल विलोकत, विवस भई मति भोरी ॥९॥ जात नाहीं बरन्यों ता छिंनु मधि जो रस सबनि लह्यौ री ॥ श्री वल्लभ श्रीविट्ठल पद बल रसना कछूक कह्यौ री ॥१०॥

धमार के पद - राग पूर्वी

१ राग पूर्वी नंदनंदन वृषभान कुँवरि ब्रज में खेलें होरी ॥ इत नवसत साजें तरूणी गण उतही सकल गोकुल के बालक किलकत फिरत घोखकी खोरी ॥१॥ बाजत सुर मंडल पिनाक सुरबीनगजक आवज ध्वनि थोरी ॥ पटह निसान भेरि महुवर डफ परस मृदंग रवाब किन्नरी सुनत नगनत कोंन कोरी ॥२॥ चोवामेद जवाद साख नवकेसर अरगजा कुंकुम घोरी ॥ सुंदर करन कनक पिचकाई तक तक छिरकत परममुदित मन नवलकिशोर

ओर नवलकिशोरी ॥३॥ एक सखी काजर करले आंजे सुंदर बलसो बलगोरी ॥ एक सखी अंबर छिरकत अंसन लटकत मटकत नेंकदृग अगणित झकझोर झकझोरी ॥४॥ तब हरि की मुरली करते भरते अतिलेन सखी सब दौरी ॥ तोलों उमगि चली ले केसर उर अनुराग जनावत सुंदरि मुख मांडत करसोंरी ॥५॥ आई सकल सखी चहुंदिशते दुहुंपट गांठ जोर तृणतोरी ॥ सरस गुलाल अबीर उडावत भावत सरस धमार हि गावत धावत हँसत कहत हो होरी ॥६॥ गोकुल भूप रूप नवचंद कला पूरण निरमल देख नोरी ॥ तिहि अवसर व्रज युवती सब परम मुदित मन तृखित चहुंदिश भई आतुर अति नयन चकोरी ॥७॥ यह विध अति क्रीडत सुंदरवर देख धरत धीरज कहि कोरी ॥ विविध भांत कुसुमन वरखत हरखत निरखत सुरकी ललना सब सुरपति सहित लागी जानों ढोरी ॥८॥ तब बल आन बीच कीनों दीनों फगुवा लीनों अपनोंरी ॥ देत असीस सब सीस नवावत नाचत पिय हदें प्रेम वशहे अति यह व्रज युगयुग चिरजीयोरी ॥९॥ आन बिबिध भूषण पट अंबर देत सब नगहि गहि कचडोरी ॥ यह सुख निरख निरखत नमन सर्वस्व अपनों रघुवीर तिहिछिन बलबलबल कीनोरी ॥१०॥

धमार के पद - राग मारू

१ (श्री) राग मारू (श्री) एसें नंदको नंद बोले हो हो हो हो होरी ॥ व्रजकी वीथन वीथन डोलेरी ॥१॥ शोभित हें सखा संग सोंधे में भीने ॥ वरन वरन सब सुगंध फेंटन भर लीने ॥२॥ बाजत ताल पखावज आवज भेरी सहनाई ॥ हलधर डफ मोहन मुख मुरलिका सुहाई ॥३॥ कंचन कलश विविध अरगजा भराये ॥ जोई मिले मारग में ताही शिरनाये ॥४॥ खेलत खेलत वृषभान जू कें आये ॥ निरख मोहन मंडली तन सबन नयन सिराये ॥५॥ सुनत वचन घरघरते निकसी सब गोपी ॥ कंचन की मूरति मानो वंदन सों ओपी ॥६॥ अंग अंग अनुराग भरी सबे गोप कुमारी ॥ घूंघट पट ओट दिये देत लाले गारी ॥७॥ निकस निकस ठाडी भईं अपनी अपनी खिरकी ॥ चोवा चंदन अरगजासो छेल छबीले छिरकी ॥८॥ झुंडन झुंडन ठाडी भई शोभा अति बाढी ॥ लाल मुनियां खोल मानो पिंजरनते काढी ॥९॥

सबे चतुर सबे भोरी सबे वेसकिशोरी ॥ सबे सुंदर सबे सुघर एक डारकी तोरी ॥१०॥ रत्नजटित पिचकाई कर कुंकुमा भराई ॥ तक तक हरि छिरकत तबे और अचानक आंई ॥११ ॥ विविध भूषण विविध वसन अंगरंग सोहें ॥ तिलक भाल छबि विशाल उपमाकों कोहें ॥१२॥ कीनो काम कारीगर जरी जराय जरीना ॥ चुनी चहुंओर गोपी मध्य गोपाल नगीना ॥१३॥ गोकुल की खोरिन में खेल मच्यो भारी ॥ झपट जाय ओचका गहि लीने गिरिधारी ॥१४॥ नील पीत अंचलसों गांठ सखीन जोरी ॥ हँसत लाल लजात स्याम झपट झकझोरा झकझोरी ॥१५॥ अरुण वसन कंचुकी तन नीलवसन सारी ॥ दीजे क्यों गारि ताहि प्यारे हू की प्यारी ॥१६॥ उडत गुलाल लाल विविध नौतन छबि छाजे ॥ युवती यूथ मंडल में दामिनि विराजे ॥१७॥ बल बल बल माधो रसिक यह प्रसाद पाऊं ॥ श्रीस्यामा दंपति गुण जन्म जन्म गाऊं ॥१८॥

२ राग मारू खेले नंदको नंदन होरी अपने रंगीले व्रज में ॥ध्रु०॥ बनेहें ग्वाल बाल संग जनु अनेक मेन ॥ आपन मदन मोहन सोहन कहा कहु छबि अेन ॥१॥ उतते आईं युवती वृंद चंदमुखी एक दांई ॥ चंचल तन की दमकजनु दामिनि पट झांई ॥२॥ जुरेहें कंचन चोहटें अपने अपने टोल ॥ आनंदघन ज्यों गाजत राजत बाजत दुंदुभी ढोल ॥३॥ सुरमंडल किन्नरी डफ बाजत रंगभीने ॥ बीचबीच बसुरियावीस कीनेहे मनदीने ॥४॥ बजत चटसों पटतार ग्वार गावत संग ॥ नाचत हें मधु मंगल संगीत बढ्यो हे अतिरंग ॥५॥ कुंकुम चंदन वंदन साख मृगमद मथिघोरी ॥ छबिसों छबीलो भरत डोलत बोलत हो हो होरी ॥६॥ रंग रंग की छींटन भरी सोहत त्रियनवेली ॥ वरन वरन फूलन मानो फूली आनंद वेली ॥७॥ घुमडकर गुलाल को तामें दुरदुर आवे ॥ भरभागत हरिकों भामिनि दामिनी सी छबि पावे ॥८॥ घेरलियें हें नवल त्रियन सांवरे सिरमोर ॥ यह छबि सों भ्रमत जेसें कमल कोश भोंर ॥९॥ पकरें हें छबिसों आन मोहन राधिका वरजोरि ॥ कहीन परे प्रेमकी छबि छाईं झकझोरा झकझोरि ॥१०॥ व्हे ठाडे विवश सबे काहून रही संभार ॥ छूटी हें छबिसों अलकलर टूटेहें मुक्ताहार ॥११॥

क्योंहीं लुकत लाजपें अति प्रेमकी उरेंड ।। नंददास निधिन रुकत वारू की मेंड ।।१२।।

३ राग मारू और अबीर फुलेल अरगजा केसरि भीनीं सारी ।। हो हो होरी बोलति भाँमिनि कामिनि रूप उजियारी ।।१।। बाजति ताल मृदंग मुरली ढ़फ मुरज कठतारी ।। मुरि-मुरि झुरि-मठ खेलति पिय संग नैंकु हु होति न न्यारी ।।२।। रँग-रँग भीनीं रसिक रसीली सखियन में सुकुमारी ।। "मदन मोहन" पिय फगुवा दीनो नैननि मुसकनि भारी ।।३।।

४ राग मारू सूर-सुता के तीर होली खेलै नन्द कौ नन्दना ।। ग्वाल बृन्द बूका पट झोरी, भरि लीने सँग बंदना ।।१।। गावत राग सप्त-सुर मारू, व्रज जन मन आनँदना ।। हाथन लऐं कनक पिचकाई, छिरकत चोवा चन्दना ।।२।। उत तें श्रीवृषभानु-नन्दिनी जुबति-जूथ लै आँई ।। नवसत अँग सिंगार बनाए मनमोहन मन भाई ।।३।। भरि बेला घिसि मृगमद गोरा मेद बहुत सुखदायी ।। नन्द कुंवर छिरकन के कारन व्रज-बनिता लै आई ।।४।। पटह झाँझि झालरि महुवरि ढ़फ, ताल मृदंग, सुछंद ।। वाजत बैंनु रबाब, किन्नरी, बीना अति सुर मंद ।।५।। तनसुख पाग सीस पै सोभित, वनमाला उर सोहैं ।। बागौ सेत बन्यौ खासा कौ छबि लखि अति मन मौहे ।।६।। सुंदर चहूँ ओंर तैं एकत्रित कान्ह कुँवर को घेरें ।। मन में चुप करि रहे स्याम घन, उलटि सखन तन हेरे ।।७।। पीतांबर फगुवा के कारन एकनि लीनो छोरी ।। मुरली एकु छटकि कैं भाजी, एक हँसी मुख मोरी ।।८।। मुक्ता माला एकन लीनि, एकु जु गावति गारी ।। एक स्याम की अखियन आँजति एकु बजावति तारी ।।९।। सनमुख ठाड़ी कुँवरि राधिका करति अपनो भायौ ।। सौंधौ घोरि कुँमकुमा घसि घट मदन मोहन सिर नायौ ।।१०।। श्रीवृषभानु-कुँवरी नैं फगुवा मन भायौ सो लीनौं ।। मदन गुपाल लाल हँसि मधुरैं जो माँग्यो सों दिनौं ।।११।। बिबिध भाँति कुसुमित ब्रिंदाबन, उपजत तान तरंग ।। ऋतु कुसुमाकर गावत मानौं क्वनित कीर, पिक भ्रंग ।।१२।। निरखि थके सुर नर मुनि, किन्नरगन, प्रेम सिंधु सुखदाई ।। राधा रसिक कृष्ण रसलीला हँसि 'गोकुलचन्द' गाई ।।१३।।

धमार के पद - राग मालव

१ राग मालव हो हो होरी बोलै । नंद कुँवर मदमातो डोलै ॥१॥ सखा बृन्द लये संग आवै ॥ व्रज नारिन मन मोद बढ़ावै ॥२॥ केसरि भरि कनक पिचकाई छिरकति स्याम जुवती मन भाई ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावै ॥ मालव राग सरस सुर गावै ॥४॥ बिबिधि सुगंध अरगजा कीनौं ॥ मनमोहन सब ग्वालन दीनौं ॥५॥ ताल मृदंग पटह ढफ बाजै ॥ स्रबन सुनति धुनि घन जिय लाजै ॥६॥ ब्रिंदावन जमुना तट सोहै ॥ सबहिन को मन गिरिधर मोहै ॥७॥ कौतिक देखि थके सुर मुनिगन ॥ मगन भई हुलसी गोपीजन ॥८॥ प्रेम सिंधु बरनो कहाँ ताँई ॥ रसना बिधिना इक बनाई ॥९॥ यह लीला व्रजजन मन भावै ॥ 'गोकुलचन्द' चरन रज पावै ॥१०॥

२ राग मालव खेलति होरी साँवरो ढोटा नंद महरि को लाल हो ॥ बगलन में पिचकाई संग लीयें व्रजबाल हो ॥१॥ सीस पगा सोहत संग भीनों और सोहै वनमाल हो ॥ गारी गावै रस उपजावै फैंटन अबीर गुलाल हो ॥२॥ चोवा चंदन ओर अरगजा करति अटपटे ख्याल हो ॥ ब्रिंदावन की कुंजन महीयाँ बाढ़्यो रँग रसाल हो ॥३॥ यह विधि होरी खेलि हरख सौं सँग सखा सब ग्वाल हो ॥ 'सूरदास' प्रभु यह छबि निरखति बारति मुक्तामाल हो ॥४॥

३ राग मालव हो हो हो होरी बोलें नंदकुंवर मदमातो डोलें ॥१॥ सखा वृंद संग लीयें आवें ॥ व्रजनारिन मनमोद बढावें ॥२॥ केसरभरी कनक पिचकाई ॥ छिरकत स्याम युवतिन मनभाई ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उडावें ॥ मालव राग सरस स्वर गावें ॥४॥ विविध सुगंध अरगजा कीनो ॥ मनमोहन सब ग्वालन दीनों ॥५॥ ताल मृदंग पटह डफ बाजें ॥ श्रवण सुनत ध्वनि घनजिय लाजें ॥६॥ वृंदावन यमुनातट सोहे ॥ सबहिन को मन गिरिधर मोहे ॥७॥ कौतुक निरख थके सुर मुनिगण ॥ मगन भई हुलसी गोपीजन ॥८॥ प्रेमसिंधु वरणों कहां तांई ॥ रसना विधिने एक बनाई ॥९॥ यह लीला

व्रज जन मन भावे ॥ गोकुलचन्द चरणरज पावे ॥१०॥

४ राग मालश्री रसिक फागु खेलै नवल नागरि सौं सरस बर ऋतुराज की ऋतु आँई ॥ पवन मंद अरविंद औरु कुंद बिकसे विषद चंद पीय नंद सुत सुखदाँई ॥१॥ मधुप टोल मृदु बोल सँग-सँग डोले पिकन बोल निरमोल सुति चारू गाईं ॥ रचित रास सौं बिलास जमुना पुलिन में सघन ब्रिंदा विपुन रही फूलि जाई ॥२॥ कनक अंग बरनी सुकिरनी बिराजे गिरिधर नव जुवराज गजराज राई ॥ जुवती हँसगामी मिले 'छीत स्वामी' क्वनित बैनु पद रैनु बड़भाग पाई ॥३॥

धमार के पद - राग सोरठ

१ राग सोरठ मेरे बोलें बोल न बोलेंरी एंड्योई डोले ॥ पेंडो तक ठाडो रहे घूंघट हँस खोले ॥१॥ काहूकी गहत बांह काहूसों कहत नाह तेरो ॥ काहूसों नयन सेन काहू वदत वेन अनेरो ॥२॥ काहूके बगर जाय फाग खेलि आवे ॥ काहू के अनुराग भरयो मुरली में गावे ॥३॥ मोपें नहीं रह्यो जात कासों कहों हेली ॥ ढीठ ईठ पीठ दई प्रीति पेंड पेली ॥४॥ निठुर वचन सुनते आय सन्मुख हरि भाख्यो ॥ तेरोई रूप मेरे उरवसाय राख्यो ॥५॥ निरख वधू विवश भई देह दशा भूली ॥ व्रजपति के संग सुरत मदन डोल झूली ॥६॥

२ राग सोरठ हों किहिं मिस पनघट जाऊंरी मेरी गेलन छांडे सांवरो ॥ हो लाज न डरपत रहों मोहि धरेन कोऊ नाउंरी ॥१॥ जित देखों तित देखियेरी रसिया नंद कुमार ॥ इन बातन केसें भरों मोहि पलकन करत जुहार ॥२॥ लकुट लिये आंगे चलेरी पंथ संवारत जाय ॥ मोहि निहोरो लायकें नेंक फिर चितवे मुसिक्याय ॥३॥ यमुना जल गागर भरोंरी जब सिर धरों उठाय ॥ हों अचरा ढांकत रहों मेरो हिय रात कललचाय ॥४॥ गागर मारे कांकरीरी एडो छिवावे लात ॥ मारग में ठाडो रहे मोहि टोके आवतजात ॥५॥ केहू मिस हा हा करेरी लंगर मोहि निहार ॥ ओढन के मिस ओढनी पीतांबर मोपेंवार ॥६॥ मोत न लगलागे नहींरी वाको मन

ललचाय ।। तब हंसमेरी छांह सों नेंक छाहे चलत छुवाय ।।७।। अब लग कछु सकुचत रत्योरी प्रगट करत अनुराग ।। अब कहो केसें छूटहूं जब सिर पर आयो फाग ।।८।। घर घर व्रज चाचरमचीरी विवश भये नरनारि ।। मंत्र फाग दृती दियो दोऊ उमग चले डरडारि ।।९।। जब लगमन मिलयो नहीं री नच्यो चोंपको नांच ।। सिरोमणि प्रभु दोऊ मिले ताते करत मनोरथ सांच ।।१०।।

३ राग सोरठ मेरे नंदनंदन पाछे परचो हेली क्यों बचूं ।। सो सिखदे मेरी हि तू सयानी वाके रंगनरचूं ।।१।। कबहुक कर में डफ गहेरी उठे दोहरा गाय ।। कबहुक देख नयन ललचावे सेनन हा हा खाय ।।२।। मेरे लिये वगर मेंरी आनि करे पहचान ।। वारवार के आवने सखी हों जु गई जियजान ।।३।। नाम ओरको ले सखीरी टेरे मोहि सुनाय ।। हों समझत जो वह कहे सखी क्यों हीं रहे बताय ।।४।। मोहि देख धुक पुक करेरी गहेरे लेत उसास ।। हों जिय डरपों आपने सखी सास ननद को त्रास ।।५।। ढिंग व्हे यों कहिजातह सखी आवन देधों फाग ।। तब कछूवे चलि हे नहीं नरनारिन अनुराग ।।६।। ज्यों ज्यों होत जनाजनोंरी त्योंत्यों वाढे प्रेम ।। वारवार के तामने सखी ज्योंनिपटत हें हेम ।।७।। नयनन नयन नहीं बनीरी बनतबनी कछु आन ।। हों समझों जिय आपने उत जगन्नाथसुग्यान ।।८।।

४ राग सोरठ हों कैसें यमुना जल जाऊंरी हरी मोतन हेरे ।। मेरे संग की जानदे तब मेरो ही मग घेरे ।।१।। नीचो व्हे घूंघट तके मेरे सन्मुख दर पन लाय ।। मुख प्रतिबिंब निरख कें छिन छिन लेत बलायरी ।।२।। डगर बुहारे कांकरीरी डारे दूर उठाय ।। मधुर वन मोंसो यों कहे चरणन जिन चुभजाय ।।३।। जबही हों गागर भरोंरी तबही पेठ अन्हाय ।। तूं जिन परसें सीतमें कही मोहीपें जु भराय ।।४।। हँसकर कलश उचा वहीरी मिसकर पकरे बांह ।। क्यों हूं हटक्यो नारहे मेरी छलकर पकरे छांह ।।५।। यद्यपि सकल व्रज सुंदरि री सब सों खेले फाग ।। मन वच क्रम व्रजईश के नित मोहीसों अनुराग ।।६।।

५ राग सोरठ मेरौं चित लीयो चितचोर, पनघट हौं जु गई

री ॥ गुपत-प्रीति प्रगट कीनीं मेरे सनमुख आयौ दौर ॥१॥ परे अचानक दृष्टि मेरे सुंदर नंदकिसोर ॥ बदन चंद निरखति रहौं मेरे लोचन चारु चकोर ॥२॥ हँसि-हँसि लालन कहति री अब तेरों जोबन जोर ॥ एहो गैलनि बचि-बचि गई करि कर मोहनि दोर ॥३॥ चंचल अंचल गहि रहो री बोलति ओर की ओर ॥ लै जु चले सघन-बन मोही बईयाँ मचकि मरोर ॥४॥ घाइल करि मोहील करी इन चपल नैन की कोर ॥ लाज काज गहि जु लिऔ रैनि बसति बसे नहिं जानौं जोर ॥५॥ रस बरखायौ री अति बातैं आनंद सिंधु झकोर ॥ रौम रौम में रम रह्यौं री 'रसिक' प्रीतम सिरमोर ॥६॥

६ राग सोरठ ललनाँ लाल तुम सँग खेलौंगी ॥ लै गुलाल मुख माँडौं तिहारो पिचकाईन रँग पेलौंगी ॥१॥ तुम मेरे मुख सौंधों लाओ अंजन दे दृग लैहौंगी ॥ क्यौं सकुचति हो फाग के अवसर सुख लै सुख तुम दैहौंगी ॥२॥ बहुत दिनन की आसा पूरन भई फगुवा मन भायो लैहौंगी ॥ वल्लभ पिय सौं मिलि रस विलसौं अधर पान ते विरह विथा सब पेलौंगी ॥३॥

धमार के पद - राग गौड मल्हार

१ राग गौड मल्हार अब मुख-मुख माडोंगी गहि पाये हो मोहन ॥ लिये गुलाल फिरत हों कबकी तकन बनी कछु गोहन ॥१॥ काजर देहुं बनाय लालकें यों लागे गोसोहन ॥ अब अपनो मन भायो करहों कहा नचावत भ्रोंहन ॥२॥ सुधकीजे पहली बातनकों लगे ठगे से जोहन ॥ उदय राज प्रभु या अवसर हों नेंकनकरों बिछोहन ॥३॥

२ राग गौड मल्हार कान्हर खेलिये हो बाढ्यो श्रीगोकुल में अनुराग ॥ जानों नहीं बहोरि कब एहें परम भावतो फाग ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ सहनाई ओर ढोल ॥ तुमहुं खेलो सखा संगले करो आपनी छोल ॥२॥ उतते सबे सखी जुरआईं प्रबल मदन के जोर ॥ खेल मच्यो नंदजू की पौरी श्रीराधा नंदकिशोर ॥३॥ तब वृषभान नंदिनी आई लीनी

सखी बुलाय ॥ ऐसो मतो करो मेरी सजनी मोहन पकरो जाय ॥४॥ मुरली लेहु स्याम के करतें मृगमद वदन लगाय ॥ हलधर की पिचकाई छीनो काजर देहु बनाय ॥५॥ चोवा चंदन मृगमद केसर झोरिन भरो अबीर ॥ सखा बहुत युवतिन परधाये आगें दे बलबीर ॥६॥ लिये अरगजा छिरकत डोलत व्रज युवतिन के चीर ॥ हलधर की पिचकाई छूटें कोऊन धारे धीर ॥७॥ व्रज वीथन में खेलत डोलें सखा बने संग लाल ॥ गोपी ग्वाल परम कौतुहल गावत गीत रसाल ॥८॥ खेलत-खेलत आनंद बढ्यो रीझे मदनगोपाल ॥ नंददास संग लागी डोलत छबि निरखत व्रजबाल ॥९॥

३ राग गौड मल्हार मोहन मो गोहन छांडीये मेरी सास ननद सतराय ॥ जाय निडर निधरक होयकें ताहीसों खेलो जाय ॥१॥ जब निकसों जल भरन कोंरी लख मेरा ये वाट ॥ पलक ढील लागे नहीं तुम ठठक राह के ठाट ॥२॥ तुम प्रवीन नंद लाडिले हम आधीन पर हाथ ॥ बंधे नगर में बांधनू हरि नेक चलत तुम साथ ॥३॥ कोन कहां व्हे निकसहीं कोन कहे हँसबात ॥ यह अचरज देख्यो नहीं घरे दिनरेन विहात ॥४॥ यह अवसर है फागको मोहि उपज्यो चितचाव ॥ कहा करूं गुरुजन डरूं मेरो पाथर चांप्यो पाव ॥५॥ कबहूतो मिल खेलवो तुमहि कुशल यह वास ॥ उदेराज प्रभु बलगई जियराजि न होऊ उदास ॥६॥

४ राग गौड मल्हार एक ग्वालिनी आवें रंग भरी श्रीगोवर्धन की गेल ॥ ऐसी बनी रहत अति रीझसों वह रिझवत मोहन छेल ॥१॥ शशि वदनी चंपकतनी ओर कजरारे दृगजोर ॥ मुखते स्याम ही स्याम ही वह चितवत भ्रोंहमरोर ॥२॥ छूटी अलकावलि लटें चटकीली केसर आड ॥ सुख भीनी मुख हँसत में अरुलसत चिबुक की गाड ॥३॥ कजरोटीगजरा हरा ओर खयनवरा अति गोल ॥ तनक तरो निकान में अरु झलकत चारु कपोल ॥४॥ उर उरोज के भारसों वाको तन कलंक लचकाय ॥ रंग भर जोबन जग मगे वह चलत लंकलहराय ॥५॥ तन सुख की सारीलसे अंगिया अंगअनूप ॥ घूमत सोलहें गाल सें वाकी लावन लाग्यो रूप ॥६॥ जानबूझकें सांवरो वह यह मग बैठे आन ॥ हम जानी छानी

नहीं वह काहूकी पहचान ॥७॥ यह सुख सुख भीजेनको और निरख जिवावे जीय ॥ यह वनयों विलसोहँसोबसो अनूप के हीय ॥८॥

५ राग गौड मल्हार एगरजत धाय धाय रसबूंदन झरसों पिचकाइन छूटे सनन सनन ॥ डफ मृदंग वाजे अतिही सरससुर विविध भांत ताने तनन तनन ॥१॥ अबीर गुलाल उडाय बहुत रंग तक आजें कमल अंजन दोऊ नयन ॥ वल्लभ पिय संग खेलत डोलत व्रजकी नारी दामिनिसी चमकत पगनूपुर घन झनन झनन ॥२॥

धमार के पद - राग गौरी

१ राग गौरी परिवा प्रथम कुंवर कों देखन चली व्रजनारि ॥ अंग अंग छबि निरखत लीयो लाल मनुहारि ॥१॥ दूज दाम कुसुमन की पहरे श्रीगोपीनाथ ॥ रचिपच गूंथ संवारीं श्रीराधाजू अपने हाथ ॥२॥ तीज तरुनी तनतरलित उरगज मोतिन हार ॥ कुचपर कचल रविलुलित प्रिय संग करत विहार ॥३॥ चौथ चतुर दिशचंदन चरचित सावल अंग ॥ विविध भांत रुचि पहरें नाना वसन मुरंग ॥४॥ पांचे प्रमदा प्रमुदित सब मिलगावें गीत ॥ हावभाव कर रिझवत रसिक श्रीदामा मीत ॥५॥ छठकों छेल छबीलो छिरकत छींट अनूप ॥ शोभा वरनी न जाय जय जय गोकुल के भूप ॥६॥ सातें सकल सखा सब घर घर देतवगार ॥ सुनत कुंवर कोलाहल निकसी घोख कुमार ॥७॥ आठें अति आतुर अबलन लीनें पियघेर ॥ मुरली पीत पट झटकत हंसत वदन तनहेर ॥८॥ नोमी नवल नागरी कुंकुम जल सों घोर ॥ पिय पिचकाइन छिरकत तक तक नवल किशोर ॥९॥ दसमी दसोंदिस देखियत अति प्रफुलित वनराज ॥ मदन वसंत मिल खेलें अलिपिक से नासाज ॥१०॥ एकादसि एक ओर राधा संग सब नारी ॥ उतकी ओर बल मोहन बालक यूथ मझारी ॥११॥ द्वादशी दुहुंदिस मच्यो खेल राय दरबार ॥ भेरि दमामाधोंसा कोऊ काहू न संभार ॥१२॥ तेरस तरुणी गणपर वरखत सुरंग अबीर ॥ ये इततें वे उततें भई परस्पर भीर ॥१३॥ चौदस चहुं दिशातें बरखत परिमल मोद ॥ गणत न काहू जगमें व्रजजन मनसि

प्रमोद ॥१४॥ पून्यो परिपूरण शशि आनंदे सबलोग ॥ घोष राय व्रज छायो करत सकल सुख भोग ॥१५॥ यह विध होरी खेलत वरखत सकल आनंद ॥ गोबिंद बल बलबल जाय जय गोकुल के चंद ॥१६॥

२ राग गौरी परिवा प्रथमाहिं होरीखेलन निकसे श्यामा श्याम ॥ फाल्गुनमास सुहावनो नृपतिभयो तहांकाम ॥१॥ द्विजदुहुंदिसिगावत अलि पिक कोकिल कीर ॥ नवबसंत द्रुमफूले मलयजु मंदसमीर ॥२॥ तीज तरूनी तन कंचुकी सोभित मोतिंनहार ॥ सेंदुर मांग संवारी नवसत साज सिंगार ॥३॥ चोथचतुर चली गावत झूमक नंदजुके द्वार ॥ सुनि कामिनी कोलाहल निंकसे हलधर ग्वार ॥४॥ पांचेपंच सबद अति बाजत बाजे अपार ॥ इतकी ओर व्रज सुंदरी उत श्रीनंदकुमार ॥५॥ छटकों छेंल छबिलो निकस्यो खेलनफाग ॥ मोहन वेन वजावे गावे गौरी राग ॥६॥ साते चंदन वंदन केसरि घसी बनाय ॥ कृष्णागर कस्तूरी केसु कलस भराय ॥७॥ आठें कंचन पिचकारी भरि भरि लिने हाथ ॥ तकि तकि नवल किसोरी छिरकी कुंवर व्रजनाथ ॥८॥ नवमी नबल राधिका अरगजा दीयो डार ॥ हो हो बोलत डौलत नांचत दै करतारि ॥९॥ दसमी दसों दिसतें अबलन पिय लीनें घेरि ॥ नैनआंजि मुख मांडति हंसत वदन तनहेरि ॥१०॥ एकादशी एक सखी डार्यो सुरंग गुलाल ॥ एकजु मुख चुंबन करे एक गहे बनमाल ॥११॥ द्वादशी फगुवा मांगति हंसि हंसि गारी देहि ॥ एकजु मुरली लै रही एक कहे फिर लेहि ॥१२॥ तेरस तरूणी जनमिल सुगह गहें बलवीर ॥ कुमकुम मुख लपटायो छिरकत नवल अबीर ॥१३॥ चौदस चहूं दिसते लिने गांठ वजोरी ॥ मदनमोहन नव दूल्हे दुलहनी राधागोरी ॥१४॥ पूरण ससि पून्योनिस होरी हरखि लगाय ॥ परवा बसनजु साजे चले जमुना जल न्हाय ॥१५॥ यह बिधि होरी खेलहीं व्रजजन संग लगाय ॥ सूरदास बलिजाय गिरि गोवरधनराय ॥१६॥

३ राग गौरी अरी चल नवलकिशोरी गोरी भोरी होरी खेलन जाय ॥ अरी एसी नवयामिनी देखें भामिनी तोहि क्यों भवन सुहाय ॥१॥ जहां व्रजवर नर नारिन के यूथ जुरेहें आय ॥ श्रीनंदनंदन पुनि आए रंगीले

रसिक मणिराय ॥२॥ आली तिनमें तुमहि देखी तव रहि गये नयना नाय ॥ तब इत उत तक मोहन पिय मोतन तक अरगाय ॥३॥ तव नयनन हींमें कह्यो कहां में कह्यो ग्रीव दुराय ॥ अब रंगीले कुंवर तोहि पैयां सेनन दई हों पठाय ॥४॥ तू न कर गहर नागरित्रिय आन भलो वन्यों दाय ॥ यह सुन नबल नवेली सहचरी मुसकी नयन दुराय ॥५॥ इतनेइ परम निपुण सखी जिन प्यारी भुज भरलई उठाय ॥ गहि नवकंचुकी सोंधेंबोरी बीरी दई बनाय ॥६॥ पुनि पट पीत पटोरन पोंछकें आगें धरि समुहाय ॥ चली नवसत सज स्वामिनी कामिनी सखीके अंसभुज लाय ॥७॥ जानों कनक धातु परवत पर तडित लता चमकाय ॥ नवगुण नवल रूप नवयौवन नवल नेह हुलसाय ॥८॥ झूमक सारी प्यारी पहरे चलत ललित लरकाय ॥ जानो नवरूपजोति जगमगसी पवन लगे झुकराय ॥९॥ कमल फिरावत करवर बाला माला उर सिरुराय ॥ ललितादिक सखियन में सुंदर शोभित हे यह भाय ॥१०॥ जानों नव कुमुदिन के मंडल में इंदु पग न चल्यो जाय ॥ कबहु वदन दुराय उघारत पुन हंस लेत दुराय ॥११॥ मंजुल मुकुर मरीचिन सी मानों छिन छिन छबि अधिकाय ॥ पुनि एक लट जो छबीली की छबिसों वेसर ही अरुझाय ॥१२॥ जानों प्रीतम मनमीन की वडसी भख मुक्ता लटकाय ॥ ओर एसें नवमत्त गयंदन मलकत बांह दुराय ॥१३॥ शोभित श्रवणन स्वेदसुदित के मानो पटचुचाय ॥ चंचल अंचल छोर बिराजत नेंक चलत जब धाय ॥१४॥ नीवी बंधन फंदवा घंटा किंकिणी घन घहराय ॥ नूपुर ऊपर चूरारूरा जनुशृंखल झनकाय ॥१५॥ सखियन केकर कुसुम छरिनतें अगड बने चहुंधाय ॥ मदन महावत को बल नाहीं अंकुश देत डराय ॥१६॥ सखियन में हि तू विशेष विसाखा जानो तनकी परछांय ॥ सो नंदनंदन नेरे जानकें सहज उठी कछु गाय ॥१७॥ सबहिन जान्यों श्रीराधा जू आईं भये चौगुने चाय ॥ जेहुती नवलकिशोरी की साथिन ते दोरी समुहाय ॥१८॥ तिन संग मोहन धाये आये जानों रंक महानिधि पाय ॥ प्रथमही लाल जुहार कियो मृदु मुरली मांझ बजाय ॥१९॥ इतते कुटिल कटाक्षन पिय तन चितई मृदु मुसिकाय ॥ चाचर देन लगी व्रजवीथन रंगीलो रंग उपजाय ॥२०॥ गावन लागी ग्वालिनि गारी सुंदर ललहीं लगाय ॥ राधाजू

गारिंन सुनसुन हसहस हरितन हेर लजाय ॥२१॥ ललन अबीर भरत गोरी ग्वालिनि प्राण पियाहि बचाय ॥ सोसुख पिय नयना पहचानें मो मनमें न समाय ॥२२॥ ओर जो प्रेम विवश रस को सुख कहत कह्यो नहि जाय ॥ यह सुख कहिवे कों सरस्वती की कोटिक सुमतिह राय ॥२३॥ शेष महेश सुरेश न जाने अज अज हु पछिताय ॥ यह सुख रमा तनक नहीं पायो यद्यपि पलोटत पाय ॥२४॥ श्रीवृषभान सुता पद अंबुज जिनके सदा सहाय ॥ यह रस मगन रहत जेतिन पर नंददास बलजाय ॥२५॥

४ राग गौरी एचल जाए जहां हरि खेलत गोपिन संगा ॥ आनक बहुबाजे ताल मुरज मुख चंगा ॥ गावत सुन भावत मंद मधुर स्वरबानी ॥ जानों हरख परस्पर मानो मदन गति ठानी ॥ एचल जाय जहां क्रीडत नंदनंदन झांझ प्रणव डफ भारी ॥ बीन मृदंग उपंग चंगबहु देत परस्पर गारी ॥१॥ करपिचक विकचमुख कटिपट भेष बनायो ॥ जानों गुदरदेनगुण बनबसंत व्रज आयो ॥ हाटक मणि गण खचित विविध कर जेरी साजें ॥ रुंजमुरज सहनाई ढोल ढोलक छबि छाजें ॥ आवज अति आतुरबजे गावत व्रज जनफाग ॥ तान तरंगन बाहुज बांध्यो छाय रह्यो अनुराग ॥२॥ ध्वनि सुनत पियारी कुंकुम मंजन कीनों ॥ बहुरंग वसन तन यावक चरणनदीनों ॥ कबरीकर जुसंवार निरख उपमा कों हारी ॥ मानो हाट कलतारही खगपन्नग नारी ॥ श्रवण तार उरहार छबि उर मुक्ता सजल सुढार ॥ जनुयुग गिरिविच देखिये छवि धसी सुरसरी धार ॥३॥ रचतिलक भालपर मृगदरेख संवारी ॥ जानों युगल जीभधर पन्नग पीवत सुधारी ॥ खंजन मीन आधीन देख दृग सारंग लाजे ॥ वदन चंदभुवचांप स्वांति सुतनासाराजें उपमा कों अवलोक कें छबि या समान नहि ओर ॥ मानों कीर उडुगण गहें चुगत नहीं सुनबोर ॥४॥ अति अरुण अधर छबि अरु दशन न द्युति पाई ॥ जनु विज्वल वीजकी विद्रुमवार बनाई ॥ कंठ कपोतल जात करण अंगद जग मगयो ॥ मानों जरद मृणाल शरद शशि बालक लजयो ॥ पोंहोंचन अति पोंहोंची सघन सुंदर स्याम सुपास ॥ मानो कंजके कंठलागकें भृंगरहे मधुआस ॥५॥ बनचली सकलत्रिय पगनूपुर स्वर भारी ॥ जानों विविध केलिकल हंस करत किलकारी ॥ साख जवाद सुगंध कुंकुमा केसर घोरी ॥ भार लजनभेचली

सकल त्रिय गावत होरी ॥ नखशिखते अवलोक छबि नागर रीझे गान ॥ मानो संगीत शाला पढी घट बढ परतन तान ॥६॥ छबि सिंधुललन तन देखत लोचन भूले ॥ चितवत चित चोरत अंगअंग अनुकूले ॥ वरण वरण सिरपाग श्रवण कुंडल मणिमय अति ॥ मनहूं स्याम नग शिखर तरणि युग रमत तरल गति ॥ उरवन माल विशाल अति विविध सुमन बहुवेष ॥ मानो जलद में प्रगट देखियत शतमख सारंगरेख ॥७॥ रचतिलकमलयका पियकर खोंरबनाई ॥ मानो युगल अहिन शशि घन परदई दिखाई ॥ घनतन देख लजात कंजदृग क्यों समपावें ॥ मुख छबि स्याम सुजान देख अहिवपु हिल जावें ॥ नख सिखतें अवलोक कें छबि कटिपट पीत सुदेश ॥ मानो जलद धुर्वा सखीरी दामिनि रही प्रवेश ॥८॥ छवि सिंधु मोहन तन लघु मति वरणी न जाई ॥ चितवत चित चोरत मन्मथ रह्यो लजाई ॥ त्रियन परस्पर हरख विविध कर डांगन राजें ॥ गोप उठे किलकार दुहूं दिशते बाजत बाजें ॥ एकन करकुंकुमलियो एकन घोर गुलाल ॥ चली सकल व्रज सुंदरी पकरन मदन गोपाल ॥९॥ सेनन स्यामाजू हलधर दिये हें बताय ॥ गहिनील वसन तनदोऊ बंद दिये छटकाय ॥ सब मिल पकरे स्याम मुरलि का लई छिनाई ॥ तबहि तरुणी मुसिकाय साखभर भाजन लाई ॥ छांटत छिरकत हसत परस्पर प्रेम छके नंदनंद ॥ मानो अवनि पर मेघकों घेर रहे बहुचंद ॥१०॥ निरखत विथकित भये जहां तहां अमर विमान ॥ बरखत सुर कुसुमन ओर बजाये निसान ॥ रह्यो परस्पर रंग सकल त्रिय भवन न आई ॥ तबहिं तिनें व्रजराज विविध पटदई मिठाई ॥ बहुरि तरणि तनया सलिल मंजन कर बलबीर ॥ पहर वसन आये घरें संग सकल आभीर ॥११॥ दुतिया मोहन तन राजत सुंदर पीत सुवास ॥ बैठे कनक सिंघासन बल बल राघोदास ॥१२॥

५ राग गौरी मारग छांड अबदेहु कमलनयन मन मोहना ॥ कटिपट पीरु सुहावना ओर उपरेना लाल ॥ सीसमोर की चंद्रिका चंचल नयन विशाल ॥१॥ कुंचित केश छबि बनी सुंदर चारुकपोल ॥ श्रुतिमंडल कंचनमणी झलकत कुंडललोल ॥२॥ मोहन भेष भलो बन्यों मृगमद तिलक सुभाल ॥ अलक मधुप समराजही ओर मुक्तावलि माल ॥३॥ कुंजमहलते होंचली अपने गहेकों जात ॥ वन में सोरन कीजिये सुन्दर सामल गात ॥४॥

उर अंचल कित गहत हो दूर भये कहो बात ।। अपने जिय ही विचारिये जो परे कुहू की रात ।।५।। सांज परीदिन आंथयो अरुझाई किहिंकाम ।। सेंत मेंत क्यों पाइये पाके मीठे आम ।।६।। नंदराय के लाडिले बोलत मीठे बोल ।। रहिहो के जाय पुकारिहो ना कंचुकी बंद खोल ।।७।। परमानंद प्रभु यों रमी ज्यों दंपति रति हेत ।। सुरत समागम रस रह्यो नदी यमुना के रेत ।।८।।

६ राग गौरी कमल नयन के कौतुक सुनों सहेली आय ।। आज हमारे आये नख सिख भेष बनाय ।।१।। बैठे आय अचानक जहां सोवत अधरात ।। अंगूठा मोर जगाई चोंक परी सबगात ।।२।। तमक उठीजो उनींदी भावर भोरें जान ।। चुपचुप कर निरवारत सुन सीतल भयेकान ।।३।। उतरन आवे रही सखी दांत अंगुरिया चांप ।। तनमन सकुच संकानी गुरुजन लाजनकांप ।।४।। बीरी बरही देतमुख हसत सुरंजित गात ।। प्रेम उमग दोऊ जन फूल्ये आनंद उर न समात ।।५।। कंचुकी कसन करष उर कुचन खरदान ।। आलिंगन परिरंभन करत अधर रसपान ।।६।। लेत उठाय अंकभर राखत कंठ लगाय ।। मगन भई रस सागर कहत कही नहिंजाय ।।७।। मोहनदास स्यामघन सुंदर प्रेमपसाय ।। छिनछिन ग्वाल विचारत भवन काज वह्यो जाय ।।८।।

७ राग गौरी गोकुल सकल ग्वालिनी सब मिल खेलें फाग ।। तिनमें श्रीराधा लाडिली जाको परम सुहाग ।।१।। झुंडन मिल गावत चली झूमक नंद के द्वार ।। आज परव मिल खेलें हम तुम नंद कुमार ।।२।। रसिक कुंवर सुंदरवर राधा जीवन प्रान ।। मोहन वदन दिखावहो दुरोतो नंदकी आन ।।३।। प्रगट प्रीति गोकुल भई अब कहा करो दुराव ।। हमनदरसबिन जीवें कोऊ करो चवाव ।।४।। जसोदा के सुतचित चुभिरही यह तुह्मारि मुसक्यान ।। अबन अनत रुचि उपजे सहज परियहबान ।।५।। दुरत लाल भलें पाये राधा भर अंकबार ।। कनक कुंडी केसर भरी लेदोरी व्रजनार ।।६।। भरो भरो सखी स्याम की पीत पिछोरी पाग ।। देहगेह सुधि भूली नंदनंदन अनुराग ।।७।। चोवा साख कुंकुमा गोरा मदे जवाद ।। हस हस हरि पर

डारत ओर नाना फुलवाद ॥८॥ छूटे केस कंचुकी बंदटूटी मोतिन माल ॥ करतल ताल बजावें गावें गीत रसाल ॥९॥ गगन विमान न छायो सुरनर कौतुक भूल ॥ जय जय शब्द उचारें आनंद वरखें फूल ॥१०॥ लाल गोपाल कृपाविन यह रस लहेन कोय ॥ हरि वृषभान किशोरी की कथा मगन मन होय ॥११॥

८ राग गौरी हो हो हो हो होरी बोलें ॥ नंदकुंवर व्रज वीथन डोलें ॥१॥ नवल रंगीलो सखा संगलीनें ॥ राजत अंगअंग रंगभीनें ॥२॥ रंगीली भांत रंगीलो जहां ॥ चोवा चंदन कीचमची तहां ॥३॥ ताल मृदंग मुरज डफ वाजे ॥ ढोल ढमक नवघन ज्योंगाजे ॥४॥ सुन व्रजवधू आनंद अतिवाढी ॥ निकस निकस सब खोरन ठाडी ॥५॥ अंजुली अबीर छूटत छबि पावें ॥ पंकज मनो पराग उडावें ॥६॥ पिचकारिन रंग छूटत भारी ॥ उड्यो गुलाल रंगे अटा अटारी ॥७॥ जबलग लाल भरत पिचकारी ॥ तबलग भामिनि भाजत भारी ॥८॥ जो कोऊ नवल बधू ॥ भरभागे ॥ मोहन ताके गोहन लागे ॥९॥ तिनहिं धायकें भरत छबीलो ॥ जाहि भरे तहां रंग रंगीलो ॥१०॥ जाय परत ललना मंडल जब ॥ घेरलेत करतारीदे तब ॥११॥ अंग भर भुज भर हियें भरलालें ॥ छांटत छबीली मदन गोपालें ॥१२॥ कहत न बनें बढ्यो रंग भारी ॥ नंददास तहां बल बल हारी ॥१३॥

९ राग गौरी हो हो हो हो हो हो होरी ॥ सुंदर स्याम राधिका गोरी ॥१॥ राजत परम मनोहर जोरी ॥ नंदनंदन वृषभान किशोरी ॥२॥ डफ ओर ताल मृदंग बजावत ॥ गोरी राग सरस सुरगावत ॥३॥ नवसत साज सकल व्रजनारी ॥ प्रमुदित देत भामती गारी ॥४॥ झूंडन जुर चहुंदिसतें दौरी ॥ मदन गोपाल गहेभर कोरी ॥५॥ सोंधो बहुत सीसतें नायो ॥ रंगे बसन कीयो मनभायो ॥६॥ नवल अबीर सखा संग लीने ॥ फिरत उडावत फेंटन दीने ॥७॥ नयन आंज रोरी मुखमांडत ॥ प्रेम आलिंगन देदे छांडत ॥८॥ हरि मृदुभुजा कंठ ले लावत ॥ अंतर को अनुराग जनावत ॥९॥ मगन भई तब सुधिन संभारत ॥ प्राणनाथ पर सर्वस्व वारत ॥१०॥ चतुर्भुज प्रभु पिय सब सुख सागर ॥ सुरनर मोहे गिरिधर नागर ॥११॥

१० राग गौरी माईरी रंगीलो मोंहनाकुमर श्रीगिरिधर खेले फाग ॥ध्रु०॥ जिहिंजिहिं मारग तिहिंतिहिं गलीहों निकसत तिहिंतिहिं बार ॥ जिहिंजिहिं मारग तिहिंतिहिं गली मोकों रोकत आय अगवार ॥१॥ पहलें गेंद चलायकें पेठत धाम में धाय ॥ तापाछें हसयों कहे नेंकदे मेरी गेंदबताय ॥२॥ मे गेंदुक करते दियो छिरकत कुंकुमनीर ॥ गहि भुजत बदन सांवरो मांड्यो वदन अबीर ॥३॥ संगसखा सब जोरकें आंगन चाचरमेल ॥ सब न सुनत मोसोंयों कह्यों नेक तू मेरे संग खेल ॥४॥ हों सकुची डरपी जिय मोंहि राखी अंग अगोर ॥ वचन रचन कहि सांवरे मोसों लई सकत रतिजोर ॥५॥ श्रीगिरिवरधारीलाल को मोपें खेलन वरन्यों जाय ॥ तृण तोरें सहचरी सबेहो लघुगोपाल गुनगाय ॥६॥

११ राग गौरी खेलत नंदकिशोर व्रजमें अतिरस बाढ्यो हो हो होरी ॥ गोरी राग अलापत गावत मधुर मुरली कलघोरी ॥१॥ कटिपियरो पट फेंट बनी छबि सीसचंद्रका मोर ॥ मन्मथ मान हरन हँस चितवन चपल नयन की कोर ॥२॥ बालक वृंद स्याम संग शोभित उतसोहत व्रजनारी ॥ विविध सिंगारसजे मिल झुंडन देत भामती गारी ॥३॥ देख समाज मदन मोहन को भई मन उल्लास ॥ तिनमें मुख्य राधिका नागरि सकल सुखन की रास ॥४॥ दुंदुभी झांझ मुरज डफ वाजे मृदंग उपंगन तार ॥ दुहुंदिस माच्यो खेल परस्पर घोषराय दरबार ॥५॥ चोवा साख अरगजा चंदन केसर सुरंग मिलाय ॥ तकतक तरुणी गोपालें छिरकत करन कनिक पिचकाय ॥६॥ उतमन मुदित लियें कर सोंधो सखनसहित बलबीर ॥ युवती कदंबन ऊपर वरषत सुरंग गुलाल अबीर ॥७॥ युवती युथ पेल सन्मुख व्हे मोहन पकरे जाय ॥ काजर नयन आंज प्रीतमके मुरली लई छिनाय ॥८॥ पिय प्यारी की जोट बनाई अंचलसों पटजोर ॥ सेनहिं सेन परस करसों कर हसत सबे मुखमोर ॥९॥ मगन भई तन की सुधविसरी हृदें बढ्यो अनुराग ॥ यह सुख तीन लोक में नाहीं गोपिन को बडभाग ॥१०॥ चीर हार अंगन भीजे की चमची व्रजखोर ॥ मान हुं प्रेम समुद्र अधिक बल उमग चल्यो मितछोर ॥११॥ चतुर्भुजदास विलास फागको कहत न वरन्यों जाय ॥ लीला

ललित देवगण मोहे गिरिगोवर्धनराय ॥१२॥
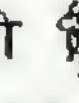
१२ राग गौरी मूरली अधरधरें नंदनंदन हो हो होरी बोलेजू ॥ लिये सखा संग देत कूंक सब व्रज खोरिन मे डोलेंजू ॥१॥ पहरें वसन अनेक वरणतन नीलपीत सितराते ॥ सुरंग गुलाल अबीर फेंटभर फिरत महारसमाते ॥२॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ ओर बांसुरी ध्वनि थोरी ॥ गावत सरस धमार नयो रंग रसिक मंडली जोरी ॥३॥ श्रवण सुनत सब गोकुलनारी घर घरतें उठ दौरी ॥ सजेसमाज सबे मिल आई नंदराय की पौरी ॥४॥ पहरे दिव्य कटाव की चोली नौतन झूमक सारी ॥ मुनियन केसे झुंडन गावत परम भामती गारी ॥५॥ विविध सिंगार बने सबहिन अंग भूषण नानावेशा ॥ मुखहि तंबोल नयन काजर सिरसें दूर मांग सुदेशा ॥६॥ कंठ सरी मखतूल पोति उरगज मोतिन हारा ॥ कर कंकण कटि किंकिणी की छबी ओर नूपुर झनकारा ॥७॥ अलकावली आड मृगमद की वरनिस के को भांती ॥ खुटिलाखुभी रुचिर नकवेसर दूर करत रविकांता ॥८॥ इनमें मुख्य राधिका नागरि सब हिन ऊपर सोहें ॥ कुटिल कटाक्ष फाग के अवसर प्रीतम को मनमोहें ॥९॥ कनक वरण वृषभान किशोरी नवघन नंदकिशोरा ॥ प्यारी चाव चौगुनों चितभयो चितवत पियकी ओरा ॥१०॥ बालक वृंद नक्षत्रन महिया छबि लागत गोविंदा ॥ ग्वालिनि मानो चकोर की सेना हेरत पूरण चंदा ॥१२॥ छूटी तरुणी महामदमाती कुल अंकुश नहीं मानें ॥ सोंधो बहुत गुलाल लेकें नयनन तकतक तानें ॥१२॥ उतबूका वंदन अंजुलीभर सन्मुख ग्वाल उडावत ॥ दुहुंदिश माच्यो खेल परस्पर जिततित भरत भरावत ॥१३॥ नरनारीन के चोंपबढी जिय कमलनमार मचाई ॥ रूपे सुभटरन धीर मानो कोऊ इतउत ओटन जाई ॥१४॥ युवती यूथ पेलि सन्मुख व्हे जिततित सखा भजाये ॥ जाय गह्यो पटपीत स्यामको ॥ जीतके बाजे बजाये ॥१५॥ कोऊ करते मुरली ले भाजी कोऊ मणि मोतिन माला ॥ कोऊ फेंटा गहि कहत हमारो फगुवा देहु गोपाला ॥१६॥ चंद्रावलि चोवा चंदनले सीसस्याम के नावत ॥ ललिता विसाखा नयन आंजमुख रोरी हरद लगावत ॥१७॥ कोऊ प्यारी को अंचल लेकें

पिय के पटसों जोरें ॥ कोऊ कहे करो जुहार लडेंते कोऊ हँसत मुखमोरें ॥१८॥ मगन भई तनकी सुध भूली उर आनंदन समाई ॥ आलिंगन दे श्रीमुख चितवत मानो रंक निधिपाई ॥१९॥ वरन वरन भये वसन भीजरंग कीच धरणि पर बाढी ॥ टूटे हार छूटी अलकावलि फटी कंचुकी गाढी ॥२०॥ सन्मुख जीत चलीं व्रजयुवती गईं यमुना के कूलन ॥ लीला ललित निहार देवगण वरखन लागे फूलन ॥२१॥ इहिं बिध फाग संग मिल खेलें उत गोविंद इतगोरी ॥ चत्रभुजदास रहो व्रज अविचल राधा गिरिधर जोरी ॥२२॥

१३ राग गौरी ललना खेलत फाग बन्यों व्रज सखा लिये नंदनंदना वंसीधरें कहत हो होरी ॥ युवती जनमन फंदना ॥१॥ घरघरते सुंदरी चलीं देखन आनंद कंदना ॥ बाजे ताल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सुछंदना ॥२॥ ठांयठांय अगर अवीर लिये कर ठांयठांय बूका वंदना ॥ हाथ न धरें कनक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥३॥ क्रीडा रसवश भये मगनमन मात नमन आनंदना ॥ दास चतुर्भुज प्रभु सब सुख निधि गिरिधर विरह निकंदना ॥४॥

१४ राग गौरी हो हो होरी वेणु मध्य गावे स्याम ॥ नृत्यत युवती समूह संगमिल मधुरतान विश्राम ॥१॥ फूली लता नवल गहेवर वन वरन वरन बहू भांत ॥ किलकत शुकपिक आनंदभरे मनोहर मधुपन पांत ॥२॥ बाजत चंग उपंग मुरली डफ झालर झांझ मृदंग ॥ मदन गोपाल लेत गति सहज लजवत कोटि अनंग ॥३॥ कुंकुम चंदन वंदन अरगजा सुंगध ताई ॥ वीच वीच तक तक तानत हें नयनन की पिचकाई ॥४॥ फाटत चीर रहत द्रुमद्रुम प्रति टूटत मोतिन हार ॥ क्रीडा रसवश भये मगनमन तनकी तजी संभार ॥५॥ दास चतुर्भुज प्रभु चहुंदिश जुरगावें चेतव राग ॥ सुख समूह श्रीगोवर्द्धन तट रच्यो रंगीलो फाग ॥६॥

१५ राग गौरी खेलत मदन मोहन पिय होरी ॥ लरिका संग सकल गोकुलके करत कुलाहल व्रज की खोरी ॥१॥ भवन भवनते निकसि द्वार व्हे अति प्रफुल्लित मन नवलकिशोरी ॥ सोंधो लियें कनक वेलाभर

अरगजा कुंकुम सोंघ सघोरी ॥२॥ एक गुवालि गुलाल लियें कर एकन लई बहुत कर रोरी ॥ एक पलास कुसुम रंग वरखत एक लियें बीरा भर झोरी ॥३॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ विच विच मोहन मुरली ध्वनि थोरी ॥ मधुर वचन हँस कहत परस्पर गोविंद प्रभु लीनों चितचोरी ॥४॥

१६ राग गौरी सबव्रज कुल के राय ॥ लाल मनमोहना निकसे खेलन फाग ॥ लाल मनमोहना ॥धृ०॥ नवल कुंवर खेलनचले ॥ मनमोहना मुदित सखा संग लाय ॥ लाल मनमोहना ॥ स्याम अंग भूषण सजे ॥ विसल वसन पहराय ॥१॥ निकसद्वार ठाडे भये ॥ मुरली मधुर बजाय ॥ श्रवण सुनत सब ब्रजवधू ॥ जहां तहांते चली धाय ॥२॥ विविध भांत बाजेबजे ॥ ताल मृदंग उपंग ॥ रुंज मुरज डफ दुंदुभी ॥ कर कंठताल सुरंग ॥३॥ युवतियूथ मिल धाइयो ॥ भर पिचकाई हाथ ॥ चहुंदिसतें बे छिरक हीं ॥ भरत कुंवर गोपीनाथ ॥४॥ बहुरि सखा सन्मुख भये ॥ आगें दे बलबीर ॥ युवती गणपर वरखहीं कुंकुम सुरंग अबीर ॥५॥ बहोरिसमिट सब सुंदरी ॥ मोहन लीने घेर ॥ एकजु मुरलीले भजी ॥ एक कहें देहु फेर ॥६॥ एक पीत पट गहिरही ॥ फगुवा देहु कुमार ॥ एसे हम नपती जहीं ॥ दे गहने मोती हार ॥७॥ ललिता ललित वचन कहे ॥ तुम सुनो गोकुल के राय ॥ तो हम तुमकों जानदें ॥ प्यारी राधा कों सिरनाय ॥८॥ प्यारी कर काजर लियो ॥ आंजे पियके नयन ॥ अंचलपट सुख दे हंसी मिलवत करदे सेन ॥९॥ आलस अरुण अति रसमसे अंजन खरे विराज ॥ युगल कमल कर मुकुलिता मानें बैठे युगल अलिछाज ॥१०॥ अति रस भरि ब्रज सुंदरी कछू बन अंग संभार ॥ खसत बलय कटि किंकिणी पिय संग करत विहार ॥११॥ कुचपरक चलर लटकहीं लागत परम सुदेश ॥ मानो भुजंगम चुहुंदिसा अमीपीबन राकेश ॥१२॥ यह विध सब मिल खेलहीं गावत गोरी राग ॥ नवल कुंवरपर अति बढ्यो प्रतिछिनु नब अनुराग ॥१३॥ युवती यूथ मिल उलटियो अपने अपने टोल ॥ पियमुख देखे फूलही ॥ प्रमुदित लोचन लोल ॥१४॥ यह विध होरी खेलहीं व्रजजन संग लगाय ॥ घोष नृपति सुत वदनकी गोविंद बलबल जाय ॥१५॥

१७ राग गोरी मनमोहना रस मत पियारे छांड सकल कुल लाज ॥ यश अपयश कोऊ कहो मोहि नाहि काहू सों काज ॥१॥ खिरक दुहावन हों गईं मिले व्रजराज किशोर ॥ गहि बैयां मोहि ले चले आई तहां तें भोर ॥२॥ कुंज महल क्रीडा करी कुसुमन सेज बिछाय ॥ सुरत शिथिल अति दंपति तेरहेहें कंठ लपटाय ॥३॥ विविध कुसुम मालागुही सुंदर करकमल संवार ॥ प्यारी राधा कों दे घालियो पहरे घोष मझार ॥४॥ कुंज महल बनठन चले प्यारी राधा कों दे सेन ॥ चतुराई वरनी नापरे सकल रूप गुणएन ॥५॥ नंदराय के लाडिले धेनु चराबन जाय ॥ प्यारी राधा विन ज्योंना रहे छिन छिन कल्प विहाय ॥६॥ सब गोकुल के लाडिले जसुमति प्राण आधार ॥ राधा के तुम चाडिले जयजय नंदकुमार ॥७॥ मदन मोहन पियबस किये अपने गुनरूप सुहाग ॥ चिते परस्पर दंपती प्रतिछिन नव अनुराग ॥८॥ इत मनमोहन राजही सखा सकल लिये संग ॥ उतते आई व्रज वधु भरत आपने रंग ॥९॥ मोहन पकरे भेदसों दई परस्पर सेन ॥ प्यारी कर काजर लियो आंजे पियके नयन ॥१०॥ यह बिध होरी खेलही ग्याति बंदु संगलाय ॥ गोविंद बलंबदन करे सुनो हो गोकुल के राय ॥११॥

१८ राग गौरी श्रीगोकुलराय कुमार ॥ कमल दल लोचना ॥ ठाडे हें सिंघदुवार ॥ कमल दल लोचना ॥ नखसिख भेस बनाय ॥ सुंदरता अति सार ॥१॥ रसभरे नंदकिशोर ॥ निकसे खेलन फाग ॥ मधुर वेणु करधरे ॥ गावत गोरी राग ॥२॥ आये व्रजके चोहटें ॥ लिये सखा सब संग ॥ नव भूषण नव वसन ॥ शोभित सामल अंग ॥३॥ उपमा कही न जाय ॥ सुंदर मुख आनंद ॥ बालक वृंद नक्षत्र ॥ प्रगटे पुरण चंद ॥४॥ बाजत ताल मृदंग ॥ आवज डफ मुख चंग ॥ मदन भेरि सुरबीन ॥ गिडगिडि झांझ उपंग ॥५॥ श्रवण सुनत चली दौर ॥ गृहगृहते व्रजनारि ॥ तिनमें परम सुदेश ॥ राधा अति सुकुमारि ॥६॥ बने चीर आभरण ॥ सबतन विविध सिंगार ॥ कंकण कटि किंकिणी ॥ उरगज मोतिन हार ॥७॥ नकवेसर ताटंक ॥ कंठसरी अनुभांति ॥ चोकी बनी जराय ॥ दूर करत रविकांति ॥८॥ सेंदुर तिलक तंबोल ॥ खुटिला बने विसेख ॥ शोभित केसर आड ॥

कुंकुम कज्जल रेख ॥९॥ प्रफुल्लित अति आनंद ॥ चितवत हरि मुख ओर ॥ मानो विधु प्रीतम मिले ॥ सादर चारु कोर ॥१०॥ रूप नयन रसभरे ॥ वारंवार निहार ॥ गावें झूमक चेत ॥ बीच सुहाई गार ॥११॥ चोवा चंदन अरगजा ॥ सोंधें सजे अनेक ॥ पिचकाई कर लिये ॥ धाईं एकते एक ॥१२॥ अतिभर बांधे फेंट ॥ सुरंग अबीर गुलाल ॥ दहुंदिश माच्यो खेल ॥ इतगोपी उत्तग्वाल ॥१३॥ नरनारी परी चोंक ॥ छिरकत तकतक जेह ॥ भरत भई अति भीर ॥ मानों वरखत मेह ॥१४॥ वरण वरण भये वसन ॥ अंगन रहे लपटाय ॥ क्रीडा रस वस मगन ॥ आनंद उर न समाय ॥१५॥ व्रज युवतिन मतो मत्यो ॥ मुखन जनावतबेन ॥ पकर लेहु घनस्याम ॥ मिलवत इत उत सेन ॥१६॥ युवती यूथ नबपेल ॥ दीने सखा भजाय ॥ कहत कहामतो करें ॥ अवतो कछू न सुहाय ॥१७॥ कहतन बाचें कछू ॥ वचन गारओर गीत ॥ झुंडन जुर चहुं ओर ॥ जाय गह्यो पटपीत ॥१८॥ नवल कुंवर जानिये ॥ अवजो मुरली लेहु ॥ राधे करहु जुहार ॥ के हमारो फगुवा देहु ॥१९॥ फगुवा देहु न देहु ॥ छांड हु ओर उपाय ॥ हमारो भायो करहु ॥ के छूटो सिरनाय ॥२०॥ प्यारी पियसों कहे ॥ अति मीठे मृदुबोल ॥ काजर आंजे नयन ॥ रोरी हरद कपोल ॥२१॥ मुख मांडें छबि भई ॥ कोटि मदन सिरताज ॥ त्रिभुवन सौभग लियें ॥ मानों व्याहन आयो आज ॥२२॥ क्रीडत अवचल रहो ॥ युगयुग यह व्रजवास ॥ श्रीगिरिधर को यशगान ॥ नितकरहु चतुर्भुजदास ॥२३॥

१९ राग गौरी खेलत हें हरि हो हो होरी ॥ व्रज तरुणी रस सिंधु झकोरी ॥१॥ बाला वयस्य ओर नव तरुणी ॥ जीवन भरी चपल दृग हरणी ॥२॥ नवसत सज गृहगृहते निकसी ॥ मानो कमल कलीसी विकसी ॥३॥ पिकवचनीत न चंपक वरनी ॥ उपमा कों नही मनसिज घरनी ॥४॥ वरण वरण कंचुकी ओर सारी ॥ मानो काम रची फूलवारी ॥५॥ द्वादस आभरण सज कंचन तन ॥ मुख शशि आभूषण तारागण ॥६॥ मानो मनो भवमनते कीनी ॥ ओर त्रिभुवन की शोभा लीनी ॥७॥ देखत दृष्टि छिनन ठहराई ॥ ज्यों जल झलमलात जल झांई ॥८॥ ताल मृदंग उपंग

बजावत ॥ डफ आवज स्वर एक मिलावत ॥९॥ मधु ऋतु कुसुमित बननोनोरी ॥ गावत फाग राग रति गोरी ॥१०॥ आईं सकल नंदजूके द्वारें ॥ अगणित सकल सुगंध संवारें ॥११॥ झूम झूम झूमक सब गावें ॥ नमत भेद दुहुंदिशतें आवें ॥१२॥ रस सागर उमड्यो न संमाई ॥ मानो लहर चहुंदिश धाई ॥१३॥ खोर खिरक गिरि जहां ही पावें ॥ धाय जाय ताही गहि लावें ॥१४॥ कर छांडत अपनो मन भायो ॥ उडत गुलाल सकल नभ छायो ॥१५॥ घरमें ते मनमोहन झांके ॥ दूर भये तब युवतिन ताके ॥१६॥ एक ही वेर सबें जुरधाईं ॥ पौरितोररावर में आईं ॥१७॥ मोहन गहत गहत छुटि भागे ॥ पीतांबर तजत न भये नागे ॥१८॥ दौरि अटा चढि दई हे दिखाई ॥ उतते स्याम घटा जानों आई ॥१९॥ सुंदर स्याम मणि गण तनराजें ॥ गिरागंभीर मेघ ज्यों गाजें ॥२०॥ टेरटेर पीतांबर मांगें ॥ गोपी कहत आय लेहु आगें ॥२१॥ पीताबर राधिका उढायो ॥ हरिजू निरख परम सुख पायो ॥२२॥ पीतांबर तहां शोभा पाई ॥ घन तज दामिनि खेलन आई ॥२३॥ तब ही अरगजा स्याम मंगायो ॥ अपने करवर घोर बनायो ॥२४॥ ऊंचे चढघन जिउंवर खायो ॥ धारा धरजानों उनें आयो ॥२५॥ तब इन जसुमति ठाडी पाई ॥ सोंधे गागर सिरतें नाई ॥२६॥ उतते निरख रोहिणी आई ॥ वीच छांड व्हे महरि बचाई ॥२७॥ आंगन भीर भई अतिभारी ॥ जसुमति देत दिवावत गारी ॥२८॥ गोपिन नंददुरे गहि काढे ॥ कंचन गिरिसे आगे ठाढे ॥२९॥ जानों युवती ऐरा बतलाईं पूजत हस्त गोरी की नाईं ॥३०॥ नंद जसोदा गोरा गोरी ॥ छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥३१॥ पूजपूज वर मांगत मोहन ॥ बिन पाये छांडत नहिं गोहन ॥३२॥ एक कहे मोहन हिं बतावो ॥ तो तुम हम पे छूटन पावो ॥३३॥ एक सिखावत एक बतावत ॥ तारी देदे एक नचावत ॥३४॥ एक गहे कर फगुवा मागे ॥ एक नयन काजर दे भागे ॥३५॥ बसन आभूषण नंद मंगाये दये वसन जेसे जाहि भाये ॥३६॥ देअत सीस सकल व्रजबाला ॥ युगयुग राज करो नंदलाला ॥३७॥ मदन मोहन पिय के गुण गावे सूरदास चरणन रज पावे ॥३८॥

२० राग गौरी ग्वालिन जोबन गर्व गहेली ॥ श्रीराधा के संग

कदंब सहेली ॥१॥ केसर उबट कुंकुमा घोरी ॥ अंग सुगंध चढाय किशोरी ॥२॥ दक्षण चीर छिपेरी लहेंगा ॥ पहरें विविध पटमोल महेंगा ॥३॥ कबरी कुसुम मांग मोतिन भर ॥ केसर आडरची भृकुटी पर ॥४॥ काजर रेख नयन अनियारे ॥ खंजन मीन मधुप मृगहारे ॥५॥ श्रवणन कुंडल रवि शशिजोती ॥ नकवेंसर लटके गजमोती ॥६॥ दशन अनार अधर बिंबमानो ॥ चिबुक मध्या मूंघो मदजानो ॥७॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हारा ॥ जानो युगगिरी विच सुरसुरी धारा ॥८॥ कुचचकवा मानो शशि भ्रम भूले ॥ बैठे बिछुरे दोऊ अनुकूले ॥९॥ कर कंकण चूरो गजदंती ॥ नख मणि माणिक मेटत कांती ॥१०॥ नाभि मदन हिये हाटक वरणी ॥ कटि मृगराज नितंबनि तरुणी ॥११॥ कदली जंघचरण कमल नूपुर ॥ गमन मराल करत धरणी पर ॥१२॥ भूषण अंग सजे सत नौरी ॥ गावत फाग नंदजूकी पौरी ॥१३॥ सुन सुंदर वर बाहिर आये ॥ हलधर ग्वाल गोपाल बुलाये ॥१४॥ खेल मच्यो व्रज के बिच भारी ॥ एक पुरुष एक भई नारी ॥१५॥ चंगमृदंग बांसरी बाजे ॥ पकरत एक एक गहि भाजे ॥१६॥ कुंकुम केसर अरगजा घोरी ॥ हाथन पिचकारी गहें गोरी ॥१७॥ उडत गुलाल अरुण भयो अंबर ॥ कुंकुमकी चमची धरणीपर ॥१८॥ तब राधा मन मतो उपायो ॥ हलधर अपनी भीर बुलायो ॥१९॥ कान लाग स्यामा समझायो ॥ संकरषण गहि स्यामहि लायो ॥२०॥ हरिजू के हाथ गहे चंद्रावलि ॥ कज्जल ले आई संजावलि ॥२१॥ ललिता लोचन आंजन लागी ॥ चंद्रावलि मुरली ले भागी ॥२२॥ भामा लियो पटपीत छुडाई ॥ राधा राखत कृष्ण बडाई ॥२३॥ एक ले लावत हरद कपोलन एकले पोंछत मृदुल पटोलन ॥२४॥ एक कहे मोहन मुख मांडो ॥ एक कहे फगुवा ले छांडो ॥२५॥ एक आलिंगत एक अवलोकति ॥ चुंबनदेत परस्पर दंपति ॥२६॥ मगन भई आपुन न संभारत ॥ लालभुजा अपने उर धारत ॥२७॥ यद्यपि गुरुजन सब कोऊ देखें ॥ तिनकों तरुणी तृणभर लेखें ॥२८॥ कमलनमार मचीकर आडे ॥ ग्वाल टिके पगतोउन छाडे ॥२९॥ स्यामा स्याम सु गह गहि लाये ॥ श्रीदामा तन श्रीहरि चाये ॥३०॥ सगरे सखा छुडावन आये ॥ उन दिये जीत के

ढोल बजाये ॥३१॥ बल कियो वीच ग्वाल समुझाई मोहन मिश्री मोल मंगाई ॥३२॥ फगुवा ले लालन छिटकाये ॥ हँसत गोपाल सखा तहां आये ॥३३॥ तबही स्याम हलधर पकराये ॥ करत तरुणी अपने मनभाये ॥३४॥ नयन आंज कज्जल मुख लावें ॥ हरद कलश हलधर शिरनावें ॥३५॥ बहुत भरे बलराम सबनमहि ॥ धोरा गिरिमानो धातु चली बहि ॥३६॥ न्हान चले यमुना दुहुं टोलन ॥ केलि करत नरनारि कलोलन ॥३७॥ अतिरस बाढ्यो हो हो होरी ॥ सारद कहा वरनें मतिथोरी ॥३८॥ गिरिधर यश कृष्णजन गावे ॥ लीला सिंधु पार नहिं पावे ॥३९॥

२१ राग गौरी गोरी गोरी गुजरिया गोरी सी प्यारी तें मोहे नंदलाल ॥ खेलन में हो हो जु मंत्र पढ डारयो तेंजु गुलाल ॥१॥ तेरी सोंधे सनी अंगिया उरजन पर ओर कटि लहेंगा लाल ॥ उघरजात कबहूंक चलनमें जेहर ढिंग ऐडी लाल ॥२॥ तू सकल त्रियन में यों राजतहें ज्यों मुक्तन में लाल ॥ न्याय चतुर्भुज को प्रभु मोह्यो अधर सुधारस लाल ॥३॥

२२ राग गौरी छेल छबीलो ढोटा सभरयो वाकी चितवनि भ्रोंह मरोर ॥ खेलन मैं बहुछंद फंदकर लेजु गयो चितचोर ॥१॥ अरी वह बन बन आवे वेणु बजावें गावे चटक मटक की गार ॥ हो हो बोले गलियन डोले हँसत सखा किलकार ॥२॥ हों ठाडी अपने द्वारे भोरें थोरोसो घूंघटमार ॥ आंखिन मांझ गुलाल मुठीभर गयो अचानक डार ॥३॥ बाके वडरे नयना मधुरे बेना कह्यो कछुक मुसिकाय ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन गये मेरे हियरे चटक लगाय ॥४॥

२३ राग गौरी खेलत फाग गोवर्धनधारी हो हो होरी बोलत व्रजबालक संगे ॥ आई बन नवल नवल व्रजसुंदरि सुभग संवार सुठ सेंदुर मंगे ॥१॥ बाजत ताल मृंदग अधोटी आवज डफ सुरबीन उपंगे ॥ अधर बिंब कुंजे वेणु मधुर ध्वनि मिलत सप्त स्वरतान तरंगे ॥२॥ उडत अबीर कुंकुमा वंदन विविध भांत रंग मंडित अंगे ॥ कुमनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन नवल रूप छबि कोटि अनंगे ॥३॥

२४ राग गौरी गोकुल गाम सुहावनों सब मिल खेलें फाग ॥ मोहन मुरली बजावें गावें गोरी राग ॥१॥ नरनारी एकत्र व्हे आए नंद दरबार ॥ साजे झालर किन्नरी आवज डफ कठतार॥२॥ चोवा चंदन अरगजा ओर कस्तुरी मिलाय ॥ बालगोबिंद कों छिरकत शोभा वरणी न जाय ॥३॥ वूका वंदन कुंकुमा ग्वालन लिये अनेक युवती यूथ पर डारहीं अपने अपने टेक ॥४॥ सुर कौतुक जो थकित भये थक रहे सूरज चंद ॥ कृष्णदास प्रभु विहरत गिरिधर आनंदकंद ॥५॥

२५ राग गौरी खेलत फाग कहत हो होरी ॥ इत कामिनी समाज बिराजत उत गिरिधर हलधर की जोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ बीच बीच मुरली ध्वनि थोरी ॥ श्रवण सुहाई गारी देतहें ऊंचेतान लेत त्रिय गोरी ॥२॥ कोटि मदनते सुंदर स्यामा देखत मोहि जात मति भोरी ॥ मोहन नंदनंदन रस विथकित क्यों हू दृष्टि जात नहि मोरी ॥३॥ कुंकुम रंग भरभर पिचकारी हरि तन छिरकत नवलकिशोरी ॥ जानों अनुराग उमड सन्मुख व्हे धावत बंसमेंडवर तोरी ॥४॥ कबहुक दसवीसक मिल आवत लेत छुडाय मुरली झकझोरी ॥ जाय श्रीदामा लेले आवत देन कही बहु भांत पटोरी ॥५॥ कनक कलश कुंकुम भरलीने ओर कस्तुरी बहुत घसघोरी ॥ खेलत गोकुल वीच की चमची अधिक सुंगध भई व्रज खोरी ॥६॥ भरकर कमल अबीर उडावत गोविंद निकट जाय चोर चोरी मानहुं प्रचंड वातवश पंकज घनगन शोभित चहुंओरी ॥७॥ ग्वाल बाल सब संग मुदित मन जाय यमुना जल न्हान पहिलोरी ॥ नये वसन आभूषण पहरत ओरन देत पाटंबर कोरी ॥८॥ द्वेज आनंद समेत करत द्विज तिलक फूल फलरोचन रोरी ॥ सूरस्वामी विप्र भाटनकों देत कनक रतननकीबोरी ॥९॥

२६ राग गौरी खेलत फाग कुंवर गिरिधारी ॥ अग्रज अनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब संग अनुसारी ॥१॥ इतनागरी निकस घर घरतें आगे दे वृषभान दुलारी ॥ नवसत सज ब्रजराज द्वारमिल प्रफुल्लित भीर भई अतिभारी ॥२॥ दुंदुभी ढोल पखावज आवज बाजत डफ मुरली

रुचिकारी ॥ हस्त कमल लियेकर उनमद भाजत गोप त्रियन सों हारी ॥३॥ बांह उठाय पढत हो होरी लेले नाम देत प्रभुगारी ॥ इत राधिका निकस मंडलतें सन्मुख पिय डारत पिचकारी ॥४॥ एक गोपी गोपाल पकरकें अपने मेलले गई सारी ॥ आंजत आँख मनावत फगुवा हँसत हँसावत हरि चितहारी ॥५॥ सूरदास आनंद सिंधुमें मगन भये हें सब नरनारी ॥ सुर बिमान कौतुक भूलेहें कोटि मनोज जाय बलिहारी ॥६ ॥

२७ राग गौरी हो हो होरी रंग बढावें नंद पौरि व्रज सुंदरी आवें ॥१॥ केसर के मटुका भर आनी ॥ मृग मदमेलअगरशत सानी ॥२॥ उडत गुलाल भई अंधियारी ॥ उमग पिया उरलागी प्यारी ॥३॥ व्रजकी नारि सबें जुरआई ॥ फगुवा देहों कुवर कन्हाई ॥४॥ रामदास प्रभु की बलिहारी ॥ करो अखिल युगराज विहारी ॥५॥

२८ राग गौरी राधा मोहन खेलत होरी नंदनंदन वृषभान किशोरी सुख सागर जुरे वृंदावन वरण वरण वन संपति मोरी ॥१॥ एकन चोवा चंदन वंदन एकन लेकें केसर घोरी ॥ रत्न खचित पिचकाई छिरकत यों सुखपावे गोरी ॥२॥ छलबल कर पकरे नंदनंदन इनहीं छुडावे ताहि बंदोरी ॥ आंख आंज मुख मांड मनोहर करन कह्यो सोह महि कियोरी ॥३॥ ऋतु वसंत विहरत नंदनंदन भीज्यो पीतांबर पीत पिछोरी ॥ हरिनारायण स्यामदास के प्रभुपें फगुवा लियो युगयुग जीवो राधावर जोरी ॥४॥

२९ राग गौरी होरी खेलन कों चलें ॥ रंग भीने हो ॥ सुंदर मदन गोपाल ॥ लाल रंग भीने हो ॥ आगेंदे बलबीर ॥ करत कुलाहल ग्वाललाल ॥१॥ बाजे बहुविध बाजहीं ॥ जंत्र पखावज ताल रुंज मुरज डफ दुंदुभी ॥ बिचबिच बेणु रसाल ॥२॥ श्रवण सुनत सब व्रजवधू ॥ गृहगृहते उठिधाय ॥ मुख्य श्रीराधा लाडिली ॥ गावत गारि सुहाय ॥३॥ सन्मुख आवें हुलसकें ॥ केसरभर पिचकाई ॥ प्राणपिया कों छिरकही ॥ वदन मोर मुसिकाई ॥४॥ यूवतीयूथ परछिरकही ॥ सुरंग गुलाल अबीर ॥ चोंखपरें सब खेलहीं भरत परस्पर भीर ॥५॥ होहो होरी बोलहीं ॥ नाचे देकर

तारि ॥६॥ तब ललिता चंद्रावली ॥ गहिलीने घनस्याम नयन आंज मुखमांडकें ॥ झटकत गहिबन दाम ॥७॥ ले उठाय भर अंकमें ॥ प्रेम आलिंगन देहि ॥ एक अधर रस घूंटही ॥ एकजु चुंबन देहि ॥८॥ एकजु पान खवावहीं एकजु लेहि उगार ॥ भुजभर राखें पीयकों ॥ हाहा खाहु कुमार ॥९॥ हँसहँस चिबुक उठावहीं दुलरी लीनी खोल ॥ कें बल छूटो आपने ॥ के व्रजराजें बोल ॥१०॥ यों गिरिधर संग खेलहीं ॥ बाढ्यो उर आनंद ॥ हेरें नयन चकोर ज्यों ॥ पियमुख पूरणचंद ॥११॥ मनभायो फगुवा लियो ॥ अंबर मोतिन माल ॥ वारें सर्वस्व वारनें ॥ बलबल दास गोपाल ॥१२॥

३० राग गौरी नवरंग गिरिधर खेलत होरी ॥ बालक वृंद हलधर की जोरी ॥१॥ रवि तनया तट भई इकठोरी ॥ युवती यूथ मध्य राधा गोरी ॥२॥ छिरकत पिचकाईं भरदौरी ॥ केसर सों भर नवलकिशोरी ॥३॥ कटि बूका वंदनकी झोरी ॥ डारत मुठी लाज सब छोरी ॥४॥ अतर फुलेल अरगजा घोरी ॥ कलश भरे बहु चोवा रोरी ॥५॥ मृगमदको गारोजु मच्योरी ॥ देखत वधू मनमोहन ओरी ॥६॥ ताल मुरज बीना धुनि थोरी ॥ पटह झांझ डफ सरसबज्योरी ॥७॥ प्यारी हरि हिलगाई रोरी ॥ व्यापी सब तन प्रति ठगोरी ॥८॥ नयनन करत परस्पर चोरी ॥ देत स्यामकों उरज अकोरी ॥९॥ अंकमाल भरभेट लयोरी ॥ व्रजपति अधर पियूष पियोरी ॥१०॥ गावत गार सरस स्वर भोरी ॥ चाहत सुख ज्यों चंद चकोरी ॥११॥ बोलत होहो व्रजकी खोरी ॥ डोलत कुल मर्यादा तोरी ॥१२॥ भरलाईं हें कनक कमोरी ॥ मदनमोहन सिर ऊपर ढोरी ॥१३॥ सब हँस मधुर करत ठठोरी ॥ देहदशा भूली भई बौरी ॥१४॥ बिरहत अंग अनंग बढ्योरी ॥ यह सुख कापें जात कह्योरी ॥१५॥ श्रीवृषभान कुंवरि बांध्योरी ॥ गोकुलचंद प्रेमकी डोरी ॥१६॥

३१ राग गौरी यह गुजरि जोबन मदमाती खेलत गिरिधर संग ॥ यामें गूढमंत्र मोहनको लोभ्यो ललित त्रिभंग ॥१॥ चंचल चपल कटाक्ष कोर जब चलत चितवत भाय ॥ मुरली ध्वनि बिसराय रहे हरि इकटक दृष्टि लगाय ॥२॥ कमल नालले लटक लटक जब नियरे आवत बाल ॥

चित्र लिखे ज्यों रहत मनोहर ओहोट जात सब ग्वाल ॥३॥ कुंकुम रंगभरी पिचकारी सन्मुख छोडत आय ॥ जाकें लगत बिचार रहत मन ठगके लडुवा खाय ॥४॥ मदन छबीले विफरे डोलें बोलत छूटे वेन ॥ घाइल व्हे जुगिरतरण रतिके ज्यों विन पाये मेन ॥५॥ सुरंग गुलाल उडाय अचानक डारत मुठी अबीर ॥ हाव भावकर मत्त छेलकों विकल होत मनधीर ॥६॥ पांच सखिनसों मिलललकें मिलगावत मीठी गारि ॥ सुन चोंकत चितचतुरको पियडारत सर्वस्व वारि ॥७॥ यह रस मगन सबे व्रजवासी घरघर खेलें फाग ॥ व्रजपति प्राणपिया विलसत ऊर अंतरको अनुराग ॥८॥

३२ राग गौरी गौरी गौरी गुजरिया पाहुंनी नेंक चांचरकी खिलवार ॥ मोहन के संग खेलि राधिका कहीयत बडी रिझवार ॥१॥ सुनत चमक चोकाइल निकसी छेलनकी लगवार ॥ करिणी ज्यों डग धरत हरत मन बन हरणी दृगवार ॥२॥ घुंघट दाबे दशन आपके जनवत अति लजवार ॥ छीन लंक लचकाय मुरकतन अति उरोजभर भार ॥३॥ मेनअटाकी मानोनिश्रेणी बेनी भरी फुलवार ॥ लपक चलन लावण्य उलटन छबि अतरोटा अरवार ॥४॥ बाम कपोल पाणि परसन मिस मुडहेर फेर संवारि ॥ बेसरके मोतीकी फेरनर सिकन मन फंदवारि ॥५॥ चतुरनके चित लेत चोंहोंटिया चार चुरीदंतवार ॥ बांह पसार संकोच सकुचतन आप भरत अंकवार ॥६॥ पुनि ठाडी अचराहि डारें सुंघवत उर खगवार ॥ व्रजपति निरख दिशा विथकित भई डारचो मन्मथ वार ॥७॥

३३ राग गौरी निकसगामके ग्वेंडे ॥ एकत्र भये ॥ सब व्रजवासी लोग ग्वाल एकत्र भये ॥ मध्य बलराम गोपाल ॥ करन फाग को भोग ॥१॥ सीस न फेंटा ऐंठ बांध ॥ दुहुंदिस टोराडार ॥ नवल छैल बानिक बनबन ॥ मनमें मतोविचार ॥२॥ अगणित माट भराय रंगन ॥ सोंधो बहुत मंगाय ॥ सुरंग गुलाल अबीर संग ॥ लीने सकट भराय ॥३॥ नंद गामते जुरसबे ॥ लईं वरसाने की गेल ॥ मन्मथ सेना सज मानो ॥ चले करनकों सेल ॥४॥ धरें अधर मुरली मोहन ॥ गावत गोरी राग ॥ वरसाने के निकट जाय ॥ प्रगटे प्रेम अनुराग ॥५॥ ग्वेंडेंई वासर विते ॥ उदित भये राकेश ॥

मदन महोत्सव करनकों ।। कीनों नगर प्रवेश ।।६ ।। पोंहोंचे जाय समाजसों ।। वृषभान गोप की पोर ।। सुनसुन श्रवणन व्रजवधू ।। आई देखन दोर ।।७।। बगर बगरतें जुरसबें ।। टिके चोहोटें जाय ।। सेना बेनी करतबे ।। लीनों सुबल बुलाय ।।८।। मोहनसों कही जायकें ।। वदो वदनदे कोल ।। जीतेसो कहा पावहीं ।। वेगें बोलो बोल ।।९।। सुन हस मोहन यों कह्यो ।। हम हार अपनपों देहिं ।। उत उडुगण में चंद्रमा ।। हम जीतें तो लेहिं ।।१०।। सुन व्रज नारी मुदित तबे ।। झंडा रोप्यो आय ।। नायक सहित निसंक व्है ।। जीते सो ले जाय ।।११।। तब बाजे बहुविध वजे ।। डिंम डिम ढोल मृदंग ।। वीणा जंत्र पिनाक ताल ।। डफ महुवर मुखचंग ।।१२।। ओरों अगणित वाजही ।। वरण सके कवि कोन ।। कोलाहल सुन व्रजवधू रहीन कोऊ भोन ।।१३।। रत्नजटित पिचकारी ले ।। छिरकत गोपकुमार ।। तमक तमक तरुणी तबे ।। वंसनकीनी मार ।।१४।। नवकुंकुम जल घोरकें ।। युवती यूथमें जाय ।। जे यूथनमें नायका ।। तिनके सिरदये नाय ।।१५।। छूटत जोर जल जंत्रइते ।। लगे त्रियन उरजाय ।। पंचबाण के बाणज्यों ।। लगत उठत अकुलाय ।।१६।। तव युवती सब उमग कोपि ।। देत गुलाल उडाय ।। उतते उडत अबीर सघन ।। गयो घुमड नभछाय ।।१७।। रातकुहूकीयों लगे ।। सघन घटाको लाग ।। कमल वरण बाद्दरनतें ।। मानो वरखत अनुराग ।।१८।। तब ललिता एक छलकियो ।। कुसुम दामलेपानि ।। मोहन कों पहराइकें ।। हलधर पकरे आनि ।।१९।। युवती वृंदमेंलें गई ।। सबकी दृष्टिबचाय ।। श्रीमुख मृगमद मांडकें ।। चोवा अंग लगाय ।।२०।। नयनन काजर आंजके ।। मांगत फगुवा देहु ।। जो तुम देनन पूजई ।। मधुर बचन सुनलेहु ।।२१।। मन भायो फगुवा दयो ।। आये अपने खेत ।। निरख सखा प्रमुदित भये ।। सबे बलैया लेत ।।२२।। चंद्रावलि ललिता तबे ।। चली सबन देसयन ।। रवक रंगीली राधिका ।। गहे कमल दल नयन ।।२३।। निरख सखी प्रमुदित भई ।। सब आलिंगन देहिं ।। सुफलम मनोरथ मानकें ।। अधर सुधारस लेहिं ।।२४।। मृगमद साख जबादमेद ।। एकत्र कर लेआय ।। मोहन मुख लपटायकें ।। पुजवत मनके भाय ।।२५।। हस चंद्रावलि यों कहे ।। सुनो हमारी बात ।। अवजो हमारे वसपरे ।। लेजु चलो एकांत ।।२६।। तब ललिता भुजगहिलई ।।

गई कुंजके द्वार प्यारी पें पोंहोंचायकें ॥ कीनों फिर सिंगार ॥२७॥ स्याम कंचुकी खुभिरही ॥ अरुकटि लहेंगा लाल ॥ तन सुख सारी अतिलसे ॥ आंजे नयन बिशाल ॥२८॥ आभूषण नख सिख सजे ॥ चले मत्त गजचाल ॥ अपने वृंदमें जायमिली ॥ निरखि मोही बाल ॥२९॥ उतकी ओर अचरज भयो ॥ मोहनहूं मिले जाय ॥ दाऊकी छबि निरखकें ॥ ताडर रहे लुकाय ॥३०॥ आपस मांझ विचारमतो ॥ दीनों सुबल पठाय ॥ ललिता बुझी जायकें ॥ मोहन देहु बताय ॥३१॥ सुनत वचन बोली सबे ॥ सुनों सुबल सुबाहु ॥ हार अपनों हरिदयो ॥ हमहीं जीतले जाहु ॥३२॥ जुर आईं सब ग्वालि तबें ॥ लगे करन मनुहार ॥ जीती हो जीती बधू ॥ हम सब मानीहार ॥३३ ॥ झंडाले सब व्रज बधू ॥ फगुवा लियो निवेर ॥ ले बलाय तृण तोरहीं ॥ मोहन मुख तनहेर ॥३४॥ पट आभूषण पलटकें ॥ कीनों फिर सिंगार ॥ ले मुरली कटिपर धरें ॥ आये नंद कुमार ॥३५॥ स्याम समूह तरंगमें ॥ व्रजपुर सकल झकोरि ॥ मांग विदा घरकोंचली ॥ श्रीवृषभान किशोरि ॥३६॥ तब सब गोपकुमार फिरे ॥ आये नंदजू की पौरि ॥ कनकथार मुक्ताभरे ॥ धर दीपावली जोरि ॥३७॥ आय उतार्‍यो आरती ॥ मुदित यशोदा माय ॥ राईलोन उतारकें ॥ छतिया लये लगाय ॥३८॥ श्रीवल्लभ कृपा कटाक्षते ॥ यह अनुभव उरधार ॥ यह रस व्रजजन मगन व्है ॥ गाई सरस धमार ॥३९॥

३४ राग गौरी मारग छांड अब देहु कमल नयन मनमोहना ॥ कटिपट पीत सुहावनों ओर उपरेना लाल ॥ सीस मोरकी चंद्रिका चंचल नयन विशाल ॥१॥ कुंचित केश छबिबनी सुंदर चारु कपोल ॥ श्रुति मंडल कंचन मणी झलकत कुंडल लोल ॥२॥ मोहन भेष भलो बन्यों मृगमदितलक सुभाल ॥ अलक मधुप समराजही ओर मुक्ता वलिमाल ॥३॥ कुंज महल ते हों चली अपने गेह कों जात ॥ वनमें सोर न कीजिये सुंदर सामल गात ॥४॥ उरअंचल कित गहतहो दूरभये कहो बात ॥ अपने जियही विचारिये जोपरेंकुहूकी रात ॥५॥ सांज परी दिनआंथयो अरुझाई किंहिं काम ॥ सेंतमेंतक्यों पाइये पाके मीठे आम ॥६॥ नंदराय के लाडिले बोलत मीठे

बोल ॥ रहि होके जाय पुकारिहो नाकंचुकी बंद खोल ॥७॥ परमानंद प्रभु योंं रमी ज्यों दंपति रतिहेत ॥ सुरत समागम रस रह्यो नदी यमुना केरेत ॥८॥

३५ राग गौरी होरी अब हो हो हो हो होरी ॥ खेलत अति रस रीत प्रगट भई इत हरि उतही राधिका गोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ विच मोहन मुरली ध्वनि थोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर ऊंचे तान लेत त्रियगोरी ॥२॥ मृगमद साख जवाद कुंकुमा घनसार मलयमथ घोरी ॥ भरत रंग राजत सुख सागर शीस उमग बेला भरढोरी ॥३॥ छूट गई लोक लाज कुल सजनी गनतन गुरु गोपिन उतकोरी ॥ रही नमन मरयाद अधिक सुख चोर भोर निकरत हें चोरी ॥४॥ वरनीन जाय वचन रचना रुचि यह छबि झकझोरा झकझोरी ॥ मदन द्वंद कल कुंज विराजत सहचरी सकत गांठ गहिजोरी ॥५॥ उनपटपीत किये रंगराते इन कंचुकी पीत रंगबोरी सूरदास सारदा सरल मतिसो यह नटन देख भई बौरी ॥६॥

३६ राग गौरी हरि संग खेलत सब फाग ॥ यह मिस प्रगट करत गोपीजन अंतर को अनुराग ॥१॥ डफ ओर ताल बांसुरी महुवर बाजत ताल मृदंग ॥ अति आनंद मनोहर बानी गावत उठत तरंग ॥२॥ पहरे सुरंग भात चोली कस काजर दे दोऊ नयन ॥ बनबन निरख निकस ठाडी भई सुन माधो के वेन ॥३॥ ओर गोविंद ग्वाल संग एक ओर व्रजनारी ॥ छांड सकुच सब देत परस्पर अपनी भामती गारी ॥४॥ मिल दस पांच सखी बलकृष्णहीं ले आवत चुचकाई ॥ भर अरगजा अबीर कनक घट देत सीसते नाई ॥५॥ छिरकत साख जवाद कुंकुमा भुरकत वंदनधूर ॥ शोभित हे मानों सांझ समें घन आए हें जलपूर ॥६॥ दसहु दिशा भई परिपूरण सूर सुगंध प्रमोद ॥ सुर विमान कौतूहल भूले देखत कृष्णविनोद ॥७॥

३७ राग गौरी मोहन जान न देहों ॥ लाल तेरी सुख की सोंज सबलेहों ॥ मथ मथ सोंधो धरचो भवन में सो अंगन लपटेहूं ॥ एनिज संगी सखा तिहारे देखो अबे भजेहूं ॥१॥ क्यों क्यों कर फागुना दिन आयो करहूं मनको भायो ॥ छांडो क्यों सुन छेल छबीले सूनी बाखर पायो ॥२॥

यह वागो अनरागोझीनों पाग रुचिर सुखदायक ।। ताहीतें हों कहत रंगीले यह छिरकबे लायक ।।३।। इतउत हेरत कहा लाडिले चलो गेहके महियां ।। सूधे सूधे कह्यौ करोकिन नातर गहिहों वहियां ।।४।। आज सबेरे हों उठबैठी कुचन कंचुकी दरकी ।। ओर केसर घोरन में मेरी फरफर भुजद्वय फरकी ।।५।। सोइ अब आन बनीं है प्यारे आगम अगम जनायो ।। देहुन जान आजानी व्हेहो यह मूरत निधि पायो ।।६।। निपुण नागरी गुणन आगरी पीतांबर गहि लीनो ।। भर अंकवारी कछुन बिचारी भरक द्वार तबदीनों ।।७।। कछूक भेद श्रीदामा हू को नातर कहा बल इनको ।। जित तित फिरत अकेलो व्रजमें मिलनियां गोपिन को ।।८।। भीतर भीतर करत भामतो सुनियत कछू किलकारी ।। चित्र विचित्र झरोखा मोखा चलत निकर पिचकारी ।।९।। अबीर गुलाल घुमडमडह्यपर घुमड रही घुमडाई ।। ऋतु वर्षा वर्षन को बदरी अरुण श्वेत व्हे आई ।।१०।। गोप वृंदमें हलधर ठाडे रोक रहीं निज गोरी ।। उपरतें कृष्णागर भरभर डारत कनक कमोरी ।।११।। वरण वरण भये वसन रंगमगे तब दाऊ अकुलाये ।। तक तब मन जो पाय उपायकें तोक अटा चढआये ।।१२।। सुबल उतर धस गयो दोरके कमलनमार मचाई ।। तिह अवसर सेना बेनी भई घरमें बहुत लुगाई ।।१३।। तब अग्रज हस कहत भैयाहो कहा मतो अब कीजे ।। दिये दरेर चलो यह खिरकी छूडाय स्याम कों लीजे ।।१४।। भरभर पिचका फेंटन बंदन कूद परे सब ग्वाला ।। युवति यूथ में युवति वेषधर राजत हे नंदलाला ।।१५।। वसनगहे तबही करनवला चपला ज्यौ लपटांई ।। पकर लये महाबली कहावत भेदत भेदत आंई ।।१६।। भेख रेख शोभा की सीमा कविपें वरणी न जाई ।। मांड मांड सुख शिथल विथल कर भये एक सम भाई ।।१७।। सब बैठकें वदन सुधारत एक चढ अटा निहारें ।। सयनन में पुनटेरदेत हें अंचल हरि परवारें ।।१८।। फगुवा देन कह्यो मन भायो मेवा बहुत मंगायो ।। आगेंई काज साज रही नींकें, आब लालन छिटकायो ।।१९।। छीत स्वामी तिहिं अवसर को सुखः क्योंहू कहत न आवे ।। देखत बावा नंद उजागर गिरिधर वदन दुरावे ।।२०।।

३८ राग गौरी होरी खेलें गोरी गिरिधर संग हो हो लें रे ।।

ताल डफ बांसुरी उपंग मुख चंग बाजे गावति धमार बोलें रे ॥१॥ इत वृषभान की नंदिनी उत नंदलाल गोप वृंदसंग लिये डोलें रे ॥ लाज न बीच विचार बोलत मोद विनोद कोक बोली ठोली टकटोलें रे ॥२॥ कोजाने को काकी नारी को हे प्रीतम कोहे प्यारी रस बढ्यो अति भारी सो लेरे श्रुति सुखडार काट आरज कुल कोंडारि मिल माधो सो बजाई ढोलें रे ॥३॥

३९ राग गोरी राधा बनी रंग भरी रंग होरी खेलें अपने प्रीतम के संग ॥ एक पहलें ही रगमगी ॥ पुनिभीने रंगरंग ॥१॥ रंग रंग की संग सहचरी ॥ बनी छबीली के साथ ॥ पहरें विविध बसन रंग रंग के ॥ रंग भरे भाजन हाथ ॥२॥ रंग रंग की कर पिचकाई शोभित एक समान मानो में न शिव पें सज्यो ॥ शोभित रूप कमान ॥३॥ काहूपें कुसुमन गूंथी छरी ॥ काहूपें नयेनये नोर काहूपें कुसुम गेंदुक चलें काहूपें न्यू तन मारे ॥४॥ काहू पें अरगजा रंग कोऊ ॥ काहूपें केसर कों रंग ॥ कोऊ गोरा मृगमद लियें ॥ होत भ्रमर जहाँ पंग ॥५॥ तिनमें मुकुट मणि लाडिली ॥ सोहत अति सुकुमार ॥ लटक चलत ज्यों पवनतें ॥ कोमल कचंन डार ॥६॥ पिय कर पिचकाई देखकें ॥ त्रिय नयना छबिसों ढराय ॥ खंजन से मानो उडहि चलेंगे॥ ढरक मीन व्हे जांय ॥७॥ छिरकत पिय जब त्रियनकों ॥ जो मन उपजे आनंद ॥ मानो इंदु सुधाकर सींचत ॥ जों कुमुदिन को वृंद ॥८॥ भीजे बसन तनत न लपटाने ॥ वरणत बरण्यो न जाय ॥ उपमा देनन देत नयन ॥ राखे हाहा खाय ॥९॥ रंग रंगीली राधिका ॥ रंग रंगीलो पीय ॥ यह रंगभीने नित्यबसो ॥ नंददास के हीय ॥१०॥

४० राग गौरी राधा रसिक कुंज विहारी ॥ खेलें फाग सब युवतीजन कहें हो हो होरी ॥१॥ भरत परस्पर काहूको काहून सुध एसें केसें मनहरत मोहन जोरी ॥ करसों करही जोर कर कटिसो कटिहां नारी नृत्यत कान काहू न सुध थोरी ॥२॥ हरिदासके स्वामीस्यामा कुंजबिहारी फिरत न्यारी न्यारी ॥ सब सखियनकी दृष्टि बचावत तमकत तब थोरी ॥३॥

४१ राग गौरी हो हो हो हो होरी बोले ॥ गोरस कोरी मातो डोले ध्रु०॥ व्रज के लरकन संग लियें डोले ॥ घर घर केरीखिरका खोले ॥१॥

जो कोऊ डर पा जाय घर बैठे ॥ कर बरजोरि ताहीके पेठें ॥२॥ आय अचानक अंखियां मीचे ॥ रूपसुधारस नयनन सींचे ॥३॥ गनत नांहि प्रमुदित नरनारी ॥ वचत नाहिं बिनुदीयें गारी ॥४॥ कुंकुम की चमची अतिभारी ॥ उडि गुलाल अटेअटा अटटारी ॥५॥ अलका वलि शिथिल अतिराजत ॥ धावत मत्तगयंद लजावत ॥६॥ ब्रजमें डोलत भूल्यो भूल्यो ॥ भ्रमर उडे मानो अंबुज फूल्यो ॥७॥ युवती जब मोहन गहि आने ॥ कुमुदिन मानो भ्रमर लुभाने ॥८॥ तारी देय घेर जब लीनें ॥ क्यों छूटो बिन फगुवा दीनें ॥९॥ गुंजावलि मुक्तावलि टूटे ॥ पीतांबर गहनें दे छूटे ॥१०॥ सखी सखा मिल खेलें होरी ॥ कहा वरनोंरी मोमति थोरी ॥११॥ निश वासर बाढ्यो सुख सागर ॥ सूरदास प्रभु मोहन नागर ॥१२॥

४२ राग गौरी मानो व्रजते करिणी चली ॥ मदमाती हो ॥ गिरिधर गजपें जाय ग्वाल मदमाती हो ॥ कुल अंकुश मानें नहीं ॥ शृंखल वेद तुराय ॥१॥ अवगाहें यमुना नदी ॥ करत तरुणी जल केलि ॥ छल सों छिरकत स्यामकों ॥ शुंड दंड भुज मेलि ॥२॥ नाग वेलि चरती फिरें ॥ मादिक मध्य कपूर ॥ साख पटा श्रवणन वहे ॥ मंडित माग सिंदूर ॥३॥ कुचकुंभ उर स्थल ऊपरें ॥ मुक्ताहाररूराय ॥ जनुजुगगिरि विच सुरसरी ॥ जुगल प्रवाह वहाय ॥४॥ वृंदावन वीथन फिरें ॥ केस कला एजान अंचल पटवे रखउडें ॥ घूघरू घंट समान ॥५॥ घूमत गल वैयांगहें ॥ लोक लाज त्यज कान ॥ निकसत शंकन मानही ॥ प्राणएक पियजान ॥६॥ सन्मुख धावें हुलसकें ॥ केलिकला हि निधान ॥ मानो महावत पेलिकें ॥ देतसुरत सुखदान ॥७॥ मानोकरीवकरेवनी ॥ घनदामिनि अनुहार ॥ कृष्णसहित क्रीडाकरें ॥ ब्रजपति व्रजकीनार ॥८॥ होरी खेली न जाय मेरे नैनम में पिचकारी दई ॥

४३ राग गौरी मोय गारी दई, होरी खेली न जाय ॥१॥ क्योरे लंगर लंगराई मोसों कीनी, केसर कीच कपोलनदीनी ले गुलाल ठाडो मृदु मुसक्याय ॥२॥ ओचक कुचन कुमकुमा मारे, रंगसुरंग सीसतें ढारे यह ऊधम सुननन्दी रिस्याय ॥३॥ नेकन कान करत काऊकी, नजर दुरावत बलदऊ की ॥ पन घटतें घरलों बतराय ॥४॥ फागुन के दिन दूनो अकडे,

सालिगराम कौन याहि पकडे अंगलपट हंस हा हा खाय ॥५॥

४४ राग गोरी खेल फागु बन्यो ललना ब्रज सखा लिये नंद नंदना ॥ वंसी धरे कहेत हो होरी युवती जन मन फंदना ॥ घर घर तें सुन्दरि चली देखन बन आनंद कंदना ॥ बाजे ताल मृदंग झांझ डफ गावे गीत सुछंदना ॥ ठाँठाँ अगर अबीर लिये कर ठांठां बूका बंदना ॥ हाथन धरें कनिक पिचकाई छिरकत चोवा चंदना ॥ क्रीड़ा रस सब भये मगन, मन मानत हृदय आनंदना ॥ दास चतुर्भुज प्रभु सुख निधि गिरिधर विहरनि कंदना ॥

४५ राग गौरी घर घर तैं सुनि ग्वालि, स्याम मुख देखन आईं ॥ निरखि स्याम ब्रज-नारि, हरषि सब निकट बुलाईं ॥१॥ सुनत नारि मुसुकाइ, बांस लीन्हे कर धाईं ॥ ग्वालनि जेरी हाथ, गारि दै तियनि सुनाई ॥२॥ सीला नामक ग्वालि, अचानक गहे कन्हाई ॥ सखिनि बुलावति टेरि, दौरि आवहु री माई ॥३॥ एक सुनत गई धाई, बीस तीसक तहँ आईं ॥ टुटि परीं चहुँ पास, घेरि लीन्हौ बल भाई ॥४॥ इक पट लीन्हौ छीनि, मुरलिया लई छिड़ाई ॥ लोचन काजर आँजि, भाँति-सौं गारी गाई ॥५॥ जबहिं स्याम अकुलात, गहति गाढैं उर लाई ॥ चंद्रावलि सौं कह्यौ, गूँथि कच, सौंह दिवाई ॥६॥ हा हा करियै लाल, कुंवरि के पाँई छुवाई ॥ यह सुख देखत नैन, सूर जन बलि-बलि जाई ॥७॥

४६ राग गौरी चकित भईं हरि की चतुराई ॥ हमहिं छली इन कुंवर कन्हाई ॥ कहा ठगौरी देखत लाई ॥ घिर वति हैं कहि, भली बनाई ॥ एक सखी हलधर-बपु काछौ ॥ चली नील पर ओढै आछौ ॥ स्याम मिलन ताकौं तहं आए ॥ अग्रज-कानि चले अतुराये ॥ मिले सांकरी ब्रज की खोरी ॥ ढुकी रहीं जहँ-तहँ दोऊ गोरी ॥ गह्यौ धाई, भुज दोऊ लपटानी ॥ दौरि परीं सब सखी सयानी ॥ निरखि-निरखि तरुनी मुसुकानीं ॥ एक निलज, इक रही लजानीं ॥ कहा रही करि सकुच दिवानी ॥ अब इनकी जनि राखौ कानी ॥ नारि गारि सब देहिं सुहानी ॥ नंद महरलौं जाति बखानी ॥ उतरयौ, सूर, स्याम-मुख-पानी ॥ गइँ लिवाई जहँ राधा रानी ॥

४७ राग गौरी चलौ सकल मिलि खेलिये ! नंदा कें द्वार ।। खेलत फागु गोपाल ।। रितु बसंत बन गहगह्यौ ।। प्रफुलित ताल तमाल ।।नंदा०।। अति सुंदर ब्रज-भामिनी ।। आई भई इक ठौर ।। नव-जोवन वृषभानुजा ।। सखि-गन नवल किसोर ।।नंदा०।। ढोल-दमामा बाजहीं ।। श्री-मंडल मुख चंग ।। मुरज रुंज डफ दुंदुभी ।। बीना बेनु उपंग ।।नंदा०।। गौ-मुख भेरी बाजहीं ।। झालर झाँझि मृदंग ।। घोर निसान गगन-धुनी ।। ब्रज-जनि लावहिं रंग ।।नंद०।। चोबा चंदन अरगजा ।। बहु विधि मलय सुगंध ।। दे-दै तारी कंठ लावहीं ।। आलिंगन भुज-बंध ।।नंद०।। नौतन केसरि घसि घोरी ।। कुमकुम रस-सुख-सार ।। छुटी पिचकाई जित -तितै ।। लागत ह्वदे-मंझार ।।नंदा०।। तनसुख सारी लपटि रही ।। सकति न अंग संभाल ।। बूका बंदन उडि रह्यौ ।। दुहुं दिसि अरून गुलाल ।।नंदा०।। नव सर माला गूंथि कें ।। जाई जूई बेलि ।। पुलकि प्रेम पहिरावहीं ।। आनंद की झकझेलि ।।नंदा०।। नंदनंदन ब्रज-नाईका ।। भूतल करहिं अनंद ।। गारी परस्पर गावहीं ।। नाचहिं आपु सुछंद ।।नंदा०।। राग-भोग-रस पूरिता ।। मुख-कर बीरा-पान ।। जन 'परमानंद' बलि बली ।। चरन-सरन भगवान ।।नंदा०।।

४८ राग गौरी जमुना तट नंद नंदन, बिहरत सब सखा संग, पाग रंग मच्यौ, सरस गौरी राग गावे ।। सप्त सुरसौं तान मान, अद्भुत रूप ताल लिए, अधर धरे मधुरे मधुरे बैन हु बजावे ।।१।। बाजत चंग मृदंग ताल, उडावत अबीर गुलाल, मृगमद बहु सुगंध सानि सबनि के अंग लावै ।। उमग्यौ प्रेम सिंधु अपार, निरखि थकित सुर विमान गिरिधर पद पद्म रेनु, 'सुधरराय' पावे ।।२।।

४९ राग गौरी देखत श्री वृंदावन मोहन अति-अभिराम ।। आयौ मधु-ऋतु सेबन तुम हि हरखि घनस्याम ।।१।। आपुन बिबिधि संवारि तरु संपति ब्रजनाथ ।। बीथिनि सकल बिलोकति प्रान-पिया के साथ ।।२।। पहिलैं असित पलाम्पनि पुनि किलकि अरुनात ।। मांनहु घूंमत बिषम सरानल कमल जरात ।।३।। जित तित सत बगरन के कुसुम वृंद बिकसात ।। मनहु दिस

पूरित तब ब्रज सो उमगी न मात ॥४॥ बिगलित कुसुम समूह आकासन अरुन रंग ॥ मांनहूं प्रगटित बिहरति अनुराग उमंग ॥५॥ हरित दलनि मोर नूतनु मंजुरी पवन डुलात ॥ मांनहुं घन में प्रगटित चपला दुरि दुरि जात ॥६॥ प्रगटि तरु लपटी रही नव पल्लव कोमल-बेलि ॥ आनति मनसि तिहारी श्री राधा अलिंगन केलि ॥७॥ माते फिरत मिलि मुख डारत मधु कृत लोल ॥ मानहुं जे कुंडी लै मदन पतंगज टोल ॥८॥ नव निकुंज सदन पै कोकिल पिय-सन-गान ॥ मानहुं काम संदेसनि मैटति मानिनि मान ॥९॥ औरु कहाँ लगि बरनौ मन में रहति बिचारि ॥ तब सुख देति यहै वन के राधा वर नारि ॥१०॥ सुनि बिनति ब्रिंदाबन की अपने हैं अनुराग ॥ चले मुदित यौं फागु हरि तिहिं चितयौ अनुरागु ॥११॥ नागरि सहित बीच हरि इत उत जुबति समाज ॥ मानहुँ उडुगन मंडित जुबति सहित द्विजराज ॥१२॥ ताल मृदंग ढफ नंद ललनां गाबति समेत ॥ बिच बिच बर मुरली रब खग पसु बन सुख देत ॥१३॥ रबकत हंसत परसपर छिरकत कुंमकुंम नीर ॥ मानौ अंतर रसभीने उमंगि चुचाने चीर ॥१४॥ सांवल कर भै भाँमिनि मुख झपजि पट मीन ॥ मानहुँ राहु उडुगन तैं बिकल जल मही छीन ॥१५॥ नागरि पिय मुख चंदन लै पति उदित मनोज ॥ मानहुँ कनक कमल लै मरदत नील-सरोज ॥१६॥ बंदन जुबति उड़ायौ राजति मुख जुत हास ॥ मनहुँ नब आतप महि बिकसित कमल बिकास ॥१७॥ नांद अति कटि किंकिनी बाजत पद मंजीर ॥ धुनि सुनि पुनि पुनि बोलत हंस तरनिजा तीर ॥१८॥ एसै सब बन बिहरत तन मन अति ही फूल ॥ आनंद अति रति बाढ़ी नाखी सुधि बुधि भूल ॥१९॥ देखौ खेलत श्री राधा रस-निधि नंद कुमार ॥ 'कृष्णदास' हित नित हि चित में रहौ बिहार ॥२०॥

५० राग गौरी प्रथम यथा मति श्री प्रणमु ब्रिंदाबन अति रम्य ॥ श्री राधिके कृपा बिनु सब के मन अगम्य ॥१॥ बर जमुना चल सींचन दीन हि सरद बसंत ॥ बिबिध भांति कुसुमन सखी सौरभ अलि कुल मंत ॥२॥ अरुन नूत पल्लव पै कूजत कोकिल कीर ॥ निरत करत सखी अलि कुल अति आनंदित धीर ॥३॥ बहत पवन रुचिदाइक सीतल मंद सुगंध ॥

अरुन नील सित मुकुलित जहँ तहँ पुष्पन बंध ॥४॥ अति कमनिय बिराजत मंजुल नवल निकुंज ॥ सेवती सघनता जुत दिनमनि हे द्विज पुंज ॥५॥ रस की रास तहँ खेले स्यामा स्याम किसोर ॥ उभै बाहु परिरंभन, उठे उनींदे भोर ॥६॥ नवल बसंत कामिनी तन, कंचुकी कुसुम सुरंग ॥ कनक कपिस पट सोहत सुभग साँवरे अंग ॥७॥ ताल रबाब मुरज ढफ बाजत मधुरे मृदंग ॥ सरस उक्त गति सूचत वर बांसुरी मुख चंग ॥८॥ दोऊ मिलि चांचरि गावति गौरी राग अलापि ॥ मनु सर मृग बल बेधति भ्रकुटी धनुष दृग चापि ॥९॥ रसिकलाल मेलति पै कामिनि बंदन भूरि ॥ पिय पिचकाईन छिरकति अगर कुंमकुमा धूरि ॥१०॥ तारिन दोऊ कर पटकति लटकति इत उत जात ॥ हो हो होरी बोलति अति आनंद अकुलात ॥११॥ कबहूँक चंदन तरु तर निरमित तरल हिंडोल ॥ चढ़ि दोऊ जन झुलति फूलति करति कलोल ॥१२॥ बर हिंडोर झकोरति कामिनि अधिक डरात ॥ पुलकि पुलकि ह्वै पति अंग प्रीतम उर लपटाति ॥१३॥ हित चित बनी चित चोरत उर आनंद न समात ॥ निरखि नैननि सुख तृन तोरत बलि जात ॥१४॥ अति उदार सुंदर बर सुरति सरस कुमार ॥ 'हित हरिबंस' करहुँ दिन दोऊ मिलि अचल बिहार ॥१५॥

५१ राग गौरी बोली मदन गुपाल जू ॥ सुनि मानिनि ॥ जिन करि ऐसौ सयाँन ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ आयो सरस बसंत सुनि ॥ रह्यो न काहु को मान ॥ आरी सुनि मानिनि ॥१॥ उत्तरि गृह नीकें घर चल्यौ ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ संदर दिन-मनि-पीय ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ छांडे कछु इक मान जन ॥ सुनि मानिनि ॥ दच्छन ताछिन तीय ॥ अरी सुनि मानिनि ॥२॥ मलय पवन की आजु हीं ॥ सुनि मानिनि ॥ ह्वै गई ताती बास ॥ अरी सुन मानिनि ॥ जनु दच्छिन दिस बिरहनी ॥ सुनि मानिनि ॥ लींनीं उसास ॥ अरी सुनि मानिनि ॥३॥ जिहि इहि वेलिन माँन छाँडि ॥ सुनि मानिनि ॥ उलही आनि कैं पेट ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ नाइक द्रुम के कंठ सौं ॥ सुनि मानिनि ॥ कैसें गई है लपेट ॥ अरी सुनि मानिनि

॥४॥ काम गई रजनी भई ॥ सुनि मानिनि ॥ गई रवि मंडल छाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ थिर चर ए सब रहसि कैं ॥ सुनि मानिनि ॥ मिली पियनि सौं जाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥५॥ वह सुनि कानन कांन दे ॥ सुनि मानिनि ॥ कोकिल की कुहुँ कांनि ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ आंनि मनौं रत राज कौ ॥ सुनि मानिनि ॥ बज्यौ सीस पै निसांनि ॥ अरी सुनि मानिनि ॥६॥ कूजे कल कोकिला ॥ सुनि मानिनि ॥ कोमल कंठ सुजान ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ अटनि चढ़ी मानौं मधु बधू ॥ सुनि मानिनि ॥ करति परसपर बात ॥ अरी सुनि मानिनि ॥७॥ और बिहंगम रंग भरे ॥ सुनि मानिनि ॥ करत कुलाहल भारे ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ मनु मनमथ कुंजर छूटे ॥ सुनि मानिनि ॥ सौ परचौ बिधु-पुर सोर ॥ अरी सुनि मानिनि ॥८॥ डार डार मिलि मधुप पुंज ॥ सुनि मानिनि ॥ गुंजत सोरभ बाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ मनौं रति की गति जानि कै ॥ अरि सुनि मानिनि ॥ नूपुर बाजति पाँई ॥ अरि सुनि मानिनि ॥९॥ त्रिगुन पवन चंचल तुरंग ॥ सुनि मानिनि चढ़्यो तिहि राज विदेह ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ उड़ी जु पुहुप पराग तहाँ ॥ सुनि मानिनि ॥ उड़ी माँनौं खुर खेह ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१०॥ खग बंदी जन बदत बिरद ॥ सुनि मानिनि ॥ मदन जहां सिरमौर ॥ अरी सुन मानिनि ॥ तिन में कपटी कहत मानौं ॥ सुनि मानिनि ॥ एकै तू नहि और ॥ अरी सुनि मानिनि ॥११॥ कुसुम सरासन कर धरैं ॥ सुनि मानिनि ॥ खरे बिष भरे बाँन ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ कौ सहि है तीछन खरे ॥ सुनि मानिनि ॥ चढ़े चंद खरसान ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१२॥ ब्रिंदाबन मिलि रम्य भयौ ॥ सुनि मानिनि ॥ नव कुसुमाकर चारुं ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ ज्यौं कुच मंडल जुबति के ॥ सुनि मानिनि ॥ मंडित मंजुल हारु ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१३॥ तरुन मुकट मनि बाल तू और तो बिनु रह्यौ न जाई ॥ सुनि मानिनि ॥ लाल रसिक मनिराइ ॥ अरी सुनि मानिनि ॥ कीजे सुफल बसंत में ॥ सुनि मानिनि ॥ 'नंददास' बलि जाई ॥ अरी सुनि मानिनि ॥१४॥

५२ राग गौरी सकल सखी मिलि आइहु नख सिख भेख बनाई ॥ इहि औसर देखन नंद के ग्रह मोहन राइ ॥१॥ नंद गांव नव मन्दिर सुंदर

सिखरि सुढार ॥ मंगल कलस बिराजत, उपर मुक्ता हार ॥२॥ सकल साज की सौंज ही ले आइ सुकुमारी ॥ चोवा चंदन छिरकति मोहन बदन निहारी ॥३॥ मृदु बोलनि मुसिकावनि हाथन कुंमकुम बारी ॥ जाल रंध्र छाजन चढ़े गावति मीठी गारी ॥४॥ ताल, मृदंग, उपंग, चंग, मुरली बहु मोल ॥ महुवरि झांझ झालरी बाजति दुंदुभि ढोल ॥५॥ झख करदम की कीच मची खेलति अब नंदलाल ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन ललितादिक गुपाल ॥६॥

५३ राग गौरी होरी खेलति डोलति सांवरो ढोटा नंद को लाल ॥ कैसें कै जाऊँ भरनि जमुना जल परचौ री रहति मेरे ख्याल ॥१॥ अरी यह लंगर मोहि ढिंग आई हेरि हंसि तोरी मोतिनमाल ॥ हौं सकुचाई रही मुख चितवति परसि भज्यौ दोऊ गाल ॥२॥ अरी वे सनमुख होई पिचकारी छोड़ै डारे सुरंग गुलाल ॥ औचका आई भेटि मुख में निज मुख दीनों उगाल ॥३॥ अरी बे तब तैं मोहि चटपटि लागी परी प्रेम कैं जाल ॥ जो तू हितू हमारी मिलाई 'रसिक' गुपाल ॥४॥

५४ राग गौरी होरी खेलनि को चले ॥ रंग भीने हो ॥ सुंदर मदन गुपाल ॥ लाल रंग भीने हो ॥ आगें दै बलबीर ॥ करति कुलाहल ग्वाल ॥ लाल०॥१॥ बाजे बहु विधि बाज हीं ॥ जंत्र परवाबज ताल ॥ रुंज मुरज ढ़फ दुंदुभि ॥ बिच बिच बैंनु रसाल ॥२॥ स्रबन सुनति सब ब्रज वधू ॥ घर घर तैं उठि धाई ॥ मुख्य जु राधा लाड़िली ॥ गावति गारि सुहाई ॥३ ॥ सनमुख आवैं हुलसि कैं ॥ केसर भरि पिचकाई ॥ प्रान पिया कौं छिरकि हीं ॥ बद मोरि मुसिकाई ॥४॥ जुवती जूथ पै छरिकि हीं ॥ सुरंग गुलाल अबीर ॥ चौंक परैं सब खेलि हीं ॥ भरति परसपर भीर ॥५॥ हो हो होरी बोलि हीं ॥ नांचे दै कर तारि ॥ चहुं दिस तैं बे छिरकि हीं ॥ करि जु अरगजा वारि ॥६॥ तब ललिता चंद्रावली ॥ गहि लीनें घनस्याम ॥ नैन आँजि मुख मांड़ कैं ॥ झटकति गहि बन दाम ॥७॥ लै उठाइ भरि अंक में ॥ प्रेम आलिंगन देहि ॥ एक अधर रस घूंट ही ॥ एकु जु चुंबन लेहि ॥८॥ एकु जु पान खवाव हीं ॥ एकु जु लेहि उगार ॥

भुज भरि राखैं पीय कौं ॥ हा हा खाहु कुमार ॥९॥ हंसि हंसि चिबुक उठाब हीं ॥ दुलरी लींनी खोल ॥ कै बल छूटो आपुनौ ॥ कै ब्रजराजैं बोल ॥१०॥ यौं गिरिधर संग खेलि हीं ॥ वाढ्यौ उर आनंद ॥ हेरैं नेन चकोर ज्यौं ॥ पिय मुख पूरन चंद ॥११॥ मन भायो फगुवा लियो ॥ अंबर मोतिन माल ॥ वारैं सरबसु वारनैं ॥ बलि-बलि "दास" गुपाल ॥१२॥

५५ राग गौरी आओ मिल ब्रजकी नारी होरी धूम मचाओ ॥ चंदन वंदन कुमकुम ले मोहन मुख लगाओ तारी दे गारी गाओ ॥१॥ केसर-केसर कनक पिचकारी भरि ले करन धाओ ॥ हरि किसोरी सन्मुख होय धारसों धार मिलाओ ॥२॥

५६ राग गौरी प्रथम ही होरी खेल ही व्रजलीला हो ॥ संतनके मन भाय लाल व्रजलीला हो ॥१॥ कामिनी काम प्रवेशही व्रज०। सब भामिनी मिलि गाय लाल० ॥२॥ मरुली महुवर डफ बाजही व्रज०। चर्चरी सरस धमार लाल० ॥३॥ इत राधाजू विराजही व्रज०। सब भामिनी सिरमोर लाल० ॥४॥ राधा गहत पिचकाइयाँ व्रज०। छिरकत साँवल गात लाल० ॥५॥ गोपीनाथ झोरी भरे व्रज०। चंदन कपूर बरास लाल० ॥६॥ कासमीर भर नीरसों व्रज०। खेलत स्यामा स्याम लाल० ॥७॥ छरियन मार मचावही व्रज०। सरके मदनगोपाल लाल० ॥८॥ ग्वालिन ग्वाल सबै हँसे व्रज०। मोहन नेन विसाल लाल० ॥९॥ इत राधा उत साँवरो व्रज०। परिरंभनकी आस लाल० ॥१०॥ नंदजसोदा देखही व्रज०। नैन करत सुखपान लाल० ॥११॥ वारि कुँवर पर नंदरानी व्रज०। देत विप्रन बहु दान लाल० ॥१२॥ सारद सुन भोरी भई व्रज०। कहा बरने रामदास लाल० ॥१३॥

५७ राग गौरी बोलत मदन गोपाल लाल सुन मानिनी ॥ जिनि करो एतो मान आये सुन मानिनी ॥ आयो सरस वसन्त समय सुन माननी ॥ रह्यो काहुको मान आये सुन मानिनी ॥१॥ उतर धरनितें घर चल्यो सुन०। सुंदर दिनमनि पिय आये सुन०। छाड कछु इक मान जानि सुन०। दछिन बिच छिन तीय आये सुन० ॥२॥ मलयपवनकी आजुही सुन०। व्हे गई

तातो वाय सुन०। जानु दछिन दिस विरहिनी सुन०। लीनो विरह उसास सुन० ॥३॥ वह सुन कानन कान दे सुन०। कोकिलकी कुहूकानि सुन०। आनक मानो ऋतुराजको सुन०। सिर पर बाज्यो आन सुन० ॥४॥ जिहि डर वल्लिन मान छाँड सुन। उलही आनिके पेट सुन०। नायक द्रुमन कंतसों सुन०। कैसे गई है लपेट सुन० ॥५॥ साम गई रजनी भइ सुन०। गई रविमंडल छाई सुन०। थिरचर ये सब रहसिके सुन०। मिलि पियनिसों जाई सुन० ॥६॥ ठोर-ठोर मिलि मधुप पुंज सुन०। गुंजे सौर मचाई सुन०। मानो विहरत मधुप छबि वधु सुन०। नूपुर जु बाजत पाई सुन० ॥७॥ मिल कुंजहि किल कोकिला सुन०। कोमल कंठ सुजाति सुन०। अटन चढि मानो मधु वधु सुन०। करत परस्पर बाति सुन० ॥८॥ मोर विहंगम रंगभरे सुन०। करत कुलाहल भोर सुन०। मानो मन्मथ कुँवर छूट्यो सुन०। पर्यो मधु नगरी सोर सुन० ॥९॥ त्रिगुन पवन चंचल तुरंग सुन०। चढ्यो तिहिं राज विदेह सुन०। उडी जु पोहोपवन राजत सुन०। बढी मानो खुर खेह सुन० ॥१०॥ खग बंदीजन वदत बिरद सुन०। मदन जहाँ सिरमौर सुन० तिनमें कपटी कहत मानों सु० । एके तू नहीं और सुन० ॥११॥ कुसुम सरासन कर धरे सुन०। विषमें विष भरे बान सुन०। को सहिहे तिछन खरे सुन०। चढे चंद खरसान सुन० ॥१२॥ बृन्दावन मिलि रस भयो सुन०। नव कुमुमाकर चारु सुन०। ज्यों कुचमंडल जुवतिके सुन०। मंडित मंजुल हारु सुन० ॥१३॥ तरुनी मुकुटमनि बाल तू सुन०। लाल रसिकमनि राय सुन०। कीजिये सुफल वसन्त मम सुन०। नंददास बलि जाय सुन० ॥१४॥

५८ राग गौरी ठगत जुवतीजन कान्ह ठग माईरी ॥ डारत सिर चितवन भुरकी महा ठग माई री ॥१॥ खेलत हाँसी फाँसी मेलि ठग०। ले मुरली मंतर सुनाई महा० ॥२॥ बीरी मोहि खवाई ठग०। मानिनी मानि सिंगारि महा० ॥३॥ चाँचर चेटक लाइ ठग०। निंदित नंद-सुवन कही महा० ॥४॥ सखा सर्व बुलाई ठग०। तित ही ठाडो जित जाई महा० ॥५॥ बगर बगर ब्रज डगर डगर ठग०। टगर टगर टेरे गाय महा० ॥६॥ चरन लकुटी लपटाय ठग०। हम इनको न पताय महा० ॥७॥ तबही और किसोर भोर

ठग०। होत न छिन प्यारो न्यारो महा० ॥८॥ दग तारा सुख देन ठग०। गोविन्द प्रभु संग उठि धाये महा० ॥९॥

५९ राग गौरी ठाढ़ो हो ब्रज-खोरी ढोटा कौन कौ ॥ लटिहि त्रिभंगी इक पद (री) मनमथ-गौन कौ ॥ मोर मुकिट कछनी कसे (री) पीतांबर कटि-सोभ ॥ नेन चलावै फेरिकै (री) निरखि होत मन लोभ ॥ भौंह मरोरै मटकिकै (री) रोकत जमुना-घाट ॥ चितै मंद मुसुकाइकै (री) जिय करि लेई उचाट ॥ हँसत दसन चमकाइकै (री) चकचौंधी-सी होति ॥ बग-पंकति नव जलद मैं (री) उर माला गज मोति ॥ पिचकारी रतननि-जरित (री) तकि-तकि छिरकत अंग ॥ टेसू कुसुम निचोइकै (री) अरु केसरिको रंग ॥ फैंट गुलाल भराइकैं (री) डारत नैननि ताकि ॥ एतेपै मन हरत है (री) कहा कहौं गति वाकि ॥ पुनि हो हो करि मिलत है (री) नाना रंग बनाई ॥ नंद-सुवन के रूपपै (री) सूरदास बलि जाई ॥

राग - श्री हठी

१ राग - श्री हठी ब्रज जुवतीं नागरि राधा पै, मिलि मोहन लै आईं ॥ लोचन आंजि, भाल बेंदी दै, पुनि-पुनि पाई पराईं ॥ बेनी गूँथि, मांग सिर पारी, बधू-बधू कहि गाईं। प्यारी हँसति देखि मोहन-मुख, जुवतीं बने बनाई ॥ स्याम अंग कुसुंभी नइ सारी, अपनैं कर पहिराई। कोऊ भुज गहति, कहति कछु कोऊ, कोऊ गहि चिबुक उठाई ॥ एक अधर गहि सुभग अंगुरियनि, बोलत नहीं कन्हाई ॥ नीलांबर गहि खूंट चूनरी, हाँसि-हँसि गाँठि जुराई ॥ जुवती हँसति देतिं कर तारी, भई स्याम ! मन भाई ॥ कनक-कलस अरगजा घोरि कै, हरिकै सिर ढरकाई ॥ नंद सुनत, हँस महरि पठाई, जसुमति धाई आई ॥ पट-मेवा दै स्याम छुड़ायौ, सूरदास बलि जाई ॥

२ राग - श्री हठी आजु सखी तेरैं आवैंगे, हरि खेलन कौं फाग री ॥ सगुन सँदेश सुन्यौ हौ तेरैं आंगन बोले काग री ॥ मनमोहन तेरे बस माई ॥ सुनि राधे बड़भाग री ॥ बाजत ताल, मृदंग, झांझ, डफ,

का सोवै, उठि जाग री ॥ चोवा चंदन लै कुमकुम अरु केसरि, पैयाँ लाग री ॥ सूरदास प्रभु तिहारे दरसन, आवत अचल सुहाग री ॥

३ राग - श्री हठी स्याम-संग खेलन चलि स्यामा सब सखियन कौं जोरि ॥ चंदन अगर कुमकुमा केसरि, बहु कंचन-घट घोरि ॥ उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, छबि छाई जनु साँझ ॥ नाहीं दृष्टि परत राधा-मुख, चंद निलंबर-मांझ ॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यौ घर, मची अरगजा-कीच ॥ ब्रज-बनिता कुमुदिनि-सी फूलीं, हरि-ससि राजत बीच ॥ अष्ट सिद्धि, नव निधि ब्रज बीथिनि, डोलत घर-घर बार ॥ सदा बसंत वृंदावन, लता-लता द्रुम डार । देखि-देखि सोभा-सुख-संपति, जिय मैं करतिं बिचार ॥ ब्रज बनिता हम क्यौं न भईं, यौ कहति सकल सुर-नार ॥ फाग खेलि अनुराग बढ़ायौ सबकें मन आनंद । चले जमुन अस्नान करन कौं, सखा, सखी, नंद-नंद ॥ दुष्टनि दुःख, संतनि-सुख-कारन, ब्रज-लीला अवतार ॥ जै जै ध्वनि सुमननि सुर बरषत, निरखत स्याम-बिहार ॥ जुगल-किशोर-चरन-रज मांगौं, गाऊँ सरस धमारि ॥ श्री राधा गिरिवर-धर-ऊपर सूरदास बलिहारी ॥

४ राग - श्री हठी हरि-संग खेलन फागु चलीं री ॥ चोवा, चंदन, अगरू, अरगजा, छिरकतिं नगर चलीं री ॥ राती पीरी अंगिया पहिरे, नव तन झूमक सारी ॥ मुख तमोर, नैननि भरि काजर, देहिं भावती गारी ॥ रितु बसंत आगम रतिनायक, जोबन-भार-भरी री ॥ देखत रूप मदन-मोहन कौ, नंद-दुवार खरीं री ॥ कहि न जाई गोकुल की महिमा, घर-घर बीथिनि-माहीं । सूरदास सो क्यौं करि बरनै, जो सुख तिंहु पुर नाहीं ॥

५ राग - श्री हठी खेलति फागु फिरति रस फूले ॥ स्यामा स्याम प्रेम बस नाँचति गावति सरस हिंडोरे झूले ॥१ ॥ ब्रिंदावन की जीबनि दोऊ नट नागर बंसीबट मूले ॥ ''व्यास स्वामिनि' की छबि निरखति नैन कुरँग फिरति रस भूले ॥२॥

धमार पंथजी लाल के पद

१ राग - गौरी नागर नंद दा मैनु दे दे जाँदाँ गालियाँ। बोलीयाँ ठोलीयाँ कहि-कहि होलीयाँ गावदाँ दे दे तालियाँ। तकु दा फरदां सुघर सलौनियाँ सोहनी खेलनि बालियाँ ॥ लखि ललचाई लवंद लावंदाँ ॥ चोली दे पिचकारियाँ ॥२॥ सानू अतर अंडियाँ बडियाँ चाखियाँ रति तालियाँ ॥ दिल डसि लेडियाँ सितम करेदियाँ जालिम जुल्फैं कालियाँ ॥३॥ मैंने दी फौजे-बिच लावेदियाँ भौंहें दे चल चालियाँ ॥ रसिक सखी सौं हँसा मुख चुख लखि अखियाँ हौं दी सुखालियाँ ॥४॥

२ राग - काफी ए रँगीला रँग डारि कै कित जादां ॥ ध्रु० ॥ दुरि-आंदां तनक छिप-जादां तो चोर कहादां ॥ जब जानौं जसुमति के ढोटा सनमुख दरस दिखादां ॥१॥ गारी गादां घेरि मिलांदां लरिकन कौं सिखलांदां ॥ भलै भए तुम सुघर सयाने ब्रज में लोग हँसादां ॥२॥ पकरंगा तेरी पगिया रँग हो तब तो कौंन छुड़ादां ॥ निरलज निपट लाल लंगरवा सो सो सोगंद खादां ॥३॥ चोवा चंदन औरु अरगजा रोरी रँग मिलांदां ॥ आजु सखी 'हरि दास' के ठाकुर इह बिधि धूम मचांदां ॥४॥

३ राग - बिहाग होरी दे ख्याल बिच यह क्याकीता ॥ मेनूल-गाय छरी फूलोंदी सिरदा घूंघट खोल बेलीता ॥१॥ पथां गुलाल आंखों विचमैंडी देखनदासुख छीताबेछीता ॥ सखी देखेंदी लाजमरोंदी चुंबन गालोंदीता ॥२॥ ऐसी न कीजे निगडनंददे कहेलांदा ब्रज जनदा मीता ॥ रसिक प्रीतम नाल हा हा खांदी हों हारी तू जीता वे जीता ॥३॥

४ राग - बिहाग होरी खेलत कुमर कन्हाई ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा धरणी कीच मचाई ॥१॥ अबीर गुलाल उड़ाय ललितादिक शोभा वरणी न जाई ॥ अरस परस छिरके चु स्याम को केसरि भरी पिचकाई ॥२॥ नख सिख अंग परम रूप माधुरी भूषण वसन बनाई ॥ गिरिवरधर की यह छबी निरखत कुभंनदास बलि जाई ॥३॥

धमार के पद राग - हमीर

१ राग हमीर होरि खेलति है नंदलाल ॥ इत सब सखा मंडली राजति उत समूह ब्रज बाल ॥१॥ बाजति सरस मृदंग ढोल ढ़फ बीना बैनुं उपंग ताल ॥ छिरकति कुँमकुमा और अरगजा उड़ति अबीर गुलाल ॥२॥ गावति गारि मगन भई गोपी मीठी परम रसाल ॥ फगुवा मिसि गिरिधर गहि आने लींनीं और बनमाल ॥३॥ रस बस भई सकल ब्रज वनिता अंग न कछु सँभाल ॥ 'गोविंद प्रभु पिय की बलिहारी अंबुज बदन रसाल ॥४॥

२ राग हमीर खेलन आये हरि नंदगामतें रंग भीने बरसाने ॥ मृगमद मेद अरगजा चोवा सब नारी नरसाने ॥१॥ दृग ढिंग छांड भांड केसर मुख रिझत सुख सरसाने ॥ बिन कारज कारज कर राखे शोभित चख अरसाने ॥२॥ सोई अंजन विष ईशद लोचन करे मदन खरसाने ॥ 'कृष्णजीवन' लछीराम के प्रभु माई खेल लखजीये जलधर वाने ॥३॥

धमार के पद राग - कल्याण

१ राग कल्याण नवल कुंवर ब्रजराय के लाल खेलत रस भरे होरी हो ॥ गौर स्याम तन राजहीं ओर बल मोहनकी जोरी हो ॥१॥ ऊँचे चढ जबटेरिया सुबल श्रीदामा भाई ॥ श्रवण सुनत सब धाईयो ओर बोलत कुंवर कन्हाई ॥२॥ मंदिर ते सब सज चले जाय जुरे सिंघपोरी ॥ मोहन-मुरली बजाईयो सुनत व्रज वधू दोरी ॥३॥ चहुंदिशते बाजे बजे रुंज मुरजडफ ताल ॥ दुंदुभी डिमडिम झालरी विचविच वेणु रसाल ॥४॥ ब्रजजन सब एकत्र भये एक ओर व्रजनारी ॥ गाबत गीत सुहावने हसहस देतबगारी ॥५॥ अरगजा भरभर पिचकाई अंचल वीच दुराई ॥ बलरामकृष्ण कों छिरकहीं वदनमोर मुसिकाई ॥६॥ कोप सखा सन्मुख भये अरगजा कुंकुम घोरी ॥ घेरसकल व्रज सुंदरी एक एक करबोरी ॥७॥ युवती यूथ मध्य्य राधिका उत ब्रजराज किशोरा ॥ युग शशि रूप किरण पीवें लोचन चारुचकोरा ॥८॥ सब सखियन मिलमतो मत्यो मोहनकों पकराई ॥ छल बल तो नहीं पाइये किहिं मिस पकरें जाई ॥९॥ ललिता आगे लेदोरी मोहन लीनेघेर ॥ पियप्यारी गठजोरियो हसत वदन तनहेर ॥१०॥ गाल बहूत तुम मारते सुनों सखा

वलभाई ॥ जाय कहां ब्रजराजते मोहन लेहु छुडाई ॥११॥ यह विध होरी खेलहीं देत सकल आनंदा ॥ गोविंद बलबल बलजाई जयजय गोकुल चंदा ॥१२॥

२ राग कल्याण श्रीगोवर्धनराय लाला ॥ प्यारे लाल तिहारे चंचल नयन विशाला ॥ तिहारे उरसोहे वनमाला ॥ यातें मोहि रही ब्रजबाला ॥ध्रु०॥ खेलत खेलत तहां गये जहां पनिहारिन की वाट ॥ गागर ढोरें सीसते कोऊ भरनन पावे घाट ॥१॥ नंदराय के लाडिले एसो खेल निवार ॥ मनमें आनंद भररह्यौ मुखजोवत सकल ब्रजनार ॥२॥ अरगजा कुंकुम घोरकें प्यारी लीनों कर लपटाय ॥ अचकां अचकां आयकें भाजी गिरिधर गाल लगाय ॥३॥ यह विध होरी खेलही व्रज वासिन संग लगाय ॥ गोवर्धन धर रूप पर जन गोविंद बलबल जाय ॥४॥

३ राग कल्याण व्रजराज लडेतो गाइये लाल मनमोहन जाको नाम ॥ खेलत फागु सुहावनों रंग भीज रह्यो सब गाम ॥१॥ ताल पखावज बाजहीं डफ सहनाई भेर ॥ श्रवण सुनत सब ब्रजबधू झुंडन आई घेर ॥२॥ उतही गोप सब राजहीं इत सब गोकुल नारि ॥ अति मीठी मन भावती देत परस्पर गारि ॥३॥ चोवा चंदन छिरकहीं उडत अबीर गुलाल ॥ मुदित परस्पर खेलहीं होरी बोलत ग्वाल ॥४॥ एक सखी मोहन गहिआने प्यारी पकरेहाथ ॥ गोपी भेष बनाय के रचबेनी गुंथीमाथ ॥५॥ बहु रमतो कर सुंदरी हलधर पकरे जाय ॥ नवकेसर मुख मांडकें आयेहें आंख अंजाय ॥६॥ पीतांबर मुख मूंदकें निरख हँसे नंदलाल ॥ दाऊ जू आज भले बने कूकेंदेत गुवाल ॥७॥ सिमिट सकल व्रजसुंदरी व्रजपति पकरे धाय ॥ करत सबे मन भामतो नेंकनराखतकाय ॥८॥ तब नंदरानी वीच कियो मेवा दियो मंगाय ॥ पट आभूषण पहरायकें हृषी केश बलजाय ॥९॥

४ राग कल्याण खेलत गिरिधर फाग अति अनुराग भरे होरी के ॥ ग्वालन संग गोकुल गलीयन में गोहन लगे गोरी के ॥१॥ पिचकाइन पलाश कुसुम जल बूका वंदन भरझोरी के ॥ बोरी रंग में अंगअंग भाव भरी व्रज भामिनि भोरी के ॥२॥

५ (राग कल्याण) गिरिधर यमुना तट कुंजनमें खेलत फाग सुहावनों ग्वाल मंडली बल संगलीने आनंद प्रेम बढावनों ॥१॥ परम रुचिर उज्ज्वल वसनन ले अंगअंग भेख बनाबनों ॥ अगर सहित मृगमद गोरासों अरगजा घोर लगावनों ॥२॥ अति सुरंग केसर के रससों हाटक घटभर लावनों ॥ रत्न जटित पिचकाई भरले ब्रज वधु बनवर धावनों ॥३॥ नवसत साज सिंगार राधिका रूप अनूप दिखावनों ॥ ब्रज नारी सब जोर साथले सन्मुख गुलाल उडावनों ॥४॥ सौरभ अधिक अबीर सेतसों भरभर मुठी चलावनों ॥ हो हो हो हो बोल सखिन संग लाल गुलाल उडावनों ॥ पटह झांझ झालर आवजडफ ताल मृदंग बजावनों ॥ राग कल्याण जमाय सप्तस्वर तान मान सों गावनों ॥६॥ मधुमंगल बोल्यो हलधरसों अब कहामतो उपावनों ब्रजबनि तनकी सयना आगें केसेंक होय बचावन ॥७॥ तब बल दाऊ मतो रच्यो मन ललितानेंक बुलावनों वदिये चतुरजो दाव विचारे चित्तकों यह सिखावनों ॥८॥ सुन मधु मंगल ललिता टेरी नेंक यहां लों आवनों ॥ मेजिय मांज उपाय बनायो करिये तुम मन भावनों ॥९॥ तब हरि हित ही बोली हसकें यह निश्चय ठहरावनों ॥ तुम सब दूर रहो ठाडे व्हे हमही स्याम पकरावनों ॥१०॥ छल बल कर पकरेजु अचानक कीनों सकल खिलावनों ॥ सुबल श्रीदामा आदि सखा सब याहा कों जो मिलावनों ॥११॥ मनमोहन संभ्रम सन्मुख व्हे बोलत बोल सुहावनों ॥ सखा यूथ में देखी ललिता ठाडी करत जनाजनों ॥१२॥ प्रीतम कोंपकरन दोरी राधा गह्यो स्याम सुख छावनों ॥ नयनन नेन मिलत मुसिकानी रहतन नेहदुरावनों ॥१३॥ युवती सब मिल झुंडन गावत गारी छंद मचावनों ॥ सुर ललना सब देख थकित भई कोन पुंन्य ब्रज पावनों ॥१४॥ प्रमुदित मनसों अष्टयामजुर राधा पति हिलडावनों ॥ यह रस तजजे और जो चाहे सोतो जन्म गमावनों ॥१५॥ कोकविवरणिसके या सुखकों देखत दुख विसरावनों ॥ शुकपिक मोर मधुप गण बोलत ऋतु वसंत हुलसावनों ॥१६॥ सुन बिनती सुत नंदरायके फगुवा बहुत मंगावनों ॥ यह जोरी अब चल चिरजीयो व्रजनित हो हु बधावनों ॥१७॥ राधा कृष्ण अमृत रस सागर क्यों घट होय समावनों ॥ गोकुल चंद चरण पंकजरज निशदिन तन लपटावनों ॥१८॥

६ राग कल्याण हौरी खेलत मदन गोपाल संग लिये व्रजबाल ॥ छिरकत आन परस्पर हरखत किलक देत करताल ॥१॥ बाजत डफ मृदंग ओर ताल विचविच वेणु रसाल ॥ प्यारी लई घन सारकी झोरी पियहि अबीर गुलाल ॥२॥ ललिता चंद्रावली मतोकर पकरे स्याम तमाल ॥ रामदास प्रभु फगुवा दीनों श्रीगिरिधर मणिलाल ॥३॥

७ राग कल्याण अरगजा गुलाल छिरकत वल्लभ लाल के संग ॥ अतर गुलाब ओर चोवा चंदन कुंकुमा भरत पिचकारी लाई व्रजनारी सब विविधि भांत सों बहुरंग ॥१॥ वरणवरण अंबर तन पहरे आभूषण अति विचित्र छबि गावत सरस सुरतान मानसों पुलकित अंग ॥ वल्लभ पिय सन्मुख निरखत हें सब ज्यों चकोर चंदा तन चितवत नयन निरखत उपज्यो प्रेम अनंग ॥२॥

८ राग कल्याण हरि संग हो हो हो होरी खेलत राधा गोरी ॥ तरुणी समूह तरणि तनया तट मंडित मोहन जोरी ॥१॥ नब ऋतुराज समाज सहित बहुरंग लता द्रुमफूले ॥ मोर मराल मधुप कोकिल कल कूजत आनंद मूले ॥२॥ बानिक विपिन विलोक युगलवर हर्षित हें हिय मांही ॥ रच्यो खेलन व फाग रसिकवर कल्प तरुवर छांही ॥३॥ बाजत वेणु मृदंग चंगमुख चंग अना गतिलावें ॥ नायक निपुण कनक बरणी तरुणा तारी देदे गावें ॥४॥ एक सखी बन वेष स्यामको संग सखा सब सोहें ॥ चेत गीत बहुभांत बेनकल सुनत श्रवण मनमोहें ॥५॥ अति अद्भुत युगटोल परस्पर बोल वदत मनभाये ॥ कोटि अनंग अंग पावत सुन जेर सग्रंथन गाये ॥६॥ विविध सुंगध अरगजा दुंहुंदिश रंग बढ्यो अति भारी ॥ परम प्रवीण सुघर घातन मोहन वृषभान दुलारी ॥७॥ रूपे सुभट रणधीर उभयदल छल बल टरत न टारे ॥ छिरकत भरत बचावत विहसत रूप यौवन मदभारे ॥८॥ नयनन सयनन विवश किशोरी लाल गहे भर कोरी ॥ सहचरी गण भरभर पिचकाई हो हो हो कर दोरी ॥९॥ मृगमद साख जवाद कुंकुमा सुभग सीसतें नावे ॥ नायक नाम पलट पिय को प्रभु डांगन वसन बनावे ॥१०॥ मोहि रहे व्रजराज

सांवरे अंग बनी रंगसारी ॥ राजत दीठ बचावत भाजत निजतन निर्खत नारी ॥११॥ टेढी पाग पीतपट शोभित ग्रीव गौर भुजदीने ॥ कीरति कुंवर बनी राधापति त्रिय नंद सुत कीने ॥१२॥ ललितादिक सींचत सुख नयनन भूषण पलट बनावे ॥ रीझरीझ तृण तोर मुदित मुख मोर हंसें कछु गावें ॥१३॥ शारद सकुच निरख दंपति सुख वर्णन कों मति थोरी ॥ स्याम निकुंज विहारिण प्यारी प्रीतम नवल किशोरी ॥१४॥

९ राग कल्याण खेलत होरी लाल संग लियें व्रजकुलके बाल ॥ व्रजकी पोरी खोरी व्रजराज की दोरी सबहिन कों छिरक कर फेंट गुलाल ॥१॥ व्रजकी नारी गारी देदे गावत हँसत गुवाल ॥ यह विध व्रज रंग छायो सुंदर रसिक रसाल ॥२॥

१० राग कल्याण होरी खेलत कुंज विहारी ॥ संग लिये केसर कुंकुम भर पिय पर प्यारी डारी ॥१॥ चोवा चंदन अगर अरगजा चरचित व्रज की नारी ॥ तक तक छिरकत मोहन कों किलक देत करतारी ॥२॥ मदन गोपाल गहे श्रीराधा हम हि देहु फगुवारी ॥ श्रीगिरिधर लाल दियो तहां सर्वस्व रामदास बलहारी ॥३॥

११ राग कल्याण खेलत मनमोहन होरी अति रस रंग भीने ॥ गाय गाय और रीझरीझ मीठी मीठी तानन लीने ॥१॥ काहूको हार तोर काहूकी भुज मरोर काहूकी कंचुकी के बंद छोर दीने ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु देखे कोटि मदन की छबि छीने ॥२॥

१२ राग कल्याण मोमन यह व्यापी पकर मोहन पेंवेर लेहूं ॥ सब सखियनमें छिपजो चलों पाछेंते दौरि जाय अंजनदेहूं ॥१॥ कर गहि पीठ गढाय कुचनसों कान पकरकें गुलचा देहूं ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुपें मनभायो हों फगुवा लेहूं ॥२॥

१३ राग कल्याण लिये सकल सोंज होरी की नवल किशोरी जू नयनन में ॥ सेत अबीर स्याम तागर सुत नेह फुलेल सन्यों नयनन में ॥१॥ कुटिल कटाक्ष छूटत पिचकाई प्रीति रंग भरभर नयनन में ॥ लाल गुलाल

अरुण अरुणाई मिलवत ललित सखी नयनन में ॥२॥ विहंसन फगुवा देतलेतहें सहचरी हूं न लखे नयनन में ॥ रस भीजे रीझे पिय प्यारी जगन्नाथ पूरण नयनन में ॥३॥

१४ राग कल्याण कर हो हो होलें रे खेलत पिय डारत पिचकारी ॥ बाढ्यो हे राग रंग परण गति सहत गावत नीकी तान देतारी ॥१॥ केसर रंग भर भर जु चलावत आवत सोहे लाजत नारी ॥ एक भर छिरकत नयनन में भीजत रंग तन तन रही रंग सारी ॥२॥

१५ राग कल्याण खेलोंगी पिय संग होरी खेलोंगी ॥ नव निकुंज ठाडे मोहन के उर गूंथि कुसुम माल मेलोंगी ॥१॥ होरी की पून्यों पूरण शशि प्रेम सिंधु रस झेलोंगी ॥ रस बश व्हे निधरक व्रजपति सों आरज पंथपग पेलोंगी ॥२॥

१६ राग कल्याण माई होरी खेले कान्ह कुंजन में झुंडन में या गोकुल के ग्वेंडें ॥ ढीठलबार कह्यो नहिं मानत वह परचो हे सबन के पेंडें ॥१॥ कंचन की पिचकाई कर लिये डोलत अपनी ऐंडें ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु पिय तोरत लाज की मेंडें ॥२॥

१७ राग कल्याण हो होरी के खिलार हो जु चतुर संभार हमारी वार ॥ रंग सुरंग तुम हम पर डारत सन्मुख ले मुख ते घुंघटटार ॥१॥ डरत न टरत भरतही आवत नेंक न छांडत मेरे घरको द्वार ॥ कृष्ण जीवन लछीराम टरो किन नातर खेहो गार ॥२॥

१८ राग कल्याण खेलत फाग लाल रंग भीने ॥ तेसेई सकल सुघर लरका बने बलदाऊ संग लीने ॥१॥ बाजे बजत विविध बहु भांतन ताल मृदंग झांझ कठताल ॥ आबज रुंज मुरज डफ वीना सुर मंडल मुख वेणु रसाल ॥२॥ दुंदुभी मदन भेरि सहनाई पंच शब्द मिल घुरत निसान ॥ महुवर ढोल सहनाई घोरवसु नियत कान ॥३॥ इतनायक व्रजराज लडेंतो उत चंद्रावलि नारी ॥ कोकिल स्वर मिल गावत झुंडन रीझ देत चोंखन सों गारी ॥४॥ सुंदर बनी कनक पिचकाई अरगजा के सर कुंकुमा घोरी ॥

मृगमद मलय कपूर आदि सोंधो जवाद छिरकत मुख मोरी ॥५॥ सुरंग गुलाल उडावत झोरी ग्वाल सखा समूह इकठोरी ॥ हो हो हो हो होरी बोलत देख देख लालन की ओरी ॥६॥ व्रज सुंदरी मतो मत्यो आपस में क्यों हूं लालन लीजे घेरो ॥ जब दोरी सब मिल एकत्र व्हे सेनन प्यारी के नयनन हेरी ॥७॥ पकरे जाय यसोदा नंदन झकझोरत मोतिन दयो हार ॥ मुरली झटक प्यारी कर पीवत मुखसों मुख मधु धार ॥८॥ रस वशभये रसिक दोऊजन सुध न रही कछु तिहिं अवसर तन ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी वे जाने के ऊनहीं को मन ॥९॥ तब चंद्रावलि काजर ले कें आंजे पियके नयन संभार ॥ शोभा निरख एक टक व्हे तन मन धन कियो बलहार ॥१०॥ यह भांतन जू सकल व्रजसुंदरि करत आपने मनको भायो ॥ प्रेम मुदित अखिल गुण पूरण रसिक राय तहां रसही पायो ॥११॥ फगुवा लियो दियो सर्वस्व तहां प्रफुल्लित मन तहां देहि असीस ॥ जसोदा नंदराय व्रजभूषण लाल चिरजीवो कोटि बरीस ॥१२॥ सोंधे सब फब रह्यो मनोहर तेसो ही शोभित सावल अंग ॥ मानो मदगज घस रंग संभार्‌यो करिणी यूथ लिये अपने संग ॥१३॥ यह विध खेलत सब मिल व्रजमें आनंद सिंधु बढ्यो चहुंओर ॥ प्रेम मगन निरखत लालनकों नहीं जानत कीने निस भोर ॥१४॥ अतिही उत्साह भरी व्रजरानी करत आपही बहु सनमान ॥ मागन देत अमोलिक भूषण पट अंबर कंचन मणिदान ॥१५॥ क्यों बरनें मन हीन छीन बल लीला जल निधि परम रसाल ॥ गिरिधर पिया वल्लभ श्रीविट्ठल चरण कमल रज प्राण आधार ॥१६॥

१९ राग कल्याण सब व्रज के सिरताज नंद सुत होरी खेलें ॥ सुबल सुबाहु श्रीदामा मधु मंगल युवती दल पेलें ॥१॥ कमलन मारजु होत परस्पर सुख समूह अति झेलें ॥ मधुर सुगंध केतकी ले लें मानो कामकी सेलें ॥२॥ ताल निसान पटह बाजेंबाजें मधुर मृदंग धा धिलांग धेलें ॥ स्याम बजाय मधुर मुरली रव खगमृग मुनि मन ठेलें ॥३॥ अबीर गुलाल कुंकुमा चोवा छिरकत करें बहु खेलें ॥ महँक रह्यो सोंधो चहुंदिशतें चली सुगंध की रेलें ॥४॥ अकेले कर पकरे बलदाऊ घिरि आई सब छेलें ॥

अंग विचित्र बनाय सबनके नयनन काजर मेलें ॥५॥ छुडाय लये फगुवा दे जसोमति मदन नृपति के झेंले ॥ खेलत रंग रह्यो अतिभारी विशद कीरति फेलें ॥६॥ घोष नृपति सुत स्याम तमाल राधाजू माधवी वेलें ॥ खंजन मीन लजावत रसभरे सुंदर नयन वडेलें ॥७॥ खेलत फाग घरकों चले सब गावत गीत पहेलें ॥ पिय प्यारी दोऊ श्रमित भये कहे गोविंद माला ले मेलें ॥८॥

२० राग कल्याण अरि माई हो होरी हो होरी ॥ एसी चंचल चाल चोरी काम चली हे मानो रोरा रोरी ॥१॥ बिथुरे वार सारंग ले संभारत भीजत पीठ तरक गई चोरी ॥ वेनीके फुंदना बिराजत सबहीं चली मानो दोरा दोरी ॥२॥ उडत गुलाल अबीर सुरंग स्यामा स्याम भीनी रंगजोरी ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों होय रही झकझोरा झकझोरी ॥३॥

२१ राग कल्याण लाल तुम खेलो होरी भर मुठी डार गुलाल ॥ चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर लिये भर झोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी वीन बजावत ध्वनि थोरी ॥ सूर स्याम रस वश कर लीने राधा नवल किशोरी ॥२॥

२२ राग कल्याण खेलत नवल वल्लभ पियहोरी ॥ राजत हें सब सभा सहित अरु जुरि आई नवल किशोरी ॥१॥ रही ढर पाग लाल भाल पर अरु अनुराग रंगसों चोरी ॥ रत्न जटित सिरपेच जगमगे रह्यो रवि निरख डोर रथ तोरी ॥२॥ चूनी चोली चुपरि चतुराइन चतुर नायक तन पहरे सोरी ॥ विविध भांत सों धोता ऊपर वरन सके एसो कबि कोरी ॥३॥ मृगमद साख जवाद अरगजा ओर कपूर केसर ले घोरी ॥ दामिनिंसी कामिनि प्राण वल्लभकूं आई छिरकत हसत मुख मोरी ॥४॥ मृदंग तालडफ बीन बजावत नाचत गावत हें चहुओरी ॥ रह्यो अबीर छाय चहुंदिशते लसत हें कनक वरण तन गोरी ॥५॥ होत प्रसन्न निरख भक्तन तन मृदु मुसकाय लेत चितचोरी ॥ भई रस मगन वदत नहीं काहू हें अलबेली वेश न थोरी ॥६॥ श्रमित जान जब करत आरती तनमन प्राण न देत अकोरी ॥ मुरली प्रभु वल्लभ सुख निरखत रति पति व्हे गई मति बोरी ॥७॥

२३ राग नायकी तुम बिन खेंल न रुचे लगार सुन्दर यार हो तुम हो सुघर खिलवार ॥ नारी सब मिल गावत आवत पिचकारीन की मार ॥१॥ द्वार द्वार फगुवा के कारण रोक रहन व्रजनार ॥ अंतर्यामी आनंददाता सुरप्रभु नंदकुमार ॥२॥

२४ राग कल्याण आवो मिलि ब्रज की नारी होरी धूम मचाऔ ॥ चंदन वंदन कुमकुम लै मोहन मुख लगावो तारी दे गारी गाओ ॥१॥ केसर कनक पिचकारी भरले करन धाऔ ॥ 'हरिकिसोरि' सनमुख होय धारसौ धार मिलाऔ ॥२॥

२५ राग कल्याण ऐसे ना होरी खेलिए हो कन्हैया यह नहिं खेलन कौ ढंग ॥ मैरी आँखिन में गुलाल उड़ावति आप बचावति अंग ॥१॥ आई अचानक पकरति पहुँचौ कौन करै तेरौ संग 'कृष्णजीबन लछीराम' के प्रभु कैसें पतियै ए छिनु-छिनु औरै रंग ॥२॥

२६ राग कल्याण खेलति हरि ग्वाल-सँग फागु रँग भारी ॥ इक मारत इक तारत, इक भाजत इक गाजत, इक धावत इक पावत, इक आवत मारी ॥ इक हरषत, इक लरखत, इक परखत घालहिं कौं, लोचन सु गुलाल डारि, सौंधें ढरकावै ॥ इक घूमत संग संग, इक न्यारै ह्वै बिहरत, टरत दाँव दीबेकौं, वै जो नहिं पावै ॥ इक गावत इक भावत, इक नाचत इक रांचत, इक कर मिरदंग ताल, गति-गति उपजावै ॥ इक बीना इक किन्नरि, इक मुरली इक उपंग, इक तुंबुर इक रबाब, भांति सौ बजावै ॥ इक पटहा इक गोमुख, इक आउझ इक झल्लरि इक अमृतकुंडलिकौं, इक डफकर धारैं ॥ सूरज-प्रभु बल-मोहन, संग सखा बहु गोहन, खेलत वृषभानु-पौरि लिये जात टारै ॥

२७ राग कल्याण जमुना तैं हौं बहुत रिझायौ ॥ अपनि सौंह दिय नंद-दुहाई, ऐसौ सुख मैं कबहुँ न पायौ ॥ मिले मातु पितु-बंधु स्वजन सब, सखनि-संग बन बिहरन आयौ ॥ आज अनंत भगवंत धरनि-धर, सुबस कियौ प्रिय गान सुनायौ ॥ भयौ प्रसन्न प्रेम-हित तेरे, कलिमल हरे

जु इहिं जल न्हायौ ॥ अब जिय सकुच कछू मति राखहि, माँगि सूर अपनौ मन-भायौ ॥

२८ राग कल्याण नंद कुंवर रंग गहर-गरबीली ॥ निस दिन पिय संग लागी डोलति छकी छबीली ॥१॥ ताहीं तैं मान करति सबहिन तैं अंग अंग रूप-रसीली। 'सरस रंग' रस जानति सब बिधि तू ही सुघर-नवेली ॥२॥

राग भूपाली

१ राग भूपाली होरी खेले री नंद कौ नंदन सुखदाई ॥ रंगमंगे ग्वाल बाल सब नांचति कहा कहैं सुंदरताई ॥१॥ किन्नरी झाँझ ताल ढ़फबीना मुरली महुवर बाजति माई ॥ चोवा चंदन अरगजा कुंमकुम मृगमद केसर नीर मिलाई ॥२॥ गोपन करन कनक पिचकाई सुरंग गुलालन फैंट भराई ॥ हँसि हँसि बरखति जुबती जूथ पै बंसन लेति तरूनी तब धाई ॥३॥ प्रीतम आंनि गहे प्यारी तब कर तैं मुरली लई छिनाई ॥ फगुवा मँगाई दियो सबहिन कौं तब ही जाई मुरली भलैं पाई ॥४॥ देति असीस उलटि गोपी जन यह ब्रजराज करो ब्रजराई ॥ चढ़ि बिमान इंद्रादिक आयै कुसुमन की बरखा जु कराई ॥५॥ गोप बधू तन बारति सब ब्रज मंगल गाई ॥ तिहिं अवसर तन मन धन प्रफुलित 'रघुबीर' बारनैं जाई ॥६॥

धमार के पद - राग ईमन

१ राग ईमन एरी चलौ सखी तहाँ जैये ॥ नव निकुंज में खेलि मच्यौ है रंग-रंग रंगनि रंगैये ॥१॥ तजि अभिमान समुझि मन सखिरी, स्याम मिले सुख पैये ॥ अरसपरस, आलिंगन लै लै चुंबन अधरन दैयै ॥२॥ करौ सिंगार सुभग तन गोरे मोतिन मांग भरैये ॥ सारी सेत पहिरि तनसुख की, ओलि गुलाल भरैयै ॥३॥ 'रसिक' प्रीतम प्यारे सौं मिलिए अंतर भाव जनैयै ॥ इहि बिधि फागु सुहागु सखी री आनंद सिंधु बढ़ैयै ॥४॥

२ राग ईमन छिपि जिनि जैयो हो बनवारी ॥ खेलनि आँई

हैं ब्रज नारी ।। बहुत सुगंध, लाईं अंग लावनि निकसी चतुर खिलारी ।।१।। बा दिन तुम सौं बोली नाँही लै सुगंधि आँखिन में डारी ।। म्हौं मांडे बिनु जानि न दैहौं, 'सूर' प्रभु सौंह तिहारी ।।२।।

३ राग ईमन लाल रस मांते हो खेलति डोलत फाग ।। संग लियै गोकुल के लरिका उड़वति बिबिधि पराग ।।१।। कोऊ लियैं पिचकाई छिरकति कोऊ कुंमकुम जल लाग ।। कोऊ अबीर गुलाल उड़ावति मैं न रुकायौ माग ।।२।। कोऊ मधुरे सुर बैंनु बजावति कोऊ मचावति राग ।। 'रसिक' प्रीतम प्यारी संग बिहरति कंचन मिल्यौ है सुहाग ।।३।।

४ राग ईमन हम-तुम मिलि दोऊ खेलें होरी नव निकुंज में जैये ।। अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि रंग परस्पर नैये ।। और सखी कोऊ भेद न जानति ग्वालनि हूँ न जनैये ।। 'परमानंद' स्वामी-संग खेलत मन-भावत सुख पैये ।।

५ राग ईमन माई री होरी खेलनि जाईये जहँ खेलति नंद कुमार ।। राग रँग अरु सुर संगार बाजति मृदंग धु धु कार ।।१।। रँग भरे औ रंगन सौ छिरकति पिचकारिन सौं देति है मार ।। 'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु कौं मुख मांड्यो हौ अरु दैउ गारि ।।२।।

धमार के पद - राग रायसों

१ राग रायसों सकल कुंवर गौकुल के निकसे खेलन फाग ।। हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ।।१।। ओलन बुका वंदन रोरी हरद गुलाल ।। बाजत मधुरे महुवर मुरली ओर डफ ताल ।।२।। कनक कलश केशर भरे कांवर किंकर कंध ।। ओर कहाँ लग कहिये भाजन भरेहें सुगंध ।।३।। हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ।। भीज लगे तन शोभित रंगरंग रंजित चीर ।।४।। फूलन की कर गेंदुक करत परस्पर मार ।। छूटत फेंट लटपटी विखर परत घनसार ।।५।। कोलाहल ग्वालन को सुन गोपिका अपार ।। टोलन टोलन निकसी कर सोल्हे शृंगार ।। रूप माधुरी जिनकी कविपें वरणी नजाय ।। तिन्हे सची रती रंभा पगहू परत लजाय ।।७।।

अति सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ।। तिन्हे सुन्यौ नहीं भावत वीना नाद कठोर ।।८।। ललित गली गोकुल की होत विविध विध केल ।। अगर सहित कुंकुम की चली धरणी पररेल ।।९।। गयो गुलाल गगन चढ भये सुर सदन सुरंग ।। मानो खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ।।१०।। वन्यों वनिता वदनन पर कृष्णागर को पंक ।। परिपूरण चंदन ते मानो च्वे च्वे चल्यो कलंक ।।११।। छिरकत हरि ना ना रंग शोभित गोपिन गात ।। मानो उमग्यो अंतरतें अंचल प्रेम चुचात ।।१२।। बोले ग्वाल बराती हमारे हरि को व्याह ।। दुलहनि गोपा किशोरी ।। मोहन सबको नाह ।।१३।। यह सुन गोपी कोपी हलधर पकरे जाय ।। अंजनदे दृग छाँडे मृगमद मुख लपटाय ।।१४।। बहोर सिमिट सब सुंदरी घेरे मदन गोपाल ।। कनकदली मंडलमें शोभित तरुण तमाल ।।१५।। तब वृषभान किशोरी हरि भर लीने अंक ।। कही न जात ता सुख की मानो निधि पाई रंक ।।१६।। बरण सके को हरिके अगणित चरित्र विचित्र ।। जिहीं तिहीं भांत गदाधर रसना करों पवित्र ।।१७।।

२ राग रायसों मिल जु डंडा रस खेलहीं नंदराय जू की पोर ।। आनंदसों मनभर रह्यौ नवल किशोरी किशोर ।।१।। लटकत फिरत रगमगे इत गोपी उत ग्वाल ।। मानो छुटी मदन की मत्तगजन की ढाल ।।२।। गारीदेत सुहावनी इत सब गोपिका नार ।। उत सब होलें बोलें बालक नंदकुमार ।।३।। बाजे बहुविध बाजें ताल मृदंग उपंग ।। झांझ झालर किन्नरी मुरली डफ मुखचंग ।।४।। चोवा चंदन छिरकहीं अबीर गुलाल सुरंग ।। खेलत खेल गह गह्यो लाडली लालन संग ।।५।। मृगमद केसर घोर कें लीने कर लपटाय ।। ओचका आवत दूरतें भाजत मुखहि लगाय ।।६।। तब वृषभान दुलारी पकरे मदन गोपाल ।। मानो कंचन वेली लपटी स्याम तमाल ।।७।। झूमरही चहुंदिशते नेंक न राखत लाज ।। मानो भूतल उदयो नक्षत्र सहित उडुराज ।।८।। काजरलोचन आंजकें कटिपट लेंहि उतार ।। आलिंगन पियदेत हें ये सब व्रजकी नार ।।९।। गिरिधर अधर सुधा कों कोऊ पीवत न अघाय ।। हा हा खाउतो छांडें प्यारी कों सिरनाय ।।१०।। झटकत गहि मोतिन लर बूझत चिबुक उठय ।। मन मान्यों फगुवा लियो पीतांबर दियो आय ।।११।।

श्रीगोकुलगाम सुहावनों कीनी बहुविध केलि ।। चिरजीयो दूल्हे दुलहनि मिल मन्मथ दलपेलि ।।१२।। सिमिट सकल व्रजवासी सूरसुता चले न्हान ।। विमल वसन तन पहरे देत बिप्र न बहुदान ।।१३।। कुसुम वृष्टि सुरपति करें लीला देखें आय ।। श्रीवल्लभ चरण प्रतापते कृष्णदास मुखगाय ।।१४।।

३ राग रायसों खेलन कों स्यामाजू चली गिरिधर पियपास ।। नवसत साज सिंगारहीं चंदमुखी मृदुहास ।।१।। सखी जुरी चहुंदिशतें लेखेलन को साज ।। ज्यों करिणी मदमाती ढूंढत मद गजराज ।।२।। बीनर बाव किन्नरी वाजत मृदंग सुचंग ।। ललितादिक मध्य स्यामा गावत सब मिल संग ।।३।। श्रवण सुनत गिरिधर पिय श्रीस्यामा को राग ।। अंकभरे प्यारीकों लूटत परम सुहाग ।।४।। करसों करजोरे बैठे कुंज कुटीर ।। ललित लता गुच्छन में बोलत मधुकर कीर ।।५।। केसर मृगमद रोरी सुरंग गुलाल अबीर ।। पियप्यारी मिल खेलत छिरकत चंदननीर ।।६।। बीरी खात खवावत हरखत मुख हसदेत ।। आलिंगन अति रससों कंठ भुजा भरलेत ।।७।। कुंज महल में क्रीडत दंपति अति सुखरास ।। यह लीला नितगावे अतिवड भागीदास ।।८।।

४ राग रायसों निकसे खेलन होरी हलधर गिरिधरलाल ।। सुबल सुबाहू श्रीदामा संग सखा व्रजबाल ।।१।। बन ठन बन ठन निकसे चले यमुना के तीर ।। चोवा चंदन मृगमद फेंटन भरे अबीर ।।२।। करन कनक पिचकाई केसर भरी कमोर ।। उडत गुलाल सुरंग रंग मानो उनयो घनघोर ।।३।। गयो हे गुलाल ऊंचोचढ द्रुमभये सकल सुरंग ।। वाजत भेरि दमामा आवज ताल मृदंग ।।४।। सुन ग्वालिनि कोलाहल निकस चली व्रजनारि ।। झुंडन मिल आई सबदेत भामती गारि ।।५।। करन पोहोपन वलासी करत परस्पर मार ।। अचरा ओट पिचकारन मारत धारसोंधार ।।६।। सिमिट सकल व्रज सुंदरी कर गुलाल अंधियारी ।। घेरले गई लाल कों ललिता भर अंकवारी ।।७।। नयनन अंजन आंजकें मृगमद मुख लपटाय ।। हो हो होरी बोलत हँस कर ताल बजाय ।।८।। स्यामा के नील वसनसों जोरत गांठ बनाय ।। दोऊहें अति सुंदर यों कहि लेत बलाय ।।९।। छीनत मुरली कर तें एक लकुटिया छिनाय ।। एक कहत तुम फगुवा देहु हमें व्रजराय ।।१०।।

मेवा वहुत मंगाई भूषण वसन अमोल ॥ देत असीस सकल गोपीजन अंचल ओल ॥११॥ चिरजीयो यह जोरी युग युग गोकुल गाम ॥ विलसो सदा यह सुख श्रीबृंदावन ठाम ॥१२॥ गोवर्धनधर विहरत यह बिधफाग विलास श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल पदरज गावत दास ॥१३॥

५ राग रायसों ऊँचौ सौं गोकुल गाँम जहँ हरि खेलति होरी ॥ चलौ सखी देखनि जाई पीया अपने कौं चोरी ॥१॥ बाजति ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ इत गोपीन कौं झुंड उते हरि हलधर जोरी ॥२॥ बूका सुरँग गुलाल उड़ावति भरि भरि झोरी ॥ गाबति दै दै गारि परसपर भाँमिनि भोरी ॥३॥ नबल छबिले लाल तनी चोली की तोरी ॥ राधा जू चली रिसाई ढीठ सौं खेलै को होरी ॥४॥ खेलन में कैसौ मान सुनौ बृषभानु किसोरी ॥ 'सूर' सखी उर लाई हँसति भुज गहि झकझोरी ॥५॥

६ राग रायसों होरी कौ सुख अद्‌भुत मोपै बरन्यौ न जाई ॥ अति आनंद हुलसति मन प्रेम परसपर छाई ॥१॥ प्यारी राधा सँग जुरि जुरि सब ब्रजनारी आई ॥ ग्वाल बाल नँदलाल जु मन में सबु सुख पाई ॥२॥ अबीर गुलाल अरगजा कुँमकुमा छिरकै रँग ॥ कुंज कुटिर में बैठे राधा गिरिधर सँग ॥३॥ ललिता श्रीमुख माँड़े अंजन नैन बनाई ॥ तारी दै सब नारी मुख सौं होरी गाई ॥४॥ राधा प्यारी दुलहिनि दुल्हे नंदकुमार ॥ सीस सेहरौ सोहै छबि लागति जु अपार ॥५॥ गारी गावैं हिलिमिलि बरसाने की नारी ॥ बाजे बहु बिधि बाजैं सब मिलि दै कर तारी ॥६॥ कर सौं कर तब जोरे फिरि भाँवर लेति ॥ अँचल ले दोऊन के गाँठि सबै मिलि देति ॥७॥ आरत्तो कर ललिता जु सुख सौं मंगल गाई ॥ देति असीस सबै मिलि 'सूरदास' बलि जाई ॥८॥

धमार के पद - राग जेजेवंती

१ राग जेजेवंती माई आज तो मोहन संग रंगभरी खेलोंगी ॥ लोकलाज पायनसों पिछोंडी पेलोंगी ॥१॥ निंदरोंगी आरज पंथ नैंकु न डरोंगी ॥ निधरक अंकवार पिया कों भरोंगी ॥२॥ केसर के रंग रंगीलो

करोंगी ।। बेसरि मोती काजें फगुवा कों अरोंगी ।।३।। ललित त्रिभंगी रस ढरन ढरोंगी ।। रति पति रण ब्रजपति सों लरोंगी ।।४।।

२ राग जेजेवंती होरी खेलन आई आज हो हो हो हो होरी सरसानी मधुवन की नारी ।। अपने पतिन तज तज धांई ।।१।। घेर लयो गोकुल चहूंओर ते हरि पकरवे की लाह लगाई ।। ग्वाल बाल सब भये हें दुचिते ललिता गहि हलधरजू कों लाई ।।२।। आतुर वश जब भये लालजू भूल गये सबही चतुराई ।। ऐसी मार परीहे परस्पर नंदपौरि यमुनां तांई ।।३।। फेंट पकर कोऊ फगुवा मांगत कोऊ बंदन रोरी लेधाई ।। अंचल की ढाल मुख ऊपर नयन थकी सेनन बान चलाई ।।४।। नवसत साज चली सजनी सब मनो छूटे गज गहे हें लुगाई ।। 'सूरदास' हलधर दोऊ रोके लगहु गुहार गोपाल गुसांई ।।५।।

३ राग जेजेवंती फाग अनुराग भरे खेलतहें गिरधारी एक युवती मध्य राधा सुकुमारी ।। फेंटन अबीर भरे संग संग रंग करें लिये हाथ रंग भरी कनक पिचकारी ।।१।। वाजत मृदंग ताल भेरि दुंदुभी रसाल वेना बीन डफ सहनाई ध्वनि सुखकारी ।। उत्सव गोपीजन परम मुदित मन हँस हँस रसभरी गावत मीठी गारी ।।२।। आय जुरे दोऊ टोल आनंद ह्वदे कलोल छिरकत गोपगण देख देख व्रजनारी ।। झोरी भरले गुलाल उडवत ब्रजबाल मच रही गगन चहूं दिश अंधियारी ।।३।। ताही समें प्यारी धाय पकरे मोहन जाय गहि छल बल आंख आंजत अनियारी ।। अंग अंग लपटाय लये लाल उरलाय यह छबि निरखत दास जन बलहारी ।।४।।

४ राग जेजेवंती होरी खेलेरी नंदको नंदन सुखदाई ।। रगमगे ग्वाल बाल सब नाचत कहा कहें सुंदरताई ।।१।। किन्नरी झांझ ताल डफ बीना मुरली महुवर बाजत माई ।। चोवा चंदन अरगजा कुंकुम मृगमद केसर नीर मिलाई ।।२।। गोपन करन कनक पिचकाई सुरंग गुलालन फेंट भराई ।। हँस हँस वरखत युवती यूथ पर वसन लेत तरुणी तब धाई ।।३।। प्रीतम आन गहे प्यारी तब करते मुरली लई छिनाई ।। फगुवा मगाय दियो सबहिनकों तबही जाय मुरली भलें पाई ।।४।। देत असीस उलट गोपीजन यह व्रजराज

करो व्रजराई ।। चढ विमान इंद्रादिक आये कुसुमन की वरखाजु कराई ।।५।। गोपवधू तन वारत सब व्रजजन संग लगाई ।। तिहिं अवसर तन मन धन प्रफुल्लित रघुवीर वारनें जाईं ।।६।।

५ राग जेजेवंती फाग अनुराग भरे खेलति है गिरिधारी इक जुवति मधि राधा सुकुमारी ।। फैंटन अबीर भरे संग सखा रंग भरै लियै हाथन रँग भरी कनक पिचकारी ।।१।। बाजति मृदंग ताल भेरि दुंदुभि रसाल बीना बैनु ढफ सहनाई धुनि सुखकारी ।। उत सब गोपी जन परम मुदित मन हँसि-हँसि रस भरी गावति मीठी गारी ।।२।। आई जुरे दोऊ टोल आनँद हिये कलोल छिरकति गोप गन देखि-देखि ब्रजनारी ।। झोरी भरि लै गुलाल उड़वती ब्रजबाल मचि रही गगन चहूं दिस अँधियारी ।।३।। ताही समैं प्यारी धाँई पकरे मोहन जाई गहि छल-बल आँजि अँखियाँ अनियारी ।। अंग-अंग लपटाई लाल उर लाय लये, यह छबि निरखति 'दासजन' बलिहारी ।।४।।

धमार के पद - राग दरबारी कान्हारो

१ राग दरबारी कान्हरो हा हा व्रज नागरि आखें जिन आंजो ।।ध्रु०।। जो आंजो तो आप आंजिये ओर हाथ जिन देहो ।। हांसि हानि दुहुं विध जोखो समझ बूझ किन लेहो ।।१।। सुन हें मेरे सखा संग के हंस हंस देहें तारी ।। बडे खिलार कहावत हें हरि आंख कराई कारी ।।२।। परम प्रवीण जान पिय जिय की मृदु मुसिकाय निहारी ।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुकों रीझ भरत अंकवारी ।।३।।

२ राग कान्हरो खेलत फाग राग रंग बाजे मृदंग धाधि लंग ओर आन आन बाजे ।। कंचन की पिचकाई सु केसर भरकें करन लाई वरण वरण वसन साजें ।।१।। सुन सुन व्रज वनिता बाहिर निकस निकस आय ठाडी भई लाल भरवेकों तिनसों वचन कहत लाजें ।। काहूकों पटपीत गहावत काहूकों निरख मन मनावत वृंदावन चंद विराजें ।।२।।

३ राग कान्हरो अरी होरी खेलन जैयें सांवरे सलोनेसों ।। बडे बडे माट भराय केसरसों पिचकाइन छिरकैयें ।।१।। खेलत खेलत रंग रह्यो

अबीर गुलाल उडैयें ॥ नंददास प्रभु होरी खेलत आनंद सिंधु बढैये ॥२॥

४ राग कान्हरो हो हो होरी व्रजमंडल मोहन खेलें स्यामा स्याम विराजत विविध भांत भुजमे लें ॥१॥ दुहुं दिश दुंदुभी बाजें मुरज डफ मुरली सरस सुहाई ॥ तार तार कठतार कर में छूटी अनंग दुहाई ॥२॥ कोऊ गावे कोऊ नृत्य करें कोऊ देय असीस सुधंग अंग दिखावे ॥ कोऊ चंचल गति उरपति परले नयनन अंग नचावे ॥३॥ आसपास युवतिन की माला वीच फिरत बनवारी ॥ मानो जलज कलिन में अलि मिल सुंगध हितकारी ॥४॥ सघन कुंज वृंदावन अंतर फाग विचित्र बनायो ॥ मानों अखिल लोक को सर्वस्व हरि यह वार जनायो ॥५॥ यह विध छबि सों क्रीडत कान्हर वरसाने की पौरी ॥ मुरारिदास प्रभु की सुंदरता गोप वधू भई बौरी ॥६॥

५ राग कान्हरो मैं जब जानूंगी सुधर खिलैया होरी खेलन मेरें आवोगे ॥ हमरी चुनरीया रंगनिभिजोई अपनी पाग बचाओगे ॥१॥ चोवा चंदन अगर अरगजा मृगमद सोंधो उडाओगे ॥ जाऊं लाल बलिहारी तिहारी अपुनो कीयो पाओगे ॥२॥

६ राग कान्हरो आज व्रजवधु व्रजनाथ वृंदावन में ताल बांसुरी बजावें हो ॥ सबही को मन हुलास राग कान्हरो गावें हो ॥१॥ चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर गुलाल उडावें ॥ केसर कुंकुमा पिचकाई भर भर छिरकें ओर छिरकावें ॥२॥ सूर के प्रभु कों गण गंधर्व जीव जिते सुरनर मुनि सब देखन आवें हो ॥ हरख हरख कें तन मन धन वारत विमानननते पुष्प वृष्टि करावें हो ॥३॥

७ राग कान्हरो रंग भर खेलत हें हरि होरी ॥ रत्न जटीत पिचकाई कर लीये छिरकत नवल किशोरी ॥१॥ ललिता प्रीतम को मुख मांडत केसरसों रंग बोरी ॥ विचित्र विहारि विहारिन परस्पर आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥

८ राग कान्हरो मोसों होरी खेलन आयो ॥ लटपटी पाग अटपटे पेचन नयनन वीच सुहायो ॥१॥ डगर डगर में वगर वगर में सबहि के

मन भायो ॥ आनंद घन प्रभु कर दृग मीडत हँस हँस कंठ लगायो ॥२॥

९ राग कान्हरो होरी खेलत लाल ललना संग ॥ विविध बन बन आंईं जुर ब्रज युवती बहु रंग ॥१॥ प्रथम देख हरि तन विथकित भई मूरतिवंत अनंग ॥ नयन बाण लागत उर अंतर भई विकल सब अंग ॥२॥ तज कुल लोक लाज तन की सुध कर मर्यादा भंग ॥ उमग उमग विलसें प्रीतमसों बांध गुलाल उछंग ॥३॥ कर विचार मति चारु सबे मिल अपने अपने संग ॥ जुरी जाय हरि सुधा सिंधुसों बढी प्रवाह मानों गंग ॥४॥ कोऊ लेकर पकर पिय को कर नृत्य करे थेई थुंग ॥ कोऊ पिय निज भुजसों भुज भर भेटे उरज उतंग ॥५॥ कोऊ बजावत वेणु मधुर स्वर कोऊ सरस उपंग ॥ कोऊ कर कठताल बजावत कोऊ मृदुल मृदंग ॥६॥ कोऊ ठाडी पिय मुख निरखत गहि भुज लता लवंग ॥ कोऊ लेन उगार धरत मुख पीय कपोल पर अंग ॥७॥ कोऊक निकट जाय प्रीतम के मृदु बजाय मुख चंग ॥ कर कटाक्ष हँस हँस उत चितवत जीत्यो दृगन कुरंग ॥८॥ चंचल चपल कहांलों वरणों मेट्यो मान तरंग ॥ अंग नखसिख प्रकट देखियत सिर मुक्ताफल मंग ॥९॥ कबहुंक देख देख पिय को मुख नाचत सकल सुधंग ॥ वीच वीच वचन विविध मुख बोलत कूजत मानों विहंग ॥१०॥ कबहुंक मुख सरसिज पर फेरत अति चंचल द्रग भृंग ॥ कबहुंक धाय अधर रस पीवत चित उपज्यो रति रंग ॥११॥ यह विधि पिय संग खेलत मेट्यो डसी मेन भुजंग ॥ अति रसमद कछुहि नहिं जानत भई भाव पर पंग ॥१२॥ यह लीला सुमिरत रसिक मन हरि पद रति अति अनिषंग ॥ श्रीवल्लभ पद कमल विमल मति गावत उठत तरंग ॥१३॥

१० राग कान्हरो खेलत फाग नंद नंदन ओर वृषभान दुलारी इतही गोप गण उत युवतीजन लोक लाज तज देत परस्पर गारी ॥१॥ वाजत सुर मंडल पिनाक वीना स्वर भेरि सरस सहनाई रुचिकारी ॥ अमृत कुंडली मदन भेरि ओर राय गिड गीडी पटह निसान हमारी ॥२॥ सरस फुलेल मेल मिल अंबर एक एक तन रहि न संभारी ॥ सुंदर करन कनक पिचकाई भर भर छिरकत सन्मुख व्हे गिरिधारी ॥३॥ तब ले ले वंसन

कर धाई राधा संग सब गोकुल नारी ॥ चहुंदिशते सब घेर हरि पकरे गोप बालक देत किलकारी ॥४॥ अंचल पकर चंचल दृग पोंछत अंजन ले आंजत आंख ढरारी ॥ गांठ जोर तृण तोर कमल मुख ऊपर सब मिल देत अपन पोवारी ॥५॥ फगुवा को मिस कर आंकों भर क्रीडत कुंजन कुंज विहारी ॥ तोलों ले भाजी मुरली ललिता करते पुन उलट गह्यो अचरारी ॥६॥ तब बोली राधा हम फगुवा लियो करत वीच मुकरत कहारी ॥ तोक मंगाय दियो फगुवा हस कहत सबनसों मुरली देहु हमारी ॥७॥ उडत गुलाल सुगंध घोख में परम रंग बाढ्यो अति भारी ॥ वरखत फूल देवगण हरखत प्रेम मगन व्हे निरख जात बलहारी ॥८॥ देत असीस सकल गोपीजन चिर जीयो व्रजराज सदारी ॥ जाके राज करत निशदिन आनंद घोख मे होहु सकल सुखकारी ॥९॥ यह विध खेल फाग अनुराग बढ्यो आये नंद की पोर जहांरी ॥ आये मन भाये सबके रघुवीर देख बल बल जात तहांरी ॥१०॥

धमार के पद - राग नायकी

१ राग नायकी व्रज में खेलेरी धमार मोहन प्यारोरी नंदको ॥ संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछु बाढ्यो या सुख सिंधु उडुचंदको ॥१॥ वाजत ताल मृदंग उपंग किन्नरी ऊपर बाढ्यो सुख आनंदको ॥ नंददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत ओर शोभा गिरिधर मेन फंदको ॥२॥

२ राग नायकी नारी गारी दे गई वे माई हो हो होरी आई ॥ मदन मोहन पिय बांसुरी बजाई श्रवण सुनत गृह तज जुरधाई ॥१॥ चंद्रावलि अंजन ले आई पकर मोहनजु की आंख अंजाई ॥ फगुवा विन दीयें कैसें जेहो धोंधी के प्रभु कुंवर कन्हाई ॥२॥

३ राग नायकी होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफ लिये बजावें ॥ गाय गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावे ॥१॥ सबे अरगजे मरग जे बागे नयन से न दे रस उपजावे ॥ कहियत नायक दक्षण-लक्षण आप गदाधर नाम कहावे ॥२॥

४ राग नायकी लाल गुलाल की मार रस भरे खेलत हरि होरी ॥

रत्न खचित पिचकाई सोंधे भर छिरकत नवल किशोरी ॥१॥ ललिता मोहन को मुख मांड्यो केसर सोंपट बोरी ॥ विचित्र विहारी विहारिण परस्पर आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥

५ राग नायकी आलीरी भरत मोहन जित तित मोकों गोहन लाग्यो डोले ॥ मांडत वदन अबीर मुठीले औचक आय अनबोले ॥१॥ हों दृष्टि बचाय चलत हटसों पट गहि घुंघट खोले ॥ गिरिधर उर धर सब रस लीनों वस कीनी विन मोलें ॥२॥

६ राग नायकी खेले खेले मोहन कुंज गली ॥ रंग रंगीली वृषभान सुता संग राजत बहुत अली ॥१॥ ताल मृदंग बांसुरी वीना मधुरे मिल बजावत चली ॥ तेसोही स्वर गावत सब सुंदरी रंग रंग रली ॥२॥ कर गुलाल राधे जब छिरकत शोभित मानों कमल कली ॥ कुंज विहारी जू अरगजा केसर छिरकी भांत भली ॥३॥ सर सरिता खग मृग सुन मोहें सबहिन अपनी गति बदली ॥ गुण रूपके पिय प्यारी को मुख निरखत हें सगली ॥४॥

७ राग नायकी खेलेरी धमार मोहन प्यारी नंद को ॥ संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछु बाढ्योरी सुख सिंधु उडुचंद को ॥१॥ बाजत ताल मृदंग उपँग किन्नरी ऊपर बाढ्यो सुख आनंद को ॥ नन्ददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत और शोभा गिरिधर मैन फँद को ॥२॥

८ राग नायकी लाल गुलाल की धूम मची है रसभर खेलत है हरि होरी ॥ रतन जटित पिचकाई कर लिये छिरकत रसिक नवल किसोरी ॥१॥ ललिता प्रीतम को मुख मांड्यो केसर सों पट बोरी ॥ 'बिचित्र' बिहारी देखि रीझे परस्पर आनंद सिन्धु झकोरी ॥२॥

९ राग नायकी सुनी डफ दौरी आई बाल कहां जेहो लाल ॥ मुरली छिनाई लई स्यामजु बेंदी दीनी भाल ॥१॥ काहु कर अरगजा लीनो काहु कर अबीर गुलाल ॥ कोऊ अंगुरिन करि आंजत अंजन कोऊ पहरावत माल ॥२॥ भली भई हरि नीके पाये पूजवत मनके ख्याल ॥ 'नंददास'

प्रभु छांड़ि हठीले टूटेगी मोतिनमाल ॥३॥

१० (श्री राग नायकी श्री) होरी खेलियै हो जुबती बृंद में जाई ॥ अनुरागी पागी जु प्रेम सों नब जोबन अधिकाई ॥१॥ एकु-एकु तैं नवल निपुन बनी मनमथ मद अकुलाई ॥ ब्रज तरुनी हरनी दृग आई करिनो गति समुहाई ॥२॥ रहि न सकें रोकें टोकें हूँ निकसे अति अकुलाई ॥ नब नागरि नब नागर तासौं भूषण बसन बनाई ॥३॥ अंतरंग दस छैकु सखी पै कुँमकुम कलस भराई ॥ सुरँग गुलाल लये ओलिन में सौंधे मुठी बधाई ॥४॥ सनमुख श्री बृषभानु नंदिनी नख सिख लखि छबि छाई ॥ बारि पुहुप अंजुली प्यारी पै पुनि-पुनि लेति बलाई ॥५॥ ललिता बूझति कौंन गांम और अपनौं नाम बताई ॥ अबलौं मिली न कबहूँ देखी चपल दृगंचल माई ॥६॥ सखी संग की अधिक सयानी बोली मृदु मुसिकाई ॥ नंद गाँम नंद रावर ही में बसैं परम पद पाई ॥७॥ राधे जू कौं सोंज फाग की पठई जसुमति माई ॥ पुलकित तन कीरति सुकुमारी तन-मन मोदन माई ॥८॥ अरी भटु सुनि सुंदर तेरो रूप अनूपम माई ॥ स्याम अंग में सहज लुनाई हरि की परति लखाई ॥९॥ तब स्यामा मथि मृगमद मलयज प्यारी उर लपटाई ॥ कठिन उरज पानि परसत हीं जायो अनंग तन आई ॥१०॥ केसर खोर संवार भाल दै बंदन बिंदु बनाई ॥ कोमल कर कर सुभग कपोलन सुरंग गुलाल लगाई ॥११॥ फिरि कर लई कुँमकुमा रंग सौं भरि कनक पिचकाई ॥ तकि-तकि सब ब्रज जुबती छिरकी बहुत अबीर उड़ाई ॥१२॥ ता धूंधरि में नव स्याम जू प्यारी उर लपटाई ॥ आलिंगन परिरंभन दीनौं गुपत प्रीति प्रकटाई ॥१३॥ हियै हरखि अति बढ्यों दुहुँन के पूरी मन के भाई ॥ ब्रजनारी गारी गाबति हें आनंद राई मल्हाई ॥१४॥ पलट भेख निज नंद लाड़िले हो हो बोले आई ॥ आधिक बार अति चतुर ग्वार सब रही अति अचरज पाई ॥१५॥ अद्भुत हास मच्यो जुबतिन में रंग रह्यो सरसाई ॥ काल्हि हमारे बगर सबै तुम खेलौ दैंडा रस आई ॥१६॥ यह बिधि खेलति फिरति सकल ब्रज फागुन के गुन गाई ॥ 'ब्रजपति' चरन कमल रज बंदित ब्रज जन सीस नबाई ॥१७॥

११ राग नायकी होरी कान्ह पियारी रगमगे होरी खेले री ॥ उड़त गुलाल मानो अरुन उदित रवि कमल कनक की बेले री ॥१॥ जमुना तट द्रुम कुसुम माधुरी करी सुगंध की रेले री ॥ 'ब्रजाधीश' प्रभु अलि धुनि गावत गावत रतिपति छबि पेले री ॥२॥

धमार के पद - राग अडानो

१ राग अडानो गावत धमार आई व्रज की सुकुमार नार ॥ चित्र अंकित डफ संवार तृण टकोर अंगुरी ढार बजवत रिझवार ग्वार ॥१॥ सुन निकसे सुघरराय अर्भ कलीने बुलाय शंख शृंग चंग उपंग महुवर बंसी सहनार ॥ घुघरू घंटा घडियाल कंस ताल कठ ताल दुंदुभी मृदंग राग रंग होत नंद द्वार ॥२॥ चोवा मृगमद गुलाल मुख मंडित किये गोपाल केसर के सुत न पुंज कंचन कर सीसवार ॥ पिचकाई करन लाईं धारा छूटत सुहाई सहचरी समीप आय छिरक रही हार हार ॥३॥ अति विचित्र बाल मित्र विरहत मिल युवति युथ गावत हें सुर संयुत होरी के गीत गार ॥ मुरारी दास प्रभु गोपाल फगुवा दीनो संभार दे असीस उलट चली रूप माधुरी निहार ॥४॥

२ राग अडानो आवें रावल की ग्वार नार गोकुलते खेल ॥ शिथिल अंग लज्जित मेन मोहन रंग रंगे नयन पीक लीक अरचि एन किये रति केल ॥१॥ अंस न अवलंब पांति प्रफुल्लित लपटात जात हसन दशन कांति जुही ज्यों न रही फेल । पुलकित इत रोम पांति सोंधे सब सग बगात केसर के रंग सिंधु प्रेम लहरि झेल ॥२॥ सब वेश नव किशोरी मन्मथ की मटक मोरी प्रीतम अनुराग फाग बाढी रंग रेल ॥ व्रजपति रिझ बार पाय अचयो रस मन अघाय भोन गोन काज राज हंस न गति पेल ॥३॥

३ राग अडानो नंदलाल खेलें फाग सब मिल भर भर अबीर गुलाल ॥ एक गोरी एक सांवरी सूरत करत नये नये ख्याल ॥१॥ प्यारी कर कठताल बजावत बिच बिच मोहन मुरली रसाल ॥ रसिकराय रस वश भये खेलत मोहि रही व्रज बाल ॥२॥

४ राग अडानो गावें धमार तान तरंग वाजें उपंग चंग खेलत फाग रंगे ॥ केसर चोवा गुलाल ले आई व्रज की बाल कंचन तन विविध वसन मोतिन भर मंगे ॥१॥ सोंधो ले मुख लगाय नयनन काजर सुहाय परसत सब अंग सुधा सिंधु मिली गंगे ॥ वल्लभ पिय रस विलास केलि कला सुख निवास तन मन धन नोछावर वारों कोटि अनंगे ॥२॥

५ राग अडानो खेलत हें व्रज में हरी होरी ॥ ग्वाल बाल ललना संग लीने देत कूंक मिलव्रज की खोरी ॥१॥ अरगजा वाद कुंकुमा केसर चंदन वंदन रोरी ॥ सरस फुलेल अबीर अरगजा सुरंग गुलाल लियें भर झोरी ॥२॥ सुर मंडल मुख चंग पखावज विच मुरली मधुर ध्वनि थोरी ॥ श्रवण सुनत आई व्रज सुंदरि संग लियें वृषभान किशोरी ॥३॥ गावत फाग राग केदारो नाचत रंग भरे दुहुं ओरी ॥ तिहिं अवसर पकरे श्रीदामा आंजत नयन कहत हो होरी ॥४॥ रत्न जटित आभूषण अंबर और दई हँस पीत पिछोरी ॥ देत असीस चलीं सब गोपी नंद सुवन युग युग जीवोरी ॥५॥ कुसुमन वृष्टि करत इंद्रादिक आये खेल फेर सिंघ पौरी ॥ गोकुल नाथ वारत तन मन धन बल बल बल बल की नोरी ॥६॥

६ राग अडानो ए नैना नैननि सौं खेलै होरी ॥ लाल लाड़िली गुलाल उड़ावति पलकन की करि झोरी ॥१॥ ऊघरत, मूँदत मुठि चलावति, कर-कर बैनन चोरी॥ 'हरिबल्लभ' प्रभु खेलैं होरी आनंद सिंधु झकोरी ॥२॥

७ राग अडानो खेलै-खेलै मोहन कुंज गली॥ रँग-रंगीली बृषभानु सुता सँग राजति बहुत अली ॥१॥ ताल मृदंग बाँसुरी बीना मधुरे मिलि बजावति चली ॥ तैसोही सुर गावति सब सुंदरि रंग-रंग रली ॥२॥ कर गुलाल राधे जब छिरकति सोभित मानौं कमल कली ॥ कुंज बिहारी जू अरगजा केसर छिरकी भाँति भली ॥३॥ सर सरिता खग मृग मुनि मोहें सबहिन अपनी गति बदली ॥ गुन रूप पिय प्यारी को मुख निरखति हैं सगली ॥४॥

८ राग अडानो नवरंग पिय नवरंग प्यारी सौं बनि-ठनि हिलमिलि

खेलें फाग ।। नवरँग पीत-बसन नवरँग कटि किंकिनी नवरंग लालसिर बनी है पाग ॥१॥ नवरँग सखा संग बजावत ताल मृदंग, नवरँग राधिका ठाड़ी है बाम भाग ।। 'नँददास' प्रभु छाँटति छिरकति रस भरे गावें अडानौ राग ॥२॥

९ राग अडानो हौं आज होरी खेलौंगी नँद-महर के लाल सौं ।। चोवा चंदन मृगमद केसर भरौंगी अबीर गुलाल सौं ॥१॥ कंचन की पिचकाई भरि छिरकावौंगी मदन गुपाल सौं ।। 'ब्रजपति' के संग खेलौंगी सब निस विलसौंगी रसिक रसाल सौं ॥२॥

१० राग अडानो हरि सँग चलो खेलिए होरी ।। औसर बड़ौ लाज तजि गावति हो-हो होरी कहौ री ॥१॥ देखे जाई जहाँ हरि खेलति लोक बेद काँनि ढहो री ।। हास बिलास प्रफुलित कमल मुख इकटक निरखि प्रमोद लहो री ॥२॥ एसे समैं बिना हरि संगम घर रहिबौ लगति विष सौ री ।। सब व्रत छाँड़ि अनन्य पुष्टि पथ एकु व्रत काहे न गहौ री ॥३॥ पिय की प्रीति जानि अपुने जिय आनि एकु रस लै निबहौ री ।। जा विनु चलै इक छिनु नाहीं ता कारन सब क्यौं न सहौ री ॥४॥ बीतति है छिनु छिनु जोबन सुख अति दुरलभ सखी समौ यह होरी ।। कहा विलंब करत हो पिय ढिग जैवे को ब्रज नारि अहो री ॥५॥ चलो दिखाऊ मोहनी मूरति यह आनँद अनत कित होरी ।। अंग अंग की अमित माधुरी पीवति यह गुन धरन चहौ री ॥६॥ अब ही प्रगट भयौ है यह रस भागिन बहुरि नहिं लहौ री ।। सुंदर स्याम मिलो नीके करि काहे को तन ताप दहौ री ॥७॥ अब लग यह ब्रज माँहि विलसीवों सपने हूं मैं हुतो न होरी ।। जाई जूरो अपुने जीवन सों जीवन कौ फल आजु लहौ री ॥८॥ यह बिधि बचन सुनति ब्रजनारी चली बाई खेलनि सुख होरी ।। श्री बल्लभ पद रैनु 'रसिक' ध्यान धरों यह दुरलभ होरी ॥९॥

११ राग अडानो होरी खेलति रंग रह्यो हो ।। चोवा चंदन अगर कुंमकुमा बिथिनि जात बह्यो हो ॥१॥ आँखिन में जिनि डारौ मोहन कितनी बेर कहयौ हो ।। सखियन सबै सिखाई राधिका तब नंदलाल गहयौ हो ॥२॥

ये बातैं अब सुधि करौ मोहन बेचन जात दह्यो हो ।। अबीर गुलाल अरगजा डारयो, सब नंदलाल सह्यौ हो ।।३।। अरस-परस पिय के सँग बिहरति तन कौं ताप गयौ हो ।। बौहौत कहा अब कहत 'गदाधर' लोचन लाख लह्यौ हो ।।४।।

धमार के पद - राग केदारो

१ राग केदारो व्रज में होरी खेलें नंद नंदन जग वंदन ।। उतही गोप मध्य बल मोहन इत शोभित राधा तरुणी गन ।।१।। तन सुख पाग लाल सिर राजत केसर रंग वागो पहरें तन ।। सारी सरस लाल कसूंभी रंग पहरें राधा तन प्रफुल्लित मन ।।२।। सन्मुख दीठ जोर दोऊ जन प्रकट करत उरको सनेह घन ।। अति अनुराग भरे खेलन कों आईं जुर किलकत दुहुं टोलन ।।३।। जब गोपाल बहुले देत सखीन बहुभांत अतोलन ।। कनक कलश केसर के रंग भर पिचकाई तकत छिरकत सबन ।।४।। तब राधा चंद्रावलि शोभित ललितादिक बोले तिहि छिन ।। ले ले कर बंसन धांई मुख मांडत ले केसर सुंदर घन ।।५।। ताल मृदंग भेरि महुवर डफ ढोल आदि बाजें सब बाजन ।। चंग उपंग बांसुरी विच विच बाजत पैरि सुनत ध्वनि न कोऊ कानन ।।६।। चोवा मेद जवाद साख गोरा मृगमद एक करन ।। अगर अरगजा अंबर घस घस अतर कुंकुमा सों लागे मलन ।।७।। कर विचार ललितादिक मन में पकरे जाय रबक संकरषण ।। ले अबीर कीनों गुलाल सम विविध भांत रति लागे करन ।।८।। एक ओर हलधर व्रज बालक एक ओर युवती सब यूथन ।। वीच वीच ध्वनि राख दुहुं दिश गारी देत गोप गोपीजन ।।९।। फगुवा के मिस ललितादिक ऐंचत मुरली ओर पीत वसन ।। मोल मंगाय विविध भूषण पट देत सबन फगुवा नंद नंदन ।।१०।। न्हान चले यमुना सुंदरवर कोटी काम मद लगे दलन ।। चढ विमान न देखत बरखत कुसुम सुर भूले घरन ।।११।। अंचल वार वार मुख निरखत सुंदर स्याम कमल दल लोचन ।। तिहिं अवसर रघुवीर धीर पै वार-वार लागे जल पीवन ।।१२।।

२ राग केदारो खेलत मोहन राधा होरी ।। इतही गोपिका जुर

जुर आंई उत ग्वाल मंडली चांचर जोरी ॥१॥ पिय प्यारी पर प्यारी पिय पर अबीर गुलाल की झोरी ॥ कृष्णदास बल जाय इन पर स्यामा स्याम की बनी हे जोरी ॥२॥

३ राग केदारो रसकों रसीलो लाल एंडोई डोलै ॥ ब्रज की बिथिनि बीच होरी खेलै ॥ केसर रंग अरगजा घोरै, पिचकाईन रँग रैले ॥१॥ सखी समाज झुंडन बीच रँग रह्यों गुन प्रबीन रस काम को पेले ॥ 'सरस रँग' पिय रस भरी राधे सुघर तान सँग झेले ॥२॥

४ राग केदारो रूषि के खेलति मोहन राधा होरी ॥ इत हि गोपिका बनि-बनि आँई उत ग्वाल मंडली चाँचरि जोरी ॥१॥ पिय प्यारी पै प्यारी पिय पै डारति अबीर गुलाल की झोरी ॥ 'कृष्णदास' बलि जाई जुगल पै स्यामा स्याम की बनी हैं जोरी ॥२॥

५ राग केदारो रसिक गोवर्धन धरन खेलत होरी संग लिये बृज बालक हरि हलधर की जोरी ॥१॥ चले सूर सुता तीर बृंदावन माई ॥ बाजत मृदंग उपंग चंग बांसुरी सहनाई ॥ झांझि डफ ताल भेरि लागत सुहाए ॥ मानो अनंग द्वार बाजत बधाये ॥३॥ उड़त गुलाल रंग अबीरन झोरी ॥ तारी दे दे कहेत सब बोलो हो हो होरी ॥४॥ किलकारी दे दे नाचे ग्वाल रंग भरे ॥ कंचन पिचकाई रंग भरी कर धरे ॥५॥ बरसाने की ग्वालिनी सुनि सब आई ॥ गोरी अति भोरी सब बनी एकदाई ॥६॥ तिनमें दामिनी सो द्वे सोहे सकुमारी ॥ चंद्रावली अरू वृषभान दुलारी ॥७॥ टोलनि टोलनि घेरि चहुँदिसा आई ॥ पकरे सबन मिलि कुमर कन्हाई ॥८॥ चंद्रावली गहेवलि सखा सब भाजे ॥ कुम कुम मुख मीडिवो लोचन आजे ॥९॥ कनिक कलस केसरि भरि सीस नाए ॥ तारी दे कहेत हम तुम भले पाए ॥१०॥ सोंधो मुख लपटाए मन भाए कीने ॥ फगुवा ले मन मान्यो पाछे जान दीने ॥११॥ मोहन की गूथी रचि फूलन सो बेनी, मुरली लई स्यामा मृग नैनी ॥१२॥ ललिता रुचि सों पेहेराई तनसुख सारी लालन को पीत पट्ट आप लीयो प्यारी ॥१३॥ पिय को प्यारी को गांठि जोरि

जु बनायो, निरखि निरखि सखीय सुख पायो ॥१४॥ यह सुख गुढ़ रस कहेत न आवे, श्री बल्लभ श्री बिट्ठल पद बलि दास गावे ॥१५॥

६ (श्री) राग केदारो (श्री) होरी या बगर में माच रही री हौं पनिया भरनि कैसें जाँऊ री ॥ लाज लिये मेरे घूंघट पट की हों कैंसैक निकसन पाँऊ री ॥१॥ मिसिहि मिसि रँग भरति साँवरों तिन सौं कहा कहाँऊ री ॥ नागरी कान्ह छूबे जिनि मानौं न्याव कहति सब गाँव री ॥२॥

धमार के पद - राग बिहाग

१ (श्री) राग बिहाग (श्री) रंगन रंग हो हो होरी खेलें लाडिलो व्रजराज को ॥ सांवरे गात कमल दल लोचन नायक प्रेम समाज को ॥१॥ प्रथमहीं ऋतु वसंत बिलसे हुलसे होरी डांडो रोप्यो ॥ मानों फाग प्राण जीवन धन आनंदित सब व्रज ओप्यो ॥२॥ मृगमद मलय कपूर अगर केसर व्रजपति बहु घोर धरे ॥ सरस सुगंध संवार संग दीये रंगन कंचन कलश भरे ॥३॥ प्रेम भरी खिलवारन के हित सुख के साज सिंगार कियें ॥ भाग्य अपार जसोदा मैया बार-बार जल वार पियें ॥४॥ भई हे रंगीली भीर द्वारन प्रीतम दरशन कारनें ॥ अब बन ठन निकसे मंदिर तें कोटि मदन कीये वारनें ॥५॥ फेंट भराय लई जननीपें आज्ञा लई व्रज ईशतें ॥ नंदराय तब रत्न पेंच रचि बांध्यो गिरिधर शीशतें ॥६॥ तापर मोर चंद्रका सोहे ग्रीव ढरन लहकात हें ॥ मदन जीत को बानो मानों रूप ध्वजा फहरात हें ॥७॥ तेसेई सखा संग रंग भीने हरख परस्पर मन मोहे ॥ वरण वरण युवतिन के कमल मानों अंबर दिन मणि संग सोहे ॥८॥ आनंद भर बाजे बाजत हें नाचन मधु मंगल रंग किये ॥ हरि की हसन दशनन की किरण नयनन की ढरन मन मोहि लिये ॥९॥ कोऊ द्वारे कोई चढ अटा कोऊ खिरकिन वदन सुहाये ॥ गोकुल चंद्रमा देखन कों मानो चंद्र विमानन चढ चढ आये ॥१०॥ अबीर गुलाल उडाय चले देखत जेसें सब कोऊ हरखे ॥ छिरकत फिरत छेल नवरंगी कहा कहिये रस नव घन बरखे ॥११॥ राधा दृष्टि परत नहीं मोहन निरख नयन मन घूमें हों ॥ सन्मुख ह्वै पिय कल्पतरुवर महाभाग्य रस फल झूमेहो ॥१२॥ प्रमदा गण मणि स्यामा रसिक शिरोमणि सों खेलन

आई ॥ दुहूंदिश शोभा उमग रंग मच्यो ॥ मान वेणु ध्वनि लांई ॥१३॥ नयनन बेनन खेलत वधू गेंदुक नवलासिन मार मची ॥ कमल नयन कर ले पिचकाई मृग नयनन सेनन भूंह नची ॥१४॥ छिरकी छेल छबीली भांतन मन हरणी जोबन बारी ॥ सब अंग छींट बनी पिय वसनन फुलीं छबि फुलवारीं ॥१५॥ पहोप पराग उडाय दाव रचि अछन अछन नेरे आंई ॥ दौर दामिनीं घन घेरचो पिय बात बनीं सब मन भाई ॥१६॥ कोऊ मुख मांडत दे गल बइयाँ कोऊ पोंछत आछी छबि सों ॥ अलकन भ्रोहन मूल रंग रह्यो शोभा कहिय न जाय कवि सों ॥१७॥ कोऊ रचि रुचि पान खववावत पुलकित अधरन परस कियें ॥ कोऊ भुज गहि डहकाय फगुवा माँगत पिय नयनन चैन दिये ॥१८॥ राधा नागरि स्याम सुंदर पर प्रीत उमंग केसर ढोरी ॥ महा मनोहर ताकों राजा अभिषेक किये कहें हो हो होरी ॥१९॥ सरस्वती सहित महामुनि मोहे यह शोभा दंपति हेरे ॥ कहि भगवान हित रामराय प्रभु हँस चितवन वसी मन मेरे ॥२०॥

२ राग बिहाग एक दिसवर व्रज बाला एक दिस मोहन मदन गोपाला ॥ चांचर देत परस्पर छबिसों कही न परत तिहिं काला ॥१॥ कुसुम धूर धूंवर मध्य चांदनी चंद किरण रही छाय ॥ तेसोहि बन्यो गुलाल गगन कछु वरणत वरण्यो न जाय ॥२॥ सुर मंडल डफ वीना झीना बाजत रसके ऐना ॥ चांचर में चाचर सी चितवत छबीली त्रियन के नयना ॥३॥ बन्योहे चटक कठताल तार ओर मृदुल मुरज टंकार ॥ तिन संग रंग रंगीली मुरली बिच अमृत की धार ॥४॥ बढ्योहे दुहुं दिश गुण वितान रस गान सुनत रस मूले ॥ मंद मंद आवन उलट न मानों प्रेम हिंडोरे झुले ॥५॥ लटक लटक आवत छबि पावत भावत नार नवेली ॥ प्रेम पवन बश डोलत मानों रूप अनूपम वेली ॥६॥ चारु चलन में मणिमय नूपुर किंकिणी कलरव राजे मानों भेद गति पाछें आछ मधुर मधुर ध्वनि छाजे ॥७॥ चमक चमक दशनावलि द्युति फिर अधरन मांझ समाई ॥ दमक दमक दामिनि छबि पावत चंद्रन में दुरजाई ॥८॥ अनेक भांत राग रागिणी अनुराग भरे उपजावें ॥ सुन विथके शिव नारद शारद तेहू पार न पावें ॥९॥ रस कदंब में बोरी

गोरी नित उठ खेलन आवे ॥ नंददास जाके भूरि भाग्यजे विमल विमल यश गावें ॥१०॥

३ राग बिहाग लाग्यो रे लाग्यो मोसों होरी खेलन लाग्यो ॥ जोबन मत्त कहा तू डोलत अबीर डार कित भाग्यो ॥१॥ नई खिलार खेल ताहीसों जाके प्रेमरस पाग्यो ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु पिय सदाही रहत अनुराग्यो ॥२॥

४ राग बिहाग भली भई व्रज होरी आई घर आये घनस्याम री ॥ चोवा चंदन ओर अरगजा वे राधा के काम री ॥१॥ धन्य तेरे भाग सुहाग लाडिली ओर न दूजी बाम ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभुसों ज्यो सीता मिली राम ॥२॥

५ राग बिहाग वरसाने की ग्वालिनी ओर खेलत फाग वसंत हो ॥ शंक न मानें काहूकी मात पिता सुत कंत हो ॥१॥ चंद्रभागा चंद्रावली मध्य नायक राजत राधा ॥ सहज स्वरूप सुहावनो शोभा सिंधु अगाधा ॥२॥ सकल साज संग ले चली आंई वट संकेत ॥ पठई सखी एक आपनी नंद कुंवर के हेत ॥३॥ चली सब चतुर सिरोमणि ओर खेलनकों रस फाग ॥ रसिक कुंबरि वृषभान की तुमसों अति अनुराग ॥४॥ रामकृष्ण हंस यो कह्यौ सुनो हो सखा श्रीदाम ॥ हमपें आय सबे जुरीं ओर तिनमें अति से भाम ॥५॥ वेग चलो सब ग्वाल ले दिखाओ अपुने हाथ ॥ जेसें बहोरिन आवहीं छांड आपनों साथ ॥६॥ अनंत अबीर गुलाल ले देहु निसान घुराई ॥ बहुत कलश सोंधे भरे कुंकुम भर पिचकाई ॥७॥ दलबादर ज्यों देख सन्मुख आंई धाई ॥ मेघ घटा ज्यों वरखहीं अद्भुत खेल मचाई ॥८॥ कमलन ले ले नवलासी कुसुम गेंद कर मारी ॥ मुरि भाजे बल मोहना हो हो कहें व्रजनारी ॥९॥ चंद्रावलि बल जू गहे स्याम गहे श्री स्यामा ॥ सखा गए सब भाज कें लियो छिनाय दमामा ॥१०॥ संकरषण सोंधे भरे स्याम भरे सुकुमारी ॥ आनन सीस सवारिकें भेष बनायो नारी ॥११॥ रस वश भई व्रजसुंदरी लीला कहीय न जाई ॥ चतुर्भुज प्रभु इन वस किये गिरि गोवर्द्धन राई ॥१२॥

६ राग बिहाग जब हरि हो हो होरी गावें ॥ तरुणी यूथ तरणि तनया तट आरज पथ त्यज आवें ॥१॥ निरख नयन मनमोहन पियको अपने नयन सिरावें ॥ विविध कुसुम की दाम स्याम कों रबक जाय पहरावें ॥२॥ अति कमनीय सो कमल वरण की कटि काछनी कछावें ॥ मंजुल मोर मुकुट मकराकृत मरूवट मुखहि बनावें ॥३॥ ताल मृदंग मुरज डफ महुवर बीना जंत्र सजावें ॥ नव नागर नटे वष धरें मध्य ठाडे वेणु बजावें ॥४॥ कोऊ झील कोऊ मंद घोर स्वर तान न गाय रिझावें ॥ ललित त्रिभंगी नवल रंगीलो अंग सुधंग नचावें ॥५॥ हाव भाव सों निपुण नागरी नाना भांत हँसावें ॥ रीझ रीझ तृण तोर सोर कर युग कपोल परसावें ॥६॥ कोऊ एक सन्मुख बैठ लाल के अंचल अवनि बिछावे ॥ ताहि आपनो पीतांबर मन मोहन विहस उढावें ॥७॥ कोऊ एक केसर कुसुम वारि घस घोर कलश भर लावें ॥ रत्न जटित पिचकाई भर भर पियकों छिरक छिरकावें ॥८॥ चोवा मेद जवाद साख गोरा घनसार मिलावें आपुस मांझ मतो मिल कर ले मोहन मुख लपटावें ॥९॥ एक पिया को वेष पलट सिर फेंटा ऐंठ बधावें ॥ वरुहा पिच्छ धर नूतन मंजुरी दक्षण दिश थिरकावें ॥१०॥ कनक कटि पट फेंट बांध कें कटि तट वेणु धरावें ॥ सेली वेंत अंस धर ताकों मन्मथ मंत्र पढ़ावें ॥११॥ कोऊ एक मेन महा मदमाती आलिंगन दे आवैं ॥ निरलज भई परिरंभण दे दे अधर सुधारस प्यावें ॥१२॥ तब ललिता ले मोहनजू कों नारी को वेष बनावें ॥ नवसत द्वादश साज लाडिली नवल पियापें पठावें ॥१३॥ अति सुकुमारि सलोनी स्यामा रति गुण ग्राम दृढावें ॥ निरख हरख पुलकित तन दंपति ॥ अतुलित प्रेम बढावें ॥१४॥ अद्भुत एक विचित्र माधुरी मो पिय कों समझावें ॥ हँसन लसन चितवन मिलवन में सहज उरझ सुरझावें ॥१५॥ एक सखी ले बूका वंदन भर भर मुठी चलावें ॥ सुरंग गुलाल उडाय अधिक सो लोचन लाज नसावें ॥१६॥ नवल कुसुम की ले नवल्लासी कमलन मार मचावें ॥ प्रेम छकी डोले मन खोलै हो हो हो कर धावें ॥१७॥ मगन भई आनंद सिंधु में तन मन सुधि विसरावें ॥ व्रजजन मीन भये रस सागर अपनी तृषा बुझावें ॥१८॥

७ राग बिहाग स्यामाजू होरी खेलन आंई ॥ ललिता चंद्रभगा चंद्रावलि सखी अनेक सुहाई ॥१॥ जब यह बात सुनी जसोदा जु अरघ पामड़ें दीनें ॥ लाल भामती जोरी लख मन मांझ बधाई कीनें ॥२॥ फूली फूली फिरत सखी सब पकरन मदन गोपालें ॥ फिर फिर कहत रोहिणी अब जिन भरो नंद के लालें ॥३॥ यह सुन ललिता ओर चंद्रावलि बलदाऊ गहि लीनें ॥ मृगमद आड संवार मांड मुख भौंपे बिंदा दीनें ॥४॥ भीजी नाना विधि के रंगन बोलत हो हो होरी ॥ अब गहि लेहु चलो मोहन कों यों दुर कहत किशोरी ॥५॥ चली दौर चहूंदिश तें सुंदर चढ गईं अटा अटारी ॥ बैठे हुते जहां मन मोहन घेर लिये चित्र सारी ॥६॥ पकर्‌यो प्यारो प्यारी छलकर भेख सखी को कीनो ॥ आंख आंज केसर मुख मांड्यो मृगमद बेंदा दीनों ॥७॥ एक सखी कुसुमन सों कबरी नाना विधि जु संवारी ॥ सिंदूर मांग भरी ता ऊपर मोतिन की लर न्यारी ॥८॥ नीलांबर पहरायो रीझ पहराई मणिमाला ॥ स्यामा याको नाम धर्यो है यों कहत मुदित ब्रजबाला ॥९॥ सब सहचरी मिल लांई ताकों नंदरानी के पास॥यह सुंदर हमलाई हें जु घनस्याम मिलन की आस ॥१०॥ देख रूप ललचाय जसोदा करत बहुत मनुहारी ॥ बार बार नोंछावर कर कें पीवत हे जलवारी ॥११॥ जब यह भाव लख्यो सब ही मिल सखी भेख हे कीनों ॥ नाना विध पटवार ओर मन मान्यो फगुवा दीनों ॥१२॥ भये दूहुंन के भाये मनके पिय प्यारी रस भीने ॥ जे जे हुती कामनां मन में जैसी विधि सुख दीनें ॥१३॥ छाय रह्यो अनुराग परस्पर कहा वरनें कवि कोंन ॥ देव विमानन फूलन वरखत शोभित हे नंद भोन ॥१४॥ चतुर सखा श्रीदामा तब एक भेष सखी को लायों ॥ सखी यूथ में आय मिल्यों यह भेद न काहू पायो ॥१५॥ मिली दौर चंद्रावलि तासों भटू भटू कहि टेरी ॥ आलिंगन दे ढिंग बैठारी मुदित बदन तन हेरी ॥१६॥ जान गई यह भेख कपट को सकुच रही मनही में ॥ विहँस मिली प्यारी प्रीतम सों ज्यों दामिनि घनही में ॥१७॥ स्यामा स्याम दोऊ सुख विलसत प्रेम बुद्धि अरुझाने ॥ 'सूरदास' ब्रजवासिन के वश ओर कछू नहिं जानें ॥१८॥

८ राग बिहाग हो हो हो कही खेलत होरी अब तो रंग मच्यो हे ॥ कहा कहिये सब सिमिट गईं मनमोहन रंग रच्यो हे ॥१॥ खेलत ही खेलसो कीनों अब कहा कछू बच्यो हे ॥ रस गारी नारी दे गावें अब तो उघर नच्यौ है ॥२॥ चंद्र बदन मांडत गुलालसों दाऊ ने आन खच्यो हे ॥ पिचकारी प्यारी की छूटत रंग भर लाल लच्यो हे ॥३॥ रस निधान व्रजराज लाड़िलो शोभा सिंधु सच्यो हे ॥ 'कुंभनदास' प्रभु की छबि निरखत मन्मथ मन हि कच्यो हे ॥५॥

९ राग बिहाग खेलत रंगीले राधे रूप उजियारी ॥ पिय हिये वसत हो प्राण हूं तें प्यारी ॥१॥ वदन शरद शशि कोटि प्रकाश ॥ नागर नयना चकोर चाहत हें प्यास ॥२॥ आभूषण तारा गण नीलांबर रेनी ॥ बेनी अलि श्रेणी किधों त्रिवलि त्रिवेनी ॥३॥ मृगमद आड़ किधों मेन की ध्वजा कों ॥ भृकुटि धनुष वर मानों युग जाकों ॥४॥ नासिका सुमन तिल स्वांति सुत सोहें ॥ घन तन चतुर चातक चित मोहें ॥५॥ नगन जटित बीरे जगमगताई ॥ कनक मुकुरसे कपोलन में झांई ॥६॥ अरुण अधर लसे दर्शन सुपांती ॥ मानों माणिक मध्य हीरा की कांती ॥७॥ बोलन मधुर पिक बोलन लजावे ॥ मुदृ मुसिकान द्युति दामिनी न पावे ॥८॥ सुंदर चिबुक तामें स्याम बिंदु ऐसो ॥ मोहन को मन मानों चुभ रह्यो जैसो ॥९॥ गरें पोत गुंज की उपमा जिय मांही ॥ दीपक सरन मानों सोहे परछांहीं ॥१०॥ सुभग कंचुकी पर वर मोती हारा ॥ जानों युग शिव धरें सुरसरी धारा ॥११॥ वलय मंडित भुज उपमा न आवे ॥ जिनसें सांवरो सर्वस्व दे बधावे ॥१२॥ तनु रुह रेखा नाभि एसी अनुहारी ॥ कुंदन कुंडी सें जानों सुधा की पनारी ॥१३॥ कटि निरखत मृगराज घट लागें ॥ रंभान के खंभा कहा जंघन के आगें ॥१४॥ चरणन नूपुरु नख यावक निकाई ॥ त्रिभुवन छबि जहां छबि आन पाई ॥१५॥ वरनो कहांलों प्यारी मेरी मति थोरी ॥ स्याम ललिता स्यामा खेलत होरी ॥१६॥

१० राग बिहाग रसिक दोऊ खेलन लागे होरी ॥ उत तै निकसे नंदनंदन इत वरसानें की गोरी ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली

मधुर ध्वनि थोरी ।। गोपी ग्वाल सबें जुर आये भवन रह्यों नहीं कोरी ।।२।। भवन भवन तें भामिनि निकसी छिरकत चंदन रोरी ।। बाजत बीन रबाब किन्नरी मन्मथ मान लज्यो री ।।३।। भरत भांमते मदन गोपाले हो हो हो कर दौरी ।। स्यामा स्याम कीया छबि ऊपर सब डारत तृण तोरी ।।४।। तारी दे ललितादिक भाखत भली बनी यह जोरी ।। केसर और मँगाय विविध संग दियों सीस तें ढोरी ।।५।। खेल मच्यो ब्रज वीथिन महीयां कुंज-कुंज वर खोरी ।। 'मुरारीदास प्रभु फगुवा दीयो लोचन लगी ठगोरी ।।६।।

११ राग बिहाग यमुना जल सजनी हों केसें जाऊं ।। सांवरे अंग लरिकवा के डर परतन बाहिर पाऊं ।।१।। फागुन मास अभागी जाको नाह ओर ही गाऊं ।। पिय प्यारी हे पियके पाछें को धरवावे नाऊं ।।२।। जब होंकर गहि आरसी देखों आपही आप सिहाऊं ।। ऐसें ऐसें ही अरूण अधर रस सखी तापर बीरा खाऊं ।।३।। कबहुंक उपजत चोंप चोंपई कुच कच चाहि के चाऊं ।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु कोन मते ठहराऊं ।।४।।

१२ राग बिहाग होरी आई रे कन्हाई ।। जो कछु मन में ही सोई भई विधि यह बात बनाई ।।१।। तब सकुचन हों खेल न सकती अब खेलों तोसों धाय ।। सखी सहेली तोसों सब खेलेंगी कहा करेगी माय ।।२।। गुरुजन यत्न करो बहु तेरो कोटिक करो उपाय ।। अब तोरे तो सों मन लाग्यो तो बिन रत्यो न जाय ।।३।। केसर ओर जवाद कुंकुमा छिरकूं तोहि बनाय ।। हों हु भरोंगी तुही भरेगो नयनसो नयन मिलाय ।।४।। लोक वेद तृण ज्यों तोरी देऊं कुल कान वहाय ।। निरमल सुत प्रभु नंदनंदन कों राखोगी कंठ लगाय ।।५।।

१३ राग बिहाग आज गहवर बन होरी मानी ।। ब्रजरानी ब्रजराज कुंवर जन सुरंग गुलाल उडानी ।।१।। मानो उदित अनुराग सिंधु कुमुदमुखी हित आनी ।। 'ब्रजाधीश' प्रभु प्रमुदित बधुनि कोटि काम छबि मानी ।।२।।

१४ राग बिहाग झुकि गुलाल किनि डारी अलक पर ।। जिनि डारी सो आवौ मेरे सनमुख नातर देहौंगी गारी ।।१।। काहे कौ रिस करति हो मैया डारी ।। वृषभानु दुलारी ।। 'रसिक' प्रीतम की जननी जसुदा दोऊ कर लेति है झारी ।।२।।

१५ राग बिहाग नबल बधू रँग भींनी नबल पीतम संग खेलै ॥ झूम-झूम रसताननि गावैं रिझवति छैल छबीलै ॥१॥ रँगीलौ लाल पिचकाईन रँग भरि उरजन ऊपर मेलै ॥ मुख मूँदें नैननि मन खोले भावति ह्वै मन फूलै ॥२॥ पटकति धरती चरन लर-लटकति, लटकति हार हमेलै ॥ प्रफुलित नबल बेल-सी लहकत, झेली बल अलबेले ॥३॥ अंचल मधि चंचल चख मानौं मैंने सैंन कौं पेलै ॥ वल्लभ रसिक घुमड़ नब घन लालन अंक सँकेलै ॥४॥

१६ राग बिहाग नवरंग भीनो ग्वाल नव राधा गोरी ब्रिंदावन सोभागिनी खेले दोऊ होरी ॥१॥ मृदंग उपंग भेरि दुंदुंभी बिराजे मनमथ राज पाय मानो बाजे बाजे ॥२॥ घुमड़िये लाल सोहे लोचन सुहाये मानो राते घन खेले मीन छबी धाये ॥३॥ ललना के संग पिय सोभा ऐसी लागे सुभग जराय मानो हीरा जगमगे ॥४॥ रंग भरि दुहु और छूटे पिचकारी, तन ते उछरी मानो होत छबि भारी ॥५॥ मुखते चुवत रंग कछु जात न कह्यो जलज ते मानो मकरंद बह्यो ॥६॥ झलके अलके बीच रंग बूंद गण मानो अलि पांति बनी मुख मधुपन ॥७॥ टूटी उर माल बाल शोभा अपार हिये ते उमगि चली मानो रसधार ॥८॥ छलि आनि पिय रस गोरी मानो विधि कंज मिले विरह विसारी ॥९॥ सखी गहे कर दृग बोरे राधा गोरी आँजे पिय के नैन सब बोले हो हो होरी ॥१०॥ लीनो फागु अनुराग भरे प्यारे ऐसे रंग बढ़ि बहे रसहि पनारे ॥११॥ इहि विधि खेले होरी बैकुंठ धाम, दामोदर हित हिये बसो स्यामा स्याम ॥१२॥

१७ राग बिहाग होरी खेले ब्रज बरसानैं की तंबोलनी ॥ पान भरे मुख चमकति चौका वाकी मधुर-रसीली बोलनी ॥१॥ अँग रसीली सुगंध बसीली भौंहैं चलति कपोलनी ॥ कोकिला कैसें कंठनि गावति रिझवति पिय कों छोलनी ॥२॥ रति रस ध्यावै, केलि बढ़ावे, ब्रज जुबतिन मन मोहनी ॥ 'व्यास स्वामिनी' रिझि परसपर नंद नंदन रस झोलनी ॥३॥

१८ राग बिहाग होरी खेलत रंगभीने पिय प्यारी ॥ उतते जुरि झुंडन आई स्यामा मोहन बृषभान दुलारी ॥१॥ बाजे साजे कर नवरंगी जंत्र मंत्र डफ वारी ॥ उघटित धुनि संगीत सुघरता गृह-गृह ताता ताता

थेई तारी ॥२॥ जमुना तीर सघन कुंजन में करि कुसुम बरखारी ॥ 'नंददास' प्रभु कोतक सागर रसिक लाल गिरिधारी ॥३॥

१९ राग बिहाग होरी खेलत कुमर कन्हाई ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा धरणी कीच मचाई ॥१॥ अबीर गुलाल उड़ाय ललितादिक शोभा वरणी न जाई ॥ अरस परस छिरके जु स्याम को केसरि भरी पिचकाई ॥२॥ नख सिख अंग परम रूप माधुरी भूषण वसन बनाई ॥ गिरवरधर की यह छबी निरखत कुभंन दास बलि जाई ॥३॥

२० राग बिहाग कान्ह कुँवर खेलैं होरी जमुना तट ॥ सघन कुंज वन बिथिनि चोवा चंदन और अरगजा अबीर लीये भरि झोरी ॥१॥ बाजति ताल मृदंग बाँसुरी सुर की उठति झकोरी ॥ 'धोंधी' के प्रभु तुम बहु नाइक खेलि मचायो गोरी ॥२॥

२१ राग बिहाग खेलति गुपाल लाल फागु रस भरे ॥ सखा सब संग बलदाऊ दल करे ॥१॥ मंजुल कमल बंधु सुता तीर पै री ॥ निरखति सुर मुनि गए मन हेरी ॥२॥ उज्जल बसनन के बागे जु मँगाए ॥ प्रफुलित मन सब ग्वाल पैहिराए ॥३॥ अरगजा मृगमद चोबा अंग लगाए ॥ पाछें बलभैया आपु लीनि मन भाए ॥४॥ केसरि के नीर भरि हेम घट जु लीनें ॥ चले स्याम संग जुरि प्रेम भीनें ॥५॥ ब्रज जन मन खैंचि आप बस कीनें ॥ देखति गयो हैं काम सरबसु छीनें ॥६॥ रतन जटित पिचकाई रँग भींनी ॥ हाटक जटित सब सखान कौं दींनीं ॥७॥ छिरकति प्रमुदित धार अति झींनीं ॥ कौंन कबि छबि बरनैं जु मान हींनीं ॥८॥ उड़ति अबीर बस आँधी भई खरी ॥ दिन मनि किरनि की गई दुति हरी ॥९॥ चकई बिछुरी जाति बिरह की भरीं ॥ सुधि सब भूलि चितै परबस परी ॥१०॥ सोहत सुभग कटि गुलाल की झोरी ॥ बनी अति नीकी हरि हलधर की जोरी ॥११॥ हँसि करि सबन के लेति चित चोरी ॥ सखान सहित बोले हो हो हो होरी ॥१२॥ बाजति पटह झांझि बीना मुख चंग ॥ आवज मुरली ढ़फ ताल सौं मृदंग ॥१३॥ सुनि घन गयो लजि भयो मद भंग ॥ प्रैंम-सिंधु उमग्यौं न मात अंग अंग ॥१४॥ खेलनि कौं आँई बृषभानु की कुमारी ॥

सनमुख जोरी सखी रूप उजियारी ॥१५॥ पैहिरे सुभग तनसुख सारी ॥ नख सिख सो हैं मनौं बिधि साँचे भरि ढ़ारी ॥१६॥ एकु तैं अधिक एक रूप मदमाँति ॥ हँसि हँसि स्याम जु सौं करैं मृदु बाती ॥१७॥ तनक सुवास फूलि मन जाती ॥ खेलति न जानि सब बीती दिन राति ॥१८॥ लींनें गहि औचका नवल गिरिधारी ॥ काजर सों आँजी नींकीं अँखियाँ अनियारी ॥१९॥ चहुँ ओर ब्रज बधू बजावति तारी ॥ छाँड़ि सबै कुल लाज औरु गावति हैं गारी ॥२०॥ आई कै कुँवरी फैंट गहि रहि ठाढ़ी ॥ फगुवा मँगाई देऊ बोलो गुन आढ़ी ॥२१॥ चितवति नैननि सौं प्रीति चित बाढ़ी ॥ भरी है सुहाग को कोक कला रस पाढ़ी ॥२२॥ रीझै ब्रजनाथ जहाँ दैन कौं मँगाई ॥ पट आभरन मेबा बहुत मिठाई ॥२३॥ नारी सब सिमिटि झुंडन ढिंग आई ॥ गोकुल कौं चंद हँसि दियौ सुखदाई ॥२४॥ राधिका कुँवरि कान्ह मिले भरि बाँहि ॥ जोरी अबिचल नित रहौ ब्रज माँही ॥२५॥ वह हँसति चली ग्रह आनंद बढ़ाई बरनि न जाई यह सुख परछाँई ॥२६॥

२२ राग बिहाग खेलति गुपाल माइ रंग भरे होरी ॥ कनक बरन सँग लीए सत गोरी ॥१॥ भूषन बसन साजि सबै मन फूले ॥ निरखति हरि छबि अपन पो भूले ॥२॥ अति सुकुमारि राधा तिन मधि सोहै ॥ बार बार अबलोकि मोहन मन मौहे ॥३॥ केसरि रंग कलसनि भरि भरि लींनें ॥ बिबिधि सुगंध सजि अनगन कीनें ॥४॥ बनि ठनि चले जहँ नव निकुंज पिया री ॥ त्रिबिधि पवन जहँ बहति सुखारी ॥५॥ जहाँ बिहरति खग जुगल सुहाए ॥ कोकिला कलरव प्रमोद सुर गाए ॥६॥ तहाँ घुमड्यौ गुलाल अंबर छाये ॥ माँनौं आप रूप धरि अनुरागु बढ़ाये ॥७॥ छिरकति सुरँग केसरी रँग रंगे ॥ मुदित परसपर मिलि अंग संगे ॥८॥ मुरज किन्नरी बीन ढ़फ सहनाई ॥ बिच बिच बैंनु धुनि अधिक सुहाई ॥९॥ इहि बिधि खेलति बाढ़्यौ जु रँग भारी ॥ सब ब्रज जन मोहे गिरिधारी ॥१०॥

२३ राग बिहाग खेलन दे मोहे होरी हो रसीया ॥ जानि न देहौं गहि राखौंगी काए कों बैंयाँ मरोरी हो रसीया ॥१॥ ब्रिंदाबन बिच खेलि मच्यौ है सँग राधिका गोरी हो रसीया ॥ सखी सहेली सब मिलि खेलैं हम कहा कीनीं चोरी हो रसीया ॥२॥ फगुवा लीयै बिनु जानि न देहौं तुम मत जानौं भोरी हो रसीया ॥

'ऋषिकेस' प्रभु मिलि मगन भये डारति है तृन तोरी हो रसीया ॥३॥

२४ राग बिहाग मदन मोहन कुँवर बृषभानु-नंदिनी सौं भुवन कुंज मधि खेलति होरी ॥ गोप बालक संग एकु दांई बने, उत सकल ब्रज बधू इकु जोरी ॥१॥ बाजत बीना मृदंग झाँझ ढ़फ किन्नरि चेत झुमकि गान करति गोरी ॥ उड़ति बंदन नब अबीर बहु कुँमकुमा अरु बिबिधि रंगनि गुलाल झोरी ॥२॥ तब सखियन मतों करि धाँई गिरिधर गहें नील पट पीत सों गाँठि जोरी ॥ एकु सखी स्याम कें सीस बैंनी गुही, एकु दृग आँजति मुख माँड़ति रोरी ॥३॥ तब हि ललिता दौरी झटकि मुरली लई, सब हि नंदलाल सौं करें ठठोरी ॥ इक नब कुँमकुमा नबल गागरि भरि आँनि कैं दोऊन के सीस ढोरी ॥४॥ तब सखी आपुनो माँगि फगुवा लयौ दई मुरली अरु गाँठि छोरी ॥ 'दास गुपाल' बलि जाई यह छबि निरखति रहौं हरि चरन दृढ़ बुधि मोरी ॥५॥

वसंत धमार मान के पद - राग बसंत

१ राग वसंत खेलि खेलि हो लडेंती राधे हरि के संग वसंत ॥ मदन गोपाल मनोहर मूरति मिल्यो हे भांवतो कंत ॥१॥ कोन पुन्य तप को फल भामिनि चरन कमल अनुराग ॥ कमल नेन कमला को वल्लभ तोकूं मिल्यो सुहाग ॥२॥ यह कालिंदी यह बृंदावन यह तरुवर की पांति ॥ परमानंद स्वामी संग क्रीडत द्योसन जानी राति ॥३॥

२ राग वसंत खेलि खेलि हो लडेंती श्रीराधे तोही कों फव्यो हे वसंत ॥ सुनि भामिनि दामिनिसी हो तुम पायो स्याम घन कंत ॥१॥ जमुना के तट श्रीवृंदावन परम अनूपम ठाऊं ॥ कुंजन कुंजन केलि करो मेलि सुवस बसौं बलि जाऊं ॥२॥ मदन गुपाललाल रसिया कों रस तेंई ले जान्यौ ॥ अपनो मन ओर वा मोहन को एकमेक करि सान्यों ॥३॥ उडत गुलाल धूंधरि मधि राजत राधा अंग लपटानी ॥ कहि 'भगवान' हित रामराय प्रभु यह छबि हृदय समानी ॥४॥

३ राग वसंत चलि ब्रन निरखि राज समाज ऋतु कौं, सकल

तरु मोरे ॥ यह वसंतहि जानि रति कैं कंत दल जोरे ॥१॥ विरहनी मति विकल करिवे मृगगन दौरे ॥ कोकिला कल कंठरव मिलि, काम सर छोरे ॥२॥ तरनि तनया तीर मलयज पवन झकझोरे ॥ गहरु तजि ब्रज भामिनि मिलि नँद किसोरे ॥३॥

४ राग वसंत चलि बन बहति मंद सुगंध सीतल, मलय समीरै ॥ तुव पंथ बेठि निहारति सखी हरि, सूरजा तीरै ॥१॥ चहूं दिस फूलै लता द्रुम हरखित सरीरै ॥ तुव बरन तन स्याम सुंदर धरति पट पीरै ॥२॥ विविधि सुर अलि पुंज गुंजति मत्त पिक कीरै ॥ तुव मिलन हित नंद नंदन हैं अति अधीरै ॥३॥ 'दासकुंभन' प्रभु करति बन बहु जतन सीरै ॥ तुव विरह ब्याकुल गोवरधन उद्धरन धीरै ॥४॥

५ राग वसंत रतिपति दे दुःख करि रतिपति सौं ॥ तूं तौ मेरी प्यारी और प्यारे हु की प्यारी उठि चलि गज गति सौं ॥१॥ दुती कैं बचन सुनि कैं, मुसक्यानि, भूषन बसन सोंधो लियौ बहु भांतिसौं ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर नागर धाई लई उर अतिसौं ॥२॥

६ राग वसंत राधे देखि बनकैं चैन ॥ भृंग कोकिल सब्द सुनि सुनि प्रकट प्रमुदित मैन ॥१॥ जहाँ बहति मंद सुगंध सीतल भाँमिनी सुख सैन ॥ कौन पुन्य अगाध कौं फल तूं जो बिलसति ऐंन ॥२॥ लाल गिरिधर मिल्यौ चाहति, मोहन मधुर बैन ॥ 'दास परमानँद' प्रभु हरि चारु पंकज नैन ॥३॥

७ राग वसंत फिरि पछिताइगी हो राधा ॥ कित तू कित हरि कित यह औसर करत प्रेमरस बाधा ॥१॥ बहोरि गुपाल भेख कब धरि हैं कब इन कूंजन बसि है ॥ यह जडता तेरे जिय उपजी चतुर नारि सुनि हँसि है ॥२॥ रसिक गुपाल सुनति सुख उपजै आगम निगम पुकारैं ॥ 'परमानँद' स्वामी पै आवति कौ यह नीति बिचारै ॥३॥

८ राग वसंत ऋतु वसंत प्रफुलित बन बकुल मालती कुंद, जाति नवकरन कारन केतुकी कुरबक गुलाल ॥ चलि राधे चटमट करि तजि हठ सठ जिय कौं, हौं पठई लेन तोहि आतुर है अति नँदलाल ॥१॥ तेसोई

तरनि तनया तीर तेसोई बहति सुख समीर तेसोई चहूं दिस तें उडति हैं सोंधौं गुलाल ।। यह औसर कँठ लाई रिझये 'रघुवीर' राई तो तू एसी लागति है कनकलता कें ढिग तरु तमाल ।।२।।

९ राग वसंत कहा आई री तरकि अब ही जू खेलत ही प्रीतम सँग एक हाथ अबीर दूजे फैंटा कर ।। जब उन भुजन जोरि मुसिकाय वदन मोरयौं ते जान्यौं औरन तन चितए एसो यह होय जिन परइ इन नैनन में यही डर ।।१।। जब ही तू उठि चली तबही लालन उझकि रहे औरन सो बूझन लागे बेझू झुकि गई कौन बात परि ।। उठि चलि हिलिमिलि तूव रँग राख और सब लागति चुनी समान तूव मधि नाइक सँग सोहति लाल गुपाल गिरिधरि ।।२।।

१० राग वसंत मान तजौ भजौ कंत ऋतु वसंत आयौ ।। वन सोभा निरखि निरखि पथिकन सुख पायौ ।।१।। फूल बनराई जाई मधुकर लपटायौ।। अँब मोर ठोर ठोर ब्रिंदाबन छायौ ।।२।। अति सुगंध बहति वायु बस पराग उडायो ।। उनमद झंकार करति विरही जन डरायौ ।।३।। तिहारे हित कारन में यह सब्द सुनायौ।। 'रसिक' प्रीतम जाई मिलौ जुवतीन मनभायौ ।।४।।

११ राग वसंत ऐसो पत्र लिखि पठयौ नृप वसंत ।। तुम तजो मान मानिनी तुरंत ।।ध्रु० ।। कागद नव दल अँब पाँति ।। द्वात कमल मसि भँवर गाति ।। लेखन काम के बान चाँप ।। लिखि अनँग ससि दई छाप ।। मलयानिल पठयौ करि बिचार।। बाँचे सुक, पिक, तुम सुनौं नारि।। 'सूरदास' यौं बदति बानि ।। तू हरि भजि गोपी तजि सयान ।।२।।

१२ राग वसंत चलि राधे तोहि स्याम बुलावैं ।। वह सुनि देखि बेन मधुरे सुर तेरो नाम ले लै गावैं ।।१।। देखौ ब्रिंदाबन की सोभा ठौर ठौर द्रुम फूले ।। कोकिल नाद सुनति मन आनँद मिथुन बिहँगम झूले ।।२।। उनमद जोबन मदन कुलाहल यह औसर है नीकौ ।। 'परमानँद' प्रभु प्रथम समागम मिल्यौ भाँवत्तो जीकौ ।।३।।

१३ राग वसंत देखि वसंत समैं व्रज सुंदरी तजि अभिमान चली

ब्रिंदाबन ।। सुंदरताकी रासि किसोरी नवसत साजि सिंगार सुभग तन ।।१।। गई तिहि ठौर देखि ऊँचे द्रुम लता प्रकासित गुँजत अलि गन ।। 'कुंभनदास' लाल गिरिधरि कौं मिली है कुँवरि राधा हुलसत मन ।।२।।

१४ राग वसंत बेगि चलो बन कुंवरि सयानी ।। समय वसंत, बिपिन मधि हय गज मदन सुभट नृप फोज पलानी ।।१।। चहूं दिस चाँदनी चमू चय कुसुम धूरि धूंधरी उडानी ।। सोरह कला छिपांकर की छबि सोहति छत्र सीस कर तानी ।।२।। बोले हंस चपल बंदी जन मनौं प्रसंसित पिक बर बानी ।। धीर समीर रटत बन अलिगन मनौं काम कर मुरली सुठानी ।।३।। कुसम सरासन बनि हि बिराजति मनौं मानगढ़ आन आन भानी ।। 'सूरदास' प्रभु की वेई गति करो सहाइ राधिका रानी ।।४।।

१५ राग वसंत मानिनी मान छुडावन कारन मदन सहाई वसंत लै आयों ।। चतुरंगनि सैना सजि सुलभ पराग अटपटों छायौं ।।१।। नील कमल दल सहस्र मानौं गज कदली कुसुम रथ बेगि बनायौ ।। चंपक जुही गुलाल और कुंज बहु रँग तुरी सेन सजि धायौं ।।२।। कुँद, कनेर, मालती जाती पाईकदली आगें जू सुहायौं ।। नागकेत धुजा, अरुन चंबर इव सेत छत्र मोरि कुसुम धरायौं ।।३।। अँकुस किंसुक सीखंड केतुकी कुरबक निसान बजायों ।। त्रिगुन समीर सुजान छूट धर जस बंदी अलि कुल मिलि गायौं ।।४।। कटक सँवारि कामिनी अँग अँग मोहन सों सर चाप चढायौं ।। 'कृष्णदास' गिरिधरि सौं मिलि रति करि रतिपति हार मनायौ ।।५।।

१६ राग वसंत आई ऋतु चहुंदिश फुलै द्रुम कानन कोकिला समूह मिलि गावत वसंत ही ।। मधुप गुंजारत मिलति सप्त सुर भयो हे हुलास तनमन सब जंतही ।।१।। मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं नहि पावत मनमथ सुख अंत ही ।। 'कुंभनदास' स्वामिनी बेगि चलि यह समे मिलि गिरिधर नव कंतही ।।२।।

१७ राग वसंत चलि निधरक बन देखि सखीरी द्विज प्रमुदित पिक बानी ।। जमुना तीर सघन कुंजन बनि ठाढौ छेल गुमानी ।।१।। फूले बहुरंग कुसुम परागिन त्रिविधि पवन सुख सांनी ।। 'ब्रजाधीश' प्रभु सब

सुख सागर दृगन शोभा रंग आनी ॥२॥

वसंत धमार मान के पद - राग कान्हरो

१ राग कान्हरो ए प्यारी मान न कीजे पिय सौं बावरी मेरे कहे चलि गज गामिनि ॥ बार-बार मुख निहार नवल नवेली नारी तू सुकुमारि आली बस कीए स्याम सुनि भामिनि ॥१॥ ज्यौं-ज्यौं रुक होत त्यौं-त्यौं पीतम अधीर होत सुन्दर प्यारी तेरे बस भए ओर सकल ब्रज जुबति खेलति होरी हरि सँग सुनि री स्वामिनि ॥ फागुन में मान कैसो यै तो अनोखी रीति प्रीति क्यों न करि प्यारी अतर सुगंध अरगजा केसर घनसार 'ब्रजाधीस' प्रभु रचि राखी है बेगि चलि जात हे जामिनि ॥२॥

२ राग कान्हरो मानत नाहि नबल नबेलि नार तो पै अधिक प्यार स्याम छबीले ने बोली तोय ॥ कब की मनावत आली उतरु न देति कैसैंहु मन न आवत छेल छबीले की होरी को सुख तातैं लैन पठाई मोय ॥१॥ सुनति बतीयाँ प्रीतम की प्रेम मग्न क्यौं न होत धन तेरी छतीयाँ नींद भरी रहो सोय ॥ इतनौं सुनति प्यारी कर लीए पिचकारी 'रसिक' पीतम सँग मदन बिथा खोय ॥२॥

३ राग कान्हरो मान न कीजिए पीय सौं नागरी नवेली नार यह होरी के दिनन को ॥ अबीर गुलाल केसर चोवा चंदन घनसार मृगमद मलय कपूर सुवासन धरे हे बिबिधि रँग तो बीनु लागति सब फीको ॥१॥ अधर बिंब ललित प्रवाल करि सिंगार मृगनैनी दसनन हूती तेरी नब जोबन अंग-अंग जगमग जोति रसिक प्रीतम कों ॥ चले क्यौं न गिरिधरनलाल सो हिलिमिलि आली और अनेक सब सुनि री नागरी भोजन पाछे का अचवन घृत को ॥२॥

४ राग कान्हरो रँग महल रंग फाग रंगन मिल्यो सुहाग रंगीली होरी की राति तोसूं रंग रहेगो आज ॥ रंगीले से गिरिधरन पिय रंग गुलाल अबीर लये तेरो ही मग जोबत मान गढ़ छौंडि प्यारी करि हो रंग अचल राज ॥१॥ दूती के बचन सुनि बृषभानु नंदिनी सकल सिंगार सजि चली

भूषण बसन साज ॥ 'नंददास' प्रभु प्यारी हँसि भेटत अँकवारी जाल रंध्र निरखि-निरखि सुफल पूरन काज ॥२॥

राग अडानो

१ राग अडानो मान न कीजै पिय सौं भामिनि फागुन में पीतम तौ तोय बोलन ॥ अबीर, गुलाल, कुंमकुमा, केसर मृगमद, घनसार रचि धरे बिबिधि अमोलन ॥१॥ मान करि बेठी तोई लाज हू न आवति, होरी के दिनन है घुंघट क्यौं न खोलत ॥ 'नंददास' प्रभु प्यारी, रूप गुन उजियारी बाको मन तेरे आली सँग लाग्यो डोलत ॥२॥

राग बिहाग

१ राग बिहाग लाल करत मनुहार री प्यारी मान मनायो तेरो ॥ मदन मोहन पिय नव निकुंज में नाम रटत हें तेरो ॥१॥ नवल नागर गुन के आगर देख ऋतुराज आयो नेरो ॥ रसिक प्रीतम सों हिलमिल भामिनी ज्यों रीझे चित्त तेरो ॥२॥

२ राग बिहाग प्यारी तेरो मानगढ कौन उतारे ॥ दिन प्रति नौतन होत सखीरी कौन काज बिचारे ॥१॥ तेरे मन कछु ओर सखीरी मेरे मन जो उचारे ॥ काहू मिसले रंगन भरीरी गिरधर लाल समारे ॥२॥ यह समयो है दिवस चार को को यह न्याव विचारे ॥ हित हरि वंश पुलिन यमुना तट लालन दृगन निहारे ॥

३ राग बिहाग होरी खेलेई बनेगी रूसें केसें बनेगी ॥ ऐसेही रंग रहेगो रंगीली तू बहुरंग सनेगीं ॥१॥ ऐसें कैसें फगुआ पैयत तामे गुन ओगुन ना गिनेगी ॥ रसिक प्रीतम के संग होरी खेलत खेलिमें भोंह तनेगी ॥२॥

४ राग बिहाग या ऋतु को सुख मान सखीरी तोय मान मनावन मोहि पठाई ॥ तू हठ मांड रही कबहू ते तोहि वीर नाहि बिसारी ॥१॥ तो बिन होरी को रंग न व्हे है बिधिना कर तोए मान महारी ॥ प्रान प्रीया की प्रान पियारी मान मेरो कह्यो बलिहारी ॥२॥

५ राग बिहाग सो यह दिन कैसें निबहेगो मान तेरो आयो फाल्गुन मास कह्यो तू मान ॥ तज हठ कपट हठीली नागरि सुनि सांची जिय जान ॥१॥ आयेरी लाल मनावन तोकों भाग आपुने ऊर आनि ॥ ऊठ चलि हिल मिल हरिदास के स्वामी सों अब मोहें जिन तान ॥२॥

६ राग बिहाग लाडिली मानन कीजे होरी के दिन में कौन तिहारी बान ॥ चार दिवस को खेल मच्यो है बेठी है भोहे तान ॥१॥ मान मनाय बलैया लेहूं कहो जोरि जुग पान ॥ गुन निधान पीय पास उठि चलो केलि खेलि की जान ॥२॥

७ राग बिहाग पिय संग खेलति अधिक श्रम भयो री आवरीने कुकरों बयार ॥ अपुनों अंचल ले सकुमार प्यारी निरखि बदन श्रमकनकी बलिहार ॥१॥ बिथुरी अलक श्रवन नासिका मांग के मोती अस्त व्यस्त भये ताय बांधु संवार ॥ सूरदास प्रभु प्यारी के मिले को सुख जाय देखों ताय डारों बार ॥२॥

८ राग बिहाग प्यारी मान धरे मन भावे ॥ वृंदावन खेलत नंदनंदन तो बिन सचु नही पावे ॥१॥ अबीर गुलाल अरगजा लेकें ध्यान तेरें मुख लावे ॥ चोंक परें चितवे फिर इत ऊत ले मुरली फेर गावे ॥२॥ कर सिंगार सहज थोरी ही बेगि चलो पिय सचु पावे ॥ श्रीविठ्ठल गिरधरनलाल कों और न कोऊ चित आवे ॥३॥

९ राग बिहाग नित उठ मान मनावे हो प्यारी ॥ कौन टेव परी व्रज सुंदरी पीय कों पांय पडावे हो ॥१॥ नही बूझत समजत मनसजनी सहज बात उठ आवे हो ॥ तू जो कहत हों निपट सयानी सयानप कौन कहावे ॥२॥ यह दिन फाग सुहाग राग के सब काहू मनभावे हो ॥ श्रीविठ्ठल गिरधरनलाल सों काहे न रंग बढ़ावे हो ॥३॥

१० राग बिहाग यह दिन होरी को सो तू जिन मान करे ॥ मेरो कह्यो तू मान हठीली काहेंकू गर्व करे ॥१॥ उठ चल हिल मिल गिरधर पीयसों तो सब काज सरे ॥ तेरे ही बस हैं व्रजपति अब तेरोई ध्यान धरे ॥२॥

११ राग बिहाग होरी के खेल में गुमान केसो ॥ मान मान

की ठोर जो तुम खेल खिलाय चाहत हो रंग राग रहे तोसो ॥१॥ इतते आई कुंवरि राधिका उततें आये कान्ह ॥ सूरदास प्रभु रस बस कर लीये राख्यो सबन को मान ॥२॥

१२ राग बिहाग होरी के दिनन में पीया मोसौं बोलत नाही अब कछु जतन बताई भटू री ॥ तपत मेरो मन कबहु न छिरक्यो गुलाल सुरंग चूनरी मेरी पीत पटु रीं ॥१॥ अब कैसें जीवन होई मेरी सजनी जब निकसति स्याम मो तन निहारति वा गोरी सौं भयो है लटूरी ॥ मानति नाही मोसौं सोंह खाई 'रसिक' पीतम पीय नागर नटु री ॥२॥

बसंत धमार पौढवे के पद - राग वसंत

१ राग वसंत खेलति खेलति पौढी स्यामा नवललाल गिरिधर पिय सँग॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा झारति फिरति सकल अँग अँग ॥१॥ बाजति ताल मृदंग अघौंटी बीना मुरली तान तरँग ॥ 'कुंभनदास' प्रभु यह बिधि क्रीडति जमुना पुलिन लजावति अनँग ॥२॥

२ राग वसंत खेलि फागु मुसिकात चले दौऊ पौढे सुखद सेज मिलि दंपति॥ हँसि हँसि बात करति सुनि सजनी निरखति कृपन मिली मनौं संपति॥१॥ करति सिंगार परसपर हुलसति सोभा देखि मदन तन कांपति ॥ 'व्रजपति' पिय प्यारी मिलि बिलसति सखी ललितादिक चरनन चाँपति॥२॥

३ राग वसंत खेलि वसंत जाम चारयौ निसि हँसति चले पौढ़न पिय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी ॥१॥ नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना करधारी ॥ पौढ़े नवल सेज नव 'व्रजपति' चाँपति चरन नव, भानु कुमारी ॥२॥

४ राग वसंत प्यारी पिय खेलति बर वसंत ॥ उपजति दुहुँ दिस सुख अनंत ॥ध्रु० ॥ अद्भुत सोभा गौर स्याम ॥ लाल पिया उर ललित दाम ॥ उमँगि उमँगि अँग भरति वाम ॥ सहचरी सँग कला काम ॥१॥ सेज सुहाई अमल खेत॥ चलति कटाच्छ पिचुकि भरि हेत॥ सनमुख भरि छबि छींट लेति ॥ रोम रोम आनँद देति ॥२॥ नख प्रहार छबि कनि

गुलाल ॥ राजति बिच उर टुटी माल ॥ जावक रँग रँग्यौ लाल भाल ॥ पीक पलक रँगी ललित माल ॥३॥ बाजैं ढफ भूषन सुभाई ॥ बाढ्यौ सुख कछु कहयौ न जाई ॥ सुरति रँग अँग छाई ॥ 'दामोदर' हित सुरस गाई ॥४॥

५ राग वसंत वसंत बनाई चली व्रज सुंदरि रसिक राए गिरिधर पिय पास ॥ अँग अँग बेलि फूलि मृग नैंनी कुच उतंग मनौं कमल विकास ॥१॥ कोक कला बिध कुंज सदन मैं गिरिवरधर सँग किये बिलास ॥ कुसम पर्यंक अँक भरि पौढे निरखति बलि 'परमानँद' दास ॥२॥

६ राग वसंत ऋतु वसंत बिलसति राजत रगमगे रँग ॥ पौढे दंपति अंग अंग सोभा कही न जाई दामिनी सी सोभा तन राधा घनस्याम संग ॥१॥ अरस परस लुम झुम नैना अति घूम घूम मंद मंद आलस बलित लजावति कोटि अनंग ॥ हरियारो हरख अति सुजस गाय 'नंददास' जाल रंध्र निरखि निरखि मानु गोपीजन अति उमँग ॥२॥

७ राग वसंत खेलि फाग अनुराग भरे दोऊ हँसति चले पोढन पीय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी ॥१॥ नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना कर धारी ॥ पौढे नवल सेज नव ब्रजपति चांपत चरन नव भानु कुमारी ॥२॥

राग काफी

१ राग काफी होरी खेलति ब्रज कुंजन महियाँ ॥ नंद नँदन सौं अति रति बाढ़ी लाड़िली बिहरति कदंब की छैयाँ ॥१॥ पौढ़न के समै के औसर और न कोऊ रह्यों तिहिं सैयाँ ॥ 'सरस रंग' संतत यह जोरी पीतम प्यारी बिना कोऊ नहियाँ ॥२॥

२ राग काफी ब्रज में होरी रँग सुहायो ॥ बंसी बट जमुना तट कुंजन पीतम प्यारी भायो ॥१॥ पौढन के समै के औसर ललिता रँग जमायो ॥ 'सरस रँग' संतत यह जोरी भाग बड़े तैं पायो ॥२॥

राग बिहाग

१ राग बिहाग खेलत वसंत संगले भामिनी पोढे हैं पीय प्यारी ॥

श्रीराधे वृषभानु नंदिनी नवल लाल गोवर्धन धारी ॥१॥ सखी साज सब लै खेलन को घिरि आई तिहिं ठौरे ॥ सुंदर सरस जवाद अरगजा केसर चोवा घौरें ॥२॥ ले गुलाल कर मुखहि लगावत दोऊ परस्पर सोहें ॥ कहा कहूं छबि की शोभा उपमा कों कवि कोहें ॥३॥ नैन नींद भर अति आलस युत सुख बिलसत श्रीघनश्याम ॥ प्रभु रघुनाथ आनंद सो पूरे मन के काम ॥४॥

२ राग बिहाग रंगमहल पोढे पीय प्यारी ॥ नैन गुलाल लग्यो प्रीतम के ले अंचल पोंछत जतनन कर श्रीवृषभान दुलारी ॥१॥ रीझ रीझ मिलवत भौंहन अंग कछु सकुच जिय लाज बिचारी ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धन धर हिय लगाय लई सकुमारी ॥२॥

३ राग बिहाग निकुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी रंग रंग भीनी सारी ॥ खेलि फाग रस अति ही उमग लियो है लाला मनुहारी ॥१॥ शिथिलित बसन जृंमात आलस भरे पौढे पर्यंक सुखकारी ॥ नंददास दंपति छबि ऊपर तन मन धन बलिहारी ॥२॥

४ राग बिहाग पोढी प्यारी पिय के संग सबै बसन भरे रंग ॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो दोऊ आलस बस सब अंग ॥१॥ हँसति परस्पर अतिरस बिहरति आंखें भरति उमंग ॥ परमानंद दंपति छबि ऊपर वारों कोटि अनंग ॥२॥
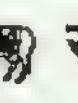
५ राग बिहाग लालन पोढीयें जु बाल रुचि-रुचि सेज बनाई ॥ सोंधे सों सुवास छिरकि कुँमकुम अबीर अति सुखदाई ॥१॥ बीरा धरि पहुप माल भोग राग अति रसाल रसही रस केलि करौ व्रजजन सुखदाई ॥ ब्रिंदावन चंद चारु चांदनी किशोरी कुंवरि रहसि हंस कंठ लगाई ॥२॥

६ राग बिहाग खेले बसंत पिया संग पोढी आलस युत रंग भीनी ॥ नवल लाडिली प्रान प्रीया दोऊ नवल अंस भुज दीनीं ॥१॥ नौतन सेज रची सखीयन मिलि अति सुगंध सरसीनी ॥ नवल बीजना कर लीयें माधुरी निरखत नेह नवींनीं ॥२॥

७ राग बिहाग नींद भरे नैना दुर दुर जात ॥ सब दिन बीत्यो

होरी के ओसर अंग अंग अरसात ॥१॥ रंग रंग मगो गुलाल सगमगो लाग्यो अरगजा सामल गात ॥ ले अंचल पोंछत प्यारी राधा पीयतन देख देख मुसिक्यात ॥२॥ बहुत गई निस जान पीतम संग पोढ रही लपटाय ॥ सूरदास प्रभु फाग खेल की अरस परस बातें बतराय ॥३॥

८ राग बिहाग चलेहो भांवते रस ऐन ॥ खेल फाग अनुराग भरे दोऊ मत्त द्विरद गति गैन ॥१॥ सोभित बसन गुलाल सगवगे अति आलस युत नेन ॥ रसिक बिहारी बिहारिन कीनों नव निकुंज मधि सैन ॥२॥

९ राग बिहाग खेलि फाग निकुंजन दोऊ पोढे हैं पिय प्यारी ॥ रंग भीने रस भीने दोऊ करत बिलास महारी ॥१॥ कुच कलसन पर बांह धरावत चुंबन अति सुखकारी ॥ रसिक मुकट मणि रसमय दंपति कृष्णदास बलिहारी ॥२॥
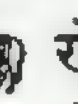
१० राग बिहाग निसके उनीदे नेना दुरिदुरि जात ॥ सब दिन बीत्यो होरीके ओसर अंगअंग अलसात ॥१॥ रंग रगमगे गुलाल सगमगे लग्यो अरगजा सांवल गात ले अंचर पोंछत पिय प्यारी पिय तन निरख मुसकात ॥२॥ बोहोत गई निस जान लाल संग पोढ़ी पिय अंग अंग लपटात ॥ कृष्णदास प्रभु फाग खेलकी अरसपरस बातें बतरात ॥३॥

११ राग बिहाग पोढ़े पीय-प्यारी रंग भरे ॥ अरसपरस दोऊ रीझि रिझावति लै आरसी जो करे ॥१॥ तेरी री बसन सौंधे सौं भरि जु रहे री खरी ॥ तु जो मिलती सखी री दै अधरामृत मोहन प्रसन करे री ॥२॥

वसंत धमार आश्रय के पद

१ राग वसंत श्रीवल्लभ प्रभु करुना सागर जगत उजागर गाइए ॥ श्रीवल्लभ के चरन कमलकी बलि बलि जाइए ॥१॥ वल्लभी सृष्टि समाज संग मिली जीवनकौं फल पाइए ॥ श्रीवल्लभ गुन गाइए याहि तैं 'रसिक' कहाइए ॥२॥

आशिष के पद

१ राग वसंत खेलि फागु अनुरागु मुदित जुबती जन देति असीस ॥ रसिकन की रस रासि श्रीबल्लभ जीयौ कौटि बरीष ॥१॥ फिरि आईं खेलन

कैं कारन अबला जुरि दस बीस ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा खेलौ वसंत जय जय गोकुल के इस ॥२॥

२ राग सारंग खेल फाग घर आयो लाडिलो जसुमति करत बधाई ॥ विविध उपहार लिये सब व्रजजन संग लगाई ॥१॥ कनक थार भर मुक्ताफल ले आरती उतराई ॥ नंदनंदन की या छबि ऊपर सूरदास बलजाई ॥२॥

डोल के पद - राग नट

१ राग नट खेल फाग फूल बैठे झुलत डोल डहडहे नागर नयन कमल ॥ बहुत दिननके भये हें श्रमित सुख सखी संग लीने राधाकृष्ण रस रास जवल ॥१॥ गावत राग रागिणी सों मिल कंठ सरस कोकिलाहूतें अमल ॥ कल्याण के प्रभु गिरिधर रीझ झोटा देत हीये हरख गोरे गात छूटे छबि सों धवल ॥२॥

२ राग हमीर डोल झुलत हें गिरिधरन झुलावत बाला ॥ निरख निरख फूलत ललितादिक श्रीराधावर नंदलाला ॥१॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनि उडत अबीर गुलाला ॥ कमल नयन कों पान खवावत पहरावत उरमाला ॥२॥ बाजत ताल मृदंग अधोटी कूजत वेणु रसाला ॥ नंददास युवती मिल गावत रिझवत श्रीगोपाला ॥३॥

३ राग हमीर डोल चंदन को झुलत हलधर वीर ॥ श्रीवृंदावन में कालिंदी के तीर ॥१॥ गोपी रही अरगजा छिरकत उडत गुलाल अबीर ॥ सुरनर मुनिजन कौतुक भूले व्योम विमानन भीर ॥२॥ वाम भाग राधिका विराजत पहरे कसूंभी चीर ॥ परमानंद स्वामी संग झूलत बाढ्यो रंग शरीर ॥५॥

डोल - राग कल्याण

१ राग कल्याण डोल झूलत हें ललना ॥ निरख निरख फूलत ललितादिक संग सहचरी बलना ॥१॥ सप्त स्वरन मिल गावत सब मिल झील को किल कलना ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी रीझ भये मगना ॥२॥ डोल झुतहें गिरिधरन नवल नंदलाला ॥ व्रजपुर वनिता निरख

वारतहें कंचन की मणिमाला ।।३।। सकल श्रृंगार अनूप विराजत कूजत वेणु रसाला ।। माधोदास निरख गोपीजन प्रमुदित श्रीगोपाल ।।४।।

२ राग कल्याण डोल झुलतहें प्यारो लाल विहारी विहारिन ए राग रम रह्यो ।। काहू के हाथ अधोटी काहू के बीन काहू के मृदंग को झप ले ताल काहू के अरगजा छिरकत रंगरह्यो ।।१।। डांडी डांडी खेल मच्यो जो परस्पर नहीं जानियत पग क्यों रह्यो ।। हरीदास के स्वामी स्यामा कुं विहारी ऊनको खेल किंनहूं न लह्यो ।।२।।

३ राग कल्याण डोल झुलत हें हंसि मुसक्यात परस्पर ।। सुरंग गुलाल लई जु मुठी भर कटि तट में राखी छिपाय करि चाहत भयो द्रगंचर ।।१।। देखो कहत अनेक कुसम पर कैसें दोरत हें री अलिवर मानों चंपे पंचसर केसर ।। जब जीयकी जानी मुख ऊपर तबे दई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी नर ।।२।। यह विधि फूलत हैं री गिरिवरधर परस पान कपोल मनोहर रीझे देत कबहूं उरसों उर ।। मदन मोहन पीय परम रसिक वर कहा कहूं यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ।।३।।

४ राग कल्याण झूलत डोल नवल किशोर नवल किशोरी ।। वृंदा विपिन सुभग यमुना तट मुकुलित नूत माधवी मोरी ।।१।। कदली खंभ ढिंग ठाडी तरुणी गण गावत दुहूं ओरी ।। पूरत अधर धरें मनमोहन मधुर मुरली ध्वनि थोरी ।।२।। हाथन गहे कनक पिचकाई केसर सरस अगर घस घोरी ।। पृथक पृथक छिरकत जु परस्पर सुंदर स्याम राधिका गोरी ।।३।। सुरंग गुलाल अबीर उडावत धन ज्यों जुर चढ गगन गयोरी ।। जुगल किशोर नवल बानिक पर व्रजजन बल डारत तृणतोरी ।।४।।

५ राग कल्याण झूलत नंद-नंदन डोल ।। कनक खंभ, जराई पटुली, लगे रत्न अमोल ।। सुभग सर्ल सुदेश डाँड़ी, रची बिधना गोल ।। मनौ सुर-पति सुरसभातैं, पठै दियउ हिंडोल ।। जबहि झंपत, तबहि कंपति, बिहँसि लगति उरोल ।। त्रिदस-पति सजि चढ़ि बिमाननि, निरख दै-दै ओल ।। थके, मुख कछु कहि न आवै सकल मखकृत झोल ।। सखी नव-सत साज कीन्हें, बदतिं मधुरे बोल ।। थक्यौ रति-पति देखि यह छबि,

भयौ बहु भ्रम भोल ॥ सूर यह सुख गोप-गोपी, पियत अमृत कलोल ॥

६ राग कल्याण डोल झुलत नंदनंदन छिरकत चोबा-चंदन ॥ ललिता-बिसाखा झुलवति ठाढी कर गहि डोल जु कंचन ॥ बृंदावन प्रफुलित द्रुम-बेली कोकिल कुंजन हंसन ॥ नौतन चूत प्रवाल रहे लसि एक लिये ठाढे हैं अंजन ॥ अबीर-गुलाल उडावत दुहूँ दिसि लियें भराई भरि-भरि झोरनि ॥ 'परमानंददास' कौ ठाकुर गोपिनि के चित-चोरनि ॥

७ राग केदारो झूलत डोल नवलकिशोरी ॥ वृंदाविपिन सुभग यमुनातट मुकुलित नूत माधवी दोरी ॥१॥ कदली खंभ ढिंग ठाडी गुण गावत दुहूँओरी ॥ पूरत अधर धरे मनमोहन मधुर मुरली ध्वनि थोरी ॥२॥ हाथन गहे कनक पिचकाई केसर सरस अगर घसघोरी ॥ पृथक-पृथक छिरकत जु परस्पर सुंदर श्याम राधिका गोरी ॥३॥ सुरंग गुलाल अबीर उड़ावत घन ज्यों जुर चढ गगन गयोरी ॥ जुगलकिशोर नवल बानिकपर व्रजजन बल डारत तृणतोरी ॥४॥

(यह पद ४ थे भोग आरती के बाद गावें)

डोल - आशिष के पद राग- देवगंधार

१ राग देवगंधार झूलत डौल दोऊ अनुरागे ॥ केसर और गुलाल सों मीजे चोवा लपटे वागे ॥१॥ ललितादिक मिल झुलवत गावत एक एकते आगें ॥ वाजत ताल पखावज आवज मुरली संग सुहागें ॥२॥ देत असीस चली व्रज सुंदरि फिर खेलेंगे फागें ॥ कृष्णदास प्रभु की छबि निरखत रोम रोम रस पागें ॥३॥
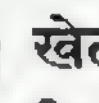
२ राग देवगंधार सखी मिलि झुलवत अपुने रंग ॥ झूलवत डोल लाडिलो गिरिधर राधे ले अरधंग ॥१॥ अंब मोर फल लता माधुरी रचि फूलन करि संग ॥ नॉचत गावत करत मनोरथ भाव दिखावत अंग ॥२॥ प्रथम खेल स्यामा प्यारी कों केसर चोवा बंद ॥ अबीर गुलाल उडावति हे बिलि रीझय गोकुल चंद ॥३॥ दूज्यो खेल रच्यो चंद्रावलि अद्भुत बन्यो स्वरुप ॥ दोऊनके मनमोद बढावत लागत परम अनूप ॥४॥ तीज्यो खेल
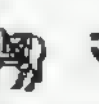
रच्यो ललितादिक को करि सके बखान ॥ ओर अकोर कहां लों दीजे नोछावरि करि प्रान ॥५॥ चोथो खेल मदनमोहन को बरखत रंग अपार ॥ पिचकाई चहूं दिस तें छूटत अबीर गुलाल धमार ॥६॥ यह रस रीति कहा कोऊ जाने श्रुति हूँ गावति नेति ॥ 'द्वारकेश' प्रभु झूलि पधारे निज मंदिर संकेत ॥७॥

राग धनाश्री
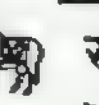
१ राग धनाश्री राधाकुंवर रसिकसखी अनुरागे पागे रससों सब नंदद्वार पै आये ॥ बार आरती बिविध भांत सों जसुमति करत बधाये ॥१॥ न्हान चले यमुना किलकित सब शोभा बरनी न जाई ॥ देखत ही अमरेस थकित भये पहुंपन वृष्टि कराई ॥२॥ खेलि फाग अनुराग सिंधु बढ्यो ब्रजजन संग लगाई ॥ सुंदर बदन कमल ऊपर रघुवीर वारनें जाई ॥३॥

राग वसंत

१ राग वसंत खेल फाग अनुराग मुदित जुवती जन देत असीस ॥ रसिकन की रस रासि श्रीवल्लभ जीयो कोटि बरीष ॥१॥ घिर आई खेलन कें कारन अबला जुरि दस बीस ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा खेलो वसंत जय जय गोकुल के ईश ॥२॥

२ राग वसंत खेलि फाग घर आयो लाडिलो जसोमति करत बधाई ॥ विविध भांति उपहार लीयें सब ब्रजजन मंगलगाई ॥१॥ कनक थार भरि मुक्ताफल लै आरती उतराई ॥ नंदनंदन की या छबि ऊपर सूरदास बलिजाई ॥२॥

श्री गुसांई भादो वसंत

१ राग वसंत खेलत वसंत वर विठ्ठलेश ॥ आनंद कंद गोकुल सुदेस ॥१॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग ॥ श्रीबालकृष्ण लज्जित अनंग ॥२॥ श्रीगोकुलनाथ अनाथ नाथ ॥ रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ ॥३॥ श्रीघनश्याम अभिराम धाम ॥ श्रीकल्यान राय परिपूरन काम ॥४॥ मुरलीधर आदि समस्त बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल ॥५॥ जहां उडत गुलाल अबीर रंग ॥

तहां वाजत ताल मृदंग चंग ॥६॥ जहां गिरिवरधारीजू खेलन आये ॥ तहां लघु गुपाल बलिहारी जाये ॥७॥

२ राग सारंग डोल भलो सिंगार्यों फुलनि ॥ वृन्दावन वंसीवट छैयां श्री जमुना के कुलनि ॥१॥ नंदनंदन वृषभान नंदिनी बैठे दोऊ जन झुलनि ॥ छिरकत केसर चोवा चंदन छाड्यो गुलाल अतुलनि ॥२॥ माँगति फगुवा सब ब्रज युवति कह्यो हमें जिन भूलति ॥ वसन मँगाय दिये 'ब्रजपति' तबै ओरे रतन अतुलनि ॥३॥

३ राग सारंग नँद नंदन कुंवरि राधिका नागरि डोल झूलति बने रँग भीनें ॥ कौं मन रहे झुमन फल फूल चहुँ और तैं ॥ गोपिका जूथ मिलि मधुर लीनें ॥१॥ खेलि गहरो दोऊ और तैं ह्वै रह्यो रँग घुमडनि भई प्रबल भारी ॥ देव मुनि देखि किन्नर थकित ह्वै रहे सुर वधू बिकसि रही काम चारी ॥२॥ ब्रज कुंवर लाडिलो नित्य लीला ललित हे रही सरस रस रंगकारी ॥ 'रसिक' जन मनन करै देखि दृग अपनै परान इक बल करों वारि डारी ॥३॥

४ राग सारंग माई ! फूलेही फुलत, श्री राधा कृष्ण झूलत, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले फूलनि जोरत, फुले निमिष न मोरत, संतनि हित फूल डोल ॥ फूल फटित खंभ रचित, कंचन ही फूल खचित, सरस रसहि फूल डोल ॥ पटुली नव रतन पचित, हीर लाल मोति जटित, संतनि हित फूल डोल ॥ मरूवा मयारी दरोल, झूमका प्रवाल ओल, सरस रसहि फूल डोल ॥ डाँडि हेम चारू गोल, चुनिनि फूल लगे लोल, संतनि हित फूल डोल ॥ फूले बृंदावन, अनुकूल, सघन लता फूले फूले, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले श्री जमुन कूल बिबिध रंग फुले फूल, संतनि हित फूल डोल ॥ फूले चंपक, चमेलि, फूल लबँग लता बेलि, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूली नेवारि एलि, मोगर सेवति, सुबेलि, संतनि हित फूल डोल ॥ तहाँ मौरे अंब फूले, निबुआ फर सदा भूले, सरस रसहि फूल डोल ॥ तहाँ कमल, केवर फूले केतकि कनैर फूले, संतनि हित फूल डोल ॥ फूली मधु मालति रेलि, फूलि मधुप करत केलि, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले फले आनंद बेलि फूलि पिबत सुरस पेलि, संतनि हित फूल डोल ॥ फूलनिके

सौंधे वार, मनौ मधुप छबि अपार, सरस रसहि फूल डोल ।। फूलनि के हियपे हार, सुरसरि मनु धरे धार, संतनि हित फूल डोल ।। माथ मुकुट रचित फूल, फूलनिके, सीसफूल्न, सरस रसहि फूल डोल ।। फूलनि बेंदी लिलार, फूलनि नख-सिख सिँगार, संतनि हित फूल डोल ।। फूलि धेनु ग्वाल-बाल, झूले नँदजू के लाल, सरस रसहि फूल डोल ।। फूलि तरुनि बृद्धवाल, फूलि करति बिबिध ख्याल, संतनि हित फूल डोल ।। फूलि रोहिनि जसुद रानि, फूलि देखि राजधानि, सरस रसहि फूल डोल ।। नँद हलधर सुख मानि गोकुल, सब फूले प्रानि, संतनि हित फूल डोल ।। फूलै बजै मृदंग, महुवरि, डफ, ताल, चंग, सरस, रसहि फूल डोल ।। फूलि बजे बंसुरि संग, अमृत कुंडली, उपंग, संतनि हित फूल डोल ।। फूलि बजें किनरि, तार, सुरमंडल, झनतकार सरस रसहि फूल डोल ।। फूल बजें गिरिगिरार, भेरी घहरें अपार, संतनि हित फूल डोल ।। फूलि बजै मुरूँज, रुज, झाँझ झालरीनि पुंज सरस रखहि फूल डोल ।। फूले बजै दुंदुभि गुंज, कूजत कोकिल निकुंज, संतन हित फूल डोल ।। ब्रज ललना डोल फुलै गोपि झुलवत कान्ह झुलै, सरस रसहि फूल डोल ।। फूले मुदित मनोहर तूले रसिकिनी रसिक फूले संतन हित फूल डोल ।। फूले हरषि परसपर गावैं, मीठी बोली बुलावै, सरस रसहि फूल डोल ।। फूली मुदित मनोहर भावें, लाड़ लालनहिं लड़ावै, संतन हित फूल डोल ।। फूली चंदन बंदन रोरी, केसरि मृगमद घोरी, सरस रसहि फूल डोल ।। फूली छिरकति नव किसोरि, अबिर भरि गुलाल झोरि संतन हित फूल डोल ।। फूली नाचति जोबन बिभोरि, जुथनि लै जूथ जोरि सरस रसहि फूल डोल ।। फूली करत कुलाहल खोरी, पुर नर-नारी किसोरी संतन हित फूल डोल ।। फूले फगुवा दे रस राख्यो, पट भूषन नहिं काँख्यौ, सरस रसहि फूल डोल ।। फूले हरि हँसि अमृत भाख्यौ, सबहीको मन राख्यौ संतन हित फूल डोल ।। फूले नारदादि करत, गान, रिषि मुनि सिव धरत ध्यान, सरस रसहि फूल डोल ।। फूले बीना हरि जस बखान, फेरि उग्रसेन आन, संतन हित फूल डोल ।। फूले कहि हरि, मुनि ।। कहो जाई, तुरत मोहि लै बुलाई, सरस रसहि फूल डोल ।। फूले रजधानी, असुर आई, जमुना मैं द्यो बहाई, संतन हित फूल डोल ।। फूले अग्रसेन छत्र द्याई, मथुरा

आनँद बढ़ाई, सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले पितु माता मिलौं धाई दुःख नसि, सुख देऊँ जाई, संतन हित फूल डोल ॥ फूले मुनि सुनि यह हरषाई, भूमी ब्रज रतन छाई सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले सूरपति, सुर सची आई नभ सुमन चढ़ि बरषाई, संतन हित फूल डोल ॥ फूले हरषत होरी खिलाई, मुनि गे बैकुंठ सिधाई सरस रसहि फूल डोल ॥ फूले हरषति हरि सुजस गाई, पूछत सुर, कहि न जाई, संतन हित फूल डोल ॥ पढ़ै, पढ़ाइकै सुनावै, ते बैकुंठ पद पावै, सरस रसहि फूल डोल ॥ सूरदास कैसे करि गावै, लीला सिंधु पार न पावै, संतन हित फूल डोल ।

शेहरा के पद

१ राग बसंत दुलहे श्री ब्रजराज दुलारो दुलहिन भानु किसोरी ॥ सीस सेहरो सोभित नीकों भली बनी यह जोरी ॥१॥ राजति रंग भरे दोउ रस रस में आई जुरी ब्रजनारी ॥ गावति मंगल गीत बधाए हँसि-हँसि देति परसपर तारी ॥२॥ बूका वंदन चोवा चंदन गुलाल अबीर उड़ावे ॥ मृगमद केसर लै-लै छिरकति सबहीन के मन भावे ॥३॥ आरति वार करति न्योछावर ब्रजनारी सुख पायो ॥ जुगल रूप मन माँही बसो 'रघुनाथ दास' मन भायो ॥४॥

२ राग सारंग डोल झुलावत लाल बिहारी नाम लेलें बोलें लालन प्यारी हें दुलहा दुलहेनि दुलारी सुंदर वरस कुमारी ॥ नखसिख सुंदर सिंगारी केसु कुसुम सुहस्त सम्हारी स्याम कंचुकी सुरंग सारी चाल चले छबि न्यारी ॥१॥ वारंवार बदन निहारी अलक तिलक झलमलारी रीझ रीझ लाल रे बहिलारी पुलकित भरत अंकवारी ॥ कोककला निपुन नारी कंठ सरस सुरहि भारी सुयश गावत लाल बिहारी बिहारिन की बलिहारी ॥२॥

डोल के पद - राग देवगंधार

१ राग देवगंधार मनमोहन अद्‌भुत डोल बनी ॥ तुम झूलों हों हरख झुलाऊँ वृंदावन चंद धनी ॥१॥ परम विचित्र रच्यो विश्वकर्मा हीरालाल मनी ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि कापें जात गनी ॥२॥

२ राग देवगंधार झूलत फूल भई अति भारी ॥ निर्मित वर

हिंडोल विटप तरू वृंदा विपिन विहारी ॥१॥ सखी सकल अति मुदित भई हें पहरें विविध रंग सारी ॥ भृकुटी भृंग लावण्य अंग अंग प्रति कोटि मदन छबि टारी ॥२॥ वरणन करियें कहा प्रेम को रुचिदायक तहां गारी ॥ व्यास स्वामिनी की छबि निरखत प्राण संपदावारी ॥३॥

३ राग देवगंधार मोहन झूलत बढ्यो आनंद ॥ एक और वृषभान नंदिनी एक और व्रज चंद ॥१॥ ललिता बिशाखा झुलवत ठाडी कर गहि कंचन डोल ॥ निरख निरख प्रीतम अरु प्यारी विहस कहत मृदु बोल ॥२॥ उड़त गुलाल कुंकुमा वंदन परसत चारू कपोल ॥ छिरकत तरुणी मदन गोपाले आनंद ह्दें कलोल ॥३॥ कहाकहों रस बढ्यो परस्पर त्रिभुवन वरन्यों न जाय ॥ कुंभनदास लालगिरिधर की बानिक अधिक सुहाय ॥४॥

४ राग देवगंधार झूलत डोल नंद किशोर ॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी पहिरें पीत पटोर ॥१॥ वाजत ताल पखावज आवज झालर मुरली घोर ॥ उड़त गुलाल अबीर अरगजा कुंमकुम जल चहुँ ओर ॥२॥ वृंदाबन फूली वन बेली कुंजित कोकिला मोर ॥ झूलत स्याम झुलावत गोपी आनंद बढ्यो न थोर ॥३॥ अति अनुराग भरी सब सुंदरि कर अंचर की छोर ॥ कमल नयन मुख शरद चंद्रमा युवती जन नयन चकोर ॥४॥ सुर विमान सब कौतुक भूले वरखे कुसुमन जोर ॥ 'सूरदास' प्रभु आनंद सागर गिरिवरधर सिरमोर ॥५॥

५ राग देवगंधार आज माई झूलत हें नंदलाल ॥ संग राजत वृषभान नंदिनी जोरी परम रसाल ॥१॥ श्रीगोवर्द्धन की सुभग शिखर पर रच्यो जो डोल विशाल ॥ कदली करण केतकी कुंजो बुकल मालती जाल ॥२॥ नूतन न्यूत प्रवाल रहे लस माधुरीसों अरुझाय ॥ कमल प्रसून पराग पुंज भर बहत समीर सुहाय ॥३॥ मधुप कीर कल कोकिल कुंजत रस मकरंद लुभाय ॥ सुन सुन श्रवण पुलक पिय प्यारी रहत कंठ लपटाय ॥४॥ निरझर झरत सुगंध सुबासित रंग रंग जल लोल ॥ उभय कूल कलहंस मंडली कूजत करत कलोल ॥५॥ युवतिजन समूह मिल गावत प्रमुदित लोचन लोल ॥ बाजत ताल मृदंग होत रंग विहसत चारु कपोल ॥६॥ चोवा चंदन छिरकत भामिनि अवलोकत रस भाय ॥ श्रीविठ्ठलनाथ आरती उतारत दास निरख बलजाय ॥७॥

६ राग देवगंधार मदन गोपाल झूलत डोल ॥ वाम भाग राधिका बिराजत पहरें नील निचोल ॥१॥ गौरी राग अलापत गावत कहत भामते बोल ॥ नंद नंदन को भलो मनावत जासों प्रीति अतोल ॥२॥ नीको वेष बन्यों मन मोहन आज लईं हममोल ॥ बलहारी मनमोहन मुरति जगत देहुं सब ओल ॥३॥ अद्भुत रंग परस्पर बाढ्यो आनंद हृदय कलोल ॥ परमानंद दास तिहिं अवसर उडत होलिका झोल ॥४॥

७ राग देवगंधार झूलत दोऊ नवल किशोर ॥ रजनी जनित रंग रस सूचित अंग अंग उठ भोर ॥१॥ अति अनुराग भरे मिल गावत सुर मंडल कल घोर ॥ वीच वीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नयन की कोर ॥२॥ अबला अति सुकुमार डरपत वरहिं डोल झकोर ॥ पुलक-पुलक प्रीतम उर लागत दे नव उरज अकोर ॥३॥ अरुझी विमल माल कंकण सों कुंडल सों कचडोर ॥ वे पथ युत क्यों बने विवेचित आनंद बढ्यो न थोर ॥४॥ निरख निरख फूलत ललितादिक बिब मुख चंद्र चकोर ॥ दे असीस हरिवंश प्रशंसित कर अंचल की छोर ॥५॥

८ राग देवगंधार वृंदावन नीको बन्यो डोल ॥ झूलत कृष्ण तरणि तनया तट जहां मधुपन के टोल ॥१॥ आस पास व्रज बालक मंडली मधुप करत झकझोर ॥ फूली सरस सुगंध माधवी झूम रही चहुं ओर ॥२॥ ओर पुष्प कहां लों बरनों अगणित झूमक झोर ॥ तामें कोकिला शब्द सुहाये नाचत मधुरे मोर ॥३॥ चोवा चंदन ओर अरगजा केसर भरी हें कुंमकुम घोर ॥ पिचकाई भरभर जु चलावत तक नव ऊरज कठोर ॥४॥ वाजे सरस सुहाये बाजत ताल मृदंग उपंग ॥ बाजत वीन बांसुरी महूबर ओर डफ ढोल मृदंग ॥५॥ हँस गावत करताल बजावत कहत होरिका होल ॥ डारत भरत अबीर सबे मिल भरत झोलका झोल ॥६॥ सुख की सीमा वरनी न जाई भली बनी हें जोर ॥ रस में मगन भये सब राजत कहा कहुं मति थोर ॥७॥ कहि मोहन जन प्रभु की लीला नवल किशोर किशोरी ॥ शोभा मोपें बरणी न जाय प्रमुदित चंद चकोरी ॥८॥

९ राग देवगंधार झूलत हंससुता के कूल ॥ सघन निकुंज पुंज

मधुपन के अद्भुत फूले फूल ॥१॥ ललित लता लपटी ललितादिक बरषत आनंद मूल ॥ घन दामिनि ज्यों राजत मोहन निरख गई मति भूल ॥२॥ रमा आदि सुरनारि सहचरी नाहिं कोऊ समतूल ॥ विष्णुदास गिरिधरन छबीलो सर्वस्व तहां अनुकूल ॥३॥

१० राग देवगंधार डोल माई झूलत हें व्रजनाथ ॥ संग शोभित वृषभान नंदिनी ललिता विशाखा साथ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ रुंज मुरज बहु भांत ॥ अति अनुराग भरे मिल गावत अति आनंद किलकात ॥२॥ चोवा चंदन बूका वंदन उडत गुलाल अबीर ॥ परमानंद दास बलहारी राजत हें बलबीर ॥३॥

११ राग देवगंधार झूलत डोल नंदकुमार ॥ चंहुओर झुलावत व्रज सुंदरी गावत सरस धमार ॥१॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी साजे सकल सिंगार ॥ आसकरण प्रभु मोहन झूलत व्रज के प्राण आधार ॥२॥

१२ राग देवगंधार गोकुल नाथ विराजत डोल ॥ संग लियें वृषभान नंदिनी पहरें नील निचोल ॥१॥ कंचन खचित लाल मणि मोती हीरा जटित अमोल ॥ झुलवत यूथ मिली व्रज सुंदरी हरखत करत कलोल ॥२॥ खेलत हँसत परस्पर गावत हो हो बोलत बोल ॥२॥ सूरदास स्वामी पिय प्यारी झूलत झूलवत झोल ॥३॥

१३ राग देवगंधार झूलत सुंदर जुगलकिशोर ॥ नंद नंदन वृषभान नंदिनी पीवत सुधारस नयन चकोर ॥१॥ भृकुटी भृंग धनुष सी शोभित तिलक सायक जोर ॥ मंद मंद मुसिकात स्यामघन करत कटाक्ष इन ओर ॥२॥ अंजन दीप्ति रंजन लागे राजत दशन तंबोर ॥ मृगमद आड बने कर कंकण हार सिंगारन डोर ॥३॥ गयो सिरतें पटोल मनोहर उघरे कुच कलश कठोर ॥ सूरसु निरखत भये प्रेमवश तब पिय करत निहोर ॥४॥

१४ राग देवगंधार डोल माई झूलत नंदकुमार ॥ वाम भाग वृषभान नंदिनी जोरी अति सुकुमार ॥१॥ श्री यमुना तट सघन कुंज तर वृंदावनहि मझार ॥ माधुरी कुंद लता अति प्रफुल्लित उरझि परस्पर

डार ॥२॥ बहुत समीर मंद अति शीतल अलिपिक करत पुकार ॥ झोटादेत हरख ललितादिक इकटक रहत निहार ॥३॥ कुरबक बकुल पहोप नव लासी होत परस्पर मार ॥ उडत अबीर गुलाल कुंमकुमा देत भामती गार ॥४॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ रीझ देत उरहार ॥ ललिताजू अपने कर बीरी पिय मुख देत संवार ॥५॥ हरख असीस देत गोपीजन जोरी रहो अटार ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल पदरज दास निरख बलहार ॥६॥

१५ राग देवगंधार झुलत डोल नंदकुमार ॥ चहुँ ओर झुलावत व्रजसुंदरी गावत सरस धमार ॥१॥ वामभाग वृषभान नंदिनी साजे सकल सिंगार ॥ छिरकत चोवा चंदन बंदन कुंमकमा करन करन पिचकार ॥२॥ उत गुलाल अबीर दुहूं दिश बाढ्यो रंग अपार ॥ आसकरण प्रभु मोहन झुलत व्रज के प्राण आधार ॥३॥

१६ राग देवगंधार डोल पर देत परसपर तारी ॥ बेसरी सौं अलके अरुझांनी तुम देखो नवल बिहारी ॥१॥ उरसों उर नहिं टारत मोहन नेकु करत नहिं न्यारी ॥ 'परमानंद' दास तहाँ ठाढ़ें तुम जीते हम हारी ॥२॥

१७ राग देवगंधार डोल झूलत हैं हंसि मुसक्यात परस्पर ॥ सुरंग गुलाल लई जू मुठी भर कटि तट में राखी छिपाय करि चाहत भयो द्रगंचर ॥१॥ देखो कहत अनेक कुसुम पर कैसे दोरत हें री अलिवर मानों चंपे पञ्चसर केसर ॥ जब जीयकी जानी मुख उपर तबै दई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी नर ॥२॥ यह विधि फूलत हैं री गिरिवरधर परस पान कपोल मनोहर रीझे देत कबहूँ उरसों उर ॥ मदन मोहन पीय परम रसिक वर कहा कहूँ यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥३॥

१८ राग देवगंधार डोल झूलावत सब बृज सुंदरी झूलत मदन गोपाल ॥ गावत फाग धमार हरख भर हलधर और सब ग्वाल ॥१॥ फूल कमल केतकी कुंजो गुंजन मधुप रसाल ॥ चंदन बंदन चोवा छिरकत उड़त अबीर गुलाल ॥२॥ बाजत बीन विषाण बांसुरी डफ मृदंग और ताल ॥ नंददास प्रभु के संग विलसत पुण्य पुंज ब्रजबाल ॥३॥

१९ राग देवगंधार सखी मिलि झुलवति अपुने रङ्ग ॥ झुलवत डोल

लाडिलो गिरिधर राधे लै अरधंग ॥१॥ अंब मोर फल लता माधुरी रचि फूलन करि संग ॥ नाँचत गावति करत मनोरथ भाव दिखावत अंग ॥२॥ प्रथम खेल स्यामा प्यारी कौं केसर चोवा बंद ॥ अबीर गुलाल उडावति हे बलि रिझय गोकुल चंद ॥३॥ दूजो खेल रच्यों चन्द्राबली अद्भुत बन्यों स्वरूप ॥ दोऊन के मन प्रीति बढ़ावत लागति परम अनूप ॥४॥ तीजो खेल रच्यो ललितादिक को करि सके बखान ॥ और अकोर काहा लों दीजे नोछावरि करि प्रान ॥५॥ चोथो खेल मदनमोहन कौं बरखत रङ्ग अपार ॥ छूटति पिचकाई चहूँ दिस तें अबीर गुलाल धुमार ॥६॥ यह रस रीति काहा कोऊ जाने श्रुति हूं गावति नेति 'द्वारिकेस' प्रभु झुलि पधारे निज मन्दिर संकेत ॥७॥

२० राग देवगंधार हसि मुसकात परस्पर डोल झूलत हैं ॥ सुरङ्ग गुलाल लई मुठि भरि कटि तट में राखि छिपाई धरि चाहत भयों दृगंचर ॥१॥ देखों कहत अनेक कुसुम पर कैसे दोरत हैं हो अलिवर मानों चले पंचसर के सर ॥ तब जियकी जानी मुख ऊपर तब ही दई तारी सुंदर कर बिथके सब नारी ॥२॥ इहि विधि झूलत हैं री गिरिधर परसत पानि कपोल मनोहर रीझि देत कबहू उरसों उर ॥ 'मदनमोहन' पिय परम रसिकवर कहा कहों यह सुख को सागर बलिहारी बानिक पर ॥३॥

राग पंचम

१ राग पंचम आज बने मोहन झूलत डोल ॥ बाम अंग लगि सोहति भामिनि सौभग सींव अतोल ॥ दुहूँ ओर प्रमुदित मन पुलकित ब्रज-बनिता मिलि टोल ॥ तेल-गुलाल मिलाई करनि सों मंडित करत कपोल ॥ रतन-जटित पिचकारिनि छिरकत केसरि-रंग अमोल ॥ पंचम राग अलापति-गावति मधुरे-मधुरे बोल ॥ सुरँग गुलाल अबीर उड़ावत चहुं-दिसि भरि-भरि डोल ॥ बाढ़ी भक्ति दास 'परमानँद' जग में बाजत ढोल ॥

डोल - राग वसंत

१ राग वसंत डोल विचित्र बन्यो नंदनंदन गुहि गुहि लाई फूल ॥ व्रजनारी सिमिट सब आंई अपने अपने दूल ॥१॥ ललिता कहे सुनों मनमोहन

प्रीतम प्यारी की बात ।। संग सहित वृषभान नंदिनी दोऊ मिल झूलो साथ ।।२।। कोऊ एक झांझ मृदंग बजावत कोऊ अलापत राग ।। कोऊ मुक्तामाल खगवारो वारत मानत भाग ।।३।। छबीली छटन सुर नर मुनि मोहे गंधर्व मोहे गान ।। मगन भई व्रजनारी गावें मगन भये अति मान ।।४।। इतनी कहों यथामति मेरी प्रभु मुकुंद विलास ।। राधा नंद सुवन दोऊ पर बल-बल जाये दास ।।५।।

२ राग वसंत डोल झुलावत सब व्रज सुंदरि झूलत मदन गोपाल ।। गावत फाग धमार हरख भर हलधर ओर सब ग्वाल ।।१।। फूल कमल केतकी कुंजो गुंजत मधुप रसाल ।। चंदन वंदन चोवा छिरकत उडत अबीर गुलाल ।।२।। वाजत वेणु विषाण बांसुरी डफ मृदंग ओर ताल ।। नंददास प्रभु के संग विलसत पुण्य पुंज व्रजबाल ।।३।।

३ राग वसंत आज ललना लाल फाग खेलत बने मिल झूलत सखी नवरंग डोल ।। झोटका देत व्रजनारि आनंद भरी छिरकत कुंकुमादि सौरभ अमोल ।।१।। दिव्य आभरण चीर चारु अमोल छबि अंग राग राजत चित्र कुसुम कलोल ।। सुरत तांडव लास्य भुव नृत्यत मदन गण उपहसत लोचन विलोल ।।२।। वेणु वीणा मृदंग झांझ डफ किन्नरी तान बंधान नव नागरी ढोल ।। ततथेई थुंगनी नचत शब्दावली होरी हो होरी हो होरी हो बोल ।।३।। रसिक वर गिरिधरन रसिकनी राधिका रसमस्ये चुंबत रसमय कपोल ।। बाल कृष्णदास वैभव निरख मधुमास चल मलय पवन रस सिंधु झकझोल ।।४।।

डोल - राग हिंडोल

१ राग हिंडोल झुलत युग कमनीय किशोर सखी चहुंओर झुलावत डोल ।। ऊंची ध्वनि सुन चकृत होत मन सब मिल गावत राग हिंडोल ।।१।। एक वेष एकवयस एकसम नव तरुणी हरणी दृग लोल ।। भांत भांत कंचुकी कसें तन वरण वरण पहरें वलिचोल ।।२।। वन उपवन द्रुम-वेली प्रफुल्लित अंबमोर पिकनि कर कलोल ।। तैसेहीं स्वर गावत व्रज वनिता झूमक देत लेत मनमोल ।।३।। सकल सुगंध संवार अरगजा आंई अपने अपने टोल ।। एकतक पिचकाइन छिरकत एक भरत भर कनक कचोल ।।४।। कबहूं स्याम पीय उतर डोलतें कौतुक हेत देंत झकझोल ।। तब प्रिया

उर भरि स्वास कंप तन विरम-विरम बोलत मृदु बोल ॥५॥ गिरत तरोना गह्यो स्याम कर श्रवणदेन मिस छुवत कपोल ॥ तब प्रिय ईषद मुसक मंद हँस वक्रचिते कर भ्रुंह सलोल ॥६॥ भेरि झांझ दुंदुभी पखावज ओर डफ आवज बाजत ढोल ॥ आए सकल सखा समूह जुर हो हो होरी बोलत बोल ॥७॥ रत्न जटित आभूषण दीने ओर दीने मुक्ताहार अमोल ॥ सूरदास मदन मोहन प्यारे फगुवा दे राख्यो मन ओल ॥८॥

डोल - राग जेतश्री

१ राग जेतश्री शोभा सकल सिरोमणी दंपति झुलें डोल ॥ मोहन-राय झूलहीं ॥ कनक खंभ मरकत मणी हीरा खचित अमोल ॥१॥ चोकी पन्ना पांच पिरोजा रची रत्नन की पांत ॥ मुक्तामाल सुहावनी कहा वरनों बहु भांत ॥२॥ झुले दुलहनि राधिका दुल्हे नंदकुमार ॥ रतिरस केलि बिराजही बाढ्यो रंग अपार ॥३॥ ताल पखावज आवज झांझ झनक सहनाय ॥ वीणा वेणु रबाब किन्नरी मध्य मुरली की भाय ॥४॥ सखा मंडली शोभित गावत फाग धमार ॥ इत शोभित व्रजसुंदरी गावत मीठी गार ॥५। झकझोरें पिचका चलें कहा वरनों यह बान ॥ चोवा चंदन छिरकहीं गोपी गोप सुजान ॥६॥ जख कर्दभ उर मंडिता उडत गुलाल अबीर ॥ करत विनोद कौतुहला राजत अति से भीर ॥७॥ खेलत वल्लव वल्लवी प्रतिछिन नव अनुराग ॥ कमल खंड केसर मधुपगण गुंजत पीत पराग ॥८॥ शिथिल वसन कटि मेखला रही अलक लर छूट ॥ एक एक मिल धावहीं गई मोतिन लर टूट ॥९॥ चिंरजीयो सुंदर वर प्यारो सकल घोष सिरताज ॥ नंद जसोदा को सुकृत फल प्रकट भयो हे आज ॥१०॥ सुर कुसुमन वरखा करें लीला देखें आय ॥ आसकरण प्रभु मोहन को यश रह्यो सकल जग छाय ॥११॥

२ राग धन्याश्री झूलति डोल गोपाल संग नव नागरी चल नव नागरी ॥ इंदु-बदनी मृग नैनी सबे गुन आगरी ॥ चलि नवनागरी ॥१॥ रत्न खचित द्वे खंभ के ही राजही ॥ चोकी हेम जराय के बहु विधि साज ही ॥२॥ कदली मोर अंब पाँति द्वे परम सुहाव ही ॥ विविध कुसुम रंग बोरी के अति मन भाव ही ॥३॥ चहूं दिस गोपी ग्वाल सखा संग सोह

ही ॥ निरख वदन तन हेर सबे मन मोह ही ॥४॥ ताल मृदंग उपंग बैनु बहू बाज ही ॥ ढफ दुंदुभी कठ ताल मधुर सुर गाज ही ॥५॥ केसर कुंमकुम घोर मृगमद सान के ॥ प्यारी को छिरकति पिचकारी जान के ॥६॥ सुरँग गुलाल अबीर उड़ावत भामिनी ॥ बरन-बरन भये बसन कियो दिन जामिनी ॥७॥ दुहुँ दिस बाढ्यों खेल पोरि बृजराय के ॥ प्यारी दियो अरगजा ढोर स्याम सिर धाय के ॥८॥ फगुवा देऊ कुमार के हम ही मँगाय के ॥ मेवा बसन आभूषन बहुत मिलाय के ॥९॥ यह विधि खेलत रंग रह्यो परे ॥ जसोमति अति अभिलाष सों आरती करे ॥१०॥ जुग-जुग अविचल जोरी के नित बिहार ही ॥ 'श्री विट्ठल' पद रज हरि जिन सिर धार ही ॥११॥

डोल - राग काफी

१ राग काफी झुलत रस रंग भरे हो दोऊ राजत स्यामा स्याम ॥ध्रु०॥ परिवा प्रथम सुहाग दिन महूरत बांध्यो डोल बनाय ॥ कंचन मणि मुक्ताफल मानों रवि शशि उड्गण पाय ॥१॥ करि मंजन भोजन कर बीरा बैठे सोंधो लगाय ॥ नील पीत पट की छबि मानों दामिनि घन जो लगाय ॥२॥ उरझी स्याम तमाल सों मानों कंचन वेली अनूप ॥ भूषण भूषित गात मनोहर कहा वरने कवि रूप ॥३॥ नूपुर क्वणित चरण कर कंकण कटि किंकिणी कलबाज ॥ मानों मराल बाल वर बोलत अति अद्भुत छबि राज ॥४॥ संहचरी मुदित झुलावत फूलत गावत गोप धमार ॥ राग जम्यो बहु बाजे बाजत मानों उमग्यो निधिवार ॥५॥ चोवा चंदन और अरगजा कुँमकुम अगर सुवास ॥ मानों मलया गिरि हूँते छूटी विविध पवन सुखरास ॥६॥ कहाँलों कहों अनुपम शोभा रही विविध छबि छाय ॥ निरख काम रस धाम आपनो मानों रह्यो मुरझाय ॥७॥ देत असीस सकल गोपीजन रही सब सीस नवाय ॥ श्रीराधा गिरिधारी ऊपर स्यामदास बलजाय ॥८॥

२ राग काफी बन्यो डोल मनोहर झूलत नंद को लाला ॥ संग बनी रसरंग सनी प्यारी सुंदर नयन बिशाला ॥१॥ प्रेम भरी ललितादि खरी फूली गावत गीत रसाला ॥ बाजत बेणु पखावज झांझ रुंज मुरज डफ ताला ॥२॥ केसर नीर कपूर की धूरि उडावें अबीर गुलाला ॥ देखत हैं

जे कृष्ण स्नेह सों होत है नयन निहाला ॥३॥

३ राग काफी बन्यो ललित डोल चितचोर झूलत सांवरो ॥ रंग भरे बने अंग निरखि द्रग होत मदन मन बावरो ॥१॥ शोभित प्रिया संग मन मोहन अंग शृंगार सुहाये ॥ गावत हित सहचरी झुलावत बहोत सबन मन माये ॥२॥ बाजत ताल मृदंग रंग भरे छिरकत रंग रंगभीनी ॥ जन जे कृष्ण वसो ऊर अंतर जोरी परम प्रबीनी ॥३॥

डोल - राग सारंग

(चार भोगकी भावना चौथे भोग में)

१ राग सारंग झूलत डोल राधिका संग ॥ गोवरधन पर्वतके ऊपर खेलत अति रसरंग ॥१॥ प्रथम खेल राधे मन हुलस्यो केसर लपटत अंग ॥ दुजो खेल रच्यो चंद्रावलि अबीर गुलाल सुरंग ॥२॥ तीजो खेल कीयों ललितादिक अग्नि कुमारी संग ॥ चोथा खेल कियों चन्द्रावलि पिय मोहे 'रसिक' अनंग ॥३॥

२ राग सारंग झूलत नंद किशोर किशोरी ॥ उत व्रजभूषण कुंवर रसिक वर इत वृषभान नंदिनी गोरी ॥१॥ पीतांबर नीलांबर फरकत उपमा घन दामिनी छबि थोरी ॥ देख-देख फूलत व्रजवनिता झूलवत लेकर डोरी ॥२॥ मुदित भये जु परस्पर गावत किलक किलक देउ उरज अकोरी ॥ परमानंद प्रभु वह सुख बिलसत इंद्र वधु सिर धुनत झकोरी ॥३॥

३ राग सारंग डोल झुलत श्यामा श्याम सहेली ॥ राजत नवल निकुंज वृंदावन विहरत गर्व गहेली ॥१॥ कबहुंक प्रीतम रबक झुलावत कबहुंक नवल प्रिय हेली ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी कहि कहि बोलत हेली ॥२॥

४ राग सारंग हरि को डोल देख वृजबासी फूले ॥ गोपी झुलावें गोविंद झूलें ॥१॥ नंद चंद गोकुल में सोहे ॥ मुरली मनोहर मन्मथ मोहें ॥२॥ कमल नयन कों लाड लड्यावें ॥ प्रमुदित प्रीत मनोहर गावें ॥३॥ रसिक शिरोमणि आनंद सागर ॥ रामदास प्रभु मोहन नागर ॥४॥

५ राग सारंग डोल झूलत हैं पिय प्यारी ॥ नंद नंदन वृषभान

दुलारी ॥१॥ कमल नयन पर केसर डारी ॥ अबीर गुलाल करी अंधियारी ॥२॥ झूलें स्याम झूलावत नारी ॥ हँस हँस देत परस्पर गारी ॥३॥ गावत गीत दे दे कर तारी ॥ बाजत वेणु परम रूचिकारी ॥४॥ भीज लगी तन तन सुखसारी ॥ खेल मच्यो वृंदावन भारी ॥५॥ रसिक सिरोमणि कुंज विहारी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिवरधारी ॥६॥

६ राग सारंग झूलत झूडोल हरख हरख गावत ॥ निरख निरख छबि परस्पर नवल दोऊ सचु पावत ॥१॥ रसिकराय विहारी प्यारी सरस मृदुल मधुर तान रीझ रिझावत ॥ माधो प्रभु गिरिधरण नागर नागरी प्राण पिया मिल भावत ॥२॥

७ राग सारंग डोल झूलत है प्यारोलाल बिहारी बिहारिनी पहोप वृष्टिहोति ॥ सुरपुर गंधर्वपुर तिनकी नारि देखत वारत हें लरमोति ॥१॥ घेरा करत परस्पर सब मिल नहीं देखी युवती ऐसी जोति ॥ हरीदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी सादा चुरी खुभी पोति ॥२॥

८ राग नट देखि देखि दृगन दंपति कौ सुख माई कैसें आज झुलति डोल ॥ गौर स्याम यह सहज सुभग वपु पहरें पीत पट नील निचोल ॥१॥ वरण वरन भूषन नग जटित जगमगात तामें अधिक अमोल ॥ 'कल्याण' के प्रभु गिरिधर राधा प्यारी कों झुलावत परसत पाणिरी कंठ कपोल ॥२॥

९ राग सारंग गहवर रस सघन निकुंज छायातर रोप्यो डोल तहां नागरी नागर दोऊ प्रेमसुं झूले ॥ भूषण अंग बने हीरामणि कटि तट मानों घनदामिनी छबि राजत नलि पीत दूकूले ॥१॥ बीरी खात खवावत प्रमुदित मन गावत सारंग राग गानसों मनही मन फूले ॥ केसर चोवा अगर गुलाल उडे और केलि कपूरन धूले ॥२॥ मृदंग ताल डफ बीना मधुर स्वर चहु और गावत उपमा कहे दोऊ को समतूले ॥ यह सुख देख कोन धीरज धरे कहे गोविंद सुरनर मुनि मन की गति भूले ॥३॥

१० राग सारंग नँद नंदन कुँवरि राधिका नागरि डोल झूलति बने रँग भीनें ॥ कौं मन रहे झुमन फल फूल चहुँ और तें ॥ गोपिका जूथ मिलि मधुर लीनें ॥१॥ खेलि गहरो दोऊ ओर तें व्है रह्यों रँग घुमडनि भई प्रबल

भारी ॥ देव मुनि देखि किन्नर थकित व्है रहे सुर बधू बिकसि रही काम चारी ॥२॥ ब्रज कुँवर लाडिलो नित्य लीला ललित हे रही सरस रस रंगकारी ॥ 'रसिक' जन मनन करै देखि दृग अपनै परान इक बल करों वारि डारी ॥३॥

११ राग सारंग देखत डोल सबे आनन्द ॥ नीलकमल ढिंग राजत चंद ॥१॥ लेइ गुलाल परस्पर डारे ॥ सिर नारी सुख सिंधु निहारे ॥२॥ कुसुमन की बरखा बरखावे ॥॥ ब्रजबनिता मनमोद बढावे ॥३॥ गोपी प्रीत झुलावे झूले ॥ पिचकारी तकि डारत फूले ॥४॥ गोपवधू सब करी रगमगी अखियाँ लागत भली रतीजगी ॥५॥ देई असीस आरती वारत ॥ द्वारकेस प्रभु अलक संवारत ॥६॥

होरी-रसीया

१ राग होरी काफी वन आयौ छैला होरी कौ ॥ मल्ल काछु सिंगार बन्यो है याके फेंटा सीस मरोरी को ॥१॥ सोंधे सन्यो उपरेना सोहत याके माथें बेंदा रोरी को ॥ परसोतम प्रभु कुंवर लाडिलो यह रिझवार किशोरी को ॥२॥

२ राग होरी काफी काना धरे रे मुकट खेले होरी ॥ इत स्याम लई पिचकारी रंग भर उत श्यामा केसर घोरी ॥१॥ हाथन लाल गुलाल फेंट भर मारत हें भर भर झोरी ॥ चंद सखी भजि बालकृष्ण छबि तेरे बदन कमल पर चित चोरी ॥२॥

३ राग होरी काफी होरी आईरे मोहन पर रंग डारो ॥ नैनन अंजन दे मन रंडन याके कान पकर गुलचा मारो ॥१॥ केसर में बोर करो रंग गारो सहे न रहे यह तन कारो ॥ बंसी लेहू छिनाय स्याम की फिर पांछे नोछावर वारो ॥२॥

४ राग होरी काफी दरसन दे निकसि अटामेंते ॥ उमा, रमा, ईंद्राणी, भवानी, जाके निकसी है नख चंद्र छटामेंते ॥१॥ राधेजू निकस अटा भई ठाडी मानो निकस्यो है चंद घटामेंते ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत मानो माखन निकस्यो मठा मेंते ॥२॥

५ राग होरी काफी आज बिरज में होरी है रसिया ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ और नगारे की जोरी रे रसीया ॥१॥ उडत गुलाल लाल भये वादर केसर रंग झकझोरी रे रसीया ॥ चंद सखी भज बाल कृष्ण छबि चिरजीयो यह जोरी रे रसीया ॥२॥

६ राग होरी काफी होरी के रसीया ओर ख्याल ॥ फगुवा दे मोहन मतवारे फगुवा दे ॥ व्रजकी नारी गावे गारी ॥ दो बापन के बिच डोले ॥१॥ नंदजु गोरे जसोदा गोरी ॥ तुम कहांते भये कारे ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु जुवतिन हेते ॥ गोप भेख लियो अवतारे ॥३॥

७ राग होरी काफी दरशन दे मोर मुकुट वारे ॥ अरु कटि राजत सुभग काछनी फरकत पीरे पटवारे ॥१॥ वृंदावन में धेनु चरावे, बाजत बंसीवट चारे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु के गुण गावे शेष सहस्र मुख रसना हारे ॥३॥

८ राग होरी काफी ठाडी रहे ग्वालन मदमाती ठाडी रह ॥ यह अवसर होरीको हेरी ॥ हम तुम खेले संग साती ॥१॥ भूल गयो घर गेल हमारी ॥ ले लगाई अपुनी छाती ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु हंसत हंसावत ॥ व्रज वनिता सब गुण गाती ॥३॥

९ राग होरी काफी डफ बाजे नंद बाबा घरके ॥ चलोनि सखी मिल देखन जइए ॥ छेल चिकनीयां नागरके ॥१॥ अरु बाजतहे ढोल दमामा ॥ सुनियत घाव नगारनके ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल ॥ संग सखा हे बराबरके ॥३॥ पुरुषोत्तम प्रभुके संग खेलत ॥ झख मारत धरबारन के ॥४॥

१० राग होरी काफी व्रजकी तोय लाज मुकुटवारे ॥ चंद्र सूरज तेरो ध्यान धरतहे ॥ ध्यान धरे नवलख तारे ॥१॥ इन्द्र ने कोप कियो व्रज ऊपर ॥ तब गिरिवर कर पर धारे ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत ॥ गाय गोपि के रखवारे ॥३॥

११ राग होरी काफी मृगनेनी को यार नवल रसिया ॥ बड़ि

बडि अखियां नेन में सुरमा ॥ तेरी टेडी चितवन मेरे मन वसिया ॥१॥ अतलसको याकें लहेंगा सोहे ॥ प्यारी झुमक सारी मेरे मन वसिया ॥ छोटी अंगुरीन मुंदरी सोहे ॥ याके बीच आरसी मन बसीया ॥२॥ याके बांह बडो बाजूबन्ध सोहे ॥ याके हीयरे हार दीपत छतिया ॥ रंग महलमें सेज बिछाई ॥ याकें लाल पलंग पचरंग तकिया ॥ पुरुषोत्तम प्रभु देख विवस भये ॥ सबे छांड व्रजमें वसिया ॥३॥

१२ राग होरी काफी गहरे कर यार अमल पानी ॥ चल बरसाने करे मिजमानी ॥ तेरी भांग मिरचकी मैं जानी ॥१॥ तोही करेंगे होरीको रसिया ॥ हम होयेगी तेरी अगवानी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत ॥ तेरे मनकी हमने जानी ॥२॥

१३ राग होरी काफी होरी खेलूंगी स्याम संग जाय मेरे भागनतें फागुन आयो ॥ ये भींजवी मेरी सुरंग चुनरियां ॥ में भिजवुं याकी पाग ॥१॥ चोवा चंदन अतर अरगजा ॥ रंगकी परत फुंवार ॥२॥ लाज निगोडी रहों चाहे जावो ॥ मेरो हियरो भर्यो अनुराग ॥३॥ आनंदघन खेलों सुघर बालमसों ॥ मेरो रहियोहे भाग सुहाग ॥४॥

१४ राग होरी काफी ठाडो रह दे फगुवा व्रजवासी ठाडो रह ॥ रंग डार कित भाज्योरे लंगरवा लोक करे मेरी हांसी ठाडो रह ॥१॥ बालपनो खेलनमें खोयो गोकुल में मारी मासी ठाडो रह ॥२॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत जन्म-जन्म तिहारी दासी ठाडो रह ॥३॥

१५ राग होरी काफी कान्हा धर्योरि मुकुट खेले होरी कान्ह धर्योरि ॥ इततें आये कुंवर कन्हाई उततें आई राधा गोरी कान्हा धर्योरि ॥१॥ कहां तेरो हार कहां नकवेसर कहां मोतियन की लर तोरी कान्ह धर्योरि ॥२॥ गोकुल हार मथुरां नकवेसर वृंदावन में लर तोरी कान्हा धर्योरि ॥३॥ चोवा चोवा चंदन अगर अरगजा अबीर उडावो भर भर झोरी कान्हा धर्योरि ॥४॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत फगुवा लीयो भर भर झोरी कान्हा धर्योरि ॥५॥

* * *